उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, प्रयागराज

MAED-116
पाठ्यचर्या विकास

खण्ड – 01 : पाठ्यचर्या एवं सम्बन्धित सम्प्रत्यय

इकाई–1 पाठ्यचर्या : अर्थ, प्रकृति, आवश्यकता और प्रकार 5–14

इकाई–2 (i) पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और विषयवस्तु के मध्य अन्तर

(ii) शिक्षण तथा अनुदेशन के मध्य अन्तर

(iii) पाठ्य पुस्तकों और संदर्भ पुस्तकों के मध्य अन्तर

(iv) अनुपूरक पुस्तक और कार्य पुस्तिका के मध्य अन्तर 15–26

इकाई–3 पाठ्यचर्या के निर्धारक 27–36

इकाई–4 पाठ्यक्रम में विभिन्न सामाजिक समूहों के ज्ञान का समावेषण और वहिष्करण 37–58

खण्ड– 02 : पाठ्यचर्या नियोजन

इकाई–5 पाठ्यचर्या नियोजन : संकल्पना, आवश्यकता और उद्देश्य 60–66

इकाई–6 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005 (एन.सी.एफ.– 2005) 67–74

इकाई–7 शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2009 (एन.सी.एफ.टी.ई.2009) 75–82

इकाई–8 पाठ्यचर्या विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय विचार 83–92

खण्ड–03 : पाठ्यचर्या सहभागिता और पारगमन

इकाई–9 पाठ्यचर्या के दृष्टिकोंण 94–104

इकाई–10 पाठ्यचर्या पारगमन 105–118

इकाई–11 पाठ्यचर्या सहभागिता के लिए विद्यालय दर्शन की भूमिका 119–123

इकाई–12 बुनियादी ढांचागत सहायता और पाठ्यचर्या सहभागिता 125–132

खण्ड–04 : पाठ्यचर्या मूल्यांकन और अनुसंधान

इकाई–13 पाठ्यचर्या के प्रतिमान 134–144

इकाई–14 पाठ्यचर्या मूल्यांकन 145–158

इकाई–15 पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दे 159–182

इकाई–16 पाठ्यचर्या में अनुसंधान 183–192

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

MAED-116 पाठ्यचर्या विकास

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

प्रोफेसर सत्यकाम कुलपति,	उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर पी० के० स्टालिन	निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर पी० के० पाण्डेय	प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर छत्रसाल सिंह	प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर के० एस० मिश्रा	पूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर धनन्जय यादव	विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर मीनाक्षी सिंह	आचार्य, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ० जी० के० द्विवेदी	सह आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
डॉ० दिनेश सिंह	सह आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
डॉ० सुरेन्द्र कुमार	सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

डॉ० सुरेन्द्र कुमार	सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इकाई– 1,2,3)
डॉ० ऐश्वर्या सिंह	सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, नवयुग कन्या डिग्री कॉलेज, लखनऊ (इकाई– 6,7,8,14)
प्रोफेसर छत्रसाल सिंह	प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इकाई– 5,9,10,11,12,13)
डॉ० सन्तोष सिंह	सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय, आर. आर. पी. जी. कॉलेज, अमेठी (इकाई– 14,15,16)

सम्पादक

प्रोफेसर पी० के० स्टालिन	निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

परिमापक

प्रोफेसर पी० के० पाण्डेय	आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

समन्वयक

डॉ० जी० के० द्विवेदी	सह आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

2024 (मुद्रित)

© उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज 2024

ISBN-

प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में विषय से सम्बन्धित सभी तथ्य एवं विचार मौलिक रूप से लेखक के द्वारा स्वयं उपलब्ध कराई गई है। विश्वविद्यालय, इस सामग्री के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नही है।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठ्य सामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नही है।

नोट : पाठय साम्रगी में मुद्रित साम्रगी के विचारों एवं आकड़ो ंआदि के प्रति विश्वविद्यालय, उत्तरदायी नही हैं।

प्रकाशन : कर्नल विनय कुमार, कुलसचिव उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज, 2025

मुद्रकः सिग्नस ईन्फार्मेशन सल्यूसन प्रा0 लि0, लोढ़ा सुप्रीमस साकी विहार रोड, अन्धेरी ईस्ट, मुम्बई।

NODE-059

खण्ड – 01 : पाठ्यचर्या एवं सम्बन्धित सम्प्रत्यय

खण्ड परिचय

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मुख्य रूप से दो घटकों को रखा जाता है जिसमें प्रथम विद्यार्थी तथा द्वितीय शिक्षक है। पूर्व में जहां शिक्षण प्रक्रिया द्विध्रुवीय प्रक्रिया मानी जाती थी जिसमें केवल शिक्षार्थी एवं शिक्षक को महत्व दिया जाता था। वहीं आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना जाता है, जिसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी के साथ–साथ पाठ्यचर्या को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता हैं। शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यचर्या ही ऐसा महत्वपूर्ण घटक है, जिसके माध्यम से शिक्षक एवं शिक्षार्थी सम्मिलित रूप से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सहभाग करते हैं। जितना महत्व शिक्षक एवं शिक्षार्थी का है उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या को माना जाता है। प्रस्तुत खण्ड पाठ्यचर्या एवं संबंधित संप्रत्यय नाम से है। प्रस्तुत खण्ड में मुख्य रूप से चार इकाइयाँ हैं, जिनका वर्णन निम्नानुसार किया जा रहा है –

इकाई 01 : इस इकाई के अंतर्गत पाठ्यचर्या का अर्थ, प्रकृति और उसकी आवश्यकता तथा महत्व के विषय में विस्तार से बताया गया है। पाठ्यचया के प्रकार पर प्रकाश डालते हुए उसके अनेक प्रकारों जैसे– कोर पाठ्यचर्या, समेकित पाठ्यचर्या, सैद्धांतिक पाठ्यचर्या, क्रिया केंद्रित पाठ्यचर्या, पुनर्संरचनात्मक पाठ्यचर्या को उदाहरण सहित समझाया गया है। पाठ्यचर्या के उपागम के अंतर्गत विशेष रूप से व्यावहारिक–तार्किक उपागम, प्रणाली–प्रबंध उपागम, बौद्धिक–शैक्षिक, मानवतावादी– सौंदर्यात्मक उपागम तथा पुनर्संकल्पित उपागम को सरल शब्दों में समझाया गया है। साथ ही पाठ्यचर्या एवं शिक्षकों की भूमिका को भी इस इकाई में समझाया गया है।

इकाई 02 : इस इकाई के अंतर्गत पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु के अंतर को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार शिक्षण तथा अनुदेशन, पाठपुस्तक तथा संदर्भ पुस्तक, अनुपूरक तथा कार्य पुस्तिका में अंतर की उदाहरण सहित विस्तृत रूप से चर्चा की गयी है।

इकाई 03 : इस इकाई के अंतर्गत पाठ्यचर्या निर्धारक के अर्थ एवं उसके निर्धारकों के विषय में विस्तृत वर्णन दिया गया है। इस इकाई में कोर पाठ्यचर्या तथा पाठ सहगामी क्रियाओं की विस्तृत सूची भी प्रस्तुत की गयी है, जो शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

इकाई 04 : इस इकाई के अंतर्गत पाठ्यक्रम में विभिन्न सामाजिक समूहों के ज्ञान का समावेषण और वहिष्करण का अध्ययन किया जा रहा है, जिसमें प्राथमिक समूह, द्वितीयक समूह, पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषा, पाठ्यक्रम निर्माण के आधारभूत सिद्धांतों, पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में विभिन्न दार्शनिक विचारों, पाठ्यक्रम का विभिन्नीकरण, विषय केन्द्रित एवं विषयागत पाठ्यक्रम तथा अनुभवगत अथवा क्रियाकेन्द्रित पाठ्यक्रम, परम्परागत तथा प्रगतिशील पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या के स्तर को ऊँचा करने व पुनः निर्माण के लिए उपाय की चर्चा की गयी है।

इकाई – 01 : पाठ्यचर्या : अर्थ, प्रकृति, आवश्यकता और प्रकार

इकाई संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 इकाई के उद्देश्य

1.3 पाठ्यचर्या का अर्थ

1.4 पाठ्यचर्या की प्रकृति

1.5 पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व

1.6 पाठ्यचर्या के प्रकार

1.6.1 कोर पाठ्यचर्या

1.6.2 समेकित पाठ्यचर्या

1.6.3 सैद्धान्तिक पाठ्यचर्या

1.6.4 क्रिया केन्द्रित पाठ्यचर्या

1.6.5 पुनर्संरचनात्मक पाठ्यचर्या

1.7 पाठ्यचर्या के उपागम

1.7.1 व्यवहारिक–तार्किक उपागम

1.7.2 प्रणाली–प्रबंधन उपागम

1.7.3 बौद्धिक–शैक्षिक उपागम

1.7.4 मानवतावादी–सौन्दर्यात्मक उपागम

1.7.5 पुनर्संकल्पित उपागम

1.8 पाठ्यचर्या एवं शिक्षकों की भूमिका

1.9 सारांश

1.10 अभ्यास के प्रश्न

1.11 चर्चा के बिन्दु

1.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

जैसा कि हम जानते हैं कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्राकृतिक एवं नियंत्रित दोनों ही वातावरणों में संचालित होती है । यद्यपि, किसी भी प्रकार के अधिगम वातावरण में शिक्षार्थी की मुख्य भूमिका होती है परन्तु नियंत्रित वातावरण में शिक्षार्थी एवं शिक्षक की भूमिका का महत्व बढ़ जाता है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी की शैक्षिक प्रक्रिया में पूर्व निर्धारित अनुभवों को साझा करने में बराबर की भागीदारी है। अधिगम अनुभव शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का तीसरा आयाम है, शिक्षणशास्त्र में इसे ''पाठ्यचर्या'' कहते हैं।

पाठ्यचर्या एक ऐसी धुरी के रूप में है जिसके चारों ओर कक्षा के विविध कार्य तथा विद्यालय के समस्त क्रियाकलाप विकसित किये जाते हैं। आप अपने बचपन के दिनों में स्कूलों में किये जाने वाले विविध कार्यकलापों के बारे में सोचिये और यह सोचने का प्रयास कीजिये कि हम ऐसा क्यों करते थे। इन कार्यकलापों के विविध प्रकारों के बारे में भी सोचिये कि वह एक दूसरे से किस प्रकार सम्बंधित थे। आपको याद होगा कि आपके विद्यालय में भाषा विज्ञान, गणित तथा सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापक अपने विद्यार्थियों के साथ अन्य कौन–कौन सी क्रियाएं कराते थे। इस प्रकार यह इकाई आपको यह समझने में सहायक होगी कि कक्षा में अध्यापक जो भी करता है वह क्यों करता है तथा शिक्षा को यह अधिक उद्देश्यपूर्ण तथा जीवन के लिए उपयोगी कैसे बनाता है। इसके साथ ही पाठ्यचर्या की संकल्पना को भली भांति समझ लेने से शिक्षा के मनोवांछित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी सहायता मिलेगी।

हम सभी जानते हैं कि बचपन से आज तक हमने जो भी शिक्षा प्राप्त की है इस शिक्षा प्राप्ति की प्रक्रिया के दौरान हम सभी ने कई तरह की संपन्न होने वाली प्रक्रियाएं विद्यालयों में देखी हैं, जैसे– स्कूलों में सुबह की प्रार्थनाएं, फिर निश्चित समय सारणी के अनुसार सभी कक्षाओं का संचालन, प्रायोगिक क्रिया–कलाप, वर्ष में कई बार परीक्षाओं का आयोजन एवं साथ ही वर्ष भर विद्यालय में कई प्रकार की अन्य गतिविधियों का आयोजन होना जैसे– खेलकूद प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुस्तक मेला, विज्ञान प्रदर्शनी, स्काउट्स गाइड, एन०सी०सी०, राष्ट्रीय पर्वो का आयोजन आदि। आज हम सभी मिलकर इस विषय को समझेंगे की विद्यालयों में संपन्न होने वाले इन सभी प्रकार के क्रिलाकलापों के क्या शैक्षिक निहितार्थ हैं? विद्यालय में आयोजित होने वाले ये सभी कार्यक्रम किसी न किसी निश्चित उद्देश्य को लेकर ही आयोजित किये जाते हैं। उपर्युक्त समस्त क्रियाकलाप पाठ्यचर्या के ही अंग कहलाते हैं।

1.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि –

1. पाठ्यचर्या की परिभाषा तथा उसकी संकल्पना समझ सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या की विविध परिभाषाएं बता सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यचर्या में अंतर की विवेचना सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या के क्षेत्र एवं विशेषताओं की चर्चा कर सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या के महत्व को समझ सकेंगे।
6. पाठ्यचर्या की प्रक्रिया तथा इसके विविध सोपानों की व्याख्या कर सकेंगे।
7. पाठ्यचर्या अध्यापक और विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है, यह समझ सकेंगे।

इसमें संदेह नहीं कि कलाकार को अपने पदार्थ को अपने आदर्शों के अनुरूप ढालने की बहुत स्वतंत्रता है, क्योंकि कलाकार का पदार्थ निर्जीव है, परन्तु स्कूल में अध्यापक का पदार्थ अर्थात् छात्र सजीव है । पुराने समय में जब आवश्यकताएँ सीमित थीं, साधन सीमित थे, तब अध्यापकों को अपने पदार्थ यानि कि छात्रों को नया रूप देने में पूरी स्वतंत्रता थी, परन्तु अब बदलती हुई परिस्थितियों में अध्यापक की यह भूमिका भी बदल गयी है। फिर भी निश्चय ही अध्यापक के हाथ में पाठ्यचर्या बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है।

1.3 पाठ्यचर्या का अर्थ

पाठ्यचर्या शैक्षिक व्यवस्था का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग है। पाठ्यचर्या की अवधारणा के सन्दर्भ में प्रायः विद्वानों में एकमत राय नहीं है। पाठ्यचर्या को लोग पाठ्यक्रम (Syllabus) या विषय वस्तु (Course of Study) जैसे नामों से भी संबोधित करते हैं। पाठ्यचर्या शब्द, दो शब्दों से मिलकर बना है– पाठ्य एवं चर्या। पाठ्य का अर्थ है– पढ़ने योग्य अथवा पढ़ाने योग्य और चर्या का अर्थ है नियम पूर्वक अनुसरण। इस प्रकार पाठ्यचर्या का अर्थ हुआ पढ़ने योग्य (सीखने योग्य) अथवा पढ़ाने योग्य (सिखाने योग्य)। विषय वस्तु और क्रियाओं का नियम पूर्वक अनुसरण। पाठ्यचर्या के लिए अंग्रेजी में करीकुलम (Curriculum) शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द लैटिन भाषा के क्यूरेरे (Currere) से बना है जिसका अर्थ है– रनवे (Runway) या रेस कोर्स (Race Course)

अर्थात् दौड़ का रास्ता या दौड़ का क्षेत्र अर्थात् किसी निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मार्ग पर दौड़ना या ऐसे भी कह सकते हैं कि– ''Curriculum means a course to be run for reaching a certain goal'' इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में पाठ्यचर्या छात्रों के लिए दौड़ का रास्ता या दौड़ के मैदान के समान है जिस पर चलते हुए छात्र अपने वांछित शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करता है।

राबर्ट यूलिच (Robert Ulich) ने लिखा है कि– **"शिक्षा के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जिन अध्ययन परिस्थितियों में क्रमिक रुपरेखा बनायी जाती है। उसे पाठ्यचर्या कहते हैं। पाठ्यचर्या में शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्ष शामिल होते हैं।''**

कनिंघम के अनुसार, ''पाठ्यचर्या अध्यापक रूपी कलाकार (Artist) के हाथ में वह साधन (Tool) है जिसके माध्यम से वह अपने पदार्थ रूपी शिष्य (Material) को अपने कलागृह रूपी स्कूल (Studio) में अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार विकसित अथवा रूप (Mould) प्रदान करता है।"

1.4 पाठ्यचर्या की प्रकृति

फ्रांसिस जे० ब्राउन ने अपनी पुस्तक "शैक्षिक समाज विज्ञान'' में लिखा है कि– "पाठ्यचर्या उन समग्र परिस्थितियों का समूह है जिसकी सहायता से शिक्षक तथा विद्यालय उन सभी बालकों तथा नवयुवकों के व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं जो विद्यालय से होकर गुजरते हैं।" इससे यह स्पष्ट होता है। कि पाठ्यचर्या विद्यालय की व्यवस्था का मूल आधार होती है। शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था पाठ्यचर्या पर केन्द्रित होती है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। शिक्षक और शिक्षार्थी पाठ्यचर्या को केंद्र में रख कर विचारों के आदान–प्रदान द्वारा किसी चीज को सीखते हैं तथा व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं। पाठ्यचर्या से ही छात्र जीवन जीने की कला (Art of living) सीखते हैं। पाठ्यचर्या की प्रकृति को निम्नलिखित तथ्यों से हम इस प्रकार से समझ सकते हैं–

i. पाठ्यचर्या सदैव पूर्ण नियोजित होती है इसमें निहित क्रियाओं को आवश्यकतानुसार एकाएक विकसित नहीं किया जा सकता है।

ii. पाठ्यचर्या के चार मुख्य आधार होते हैं– सामाजिक शक्तियां, स्वीकृत सिद्धांतों द्वारा प्राप्त मानव विकास का ज्ञान, अधिगम का स्वरुप तथा ज्ञान और संज्ञान का स्वरूप। इस प्रकार पाठ्यचर्या किसी विशिष्ट समाज के एक विशिष्ट आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए निर्मित होती है। किसी विशिष्ट व्यवसाय हेतु कक्षा आठ की बालिकाओं के लिए विकसित पाठ्यचर्या कक्षा के लड़कों के लिए पूरी तरह निरर्थक भी हो सकती है।

iii. पाठ्यचर्या के लक्ष्य या प्रयोजन उससे सम्बंधित शैक्षिक उद्देश्यों से निर्दिष्ट होते हैं। ये उद्देश्य ही साध्य हैं तथा स्वीकृत पाठ्यचर्या इन्हें प्राप्त करने का साधन है। पाठ्यचर्या अध्यापक के अनुदेशों को नियोजित करने में सहायक होती है। अधिगम अनुभवों की गुणवत्ता तथा सार्थकता ही पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के प्रभाव का निर्धारण करती है।

iv. अध्यापक अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए एक ही प्रकार के अधिगम अनुभवों का नियोजन करता है फिर भी अपने अधिगम अनुभवों तथा अपनी सहभागिता के स्तर एवं गुणवत्ता के कारण छात्रों में भिन्नता दिखाई देती है उनमें व्यक्तिगत भेद तथा सामाजिक पृष्ठभूमि की विभिन्नता एक प्रकार के परिणाम के लिए उत्तरदायी है यही कारण है कि एक ही कक्षा के प्रत्येक छात्र की वास्तविक पाठ्यचर्या उसी कक्षा के अन्य छात्रों की पाठ्यचर्या कि अपेक्षा भिन्न होती है।

v. पाठ्यचर्या की प्रकृति विद्यार्थियों के ज्ञान के विकास हेतु नियोजित सभी क्रियाकलाप तथा उन्हें उचित क्रमबद्धता प्रदान करने वाले सैद्धांतिक आधार होते हैं।

प्रत्येक अधिगमकर्ता की अपनी वास्तविक पाठ्यचर्या के अस्तित्व के परिणामस्वरुप निर्दिष्ट पाठ्यचर्या तथा क्रियान्वित पाठ्यचर्या के बीच पाए जाने वाले अंतर के कारण अध्यापक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं उसे कक्षा में न केवल लचीली व्यवस्था प्रदान करनी होती है वरन अधिगम के सार्थक विकल्प भी खोजने पड़ते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

1. पाठ्यचर्या को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिये।

....

....

2. पाठ्यचर्या किन दो शब्दों से मिलकर बना है ?

....

....

3. "शैक्षिक समाज विज्ञान" नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं ?

....

....

4. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का तीसरा आयाम क्या है ?

....

....

1.5 पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व

फ्रांसिस जे. ब्राउन ने अपनी पुस्तक "शैक्षिक समाज विज्ञान" में लिखा है कि– "पाठ्यचर्या उन समग्र परिस्थितियों का समूह है, जिसकी सहायता से शिक्षक तथा विद्यालय उन सभी बालकों के व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं जो विद्यालय से होकर गुजरते हैं।" इससे यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यचर्या विद्यालयी व्यवस्था का मूलाधार है। शिक्षा की संपूर्ण गतिविधि पाठ्यचर्या पर ही केंद्रित होती है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। शिक्षक और शिक्षार्थी पाठ्यचर्या को केंद्र में रखकर विचारों के आदान–प्रदान द्वारा सीखते हैं तथा व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं। पाठ्यचर्या से ही छात्र जीवन जीने की कला में पारंगत होते हैं। शिक्षक को पाठ्यचर्या से अपने शिक्षण की प्रभावोत्पादकता, शिक्षण की योजना का निर्माण, छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन करने का दिशा–निर्देश प्राप्त होता है। अभिभावकों को पाठ्यचर्या से अपने बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं ज्ञान का पता चलता है। अस्तु पाठ्यचर्या शिक्षा से जुड़ें प्रत्येक व्यक्ति के लिए हितकारी एवं आवश्यकता को प्रकट करता है। संक्षेप में पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व को अग्रवत व्यक्त किया जा सकता है–

1) **शिक्षक के लिए आवश्यकता एवं महत्व**– पाठ्यचर्या से शिक्षक को अपने शिक्षण स्वरूप के निर्धारण, शिक्षण के संचालन तथा छात्रों की उपलब्धि को जानने एवं समझने का अवसर तथा छात्रों की उपलब्धि को जानने एवं समझने का अवसर मिलता है। पाठ्यचर्या से शिक्षक अपने शिक्षण विधि का चयन करने में समर्थ होता है और छात्रों का उचित प्रकार से पथ–प्रदर्शन कर सीखने हेतु तत्पर बनता है।

2) **विद्यार्थियों के लिए आवश्यकता एवं महत्व**– पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व शिक्षार्थी के लिए अत्यधिक है। विद्यार्थी को इससे अपने शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने में मदद मिलती है। छात्रों को पाठ्यचर्या से पूर्व तैयारी का अवसर मिलता है तथा वे यह जानने में समर्थ होते हैं कि अमुक विषय में कितना तथ्य पढ़ना है? अर्थात पाठ्यचर्या के आधार पर शिक्षार्थी अपनी अध्ययन की योजना बनाते हैं तथा उस पर चलकर सफलता की प्राप्ति करते हैं।

3) **समाज के लिए आवश्यकता एवं महत्व**– पाठ्यचर्या से समाज को भी लाभ पहुँचता है। पाठ्यचर्या से

ही समाज में पारंपरिक मान्यताओं के स्थान पर परिवर्तित मान्यताओं का दिग्दर्शन होता है। कारण यह है कि विद्यालयी जीवन में पाठ्यचर्या में निहित नवीन मान्यताओं तथा तथ्यों को सीखने के बाद जब बालक विद्यालयी जीवन से निकलकर सामाजिक जीवन मे पदार्पण करता है तो वह समाज को कुछ नवीनतायुक्त मंतव्य देता है। जब इसका व्यापक, तथ्य, विचार, मान्यता, मूल्य, आदर्श समाज का अभिन्न अंग बन जाता है। इस प्रकार पाठ्यचर्या समाज के लिए भी उपयोगी है।

4) **सांस्कृतिक उन्नयन हेतु आवश्यकता एवं महत्व**– समाज एवं संस्कृति के उन्नयक तत्वों को पाठ्यचर्या में स्थान दिया जाता है। यह तत्व शिक्षा एवं समाज दोनों के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। पाठ्यचर्या में सांस्कृतिक मूल्यों की सीख प्राप्त करके विद्यार्थी अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की विशिष्टता, उसकी मौलिकता, करणीय एवं अकरणीय कर्तव्यों, जीवनादर्शों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कालातंर में ऐसे बालक ही विद्यालय से निकलकर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा द्वारा सांस्कृतिक विरासत की रक्षा तथा उसके उन्नयन हेतु समर्पित होकर कार्य करते हैं।

5) **अंतर्दृष्टि तथा अवबोध के विकास हेतु आवश्यकता एवं महत्व**– विद्यालय में बालक विविध विषयों का जब अध्ययन करता है, विविध पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में हिस्सा लेता है तथा अध्ययन के द्वारा पाठ्यचर्या से तरह–तरह के अनुभव अर्जित करता है, तो इससे उसकी अंतर्दृष्टि प्रखर बनती है और उसमें अवबोध का प्रकटन होता है।

6) **समानता युक्त शैक्षिक व्यवस्था बनाने हतु आवश्यकता एवं महत्व**– शिक्षा की समान संरचना एवं समानता की स्थापना, पाठ्यचर्या की सुनिश्चितता से संपूर्ण राष्ट्र में एक समान शैक्षिक संरचना बनाने तथा सभी के लिए समानता युक्त शैक्षिक व्यवस्था बनाने में सहायता मिलती है।

7) **शिक्षा को नवीन मंतव्यों से अलंकृत करने में सहायता**– पाठ्यचर्या से शिक्षा को नवीन दिशा प्रदान करने में भी सहायता मिलती है। दिन–प्रतिदिन शिक्षा में नई–नई समस्याएँ तथा सामाजिक कुरीतियाँ उदित हो रही हैं। इन समस्याओं और कुरीतियों को समाप्त करने हेतु नवीन विधाएँ अविष्कृत हो रही हैं। इनको पाठ्यचर्या में स्थान देकर समाज के नौनिहालों को नया दिशा–बोध कराने में सहायता मिलती है।

1.6 पाठ्यचर्या के प्रकार

पाठ्यचर्या वह शिक्षा धुरी है जिसके द्वारा बालक को नियोजित तरीके से शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है। विद्यालय में शैक्षिक अनुभवों को चुनने एवं कार्यान्वित रूप में लाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से उन सीखने की क्रियाओं को शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है। आयोजन वह संरचना एवं ढांचा है जिसको अपनाकर अनुभवों के आधार पर निर्मित किया जाता है। पाठ्यचर्या को निम्न प्रमुख प्रकारों के द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है –

1. कोर पाठ्यचर्या
2. समेकित पाठ्यचर्या
3. सैद्धान्तिक पाठ्यचर्या
4. क्रिया केन्द्रित पाठ्यचर्या
5. पुनर्संरचनात्मक पाठ्यचर्या

1.6.1 कोर पाठ्यचर्या

कोर पाठ्यचर्या वह है जिसमें बालक को कुछ विषय अनिवार्य रूप से पढ़ने होते हैं तो कुछ विषयों का विविध विषयों में से चुनाव करना पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कोर पाठ्यचर्या को अधिक महत्व दिया है। पाठ्यचर्या इस बात पर बल देता है कि विद्यालय अधिक सामाजिक दायित्वों को ग्रहण करे और सामाजिक रूप से कुशल क्षमतावान कर्तव्यपरायण व्यक्तियों का निर्माण करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में वर्णित है कि हमारा भारतीय समाज अनेक वर्गों, सम्प्रदायों, जातियों, संस्कृतियों, सभ्यताओं, प्रथाओं, मान्यताओं, भौगोलिक स्थितियों तथा विविध भाषाओं में बँटा हुआ है। इसलिए पाठ्यचर्या का सृजन स्थानीय भाषायी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

1.6.2 समेकित पाठ्यचर्या

बीसवीं शताब्दी में मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक नये प्रयोग हुए तथा अधिगम के अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए। इन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अमेरिकी विद्यालयों में एकीकृत पाठ्यचर्या का विकास हुआ। एकीकृत पाठ्यचर्या एकीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है, जिसके अनुसार कोई विचार तथा क्रिया तभी प्रभावशाली एवं उपयोगी होती है जब उसके विभिन्न भागों या पक्षों में एकता होती है। अतः एकीकृत पाठ्यचर्या से हमारा तात्पर्य उस पाठ्यचर्या से है जिसमें उसके विभिन्न विषय एक दूसरे से इस प्रकार सम्बन्धित होते हैं कि उनके बीच कोई अवरोध नहीं होता, बल्कि उनमें एकता होती है। इस प्रकार पाठ्यक्रमों के विभिन्न विषयों के ज्ञान को विभिन्न खण्डों में प्रस्तुत न करके बल्कि समस्त ज्ञान को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

1.6.3 सैद्धान्तिक पाठ्यचर्या

यह पाठ्यचर्या में एक निश्चित सवाल ''क्या एक पाठ्यचर्या है'' और ''कैसे पाठ्यचर्या में अस्तित्व आता है'' यह ज्ञान की प्रबोधक स्थानान्तरण के सिद्धान्त को एक परिचय के रूप में करने का कार्य करता है।

1.6.4 क्रिया केन्द्रित पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या के विभिन्न प्रकारों में क्रिया केन्द्रित पाठ्यचर्या भी विशेष महत्व रखता है। शैशवावस्था में बालक क्रिया प्रधान कार्य करके शिक्षा प्राप्त करने में विशेष रुचि लेता है। अतः प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर क्रिया केन्द्रित पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है। जिससे बालक में क्रियात्मकता व सृजनात्मकता का विकास किया जा सके। क्रिया केन्द्रित पाठ्यचर्या क्रिया या कार्य को आधार बनाता है। इसके अंतर्गत कक्षा कार्य के लिए अन्तर्वस्तु का चयन शिक्षार्थियों की अभिरुचियों, आवश्यकताओं, समस्याओं तथा अनुभव के आधार पर किया जाता है। यह पाठ्यचर्या विषय आधारित पाठ्यचर्या की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप विकास में आया है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका सूत्रपात प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री पेस्टालॉजी तथा रूसो ने किया है। परन्तु इसके वास्तविक प्रणेता प्रसिद्ध अमेरिकी शिक्षाविद् जॉन डीवी थे।

1.6.5 पुनर्संरचनात्मक पाठ्यचर्या

विद्यालयों की पाठ्यचर्या पुस्तकीय ज्ञान पर अधिक बल देता है तथा इसमें व्यावहारिक क्रियाओं एवं अनुभवों को कम महत्व प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही पाठ्यक्रम का निर्माण परीक्षा की दृष्टि से किया जाता है। चूँकि भारतीय विद्यालयी पाठ्यचर्या में कौशलों के विकास तथा उचित अभिरुचियों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों के प्रतिपादन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। अतः यह आधुनिक ज्ञान एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सफल नहीं हो सका है। उनकी तुलना में हमारे देश में इस ओर बहुत ही कम ध्यान दिया गया। अतः भारतीय स्कूली पाठ्यचर्या को विकसित करने, उसे उन्नत करने तथा उसमें उपयुक्त सुधार करने की नितान्त आवश्यकता है।

पाठ्यचर्या पुनर्संरचना का प्रथम व्यापक प्रयास गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा के माध्यम से प्रारंभ हुआ परन्तु ब्रिटिश काल में कोई प्रभावशाली कार्य न हो सका। इसके अन्तर्गत हस्तकला को केन्द्र मानकर सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया गया। हस्तकला के साथ साथ भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण को भी पाठ्यचर्या में स्थान दिया गया। अध्ययन के द्वारा विभिन्न विषयों में सह–सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया।

1.7 पाठ्यचर्या के उपागम

किसी भी पाठ्यचर्या के विषय में समझ विकसित करना इस बात पर निर्भर करता है कि पाठ्यचर्या निर्माणकर्ताओं ने किस उपागम को माना है । पाठ्यचर्या के लिए अपनाया गया उपागम उसके भविष्य को उसकी स्थिति को बताता है। ओरंस्टीन व हंकिंस (1988) ने पाठ्यचर्या उपागम की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं:–

पाठ्यचर्या उपागम पाठ्यचर्या की संपूर्ण स्थिति को दर्शाता है अथवा पाठ्यचर्या के आधारभूत स्तंभ, पाठ्यचर्या का ज्ञान क्षेत्र एवं उसके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक नियमों को दर्शाता है।

यह पाठ्यचर्या के विकास एवं निर्माण के विचार को दर्शाता है, पाठ्यचर्या नियोजन में शिक्षार्थी, शिक्षक और पाठ्यचर्या विशेषज्ञों की भूमिका पर प्रकाश डालता है और उन महत्वपूर्ण मुद्दों को बताता है जिन्हें जाँचने की आवश्यकता है। अधिकांशतः यह विस्तृत परिप्रेक्ष्य में उन सैद्धान्तिक स्थितियों पर निर्भर करता है जो विद्यालयों अथवा महाविद्यालयों में शैक्षिक व्याख्यानों की रचना विकास एवं उन्हें लागू करने में अपनाई जाती हैं । यहाँ हमारा

तात्पर्य उन सैद्धान्तिक स्थितियों को स्पष्ट करने से है जिन्होंने पाठ्यचर्या के संप्रत्यय एवं प्रक्रिया को प्रभावित किया है।

यद्यपि, आप विभिन्न लेखकों के द्वारा अपनाए गए उपागमों की चर्चा कर सकते हैं, लेकिन इस समय हम ओरंस्टीन एवं हंकिन्स (1988) द्वारा सुझाए गए पाँच उपागमों पर चर्चा करेंगे। इनकी चर्चा निम्नलिखित उपभागों में की गई है –

1.7.1 व्यवहारिक–तार्किक उपागम

यह उपागम तार्किक – वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है जिसका उद्गम बीसवीं सदी में व्यवहार विज्ञान के प्रभुत्व में हुई खोजों के द्वारा हुआ है। इस उपागम को तार्किक, प्रत्यक्षवादी, संकल्पनात्मक, अनुभवतावादी, प्रयोगवादी, तार्किक, वैज्ञानिक एवं उद्योग तंत्रवादी भी कहते हैं। इस उपागम को मानने वाले इस बात में विश्वास रखते हैं कि पाठ्यचर्या एक क्रमबद्ध एवं संरचनात्मक क्रिया है। वे इस बात पर बल देते हैं कि कोई भी क्रिया लक्ष्य एवं उद्देश्यों से प्रारंभ होकर विषयवस्तु को क्रमबद्ध करने या अधिगम अनुभवों को क्रमबद्ध करने और फिर अधिगम उपलब्धियों का मूल्यांकन (शिक्षार्थी की उपलब्धियाँ) विषयवस्तु एवं अनुभवों के निष्पादन पर निर्भर करती है।

व्यवहार विज्ञान उपागम व्यवहारगत उद्देश्यों की ओर उन्मुख है। इसका अर्थ है कि अध्यापन के पश्चात् शिक्षार्थियों में से उद्देश्य उनके व्यवहार में प्रत्यक्ष रूप से उतरते दिखाई दें। इस उपागम की इस बात के लिए आलोचना होती है कि यह निम्न स्तर के उद्देश्य प्राप्ति जैसे– जोड़ना, स्मरण, आदि के लिए तो सही है परंतु उच्च स्तरीय चिन्तन कौशलों जैसे– विवेचनात्मक विश्लेषण, सम्प्रेषित सोच आदि के लिए अव्यवहारिक है।

1.7.2 प्रणाली–प्रबंधन उपागम

इस उपागम के अनुसार विद्यालय को एक सामाजिक प्रणाली के रूप में देखा जाता है। विद्यालय द्वारा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रणालियाँ मिलकर काम करती हैं। विद्यालय के विभिन्न घटक इस प्रकार हैं शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यचर्या, विशेषज्ञ और वे दूसरे लोग जो कुछ विशेष नियमों एवं मानदंड़ों के अंतर्गत इनसे परस्पर अंतःक्रिया करते हैं। इस प्रकार यह उपागम कार्यक्रम, कार्य सूचियाँ, विधियाँ एवं मुक्तियाँ, मानवीय सम्बन्धों एवं निर्णय लेने पर केन्द्रित है (ओरंस्टीन एवं हकिन्स, 1986)। व्यावहारिक तार्किक उपागम की तरह इस उपागम का ध्यान उद्देश्यों, विषयवस्तु, अधिगम अनुभवों का मूल्यांकन, इत्यादि न होकर, विद्यालय की विभिन्न प्रणालियों (जो योजना एवं लोगों द्वारा बनाई गई नीतियों पर आधारित हैं) के प्रबंधन पर होता है। इसमें पाठ्यचर्या रचना एवं प्रणाली प्रबंधन सम्मिलित है। जहाँ प्रबंधनात्मक परिप्रेक्ष्य व्यक्तियों एवं नीतियों के संगठन पर बल देता है वहीं प्रणालियाँ के परिप्रेक्ष्य में तीन मुख्य घटक हैं– अभियांत्रिकी, अवस्था एवं संरचनाएँ। अभियांत्रिकी में वे प्रक्रियाएँ हैं जिनसे अभियंता, जैसे– कार्यालय प्रमुख, निदेशक, अधीक्षक एवं समन्वयक पाठ्यचर्या योजना बनाते हैं। अवस्थाएँ विकास करने, डिजाइन तैयार करने एवं मूल्यांकन करने जैसे कार्य को पूरा करती है। संरचना, विषयवस्तु पाठ्यचर्या, इकाई एवं पाठ से सम्बन्धित है।

1.7.3 बौद्धिक–शैक्षिक उपागम

इस उपागम का उद्गम जॉन डीवी, हेनरी मॉरिसन एवं बॉयड बोडे के बौद्धिक कार्यों से हुआ जो 1930–1950 के बीच एक लोकप्रिय उपागम बन गया। यह पाठ्यचर्या के मुख्य प्रचलनों, स्थितियों एवं संप्रत्यय पर बल देता है एवं उसका विश्लेषण करता है। यह विद्यालय की गतिविधियों एवं शिक्षा को एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखता है और शिक्षा को ऐतिहासिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से देखता है। यह मुख्यतः पाठ्यगामी क्रियाओं एवं सिद्धान्तों पर जोर देता है, जो परंपरागत, विश्व कोश, बौद्धिक, ज्ञान आधारित उपागम है (आरंस्टीन एवं हंकिन्स, 1993)।

1.7.4 मानवतावादी–सौन्दर्यात्मक उपागम

व्यावहारिक–तार्किक संगत उपागम के विपरीत यह प्रत्येक शिक्षार्थी की आवश्यकताओं, रूचियों एवं योग्यता पर बल देता है। प्रत्येक शिक्षार्थी अपने आप में अद्वितीय है एवं पाठ्यचर्या का निर्माण एवं विकास इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं चिंतन एवं स्व–विकास में रूचि लेता है। मानवतावादी सिद्धान्तों से निकलने वाला यह उपागम स्वाभिमान, अधिगम में स्वतंत्रता एवं व्यक्तिगत पूर्णता के मूल्य पर बल देता है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी के बीच परस्पर चर्चा से समस्या समाधान और

अन्वेषण प्रवृत्ति पर भी बल देता है। आपसी सहयोग से मिलकर, स्वतंत्र रूप से अधिगम, छोटे–छोटे समूहों में शिक्षण प्राप्त करना, कुछ ऐसी पाठ्यचर्या युक्तियाँ हैं जो इस उपागम से मिलती हैं। इस उपागम में कला, संगीत एवं साहित्य जैसे क्षेत्र भी सम्मिलित हैं जिससे शिक्षार्थी के बौद्धिक विकास की तुलना में मानवीय विकास अधिक होता है।

1.7.5 पुनर्संकल्पित उपागम

इस विचारधारा के मानने वालों ने पाठ्यचर्या के विकास में किसी प्रकार से तकनीकी ज्ञान के द्वारा कोई योगदान नहीं दिया है अपितु एक नए परिप्रेक्ष्य को जन्म दिया है जो विषयात्मक, राजनीतिक एवं आदर्शवादी प्रकृति का है। इस परिप्रेक्ष्य की जड़ें सामाजिक संक्रियतावादी एवं पुनर्संरचनावादी लोगों जैसे– काण्ट, रूग एवं बैंजामिन के दर्शनशास्त्र में है। वे पाठ्यचर्या के परम्परागत वैज्ञानिक और तर्कसंगत विचारों को चुनौती देते हैं। वे शिक्षा के नैतिक और आदर्शवादी मुद्दों पर बल देते हैं और समाज की आर्थिक व राजनीतिक संस्थाओं के निर्माण पर बल देते हैं। इसका मुख्य सिद्धान्त है कि शिक्षार्थी जितना अधिक अपने आपको समझेगा, उतना ही अपने चारों ओर के वातावरण को समझेगा। इसलिए पाठ्यचर्या विकास को इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति और समाज के समकालीन ढाँचे से जुड़ना चाहिए।

1.8 पाठ्यचर्या एवं शिक्षकों की भूमिका

मुख्य रूप से शिक्षक ही पाठ्यचर्या को कक्षाकक्ष में क्रियान्वित करता है। शिक्षकों की भूमिका पाठ्यचर्या निष्पादन एवं मूल्यांकन में परिभाषित है। यदि शिक्षक को पाठ्यचर्या विकास में सम्मिलित किया जाए तो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया और अधिक प्रभावी होगी। पाठ्यचर्या में सुधार लाने हेतु शिक्षकों की भूमिका निर्णायक हो सकती है। ड़ोल (1996) ने निम्नलिखित तीन बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है जिनके द्वारा शिक्षक पाठ्यचर्या सुधार में प्रभावी भूमिका अदा कर सकते हैं:–

i. शिक्षार्थियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखकर,

ii. व्यक्तिगत अध्ययन में व्यस्त रहकर और

iii. अन्य शिक्षकों के साथ परस्पर चर्चा करते हुए उनके पाठ्यचर्या सम्बन्धी अनुभवों को साझा करके।

उपरोक्त तीन कारकों से वे अपनी सोच और कौशल का प्रयोग करके अधिगम अनुभवों की गुणवत्ता को सुधार सकते हैं। इन अनुभवों को वे शिक्षार्थियों को प्रदान करते हैं। शिक्षक शिक्षार्थियों में समझ और सहनशीलता बढ़ाते हुए, जिज्ञासा को जगाते हुए और स्वयं चिंतन के लिए प्रेरित करते हुए शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रयास करते हैं। शिक्षण का तरीका भी पाठ्यचर्या निष्पादन को प्रमुख रूप से प्रभावित करता है। अतः शिक्षकों को पाठ्यचर्या योजना, विकास, निष्पादन मूल्यांकन एवं संशोधन की प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।।

5. पाठ्यचर्या कितने प्रकार की होती है ?

....

....

6. पाठ्यचर्या के कितने उपागम हैं ?

....

....

मानवतावादी उपागम के अनुसार पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य क्या हैं ?

....

....

7. पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम का बड़ा रूप है। (सत्य / असत्य)

....
....

8. कोर पाठ्यचर्या क्या है ?

....
....
....

1.9 सारांश

इस इकाई में हमने ''पाठ्यचर्या'' पद की परिभाषा पर चर्चा किया। पाठ्यचर्या पद की विभिन्न व्याख्याओं की जाँच की। संदर्भ के आधार पर पाठ्यचर्या के अध्ययन कार्यक्रम, अपेक्षित अधिगम प्राप्ति उत्पाद और शिक्षण अनुभवों का नियोजन के रूप में व्याख्या की गई। हमने उन विभिन्न पाठ्यचर्या प्रकारों एवं उपागमों पर चर्चा की जिन्हें पाठ्यचर्या निर्माताओं ने स्वीकार किया है। एक पाठ्यचर्या उपागम पाठ्यचर्या की रूपरेखा और विकास के बारे में पाठ्यचर्या निर्माता के समग्र परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण को दर्शाता है। जिन उपागमों पर चर्चा की गई वे हैं– व्यावहारिक तार्किक प्रणाली, प्रबंधनात्मक, बौद्धिक–शैक्षिक, मानवतावादी, सौन्दर्य प्रधान, पुनः संकलित इस इकाई में हमने पाठ्यचर्या सम्बन्धीय विकास यात्रा और पाठ्यचर्या संप्रत्यय पर इसके प्रभाव की रूपरेखा प्रस्तुत की। हमने अंतर्राष्ट्रीय एवं भारतीय संदर्भ में पाठ्यचर्या विकास पर भी चर्चा किया। पाठ्यचर्या निष्पादन में शिक्षक की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। इकाई के अंत में पाठ्यचर्या में बदलाव की प्रक्रिया और पाठ्यचर्या के बदलाव व सुधार को कैसे लागू किया जाए, इन बातों पर चर्चा की गई। अंतर्निहित अनुश्रवण प्रक्रिया पर ध्यान दिया गया जिससे यह निश्चित किया जा सके कि जैसा सोचा गया है, वैसा ही पाठ्यचर्या निष्पादन हो गया है।

1.10 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व की विवेचना कीजिए।
2. पाठ्यचर्या के प्रकारों का वर्णन कीजिए।
3. पाठ्यचर्या के उपागमों की व्याख्या कीजिए।

1.11 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ्यचर्या के विभिन्न उपागमों पर चर्चा कीजिए।

1.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. जिन नियमों तथा सिद्धांतो पर चलकर शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जाता है उसे पाठ्यचर्या कहते हैं।
2. पाठ्यचर्या दो शब्दों से मिलकर बना है– पाठ्य एवं चर्या।
3. फ्रांसिस जे० ब्राउन
4. अधिगम अनुभव
5. पांच प्रकार
6. पांच उपागम
7. इस उपागम का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक शिक्षार्थी की आवश्यकताओं, रूचियों एवं योग्यता पर बल देना है।
8. सत्य

9. कोर पाठ्यचर्या वह है जिसमें बालक को कुछ विषय अनिवार्य रूप से पढ़ने होते हैं तो कुछ विषयों का विविध विषयों में से चुनाव करना पड़ता है।

1.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. आर्मस्ट्रॉग, डी. जी. (1989): डेवलेपिंग एंड डाक्यूमेंटिंग दि करीकुलम, बोस्टनः एलियन एवं बीकॉन, इंक।
2. ब्रूनर, जे. एस. (1960): दि प्रोसेस ऑफ एजुकेशन, हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. लीनी. जे. ए. एवं अन्य (1986): करीकुलम, प्लानिंग एंड डेवलपमेंट, लंदनः एलियन एवं बीकॉन।
4. कार्टर, वी. गुड (1973): डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन, न्यूयॉर्कः मैकग्रा हिल।
5. केसवेल, हालिज, एल. (1966): 'इमर्जेंस ऑफ दि करीकुलम एज ए फील्ड ऑफ प्रोफेशनल वर्क एंड स्टडी इन हेलन पी. रोबिनसंन, (संपा.), प्रीसीडेंट्स एंड प्रोमीसिजस इन दि कैरीकुलन्ज फील्ड न्यूयार्कः टीचर्स कालेज प्रेस।
6. एन.सी.ई.आर.टी. (2005): नेशनल कैरिकुलम फेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन, नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी।
7. टेनर डेनियल एंड टेनर लायूरिल एन. (1980): कैरीकुलम डेवलपमेंटः थ्योरी इनटू प्रैक्टिस, न्यूयॉर्कः मैकमिलन।
8. विलयर, डी.के. (1976): कैरीकुलम प्रोसेस, लंदनः यूनिवर्स।
9. वेल्स, जॉन एवं बूंदी, जोसफ (1989): कैरीकुलम डेवलपमेंट, ओहियोः मैरिल पब्लिशिंग कंपनी।
10. Crow, I-D, Alice Crow (1962): Introduction of Education. Eurasia Publishing House, New Delhi.
11. Spears, H (1953): Some Principles of Teaching, Prentice Hall, New York.
12. Saler and others (1956): Curriculum Planning for Better Teaching and learning, Rinchart, NewYork.
13. माथुर, एस.एस. (1981): शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
14. मिश्र, आत्मानन्द (1985): शिक्षण कला, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
15. पाल, एस. के. एवं अग्रवाल, के. एल. (1995): शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, वसुधा प्रकाशन, गोरखपुर।

इकाई – 02 : (i) पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु के मध्य अन्तर (ii) शिक्षण तथा अनुदेशन के मध्य अन्तर (iii) पाठ्य पुस्तक तथा संदर्भ पुस्तक के मध्य अन्तर (iv) अनुपूरक पुस्तक तथा कार्य–पुस्तिका के मध्य अन्तर

इकाई संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 इकाई के उद्देश्य

2.3 पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु में अंतर

2.3.1 पाठ्यचर्या की परिभाषा

2.3.2 पाठ्यक्रम की परिभाषा

2.3.3 विषयवस्तु की परिभाषा

2.3.4 पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व विषयवस्तु में अंतर

2.4 शिक्षण तथा अनुदेशन में अंतर

2.4.1 शिक्षण का अर्थ

2.4.2 अनुदेशन का अर्थ

2.4.3 शिक्षण तथा अनुदेशन में अंतर

2.5 पाठ्यपुस्तक तथा सन्दर्भ पुस्तक में अंतर

2.5.1 पाठ्यपुस्तक

2.5.2 संदर्भ पुस्तक

2.5.3 पाठ्यपुस्तक और संदर्भ पुस्तक में अंतर

2.6 अनुपूरक पुस्तक तथा कार्य–पुस्तिका में अंतर

2.6.1 अनुपूरक पुस्तिका

2.6.2 कार्य पुस्तिका

2.6.3 अनुपूरक पुस्तक तथा कार्य–पुस्तिका में अंतर

2.7 सारांश

2.8 अभ्यास के प्रश्न

2.9 चर्चा के बिन्दु

2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

पाठ्यचर्या शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक साधन है। इस साधन से विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही जुड़ते हैं। पाठ्यचर्या के माध्यम से ही विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। इसके माध्यम से ही शिक्षक छात्रों का समग्र विकास कर पाते हैं। जबकि पाठ्यक्रम उन सभी क्रियाओं के संचालन का योग है जिसे हम

विद्यार्थियों के विकास के लिए संचालित करते हैं। यह किसी विषय में अध्ययन करायी जाने वाली सामग्री होती है। यद्यपि यह निर्देशात्मक होता है जो सामान्य तौर पर पाठ्यवस्तु पर ही आधारित होता है। यह निर्देशित करता है कि ग्रेड प्राप्त करने के लिए किन विषयों का ज्ञान किस स्तर तक प्राप्त करना आवश्यक होता है। इसका उद्देश्य ज्ञान, कोशल एवं दृष्टिकोण का विकास है।

शिक्षण का अभिप्राय होता है सिखाना। यह त्रिआयामी प्रक्रिया है। जिसमें तीनों आयाम हैं छात्र, शिक्षक एवं पाठ्यक्रम। यह प्रक्रिया दो रूपों में पायी जाती है जिसमें एक है शिक्षक केन्द्रित एवं दूसरी है छात्र केन्द्रित प्रक्रिया। यद्यपि अब इस समय छात्र केन्द्रित प्रक्रिया को अपनाने पर जोर दिया जाता है। जिसमें पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक छात्रों को शिक्षित करने का कार्य करता है। यदि हम अनुदेशन की बात करें तो इसका अर्थ है निर्देश देना या सूचना प्रदान करना। कक्षा शिक्षण के समय एक शिक्षक द्वारा छात्रों को विभिन्न प्रकार निर्देश देना तथा सूचनायें प्रदान करना। इसमें शिक्षक अधिक क्रियाशील रहता है तथा वह शिक्षण सामग्री को अधिक महत्व देता है। इस प्रकार यह प्रक्रिया केवल ज्ञानात्मक पक्ष पर बल देता है।

जिसमें किसी विशेष विषय के बारे में तथ्य होते हैं तथा जिसका उपयोग हम उस विषय के अध्ययन में प्रयोग करते हैं उसे पाठ्यपुस्तक कहते हैं। अर्थात् अध्ययन की किसी शाखा के सामग्री का व्यापक संकलन को हम पाठ्य पुस्तक कहते हैं। यह अलग–अलग विषयों की अलग–अलग होती है। जबकि यदि हम संदर्भ पुस्तक की बात करें तो यह गैर काल्पनिक पुस्तक होती है। इसमें किसी विषय के बारे में तथ्यात्मक जानकारी होती है, जैसे– विश्वकोश, शब्दकोश, जर्नल, इ–बुक्स, गजट, सर्वे रिपोर्ट और एटलस इत्यादि। इस प्रकार की पुस्तकें सूचना स्रोत के लिए उपयोग में लायी जाती हैं। यह प्रायः प्रमाणिक होती हैं। इनका लेखन विद्वान विशेषज्ञों या समिति के द्वारा किया जाता है।

अनुपूरक पुस्तक ऐसे पुस्तक को कहा जाता है जो बच्चों में मौलिकता, सृजनात्मकता और चिंतनशीलता को विस्तार देता है। एसी सामग्री पढ़ने से छात्र नए क्षेत्रों से परिचित होते हैं एवं उनकी क्षमता का विकास तो होता ही है साथ ही उनमें रूचि भी पैदा होती है। जबकि कार्य पुस्तिका से छात्रों में अभ्यास करने की प्रेरणा मिलती है। इन्ही सब सम्प्रत्ययों को हम इस अध्याय में विस्तार से जानने का प्रयास करेंगे।

2.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम को परिभाषित कर सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम में अन्तर कर सकेंगे।
3. पाठ्यक्रम एवं विषयवस्तु की परिभाषा बता सकेंगे।
4. पाठ्यक्रम एवं विषयवस्तु में अन्तर लिख सकेंगे।
5. शिक्षण तथा अनुदेशन को उदाहरण सहित अन्तर स्थापित कर सकेंगे।
6. पाठ्यपुस्तक तथा संदर्भ पुस्तक का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे।
7. अनुपूरक तथा कार्यपुस्तकों का महत्व बता सकेंगे।

2.3 पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु में अंतर

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं विषयवस्तु में अनेकों अन्तर हैं जिसे निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है–

2.3.1 पाठ्यचर्या की परिभाषा

पाठ्यचर्या शिक्षा व्यवस्था का एक ऐसा केंद्र बिंदु होता है जिसके चारों ओर कक्षा के विविध कार्य तथा विद्यालय के समस्त क्रियाकलाप विकसित किये जाते हैं। पाठ्यचर्या विद्यालय की समस्त गतिविधियों के संचालन की रूपरेखा होती है। विद्यालय में उपलब्ध सभी संसाधन जैसे– विद्यालय भवन, विद्यालय के अन्य उपकरण, पुस्तकालय की पुस्तकें तथा अन्य शिक्षण सामग्री का एक मात्र उद्देश्य पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग देना है।

पाठ्यचर्या शिक्षा का आधार है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। यह एक ऐसा साधन है जो छात्र तथा अध्यापक को जोड़ता है। अध्यापक पाठ्यचर्या के माध्यम से छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए प्रयास करता है। इसमें शिक्षण विधियाँ, पाठ, असाइनमेंट, शारीरिक और मानसिक अभ्यास, गतिविधियाँ, परियोजनाएँ, अध्ययन सामग्री, ट्यूटोरियल, प्रस्तुतियाँ, मूल्यांकन, परीक्षण श्रृंखला, सीखने के उद्देश्य आदि सम्मिलित हैं।

2.3.2 पाठ्यक्रम की परिभाषा

पाठ्यक्रम को उन प्रलेखों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिनमें किसी विशेष विषय में सम्मिलित विषय या भाग निहित होते हैं। यह सम्बंधित परीक्षा अथवा शैक्षिक कार्यक्रम संचालकों द्वारा निर्धारित किया जाता है और विशेषज्ञों द्वारा बनाया जाता है। पाठ्यक्रम की गुणवत्ता के लिए सम्बंधित विशेषज्ञ जिम्मेदार हैं। यह छात्रों का ध्यान विषय की ओर आकर्षित करने और उनके अध्ययन को गंभीरता से लेने के लिए शिक्षकों द्वारा प्रिंट प्रति (Print Copy) या इलेक्ट्रॉनिक रूप में उपलब्ध कराया जाता है।

एक पाठ्यक्रम को प्रभारी के साथ–साथ छात्रों के लिए भी एक मार्गदर्शक माना जाता है। यह छात्रों को विषय के बारे में विस्तार से जानने में सहायता करता है, यह उनके अध्ययन के पाठ्यक्रम में संतुलन स्थापित करता है। इसके अतिरिक्त अमुक विषयवस्तु पाठ्यक्रम का का हिस्सा क्यों है? छात्रों से क्या अपेक्षाएं हैं? विद्यार्थियों की परीक्षाओं में विफलता के परिणाम आदि पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार किये जाते हैं। इसमें सामान्य नियम, नीतियां, निर्देश, सम्मिलित विषय, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट, परीक्षण तिथियां आदि शामिल होती हैं।

2.3.3 विषयवस्तु की परिभाषा

विषयवस्तु छात्रों के लिए सामग्री के भीतर साझा किया जाने वाला विशिष्ट ज्ञान है। शिक्षकों और व्याख्याताओं के पास उस विषय में अपनी ताकत होती है जिसे पढ़ाने के लिए वे योग्य हैं। ये शिक्षक छात्रों को आवश्यक जानकारी देने के लिए विषय वस्तु में अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करते हैं।

शिक्षकों को कक्षा में जाने से पूर्व पाठ की तैयारी करनी पड़ती है, उसे पहले से ही यह निश्चित करना होता है कि अगले दिन पढ़ायी जाने वाली पाठ की इकाई में कौन–कौन से तत्त्वों का ज्ञान बालकों को कराना है और क्यों? उसमें आयी हुई वैचारिक सामग्री कौन–सी है? जिसकी जानकारी छात्रों को कराना आवश्यक है। यही वैचारिक सामग्री ही विषयवस्तु कहलाती है। शिक्षक को पहले से ही निश्चित करना होता है कि इकाई में निहित भाषायी और वैचारिक ज्ञान किस तकनीक से दिया जाय कि छात्र उसे सहज ही आत्मसात् कर सकें। यह चिन्तन ही विषयवस्तु का आधार होता है।

2.3.4 पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व विषयवस्तु में अंतर

क्र.सं.	पाठ्यचर्या	पाठ्यक्रम	विषयवस्तु
1.	पाठ्यचर्या लक्ष्य पर पहुंचने का स्थान है।	पाठ्यक्रम वह मार्ग है जिस पर चलकर लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता ळें	विषयवस्तु प्रासंगिक विषयों पर अपनी विशेषज्ञता स्थापित करने में मदद करती है।
2.	पाठ्यचर्या का क्षेत्र पाठ्यक्रम की तुलना मे अत्यन्त व्यापक होता है।	पाठ्यक्रम का अध्ययन क्षेत्र संकुचित होता है जिसमें मात्र इस बात का ज्ञान होता है कि विविध स्तरों पर बालकों को विभिन्न विषयों का लगभग कितना ज्ञान प्राप्त हुआ।	विषयवस्तु का भी क्षेत्र सीमित होता है।
3.	पाठ्यचर्या तथ्यों को रटने की उपेक्षा करता है एवं बालक के सर्वांगीण विकास को	पाठ्यक्रम में रटने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करके परीक्षा में सफल होना ही मुख्य लक्ष्य माना जाता	विषयवस्तु रटने की अपेक्षा समझने पर बल देती है।

	प्राथमिकता देता है।	है।	
4.	पाठ्यचर्या की प्रकृति परिस्थिति, आवश्यकताएं एवं समस्याओं पर आधारित है।	पाठ्यक्रम की प्रकृति पाठ्यक्रम आधारित होती है।	विषयवस्तु की प्रकृति सम्बंधित पाठ पर आधारित होती है।
5.	पाठ्यचर्या का विकास सामाजिक एवं वातावरणजन्य, परिस्थितियाँ, शैक्षिक व्यवस्था, शैक्षिक प्रणाली, परिषदें, समितियों के सदस्य करते हैं।	पाठ्यक्रम का विकास एवं प्रबंधन, शिक्षक एवं उसकी योग्यता तथा छात्रों की आवश्यकताओं द्वारा होता है।	विषयवस्तु का विकास शिक्षक केन्द्रित होता है।
6.	पाठ्यचर्या द्वारा सामाजिक परिवर्तन एवं स्थायी परिवर्तन होने की संभावना होती है।	पाठ्यक्रम के द्वारा तात्कालिक गुणों मे परिवर्तन की संभावना होती है।	विषयवस्तु द्वारा शिक्षार्थियों को नियंत्रित ज्ञान प्रदान किया जाता है।
7.	पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को असीमित क्षेत्रों में जाकर प्राप्त किया जा सकता है।	पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को कक्षा में या सीमित क्षेत्रों मे रहकर प्राप्त किया जाता है।	विषयवस्तु के उद्देश्य सीमित होते हैं।
8.	पाठ्यचर्या के अनुसार विद्यालय प्रबन्धन के अंतर्गत बदलाव किए जाते है।	पाठ्यक्रम के अनुसार केवल कक्षागत बदलाव भी सदैव जरूरी नही होते है।	विषयवस्तु के द्वारा विद्यार्थियो में व्यवहारगत परिवर्तन किया जाता है।
9.	पाठ्यचर्या शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष को महत्वपूर्ण मानता है क्योंकि वह ज्ञान प्रदान करने का आवश्यक आधार है।	पाठ्यक्रम मे शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष पर अधिक विचार किया जाता है जिससे छात्रों को व्यावसायिक ज्ञान प्रदान किया जा सके।	विषयवस्तु शिक्षा के सैद्धान्तिक व प्रयोगात्मक दोनों पक्ष को महत्व देता है।
10.	पाठ्यचर्या अपने आप में विभिन्न तत्वों के संगठन से निर्मित होता है।	पाठ्यक्रम विस्तृत पाठ्यक्रम का एक आंशिक भाग होता है।	विषयवस्तु भी अपने में विभिन्न तत्वों को समाहित किये रहती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

1. विद्यालय में कराये जाने वाले अतिरिक्त क्रियाकलाप किसके अंतर्गत आते हैं ?

....
....
....

2. पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम में एक मुख्य अंतर बताइए।

....
....
....

3. विषयवस्तु को परिभाषित कीजिये।

....
....
....

2.4 शिक्षण तथा अनुदेशन में अंतर

शिक्षण तथा अनुदेशन में अनेकों अन्तर हैं जिसे निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है–

2.4.1 शिक्षण का अर्थ

यह एक ऐसी विधा है जिसमें शिक्षक शिक्षार्थी को नियंत्रित दशाओं में ज्ञान प्रदान करता है शिक्षण का अर्थ होता है– सिखाना । शिक्षण, मानवीय कार्यों का एक ऐसा उदाहरण है जिसका उद्देश्य मानव की आन्तरिक तथा वाह्य शक्तियों में सकारात्मक परिवर्तन लाकर उसे समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है।

2.4.2 अनुदेशन का अर्थ

अनुदेशन का सामान्य अर्थ है निर्देश देना या सूचना प्रदान करना। कक्षा–शिक्षण के समय शिक्षक छात्रों को विभिन्न प्रकार के निर्देश देकर ज्ञानात्मक सूचनाएँ प्रदान करता है। जिसे हम अनुदेशन के अन्तर्गत रख सकते हैं। अनुदेशन केवल छात्रों के ज्ञान को स्मृति स्तर तक ही प्रभावित करता है, उनके व्यवहार में परिवर्तन नहीं लाता है यह ज्ञानात्मक पक्ष पर ही ध्यान देता है। अनुदेशन में शिक्षण सामग्री को अधिक महत्त्व दिया जाता है तथा इसमें शिक्षक अधिक क्रियाशील रहता है। यह एक संकुचित प्रत्यय है तथा शिक्षण प्रक्रिया का एक अंग मात्र है।

अनुदेशन विद्यार्थी अथवा बालक को ज्ञान देने के साथ–साथ उसकी मानसिक शक्तियों के विकास में भी सहायता करता है। बालक शिक्षक से काफी कुछ सुनता है और उसके निर्देश के अनुसार पुस्तकों और विभिन्न विषयों को पढ़ता है तथा ज्ञान का आत्मसात करता है ।

सी० सेशाद्री के अनुसार ''ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा का एक आवश्यक अंग है। अनुदेशन वह प्रक्रिया है जो इस ज्ञान की प्राप्ति में सहायता करती है।''

2.4.3 शिक्षण तथा अनुदेशन में अंतर

क्र.सं.	शिक्षण (Teaching)	अनुदेशन (Instruction)
1.	शिक्षण एक व्यापक अवधारणा है।	यह एक संकुचित अवधारणा है। क्योंकि यह विद्यालयी शिक्षा का अंग है।
2.	शिक्षण व्यक्ति के संपूर्ण विकास में सहायता करती है तथा यह बच्चे के जीवन को सुधारती है।	अनुदेशन ज्ञान प्रदान करने तक सीमित है। यह विद्यार्थियों को मात्र परीक्षा पास करने हेतु बनाता है।
3.	यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।	यह एक प्रकार कि कृत्रिम प्रक्रिया है क्योंकि इसमें प्राप्त ज्ञान आरोपित हो जाता है।
4.	औपचारिक शिक्षा के लिए एक निश्चित अध्यापक की आवश्यकता होती है किन्तु अनौपचारिक शिक्षा के लिए कोई भी अध्यापक हो सकता है।	इसके अंतर्गत विशेष रूप से नियुक्त अध्यापक ही कार्य कर सकते हैं।
5.	शिक्षण प्रक्रिया में बालक का स्थान मुख्य होता है क्योंकि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया बालक केंद्रित होती है।	इसके अंतर्गत अध्यापक का एक विशेष स्थान होता है अतः यह विधि अध्यापक केंद्रित या विषय केंद्रित होती है।
6.	औपचारिक शिक्षा में मूल्यांकन आवश्यक होता है किन्तु अनौपचारिक शिक्षा में यह आवश्यक नहीं होता।	इसमें भी मूल्यांकन आवश्यक होता है।
7.	शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों को परीक्षा उत्तीर्ण होने पर प्रमाण पत्र दिए जाते हैं।	इसके अंतर्गत भी परीक्षा पास होने पर प्रमाण पत्र आदि दिए जाते हैं।
8.	शिक्षण प्रक्रिया में अनुशासन पर अधिक बल दिया जाता है। क्योंकि शिक्षा जीवन का आधार है।	इसके अंतर्गत प्रदान किया गया ज्ञान अस्थायी होता है। क्योंकि इसको परीक्षा कि दृष्टि से ही प्रदान किया जाता है।
9.	शिक्षण द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान स्थिर होता है। क्योंकि बालक ज्ञान को अनुभव के साथ प्राप्त करता है।	अनुदेशन के अंतर्गत बच्चों को आदेश देकर अनुशासित किया जाता है।
10.	शिक्षण के अंतर्गत पाठ्यक्रम निश्चित तथा अनिश्चित दोनों होता है। जहाँ औपचारिक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम निश्चित होगा वहीं अनौपचारिक शिक्षा के लिए यह निश्चित नहीं होगा।	अनुदेशन के अंतर्गत पाठ्यक्रम निश्चित होता है।
11.	विधियां भी शिक्षा में निश्चित तथा अनिश्चित दोनों होती हैं। औपचारिक शिक्षा के लिए विधियां निश्चित होंगी वहीं अनौपचारिक शिक्षा के लिए यह निश्चित नहीं होंगी।	अनुदेशन के अंतर्गत निश्चित विधियां आती हैं जैसे– प्रश्नोत्तर विधि, भाषण विधि, और वाद–विवाद विधि आदि।
12.	शिक्षा प्रदान करने के लिए औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार की संस्थायें हो सकती हैं।	अनुदेशन को केवल औपचारिक संस्थानों में ही प्रदान किया जा सकता है। जैसे– स्कूल

13.	शिक्षा में औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों शिक्षाओं के लिए अलग अवधियाँ होंगी।	अनुदेशन के अंतर्गत अवधि निश्चित होती है।
14.	औपचारिक शिक्षा में निश्चित समय लगेगा परन्तु अनौपचारिक शिक्षा में अनिश्चित समय लगेगा।	इसकी समयावधि भी निश्चित होती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अन्त में दिये गये गये उत्तरों से कीजिए।

4. शिक्षण का क्या अर्थ है ?

2.6 शिक्षण तथा अनुदेशन में अंतर स्पष्ट करें ?

2.5 पाठ्य पुस्तक तथा सन्दर्भ पुस्तक में अंतर

पाठ्य–पुस्तक तथा सन्दर्भ–पुस्तक में अनेकों अन्तर हैं जिसे निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है –

2.5.1 पाठ्यपुस्तक

पाठ्य पुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जिसमें किसी विषय या पाठ्यक्रम के बारे में व्यापक जानकारी निहित होती है जिसकी छात्रों को उनके शैक्षणिक वर्षों में आवश्यकता होती है। पाठ्य पुस्तकें शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए हैं। वे अब डिजिटल प्रारूप में भी उपलब्ध होती हैं। पाठ्य पुस्तकें एक पाठ्यक्रम और एक संगठित पाठ्यचर्या पर आधारित होती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे विशिष्ट दिशा निर्देशों और एक निर्देशात्मक अनुक्रम के अनुसार लिखे गए हैं तथा वे विशिष्ट उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

पाठ्य पुस्तकों में छात्रों के ज्ञान को बेहतर बनाने के लिए अध्याय, प्रश्न, उत्तर और अभ्यास होते हैं। वे शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में भी कार्य करते हैं क्योंकि वे पाठ योजनाएँ लिख सकते हैं और पाठ्य पुस्तकों के आधार पर अपने काम को व्यवस्थित कर सकते हैं। वास्तव में, पाठ्यपुस्तकें शिक्षण सामग्री के रूप में बहुत लोकप्रिय और सुविधाजनक हैं। उनमें सीखने और सिखाने की अवधारणाएँ सम्मिलित होती हैं जिन्हें एक विशिष्ट शैक्षणिक वर्ष के के लिए निश्चित किया जाना चाहिए। पाठ्य पुस्तकें व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिए भी उपयोगी होती हैं और मुख्य रूप से परीक्षाओं के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं।

विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ पाठ्य पुस्तकें लिखते हैं। तथ्यों की गुणवत्ता, उनमें सम्मिलित चित्र और लेखन शैली एक पाठ्य पुस्तक की गुणवत्ता को परिभाषित करती हैं। चूंकि विशेषज्ञ उन्हें बनाते हैं और शिक्षा मंत्रालय या महत्वपूर्ण प्रकाशकों द्वारा अधिकृत होते हैं, शिक्षक और छात्र दोनों उनकी सामग्री पर भरोसा करते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं। यद्यपि कि, इन पुस्तकों में अशुद्धियाँ भी हो सकती हैं। अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए पाठ्य पुस्तकों की सामग्री और कार्यप्रणाली को शिक्षकों के शिक्षण कौशल के साथ जोड़ा जाना चाहिए। पाठ्य पुस्तकें केवल आरंभ करने का स्थान हैं, अंतिम उत्पाद नहीं। इसलिए, शिक्षार्थियों और शिक्षकों दोनों को ज्ञान के लिए

पाठ्यपुस्तक से आगे जाना चाहिए क्योंकि ग्रंथों में तथ्य अपर्याप्त हो सकते हैं।

2.5.2 संदर्भ पुस्तक

संदर्भ पुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जिसमें महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी या विशेष रूप से व्यवस्थित जानकारी होती है। संदर्भ पुस्तकें विश्वसनीय एवं प्रमाणिक होती हैं और विभिन्न रूपों में पाई जा सकती हैं। संदर्भ पुस्तकें दो प्रकार की होती हैं। पहला सामान्य और दूसरा विशिष्ट।

सामान्य संदर्भ पुस्तकों का दायरा व्यापक होता है और ये किसी एक विषय तक सीमित नहीं होती हैं। वे सभी क्षेत्रों में उपयोगी होती हैं। सामान्य संदर्भ पुस्तकों के कुछ उदाहरण हैं– विश्वकोश, शब्दकोश, मानचित्र, राजपत्र और जीवनी संबंधी स्रोत। विशिष्ट विषय क्षेत्रों के लिए निर्दिष्ट संदर्भ पुस्तकें विशिष्ट या विषय संदर्भ पुस्तकें कहलाती हैं। इसके कुछ उदाहरण हैं– निर्देशिकाएँ, अनुक्रमणिकाएँ, सार और ग्रंथ सूची।

संदर्भ पुस्तकें शुरू से अंत तक पढ़ने के लिए नहीं होती हैं, बल्कि केवल विशिष्ट तथ्य और पृष्ठभूमि की जानकारी खोजने के लिए होती हैं। आमतौर पर उनका उल्लेख कभी–कभी किया जाता है। आत्म–विकास के लिए संदर्भ पुस्तकों का उपयोग किया जा सकता है। वे कक्षा में प्राप्त ज्ञान के पूरक के रूप में कार्य करती हैं। इन पुस्तकों में जानकारी बड़ी संख्या में स्रोतों से ली गई होती है। जानकारी अच्छी तरह से व्यवस्थित और इस तरह से व्यवस्थित होती है कि इसे आसानी से संदर्भित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, वर्णमाला क्रम में, कालानुक्रमिक क्रम में, विस्तृत अनुक्रमणिकाएँ या असंख्य क्रॉस–रेफरेंस। उनमें आम तौर पर तथ्य होते हैं और गहन जानकारी नहीं होती बल्कि विषयों पर एक विहंगम दृष्टिकोण होता है।

2.5.3 पाठ्य पुस्तक और संदर्भ पुस्तक में अंतर

पाठ्य पुस्तक और संदर्भ पुस्तक के बीच मुख्य अंतर यह है कि पाठ्य पुस्तकें किसी पाठ्यक्रम में अध्ययन सामग्री का प्रमुख स्रोत होती हैं जबकि संदर्भ पुस्तकें अतिरिक्त जानकारी के लिए होती हैं। इसके अतिरिक्त, पाठ्य पुस्तकें एक पाठ्यक्रम और एक संगठित पाठ्यक्रम पर आधारित होती हैं, जबकि संदर्भ पुस्तकों में विषयों का विहंगम दृ श्य निहित होता है, न कि गहन जानकारी।

निम्नलिखित तालिका पाठ्य पुस्तक और संदर्भ पुस्तक के बीच अंतर को सारांशित करती है।

क्र.सं.	आधार	पाठ्य पुस्तक	सन्दर्भ पुस्तक
1.	परिभाषा	इन पुस्तकों में पाठ्यक्रम के बारे में व्यापक जानकारी सम्मिलि होती है जिसकी छात्रों को उनके शैक्षणिक वर्षों में आवश्यकता होती है।	इनमें महत्वपूर्ण विषयों पर व्यवस्थित जानकारी होती है। प्रायः यह पूरा पढ़ने के लिए नहीं होती है। इनका तात्पर्य केवल आवश्यक होने पर ही संदर्भित किया जाता है।
2.	उद्देश्य	इसमें सूचना के मुख्य श्रोत सीखना तथा शिक्षण होता है।	यह अतिरिक्त सूचना का केंद्र होती है।
3.	प्रकृति	ये पाठ्यक्रम तथा संगठित पाठ्यचर्या पर आधारित होती है।	इसमें गहराई से जानकारी न होने वाले विषयों का विहंगम दृश्य सम्मिलित होता है।
4.	सूचना	ये किताबें पूरी तरह से विद्यार्थियों के पढ़ने व अध्ययन करने के लिए होती हैं।	इन पुस्तकों का प्रयोग केवल कभी–कभी कुछ तथ्यों या जानकारी की खोज करते समय ही किया जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

6. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में किस प्रकार की पुस्तकों का प्रयोग किया जाता है ?

....
....
....

7. विश्वकोष, शब्दकोष तथा मानचित्र किस प्रकार की पुस्तक का उदहारण हैं ?

....
....
....

2.6 अनुपूरक पुस्तक तथा कार्य–पुस्तिका में अन्तर

अनुपूरक तथा कार्य–पुस्तिका में अनेकों अन्तर हैं जिसे निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है–

2.6.1 अनुपूरक पुस्तक

अनुपूरक पुस्तक जैसे– आयु अनुरुप साहित्य, यात्रा वृतांत, एकांकी नाटक, कविता, नाटक और उपन्यास, आदि वाचन अभ्यास के लिए उपयुक्त संसाधन हैं। बच्चों में मौलिकता, सृजनात्मकता और चिंतनशीलता को विस्तार देता है। बच्चों की महत्वपूर्ण सोच कौशल और विभिन्न मामलों में अंतर्दृष्टि को बढ़ाता है। यह शिक्षार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुपूरक सामग्री पढ़ने से छात्रों को नए क्षेत्रों से परिचित कराया जाता है, क्षमता विकसित करने, रुचि पैदा करने और रचनात्मक विचारों को बढ़ाने में मदद मिलती है। यह व्यापक परिप्रेक्ष्य में शिक्षार्थियों की समझ को गहरा करता है।

2.6.2 कार्य–पुस्तिका

कार्य पुस्तिका विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों को दी जाने वाली पेपर बैक पाठ्य पुस्तकें होती हैं जो प्रायः अभ्यास गतिविधियों से परिपूर्ण होती हैं जिसमें प्रश्नों के सापेक्ष रिक्त स्थान होतें हैं जिसको विद्यार्थी शिक्षकों की सहायता से भरते हैं। इनका उपयोग आमतौर पर पाठ्यक्रम से सम्बंधित महत्वपूर्ण समस्याओं और अवधारणाओं को हल करने के लिए किया जाता है जिन्हें विद्यार्थियों ने पूर्व में अपनी पाठ्य पुस्तकों से पढ़ा है कार्यपुस्तिकाओं का उपयोग प्रायः प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में छोटे विद्यर्थियों के लिए किया जाता है।

2.6.3 अनुपूरक पुस्तक तथा कार्य–पुस्तिका में अंतर

क्र.सं.	अनुपूरक पुस्तक	कार्य–पुस्तिका
1.	अनुपूरक पुस्तक शिक्षार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ।	कार्य–पुस्तिका विद्यार्थियों के क्रियाकलापों के परिणाम दर्ज करने और अभ्यास प्रश्नों के उत्तर देने के लिये प्रारूप प्रदान करती है।
2.	अनुपूरक पुस्तक शिक्षक को कक्षा में पाठ्यक्रम की सामग्री को लागू करने के नए तरीके बताती हैं।	कार्य पुस्तिका विद्यार्थियों के कार्य के सतत मूल्यांकन के लिये शिक्षक द्वारा उपयोग किया जाने वाला उपकरण है।

3.	अनुपूरक सामग्री पढ़ने से छात्रों को नए क्षेत्रों का ज्ञान होता है, उनकी सीखने की क्षमता का विकास होता है तथा उनमें रचनात्मक विचारों को बढ़ाने में मदद मिलती है।	कार्य पुस्तिका में नोट बुक की आवश्यकता नहीं होती है।
4.	अनुपूरक पुस्तक प्रशिक्षकों को छात्रों को आकर्षित करने वाले पाठों को डिजाइन करने में मदद करने के लिए उपयोगी संसाधन और गतिविधियाँ प्रदान करती हैं।	कार्य पुस्तिका विद्यार्थियों के गुणात्मक अधिगम में सहायक होती है तथा यह विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रूचि का विकास करती है।
5.	अनुपूरक पुस्तकें शिक्षकों को पढ़ाने के नए और अलग तरीके दिखाती है। इससे शिक्षक और छात्रों दोनों में अधिक रुचि पैदा होती है।	कार्य पुस्तिका में दिए गये अभ्यास कार्य विद्यार्थियों में रचनात्मकता का विकास कर उनको सीखने के लिए के लिए प्रेरित करते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी–:

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।।

8. अनुपूरक पुस्तक का क्या अर्थ है ?

....

....

....

9. कार्य–पुस्तिका का क्या अर्थ है ?

....

....

....

10. अनुपूरक पुस्तक तथा कार्य–पुस्तिका में अंतर स्पष्ट करें।

....

....

....

2.7 सारांश

शिक्षा में पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु तीनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। तीनों रूप अलग होते हुए भी शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं जिससे कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी होती है। शिक्षण तथा अनुदेशन में अंतर पाया जाता है। जहाँ शिक्षण बच्चे की समस्त आंतरिक एवं वाह्य शक्तियों के विकास में सहायक है वहीं दूसरी ओर अनुदेशन इस प्रक्रिया में केवल ज्ञान प्रदान करने तक ही सीमित है। पाठ्यपुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जिसमें किसी विषय या पाठ्यक्रम के बारे में व्यापक जानकारी निहित होती है जिसकी छात्रों को उनके शैक्षणिक

वर्षों में आवश्यकता होती है। यह अकादमिक है और पाठ्यक्रम पर आधारित है। यह शिक्षकों और छात्रों दोनों को निर्देश और मार्गदर्शन प्रदान करता है। संदर्भ पुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जिसमें महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी या विशेष रूप से व्यवस्थित जानकारी होती है। प्रायः यह पूरा पढ़ने के लिए नहीं है इसका तात्पर्य केवल आवश्यक होने पर ही संदर्भित किया जाना है। अनुपूरक पुस्तिका व्यापक परिप्रेक्ष्य में शिक्षार्थियों की समझ को गहरा करता है। कार्य पुस्तिकाओं को विद्यार्थी शिक्षकों की सहायता से भरते हैं।

2.8 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु में कुछ मुख्य अंतर लिखिए ?
2. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण तथा अनुदेशन में कौन सी प्रक्रिया प्रभावी है। स्पष्ट करें ?
3. सन्दर्भ पुस्तकों की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए ?
4. अनुपूरक पुस्तक तथा कार्य पुस्तिका में मुख्य अंतर स्पष्ट करें ?

2.9 चर्चा के बिन्दु

1. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु के बीच अन्तर की चर्चा करेंगे।
2. शिक्षार्थी अनुपूरक पुस्तक के सम्प्रत्यय पर चर्चा करेंगे।
3. शिक्षार्थी पाठ्य पुस्तक तथा संदर्भ पुस्तक में अन्तर पर चर्चा करेंगे।

2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पाठ्यचर्या
2. पाठ्यक्रम की प्रकृति संकुचित होती है जबकि पाठ्यचर्या की प्रकृति व्यापक होती है
3. विषयवस्तु विषयी ज्ञान का लघु रूप होता है जिसका ज्ञान शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों को कराया जाता है।
4. शिक्षण का अर्थ सिखाना होता है।
5. शिक्षण विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान कर उनका चहुँमुखी विकास करता है जबकि अनुदेशन केवल ज्ञान प्रदान करने तक ही सीमित है।
6. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग किया जाता है।
7. सन्दर्भ पुस्तकें
8. अनुपूरक पुस्तकें वे अधिगम सामग्री होती हैं जिनका उपयोग हम पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त करते हैं।
9. किसी छात्र के लिए अध्ययन पाठ्यक्रम के भाग के रूप में उपयोग करने के लिए समस्याओं या अभ्यास उदाहरणों की एक पुस्तक जिसे कार्य पुस्तिका कहा जाता है।
10. अनुपूरक पुस्तकें स्पष्ट रूप से लिखी जाती हैं और पूरे पाठ्यक्रम को कवर करती हैं, जबकि कार्यपुस्तिकाएँ सीखने को सुदृढ़ करने के लिए अभ्यास और असाइनमेंट प्रदान करती हैं।

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. "पाठयपुस्तक" विकिपीडिया, विकिपीडिया फाउंडेशन.
2. "दिग्दर्शन पुस्तक", एलआईएस शिक्षा नेटवर्क।
3. Crow, I.D, Alice Crow (1962), Eurasia Publishing House, New Delhi. Introduction of Education,

4. Spears, H (1953), Some Principles of Teaching, Prentice Hall, New York.
5. Saler and others (1956), Curriculum Planning for Better Teaching and learning, Rinchart, NewYork.
6. माथुर, एस० एस० (1981), शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. मिश्र, आत्मानन्द (1985), शिक्षण कला, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
8. पाल एस० के० एवं अग्रवाल, के० एल० (1995), शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, वसुधा प्रकाशन, गोरखपुर ।
9. एन.सी.ई.आर.टी. (2005). नेशनल केरिकुलम फेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन, नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी.

इकाई – 03 : पाठ्यचर्या के निर्धारक

इकाई संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 इकाई के उद्देश्य

3.3 पाठ्यचर्या निर्धारक का अर्थ

3.4. पाठ्यचर्या विकास के निर्धारक

3.4.1 पाठ्यचर्या के दार्शनिक निर्धारक

3.4.2 पाठ्यचर्या के मनोवैज्ञानिक निर्धारक

3.4.3 पाठ्यचर्या के समाजशास्त्रीय निर्धारक

3.4.4 पाठ्यचर्या के वैज्ञानिक निर्धारक

3.4.5 पाठ्यचर्या के राजनीतिक निर्धारक

3.4.6 पाठ्यचर्या के ऐतिहासिक निर्धारक

3.5 कोर पाठ्यचर्या

3.6 कोर पाठ्यचर्या की विशेषताएँ

3.7 पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

3.8 पाठ्य सहगामी क्रियाओं से सम्बन्धी गतिविधियों का महत्व

3.9 सारांश

3.10 अभ्यास के प्रश्न

3.11 चर्चा के बिन्दु

3.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

विद्यालय में कक्षा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने तथा शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है। पाठ्यचर्या सम्पूर्ण परिस्थितियों का वह समूह होता है जिसके माध्यम से शिक्षक व विद्यालय विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन करके उनका सर्वांगीण विकास करते हैं। पाठ्यचर्या में केवल विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने की ही बात नहीं की जाती बल्कि उनमें विभिन्न कौशलों ,रुचियों, मनोवृतियों आदि का विकास कर उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता है है। पाठ्यचर्या निर्माण के कई आधार होते हैं परन्तु प्रमुख रूप से तीन शास्त्र पाठ्यचर्या के आधार निश्चित करते हैं। प्रथम आधार दार्शनिक आधार है जिसमें शिक्षा के उद्देश्य व लक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति, शिक्षा में मूल्यों का समावेश, व्यवहारिकता इत्यादि का निर्धारण होता है। पाठ्यचर्या का मनोवैज्ञानिक निर्धारक कक्षा में शैक्षिक लक्ष्यों को व्यावहारिक रूप से प्रस्तुत करता है। कितना और किस प्रकार का ज्ञान किस कक्षा स्तर, आयु स्तर के बालकों के लिए उपयुक्त है? व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या निर्माण करने में भी शिक्षा मनोविज्ञान मदद करता है। मनोविज्ञान का सबसे अधिक प्रभाव शिक्षण विधियों व शिक्षा तकनीकियों पर पड़ता है। शिक्षण विधियों को भी पाठ्यचर्या का अंग माना जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान पाठ्यचर्या निर्धारण का दूसरा प्रमुख आधार माना जाता है। पाठ्यचर्या निर्माण का तीसरा प्रमुख निर्धारण समाजशास्त्रीय होता है जिसमें व्यक्ति के सामाजिकता के प्रमुख गुणों का समावेश किया जाता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है इसलिए उसका समाज के प्रति उसकी कुछ जिम्मेदारियां होती हैं

तथा समाज भी उससे कुछ सकारात्मक कार्यों की अपेक्षाएं रखता है । शिक्षा के लक्ष्य सामाजिक परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होते हैं इसीलिए पाठ्यचर्या के इस निर्धारक में समाज के उत्थान से सम्बंधित विषयवस्तु का समावेश होना आवश्यक होता है क्योंकि शिक्षा व समाज एक दूसरे के पूरक हैं अतः शिक्षा के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति पर समाज का विकास निर्भर करता है।

3.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के पश्चात आप इस योग्य हो जायेंगे कि –

1. पाठ्यचर्या विकास के लिए विषय की प्रकृति का वर्णन कर सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के सम्बन्ध में जनाकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले दार्शनिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों (निर्धारकों) को स्पष्ट कर सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों से अवगत हो सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या निर्धारक को प्रभावित करने वाले कारकों की विवेचना कर सकेंगे।

3.3 पाठ्यचर्या निर्धारक का अर्थ

पाठ्यचर्या कभी भी वर्षों तक स्थिर नहीं रहती। यह देखा गया है कि जब भी शिक्षा के उद्देश्यों को बड़े पैमाने पर शिक्षार्थी, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं और मांगों के अनुरूप बदल दिया जाता है, तो पाठ्यचर्या का स्वरूप बदल जाता है। इस प्रकार, पाठ्यचर्या विभिन्न कारकों द्वारा निर्देशित होती है जिन्हें पाठ्यचर्या निर्धारक कहा जाता है। पाठ्यचर्या निर्धारक शब्द उन कारकों को संदर्भित करता है जो पाठ्यचर्या के अभिकल्प, विकास और कार्यान्वयन को प्रभावित करते हैं। इसे उस कारक के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है जिससे पाठ्यचर्या सामग्री प्राप्त होती है।

3.4 पाठ्यचर्या विकास के निर्धारक

पाठ्यचर्या के कुछ महत्वपूर्ण निर्धारक निम्नलिखित है :–

- पाठ्यचर्या के दार्शनिक निर्धारक
- पाठ्यचर्या के मनोवैज्ञानिक निर्धारक
- पाठ्यचर्या के समाजशास्त्रीय निर्धारक
- पाठ्यचर्या के वैज्ञानिक निर्धारक
- पाठ्यचर्या के राजनीतिक निर्धारक
- पाठ्यचर्या के ऐतिहासिक निर्धारक

3.4.1 पाठ्यचर्या के दार्शनिक निर्धारक

दर्शन पाठ्यचर्या के सबसे महत्वपूर्ण निर्धारकों में से एक है क्योंकि यह हमारे शैक्षिक उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्रभावित करता है। यह हमें विश्वासों और मूल्यों की अपनी व्यक्तिगत प्रणालियों से निपटने में मदद करता है। दार्शनिक मुद्दे स्कूल और समाज पर प्रभाव डालते हैं। यह लोगों के आदर्शों और आकांक्षाओं को दर्शाता है। यह युवाओं में जीवन के वांछित आदर्शों को विकसित करता है। इस प्रकार, शिक्षा का दर्शन हमारे शैक्षिक निर्णयों, विकल्पों आदि को प्रभावित करता है और काफी हद तक इनकी दिशा को निर्धारित करता है।

दर्शनशास्त्र के निम्नलिखित विद्यालय पाठ्यचर्या को प्रभावित करते हैं–

1. आदर्शवाद

2. प्रकृतिवाद

3. व्यावहारिकता

4. यथार्थवाद

5. अस्तित्ववाद

3.4.2 पाठ्यचर्या के मनोवैज्ञानिक निर्धारक

पाठ्यचर्या मनोविज्ञान से प्रभावित होती है। मनोविज्ञान शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह शिक्षार्थी की प्रकृति और सीखने की प्रक्रिया और इष्टतम सीखने की सुविधा प्रदान करने वाली स्थितियों का ज्ञान प्रदान करता है। यह वृद्धि और विकास बुद्धि, विकास क्षमताओं का ज्ञान भी प्रदान करता है। पाठ्यचर्या बच्चों पर केंद्रित होनी चाहिए, सीखने वाले के मानसिक विकास के अनुसार सीखने के अनुभव प्रदान किए जाने चाहिए। सीखने में निम्नलिखित कुछ मनोवैज्ञानिक सिद्धांत हैं जिन्होंने पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित किया है–

1. व्यवहारवाद

2. गेस्टाल्टिज्म

3. मानवतावाद

3.4.3 पाठ्यचर्या के समाजशास्त्रीय निर्धारक

समाज और पाठ्यचर्या के बीच एक पारस्परिक संबंध है क्योंकि स्कूल सामाजिक संदर्भ में मौजूद है। समाज ने युवा शिक्षार्थियों को एक सुसंस्कृत और सामाजिक प्राणी बनने के लिए शिक्षित करने के लिए विभिन्न औपचारिक और अनौपचारिक एजेंसियों की स्थापना की है। यह जरूरी है कि किसी देश को एक ऐसी पाठ्यचर्या बनाए रखनी चाहिए जो राष्ट्रीय पहचान के लिए उसकी संस्कृति और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित और संरक्षित करे। इस प्रकार, समाज के कई पहलू हैं जिन पर पाठ्यचर्या निर्माण में विचार की आवश्यकता है। शिक्षा को समुदाय–केंद्रित बनाने के लिए, पाठ्यचर्या तैयार करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए–

- भारतीय समाज के मूल मूल्य और आवश्यकताएँ
- लोगों के बदलते मूल्य
- आधुनिक समाज की मांगें
- जीवन के अच्छे पारिवारिक तरीके, समाज का लोकतांत्रिक स्वभाव
- आस्था, विश्वास और लोगों का दृष्टिकोण

3.4.4 पाठ्यचर्या के वैज्ञानिक निर्धारक

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति काफी सीमा तक उसकी वैज्ञानिक प्रगति पर निर्भर करती है। देश को अपनी वैज्ञानिक प्रगति के लिए सभी शाखाओं के वैज्ञानिकों की आवश्यकता है। इसके लिए वैज्ञानिक शिक्षा आवश्यक है। भारत जैसे विकासशील देश को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति की आवश्यकता है। तदनुसार, पाठ्यचर्या का निर्माण भारत में विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों से निर्धारित होता है।

3.4.5 पाठ्यचर्या के राजनीतिक निर्धारक

किसी देश में राजनीतिक व्यवस्था या सरकार का स्वरूप पाठ्यचर्या निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी देश में प्रचलित राजनीतिक माहौल युवा शिक्षार्थियों के लिए स्कूली शिक्षा और पाठ्यचर्या के प्रकार को निर्धारित करने में बहुत महत्वपूर्ण है। भारत जैसा लोकतांत्रिक देश अपने माध्यम से शिक्षार्थियों के बीच सामाजिक न्याय, समानता, समाजवाद, अधिकारों और कर्तव्यों के लोकतांत्रिक मूल्यों को विकसित करने का प्रयास करता है।

3.4.6 पाठ्यचर्या के ऐतिहासिक निर्धारक

किसी भी देश का इतिहास उसकी शैक्षिक प्रणाली और उसके पाठ्यचर्या के प्रकार को प्रभावित कर सकता है। पाठ्यचर्या के ऐतिहासिक निर्धारक पाठ्यचर्या पर उन प्रभावों को संदर्भित करते हैं जो अतीत में हुए विकास से उत्पन्न होते हैं। वे निर्णय लेने और शिक्षा प्रणाली के व्यवस्थित विकास का आधार बनते हैं। राष्ट्रों की उपलब्धियों में पाठ्यचर्या की भूमिका भविष्य की योजनाओं का मार्गदर्शन करता है तथा राष्ट्र के विकास को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों व निरर्थक परम्पराओं को समाप्त करता है।

बोध प्रश्न –

टिप्पणी :

(क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उचित उत्तर दीजिए।

(ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1. पाठ्यचर्या निर्धारक का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

   ....

   ....

2. पाठ्यचर्या निर्धारक के कितने प्रकार हैं ?

   ....

   ....

3. पाठ्यचर्या का दार्शनिक निर्धारक किसे कहते हैं ?

   ....

   ....

4. पाठ्यचर्या के मनोवैज्ञानिक निर्धारक का अर्थ स्पष्ट कीजिये।

   ....

   ....

5. पाठ्यचर्या के समाजशास्त्रीय निर्धारक का क्या अर्थ हैं ?

   ....

   ....

3.5 कोर पाठ्यचर्या

कोर शब्द की सरल परिभाषा केंद्रीय है, और यह कोर पाठ्यचर्या के इरादे को पूरी तरह से वर्णित करती है। इस अर्थ में, 'कोर' शब्द संयुक्त अध्ययन, सामान्य शिक्षा, सामाजिक जीवन और एकीकृत कार्यक्रम जैसे पाठ्यचर्या के प्रकार को संदर्भित करता है। मुख्य पाठ्यचर्या में सीखने के अनुभव शामिल हैं जो सभी शिक्षार्थियों के लिए मौलिक हैं। यह ऐसी विषय–वस्तु सिखाता है जो बच्चों को उन समस्याओं के समाधान में मदद कर सकती है जिनका सामना उन्हें एक वयस्क के रूप में करना पड़ सकता है। इस प्रकार, आवश्यक शिक्षा और अध्ययन की एक सामान्य योजना पर आधारित पाठ्यचर्या को कोर पाठ्यचर्या कहा जाता है।

प्रारंभिक चरण में बच्चे के समग्र विकास के लिए मुख्य पाठ्यचर्या पर जोर दिया जाता है। जैसे–जैसे बच्चा उच्च अवस्था में पहुंचता है, कोर का महत्व कम हो जाता है। शुरुआत में, पाठ्यचर्या सभी बच्चों के लिए समान होती है और बाद के चरण में भेदभाव होता है और छात्रों को उन विषयों को चुनने की अनुमति दी जाती है जो उन्हें

सबसे अच्छे लगते हैं। प्रारंभिक चरण में शिक्षार्थी को पहले एक इंसान बनना होता है और अंतिम चरण में उसे एक तकनीशियन, एक वैज्ञानिक, एक इंजीनियर, एक डॉक्टर, एक कलाकार बनना होता है। इस प्रकार, मुख्य पाठ्यचर्या 14 वर्ष तक के प्रत्येक स्कूली बच्चे की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करती है और यदि वह इस उम्र के बाद भी शिक्षा जारी रखना चाहता है तो उसे उन्नत अध्ययन की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

3.6 कोर पाठ्यचर्या की विशेषताएँ

1. यह सभी बच्चों के लिए सामान्य व्यक्तिगत और सामाजिक विकास की समस्याओं की संकल्पना करता है।
2. यह पारंपरिक विषय–वस्तु क्षेत्र के संदर्भ के बिना इन समस्याओं को विकसित करता है।
3. यह समस्याओं पर हमला करने के लिए समस्या–समाधान तकनीक के उपयोग को प्रोत्साहित करता है।
4. यह लोगों में सामाजिक क्षमता विकसित करने के साधन प्रदान करता है।
5. इसमें सामग्री के संबंध में काफी हद तक लचीलेपन की आवश्यकता होती है।
6. मुख्य पाठ्यचर्या की संकल्पना अध्ययन की एक सामान्य योजना द्वारा की गई है।
7. इसमें सीखने के अनुभव स्थानीय परिस्थितियों पर आधारित होते हैं।

3.7 पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ

पाठ्य–सहगामी क्रियाएं पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग होती हैं । इसे विद्यालय के सुव्यवस्थित एवं पर्यवेक्षित कार्यक्रम के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। संपूर्ण विद्यालय कार्यक्रम को दो प्रकार की गतिविधियों में विभाजित किया जा सकता है अर्थात् पाठ्यचर्या/शैक्षणिक और सह–पाठयक्रम/गैर–शैक्षणिक गतिविधियाँ। शिक्षा के वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पाठ्यचर्या/शैक्षणिक गतिविधियाँ सीधे विभिन्न विषयों की शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया से संबंधित हैं। दूसरी ओर, सह–पाठ्यचर्या/गैर–शैक्षणिक गतिविधियाँ शिक्षा के सामान्य उद्देश्य की पूर्ति करती हैं लेकिन स्कूली विषयों की सीधी शिक्षा नहीं दिलाती हैं।

पाठ्य सहगामी क्रिया का अर्थ

सह–पाठ्यचर्या शब्द में दो शब्द हैं अर्थात् 'सह' और 'पाठ्यचर्या'। 'सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ' शब्द का अर्थ उन गतिविधियों से है जो पढ़ाई के दौरान की जाती हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकार

सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों को निम्नानुसार विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. साहित्यिक या शैक्षणिक विकास के लिए गतिविधियाँ : साहित्यिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों की आत्म–अभिव्यक्ति के विकास में मदद करती हैं। छात्र घबराहट पर नियंत्रण रखना और डर से बचना सीखते हैं। वे अपनी भाषा में भी सुधार करते हैं, अपनी शब्दावली को समृद्ध करते हैं और सही उच्चारण का उपयोग करने की आदत विकसित करते हैं। साहित्यिक गतिविधियों के प्रकार निम्नलिखित हैं–

- वाद–विवाद और चर्चाएँ
- सेमिनार
- संगोष्ठी
- निबंध लेखन प्रतियोगिता
- कहानी लेखन प्रतियोगिता
- प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
- स्कूल प्रकाशन

- पुस्तकालय कार्य
- भाषण प्रतियोगिता
- कविता आदि।

2. शारीरिक विकास के लिए क्रियाएँ : ठीक ही कहा गया है कि ध्वनि स्वस्थ शरीर में ही मन निहित होता है। शरीर को फिट और स्वस्थ रखने के लिए शारीरिक गतिविधियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये गतिविधियाँ एक प्रदान करती हैं विद्यार्थियों की फालतू/अत्यधिक ऊर्जा के परिवर्तन का माध्यम। ये गतिविधियाँ शरीर की सामान्य वृद्धि और विकास में मदद करती हैं। शारीरिक गतिविधियों के प्रकार निम्नलिखित हैं:

- क्रीडा और खेल
- एथलेटिक्स
- सामूहिक परेड और सामूहिक अभ्यास
- साइकिल चलाना
- कुश्ती
- राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)
- योग आदि।

3. सामाजिक विकास के लिए गतिविधियाँ : सफल सामाजिक अनुकूलन के लिए सामाजिक गतिविधियाँ आवश्यक हैं। ये गतिविधियाँ साथी–भावना, ईमानदारी, अनुशासन, सहयोग, सहानुभूति आदि जैसे सामाजिक गुणों को सीखने में मदद करती हैं। छात्र जिम्मेदारियाँ साझा करना और टीम भावना की आदतें हासिल करना सीखते हैं। उनमें समूह, विद्यालय और राष्ट्र के प्रति निष्ठा की भावना विकसित होती है। सामाजिक गतिविधियों के प्रकार निम्नलिखित हैं–

- सुबह की सभा और सामूहिक प्रार्थना
- राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)
- स्काउट्स और गाइड्स
- स्कूल हाउस सिस्टम
- प्राथमिक चिकित्सा और रेड क्रॉस
- व्यक्तित्व विकास
- सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य
- मेलों, त्यौहारों आदि जैसे विशेष अवसरों पर सेवाएँ।

4. सांस्कृतिक विकास के लिए गतिविधियाँ : सांस्कृतिक गतिविधियाँ हमारी संस्कृति की बेहतर समझ के लिए महत्वपूर्ण हैं। छात्र अपने रीति–रिवाजों, परंपराओं और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत होते हैं। सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रकार निम्नलिखित हैं–

- लोक नृत्य और लोक गीत
- संगीत
- नाटकीयता – फैंसी ड्रेस

- प्रदर्शनियों का आयोजन
- किसी संग्रहालय या कला केंद्र का दौरा करना
- राष्ट्रीय त्योहारों का उत्सव
- धार्मिक त्योहारों आदि का उत्सव मनाना।

5. सौंदर्य विकास के लिए गतिविधियाँ : सौंदर्य विकास गतिविधियाँ कला और सौंदर्य से संबंधित हैं। छात्र अपने आसपास की दुनिया की सुंदरता की सराहना करना सीखते हैं। ये गतिविधियाँ बच्चों को कला, संगीत, नृत्य रूपों, शैलियों आदि से परिचित कराती हैं। सौंदर्य गतिविधियों के प्रकार निम्नलिखित हैं–

- कला और शिल्प
- चित्रांकन और रंगाई
- मूर्ति
- फोटोग्राफी
- सुलेख
- क्ले मॉडलिंग
- चार्ट और मॉडल तैयार करना
- रंगोली बनाना
- फूल उत्सव आदि।

3.8 पाठ्य सहगामी क्रियाओं से सम्बंधित गतिविधियों का महत्व

सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ स्कूल कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों की विविध रुचि को दर्शाती हैं और व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देती हैं। निम्नलिखित बिंदु सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों के महत्व पर प्रकाश डालते हैं–

1. **साहित्यिक महत्व** : वाद–विवाद और चर्चा, सेमिनार, संगोष्ठी, निबंध–लेखन आदि जैसी साहित्यिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों की आत्म–अभिव्यक्ति के विकास में मदद करती हैं। छात्र घबराहट पर नियंत्रण रखना और डर से बचना सीखते हैं। वे अपनी भाषा में भी सुधार करते हैं, अपनी शब्दावली को समृद्ध करते हैं और सही उच्चारण का उपयोग करने की आदत विकसित करते हैं।

2. **शारीरिक महत्व** : यह अच्छी तरह से कहा गया है कि एक स्वस्थ दिमाग एक स्वस्थ शरीर में निहित होता है। खेल–कूद, एथलेटिक्स जैसी शारीरिक गतिविधियाँ। शरीर को फिट और स्वस्थ रखने में एनसीसी, योग आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों की अनावश्यकध्अत्यधिक ऊर्जा के परिवर्तन का माध्यम प्रदान करती हैं। ये गतिविधियाँ शरीर की सामान्य वृद्धि और विकास में मदद करती हैं।

3. **सामाजिक महत्व** : सफल सामाजिक अनुकूलन के लिए सामाजिक गतिविधियाँ जैसे सुबह की सभा और सामूहिक प्रार्थना, एनएसएस, स्काउट्स और गाइड, प्राथमिक चिकित्सा और रेड क्रॉस आदि आवश्यक हैं। ये गतिविधियाँ साथी–भावना, ईमानदारी, अनुशासन, सहयोग, सहानुभूति आदि जैसे सामाजिक गुणों को सीखने में मदद करती हैं। छात्र जिम्मेदारियाँ साझा करना और टीम भावना की आदतें हासिल करना सीखते हैं। उनमें समूह, विद्यालय और राष्ट्र के प्रति निष्ठा की भावना विकसित होती है।

4. **सांस्कृतिक महत्व** : लोक नृत्य और लोक गीत, नाटक, धार्मिक त्योहारों का उत्सव आदि जैसी सांस्कृतिक गतिविधियाँ हमारी संस्कृति की बेहतर समझ के लिए महत्वपूर्ण हैं। छात्र अपने रीति–रिवाजों, परंपराओं और

समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत होते हैं।

5. **सौंदर्य संबंधी महत्व :** कला और शिल्प, ड्राइंग और पेंटिंग, रंगोली बनाना, फूल उत्सव आदि जैसी सौंदर्य विकास गतिविधियां कला और सौंदर्य से संबंधित हैं। छात्र अपने आसपास की दुनिया की सुंदरता की सराहना करना सीखते हैं। ये गतिविधियाँ बच्चों को कला, संगीत, नृत्य रूपों, शैलियों आदि से परिचित कराती हैं।

6. **मनोवैज्ञानिक महत्व :** सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ छात्रों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। ये छात्रों की प्रवृत्ति और दबी हुई भावनाओं को शांत करने के एजेंट के रूप में कार्य करते हैं। ये गतिविधियाँ भावनाओं के प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

7. **नैतिक महत्व :** नैतिक मूल्यों वाला नागरिक तैयार करना ही वास्तविक शिक्षा है। सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ नैतिक रूप से स्वस्थ मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निष्पक्षता, ईमानदारी, न्याय, पहल, वफादारी जैसे चरित्र लक्षण। इन गतिविधियों के माध्यम से सम्मान, सहनशीलता आदि का विकास किया जा सकता है।

8. **अनुशासनात्मक महत्व :** सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में भाग लेने के दौरान बच्चे विभिन्न अनुशासनात्मक मूल्य सीखते हैं। रचनात्मक अनुशासन हमेशा उद्देश्यपूर्ण गतिविधियों का उप–उत्पाद होता है।

बोध प्रश्न –

टिप्पणी :

(क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उचित उत्तर दीजिए।

(ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

6. कोर पाठ्यचर्या किसे कहते हैं ?

....

....

7. पाठ्य–सहगामी क्रियाएं किसे कहते हैं ?

....

....

3.9 सारांश

पाठ्यचर्या शिक्षण संस्थाओं में निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन होती है जिसके आधार पर अध्यापक अपनी शिक्षण –अधिगम प्रक्रिया द्वारा अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हैं द्य पाठ्यचर्या बहुत से विचारों के द्वारा निर्देशित होती है। इनमें से प्रमुख हैं दृवातावरण, बच्चे की वृद्धि एवं विकास, देश, राज्य, समाज व विद्यालय की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, विद्यालय में संस्थागत एवं शिक्षक विचारों सम्बन्धी वातावरण।

पाठ्यचर्या में केवल विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने की ही बात नहीं की जाती बल्कि उनमें विभिन्न कौशलों, रुचियों, मनोवृतियों आदि का विकास कर उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता है है। पाठ्यचर्या निर्माण के कई आधार होते हैं परन्तु प्रमुख रूप से तीन शास्त्र पाठ्यचर्या के आधार निश्चित करते हैं। प्रथम आधार दार्शनिक आधार है जिसमें शिक्षा के उद्देश्य व लक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति, शिक्षा में मूल्यों का समावेश,व्यवहारिकता इत्यादि का निर्धारण होता है। पाठ्यचर्या का मनोवैज्ञानिक निर्धारक कक्षा में शैक्षिक लक्ष्यों को व्यावहारिक रूप से प्रस्तुत करता है। कितना और किस प्रकार का ज्ञान किस कक्षा स्तर, आयु स्तर के बालकों के लिए उपयुक्त है? व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या निर्माण करने में भी शिक्षा मनोविज्ञान मदद करता है। मनोविज्ञान का सबसे अधिक प्रभाव शिक्षण विधियों व शिक्षा तकनीकियों पर पड़ता है। शिक्षण विधियों को भी पाठ्यचर्या का अंग माना जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान पाठ्यचर्या निर्धारण का दूसरा प्रमुख आधार माना जाता

है। पाठ्यचर्या निर्माण का तीसरा प्रमुख निर्धारण समाजशास्त्रीय होता है जिसमें व्यक्ति के सामाजिकता के प्रमुख गुणों का समावेश किया जाता है।

मुख्य पाठ्यचर्या में सीखने के अनुभव शामिल हैं जो सभी शिक्षार्थियों के लिए मौलिक हैं। यह ऐसी विषय–वस्तु सिखाता है जो बच्चों को उन समस्याओं के समाधान में मदद कर सकती है जिनका सामना उन्हें एक वयस्क के रूप में करना पड़ सकता है। इस प्रकार, आवश्यक शिक्षा और अध्ययन की एक सामान्य योजना पर आधारित पाठ्यचर्या को कोर पाठ्यचर्या कहा जाता है।

3.10 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या के निर्धारक का अर्थ लिखिए।
2. पाठ्यचर्या के निर्धारकों की विवेचना प्रस्तुत कीजिए।
3. कोर पाठ्यचर्या की विशेषतएं क्या–क्या हैं ?
4. पाठ्य सहगामी क्रियाओं से आप क्या समझते है ?

3.11 चर्चा के बिन्दु

1. शिक्षार्थी पाठ्यचर्या के निर्धारकों पर चर्चा करेंगे।
2. शिक्षार्थी पाठ्यसहगामी क्रियाओं के बारे में स्पष्टीकरण हेतु चर्चा करेंगे।

3.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. जब शिक्षा के उद्देश्यों को बड़े पैमाने पर शिक्षार्थी, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं और मांगों के अनुरूप बदल दिया जाता है, तो पाठ्यचर्या का स्वरूप बदल जाता है। इस प्रकार, पाठ्यचर्या विभिन्न कारकों द्वारा निर्देशित होती है जिन्हें पाठ्यचर्या निर्धारक कहा जाता है।
2. पाठ्यचर्या निर्धारक के छः प्रकार हैं।
3. दर्शन पाठ्यचर्या के सबसे महत्वपूर्ण निर्धारकों में से एक है क्योंकि यह हमारे शैक्षिक उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्रभावित करता है।
4. पाठ्यचर्या के मनोवैज्ञानिक निर्धारक शिक्षार्थी की प्रकृति और सीखने की प्रक्रिया और इष्टतम सीखने की सुविधा प्रदान करने वाली स्थितियों का ज्ञान प्रदान करता है।
5. पाठ्यचर्या के समाजशास्त्रीय निर्धारक विद्यार्थियों की राष्ट्रीय पहचान के लिए उसकी संस्कृति और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित और संरक्षित करता है।
6. सामान्य शिक्षा, संयुक्त अध्ययन, सामाजिक जीवन और एकीकृत कार्यक्रम जैसे पाठ्यचर्या के प्रकार को कोर पाठ्यचर्या कहा जाता है।
7. पाठ्य सहगामी क्रियाएं पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग होती हैं इसे विद्यालय के सुव्यवस्थित एवं पर्यवेक्षित कार्यक्रम के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।इसके अंतर्गत विद्यालय तथा विद्यालय के बाहर कराये जाने वाली समस्त शैक्षिक गतिविधियाँ शामिल होती है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं।

3.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. यादव, एस. (2010). पाठ्यचर्या विकास, आगराः श्री विनोद पुस्तक मंदिर।
2. Agrawal, J.C. (1990). Curriculum reforms in India. New Delhi.

3. Bhatt, B.D. and Sharma, S.R. (1992). Principles of Curriculum Construction. New Delhi: Kanishka Publishing House.
4. Dewal, O.S. (2004). National Curriculum- In Encyclopedia of Indian Education. New Delhi: NCERT
5. Government of India (1966). Report of the education commission 1964-66. New Delhi: Government of India.
6. Government of India (1966). National Policy on Education: 1986. New Delhi: Government of India.
7. IGNOU (1997). Curriculum and instruction (Block 1 & 2). New Delhi: IGNOU.

इकाई – 04 : पाठ्यक्रम में विभिन्न सामाजिक समूहों के ज्ञान का समावेषण और वहिष्करण

इकाई संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 इकाई के उद्देश्य

4.3 विविध वर्गीकरण

4.3.1 प्राथमिक समूह

4.3.2 द्वितीयक समूह

4.4 पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषा

4.5 पाठ्यक्रम निर्माण के आधारभूत सिद्धांत

4.5.1 पराम्पराओं को सुरक्षित रखने का सिद्धांत

4.5.2 प्रगतिशील अथवा अग्रदर्शी सिद्धांत

4.5.3 रचनात्मकता का सिद्धांत

4.5.4 क्रियाशीलता का सिद्धांत

4.5.5 जीवन की तैयारी का सिद्धांत

4.5.6 बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम

4.5.7 परिपक्वता का सिद्धांत

4.5.8 व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धांत

4.5.9 पाठ्यक्रम का लम्बरूप तथा सामान्तर दृष्टि से समन्वय

4.5.10 जीवन से सम्बद्ध करने का सिद्धांत

4.5.11 विस्तृतता तथा संतुलन का सिद्धांत

4.5.12 निष्ठा का सिद्धांत

4.5.13 नमनीयता

4.5.14 कोर या सामान्य विषय का सिद्धांत

4.5.15 खाली समय के उचित प्रयोग का सिद्धांत

4.5.16 सर्वांगीण विकास का सिद्धांत

4.6 पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में दार्शनिक विचार

4.7. पाठ्यक्रम का विभिन्नीकरण

4.8 विषय केन्द्रित एवं विषयागत पाठ्यक्रम तथा अनुभवगत अथवा क्रियाकेन्द्रित पाठ्यक्रम

4.9 अनुभवगत पाठ्यक्रम की त्रुटियाँ

4.10 पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन

4.11 परम्परागत तथा प्रगतिशील पाठ्यक्रम

4.12 पाठ्यचर्या के स्तर को ऊँचा करने पुनः निर्माण के लिए उपाय

4.13 राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित पाठ्यक्रम

4.14 पाठ्यक्रम के विभिन्न स्तरों के उद्देश्य

4.15 सारांश

4.16 अभ्यास के प्रश्न

4.17 चर्चा के बिन्दु

4.18 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.19 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

सामाजिक समूह किसी भी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के ऐसे समूह को कहते है जो एक दूसरे से सम्पर्क व लेन–देन रखे, जिनमें एक दूसरे से कुछ समानताएं हो और जो आपस में एकता की भावना रखें। कुछ समाजशास्त्रियों के अनुसार किसी गुट का सामाजिक समुदाय कहलाने से पहले यह जरूरी है कि उसके सदस्य अपने आप को उस समुदाय का भाग समझे, जबकि अन्य के हिसाब से अगर उसमें समानता है और वे एक दूसरे से परस्पर सम्बन्ध रखते हैं तो वे एक सामाजिक समुदाय हैं चाहे वे स्वयं यह पहचाने या नहीं।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगे कि –

1. समाजिक समूहों का अर्थ समझ सकेगें।
2. पाठ्यक्रम निर्माण के आधारभूत सिद्धांतों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. परम्परागत एवं प्रगतिशील पाठ्यक्रम में अन्तर कर सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या के स्तर को ऊँचा करने के उपायों को समझ सकेगें।
5. विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम के उद्देश्य से अवगत हो सकेगें।

4.3 विविध वर्गीकरण

सामाजिक समूहों को अनेक प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। कुछ लेखकों ने साधारण वर्गीकरण किया है तो अन्य लेखकों ने व्यापक वर्गीकरण किया है।

जर्मन समाजशास्त्री सिमेल (Simmel) ने आकार (size) को समूह वर्गीकरण का आधार माना है। चूँकि समाजीकृत व्यक्ति समाजशास्त्र की मूलभूत इकाई है, इसलिए उसने ''एकाक'' (Monad) एकल व्यक्ति को समूह सम्बन्धोंका केन्द्र मानकर आरम्भ किया तथा अपने वर्गीकरण में द्वेत (Dyad), त्रैत (Triad) तथा अन्य छोटे समूहों एवं विशाल–स्तरीय समूहों को सम्मिलित किया।

ड्वाइट सैडरसन (Dwight Sanderson) ने संरचना के आधार पर समूहों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है। उसने समूहों को अनैच्छिक (Involluntary), ऐच्छिक (Voluntary) एवं प्रतिनिधिक (Delegate) में विभाजित किया है अनैच्छिक समूह नातेदारी (Kinship) पर आधारित होता है यथा परिवार मनुष्य अपनी इच्छा से अपने परिवारका चयन नहीं करता। उसका तो इसमें जन्म होता है। ऐच्छिक समूह वह होता है जिसमें मनुष्य अपनी इच्छा से शामिल होता है वह अपनी इच्छा से सदस्य बनता है तथा जब उसकी इच्छा हो, वह इससे अलग भी हो सकता है। प्रतिनिधि समूह में मनुष्य कुछ लोगों के प्रतिनिधि के रूप में, भले ही लोगों के प्रतिनिधि के रूप में, भले ही लोगों ने स्वयं निर्वाचित किया हो अथवा उसका किसी सत्ता द्वारा नामाकंन हुआ हो, शामिल होता है।

संसद एक प्रतिनिधि समूह है।

टानीज (Tonnies) ने समूहों को समुदायों (Communities) एवं समितियों (Associattions) में वर्गीकृत किया है।

कूले (Cooley) ने संपर्क के प्रकार के आधार पर समूहों को प्राथमिक (Primary) एवं गौण (Secondary) में विभक्त किया है। प्राथमिक समूह में आमने–सामने के तथा घनिष्ठ संबंध होते है,यथा परिवार। गौण समूह, यथा राज्य अथवा राजनीतिक दल में संबंध परोक्ष, गौण अथवा अवैयक्तिक होते हैं।

एफ0एच0 गिडिंग्स (E.H. Giddings) ने समूहों को जननिक (Genetic) एवं इकट्ठे (Congregate) में वर्गीकृत किया गया है। जननिक समूह परिवार है जिसमें मनुष्य का अनैच्छिक जन्म होता है। इकट्ठा समूह ऐच्छिक है जिसमें मनुष्य स्वेच्छा से शामिल होता है। सामाजिक समूह 'वियोजक' टानीज (Distinctive) अथवा 'सम्मिश्रित'(Oeverlaping) भी हो सकते हैं। वियोजक समूह अपने सदस्यों को एक ही समय अन्य समूहों का सदस्य बनने की अनुमति नहीं देता। उदाहरणया, एक महाविद्यालय अथवा राष्ट्र क्रमशः अपने विद्यार्थियों अथवा नागरिकों को अन्य महाविद्यालियों या राष्ट्रों के सदस्य बनने की अनुमति नहीं देता। सम्मिश्रित समूह के सदस्य एक से अधिक समूहों के सदस्य होते है, यथा भारतीय राजनीति विज्ञान समिति।

जार्ज हासन (George Hasen) ने समूहों का वर्गीकरण दूसरे समूहों के साथ उनके संबंधों के आधार पर किया है। इस प्रकार उसने असामाजिक (Unsocial), आभासी– समाज (Pseudo-social), सामज–विरोधी (Anti-social) अथवा समाज–पक्षीय (Pro-social) समूहों का उल्लेख किया है। असामाजिक समूह वह समूह है जो अधिकतर अपने लिए ही जीवित रहता है तथा उस विशाल समाज जिसका वह भाग है, के कार्यों में कोई रूचि नहीं लेता। यह अन्य समूहों के साथ कोई सम्पर्क नहीं रखता तथा उनसे अलग रहता है। एक आभासी–सामाजिक समूह विशालतर सामाजिक जीवन में भाग लेता है, परन्तु केवल अपने हित के लिए, सामाजिक हित के लिए नहीं। समाज के हितों के विरूद्ध कार्य करता है। विद्यार्थियों का जो समूह जो सार्वजनिक सम्पत्ति को आग लगाता है, समाज–विरोधी समूह है। इसी प्रकार, मजदूर–संघ जो राष्ट्रीय हड़ताल का नारा देता है, समाज –विरोधी समूह है। राजनीतिक दल जो लोकप्रिय सरकार का तख्ता उलटने की योजना बनाता है, समाज–विरोधी समूह है। समाज–पक्षीय समूह समाज–विरोधी समूह का विपरीत रूप हैं यह समाज के हितों के लिए कार्य करता है। वह निर्माणकारी कार्य करता है तथा लोगों के कल्याण के बारे में चिंतित रहता है।

मिलर (Miller) ने सामाजिक समूहों को क्षैतिज (Horizontal) एवं उदग्र (Vertical) भागों में विभक्त किया हे। पहले प्रकार के समूह विशाल एवं अन्तर्मुखी समूह होते हैं, यथा–राष्ट्र, धार्मिक संगठन एवं राजनीतिक दल। दूसरे प्रकार के समूह छोटे उपविभाग होते हैं, यथा आर्थिक वर्ग। चूँकि उदग्र समूह क्षैतिज समूहों का भाग है, अतएव व्यक्ति दोनों का ही सदस्य होता है।

चार्ल्स ए0एलवुड ने समूहों को (1) ऐच्छिक एवं अनैच्छिक, (2) संस्थागत एवं असंस्थागत तथा (3) अस्थायी एवं स्थायी समूहों में विभेदित किया है।

ल्योपाल्ड (Leopold) ने समूहों को (1) भीड़ (Crowds), (2) समूहों (Groups) तथा (3) अमूर्त संग्रहों (Abstract Collectivities) में बाँटा गया है।

पार्क एवं बर्गेस (Park and Burgess) में समूहों को (1) प्रादेशिक एवं (2) गैर–प्रादेशिक समूहों में विभेदित किया है।

गिलिन एवं गिलिन (Gillin and Gillin) ने (1) खून का रिश्ता, (2) शारीरिक विशेषताएँ, (3) भौतिक सामीप्य, एवं (4) सांस्कृतिक रूप से व्युत्पन्न हितों के आधार पर समूहों का वर्गीकरण किया है।

समनर (Summer) ने समूहों को (1) अन्तः समूह (In-group) एवं (2) बाह्य समूह (Out group) में अन्तरित किया है। वे समूह जिनके साथ व्यक्ति तादात्म्य स्थापित कर लेता है, उनके अन्तः समूह होते हैं। उसका परिवार या कबीला या लिंग अथवा कॉलेज अथवा व्यवसाय धर्म आदि ऐसे समूह हैं जिनके बारे में वह समानता की जागरूकता अथवा एक ही प्रकार की चेतना से सजग होता है। अन्तः समूह अपने अस्तित्व की चेतना से सजग होता है। अन्तःसमूह अपने अपने अस्तित्व की चेतना इस तथ्य से ग्रहण करता है कि कुछ व्यक्ति तो उस समूह से अलग हैं तथा अन्य उसके सदस्य हैं। इसमें 'हम' की भावना होती है। अन्तः समूह के दृष्टिकोंणों से समूह के

दूसरे सदस्य के प्रति सहानुभूति का तत्व एवं संलग्नता की भावना होती है। बाह्य समूह की परिभाषा अन्तः समूह के सम्बन्ध को ध्यान में रखकर की जाती है। सामान्यतः, इसे 'हम' और 'वे' के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। प्रत्येक समूह को यह ज्ञात होता है कि 'वे' हमारे साथ नहीं है। हम लोकतंत्रीय हैं, वे साम्यवादी हैं, हम हिन्दू हैं, वे मुसलमान हैं, हम ब्राह्मण हैं, वे हरिजन है। ऐसे दृष्टिकोंण कि 'ये मेरे आदमी है, एवं 'वे मेरे आदमी नहीं है' अन्तः समूह के सदस्यों के प्रति संलग्नता के भाव को जन्म देते हैं, जबकि बाह्य समूह के सदस्यों के प्रति विमुखता एवं शत्रुता की भावना उत्पन्न करते हैं।

इस प्रकार समाजशास्त्रियों ने समूहों का वर्गीकरण अपने दृष्टिकोंण के अनुसार अलग–अलग ढंग से किया है। उन्होने उनका वर्गीकरण आकार, हितों के स्वरूप, संगठन की मात्रा, स्थायित्व की सीमा, सम्पर्क के प्रकार या इनमें से किसी के मिश्रण के आधार पर किया है। इस सम्बन्ध में क्यूबर (Cuber) ने लिखा है, 'समाजशास्त्रियों ने समूहों का वर्गीकरण करने में काफी समय एवं प्रयत्न लगाया है। यद्यपि आरम्भ में तो ऐसा करना सुगम प्रतीत होगा, परन्तु आगे सोचने पर इसमें बहुत–सी कठिनाईयाँ महसूस होगी। वास्तव में कठिनाईयाँ इतनी अधिक है कि अभी तक हमारे पास समूहों का कोई क्रमबद्ध वर्गीकरण नहीं है। जो सभी समाजशस्त्रियों को पूर्णतया मान्य हो।

4.3.1 प्राथमिक समूह

प्राथमिक समूह की अवधारणा का जिक्र सर्वप्रथम सी एच कूली (Charles Cooley) ने अपनी पुस्तक 'सोशल ऑर्गनाइजेशन (1809) में किया।

कूली के अनुसार प्राथमिक समूहों से हमारा तात्पर्य उन समूहों से हैं, जिनमें सदस्यों के बीच आमने सामने घनिष्ठ संबंध होते हैं। साथ ही पारस्परिक सहयोग इसकी अनिवार्य विशिष्टता होती है। ऐसे समूह अनेक अर्थों में प्राथमिक होते हैं, विशेष रूप से इस अर्थ में कि ये व्यक्ति के सामाजिक स्वभाव और विचार के निर्माण में बुनियादी यानी प्राथमिक योगदान देते हैं।

इस अवधारणा को प्रस्तुत करने के पीछे कूली का मुख्य उद्देश्य यह प्रदर्शित करना था कि मानव व्यक्तित्व के विकास में कुछ ऐसे समूह होते हैं, जिनकी महत्वपूर्ण या प्राथमिक भूमिका होती है।

कूली की परिभाषा से स्पष्ट है कि प्राथमिक समूह में शारीरिक निकटता, घनिष्ठ सम्बन्ध एवं पारस्परिक संम्बन्ध का होना आवश्यक है कूली ने परिवार, पड़ोस और क्रीड़ा समूह को एक अच्छा उदाहरण माना है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्राथमिक समूह की सबसे बड़ी विशेषताओं में वयं भावना (wefeeling) बहुत महत्वपूर्ण है। प्राथमिक समूह अपने आप में बहुत मजबूती से बंधा हुआ समूह है, जिसमें आमने–सामने के संबंधों के अलावा एकता की भावना प्रबल रूप से पायी जाती है। सदस्यों में एक सामान्य सामाजिक मूल्यों के प्रति कटिबद्धता पाई जाती है।

कूली ने अपनी परिभाषा में जिस आमने सामने का संबंध का उल्लेख किया है वह समाजशास्त्रियों के बीच काफी विवाद का विषय बन गया है। के डेविस ने कहा कि आमने सामने का संबंध प्राथमिक समूह का आधार नहीं हो सकता, क्योंकि कभी–कभी आमने सामने का संबंध रखते हुए भी दो व्यक्तियों के बीच घनिष्ठ संबंध पनप सकता है।

उदाहरण के लिए लंबे समय तक एक दूसरे के आमने–सामने होते हुए भी कार्यालय के कर्मचारियों में जरूरी नहीं कि घनिष्ठता बन पाए, जबकि पिता–पुत्र में हजारों किलोमीटर की दूरी और लम्बे समये से दूर रहने के बावजूद घनिष्ठता बनी रहती है।

ई– फरिस ने भी कहा है कि आमने–सामने के संबंध के अभाव में सामाजिक निकटता पायी जा सकती है। नातेदारी समूह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है जहां लोग एक दूसरे के आमने सामने नहीं होते हैं , इसके बावजूद उसके बीच आपसी निकटता की भावना पायी जाती है।

दूसरी आरे के बीयरस्टेट ने कूली के विचारों को अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन प्रदान करते हुए यह कहा है कि कूली के द्वारा उल्लिखित आमने–सामने शब्दों को शाब्दिक रूप में लेना ठीक नहीं है। बल्कि प्रतीकात्मक रूप में लेना है। इस शब्द के द्वारा कूली मात्र संबंधों की घनिष्ठता का बोध करना चाहते हैं।

(i) प्राथमिक समूह की विशेषताएँ

प्राथमिक समूह की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- लघु आकार
- आमने–सामने का सम्बन्ध
- स्वतः विकसित समूह
- व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ संबंधों की प्रधानता
- अनौपचारिक सम्बन्ध
- लक्ष्यों की समानता
- तुलनात्मक विकास
- सर्वव्यापकता
- समाजीकरण का एक अभिकरण (एजेन्ट)

4.3.2 द्वितीयक समूह

कूली द्वारा प्रतिपादित प्राथमिक समूह जब काफी लोकप्रिय हो गया तो कुछ विद्वानों ने इसके प्रतिकूल सामाजिक व्यवस्थ की भी बात कही, जो द्वितीयक समूह (secondary group) के रूप में प्रचलित हुआ।

इस तरह के समूह में आमने सामने का सम्बन्ध काफी कमजोर होता है। समूह के सदस्यों के बीच घनिष्ठता की कमी होती है। जैसे दुकानदार–ग्राहक का संबंध, डॉक्टर रोगी का संबंध, नेता और अनुयायी का संबंध, ऑफिसर एवं किरानी का संबंध। ऐसे संबंधों को लोग योजनाबद्ध रूप में या जानबूझकर निर्मित करते हैं।

द्वितीयक समूह के संबंधों में स्थायित्व की कमी एवं संबंधों का छिछलेपन का होना स्वाभाविक है क्योंकि साधारणतया इसका आकार प्राथमिक समूह की तुलना में काफी बडा होता है। सदस्यों के बीच हमेशा आमने–सामने का संबंध नहीं हो पाता है। लोग ऐसे समूहों का निर्माण स्वार्थवश करते हैं। अतः सदस्यों के बीच में स्वाभाविक रूप से संवेगात्मक–भावात्मक लगाव की कमी होती है।

द्वितीयक समूह की परिभाषाएँ

स्टीफन समूह की परिभाषाएँ

स्टीफन कोल के अनुसार द्वितीयक समूह वे होते हैं, जो अपेक्षाकृत काफी बड़े होते हैं और उनमें पाए जाने वाले संबंध काफी अवैयक्तिक होते हैं।

कोल के विचारों से स्पष्ट है कि द्वितीयक समूह सदस्यों के बीच संबंधों में आत्मनीयता की कमी होती है। प्राथमिक समूह की तुलना में इसके सदस्यों के बीच अन्तः क्रियाएं भी काफी कम मात्रा में पायी जाती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आकार में बड़ा होने के कारण इसके सदस्यों में दूरी बहुत होती है।

एन्थोनी गिडेंस के अनुसार द्वितीयक समूह व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जिसके अन्तर्गत लोग मिलते तो हैं, लेकिन उनके संबंध मुख्य रूप से अवैयक्तिक होते हैं। व्यक्तियों के बीच संबंध गाढ़े नहीं होते। लोग समान्यतया तभी एक दूसरे के निकट आते हैं जब उनके सामने कोई निश्चित व्यावहारिक उद्देश्य होता है।

द्वितीयक समूह की विशेषताएँ

द्वितीयक समूह की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- बड़ा आकार

- अप्रत्यक्ष एवं अवैयक्तिक संबंध
- औपचारिक संगठन
- ऐच्छिक सदस्यता
- क्म स्थायी
- सीमित स्वार्थों की पूर्ति
- योजनाबद्ध व्यवस्था
- अल्पकालिक सदस्यता
- 'मै' या 'वे' की भावना

समाजविज्ञान में सामाजिक समूहों को अलग–अलग तरह से वर्गीकृत किया जाता है ताकि उन्हे अच्छी तरह समझा–समझाया जा सके। समूहों को एक–दूसरे से कई तरह से भेद किया जा सकता है। उदाहरण के लिए प्राथमिक समूह (primary group) छोटे आकार का वह समूह है जिसके सदस्य आपस मे निकट, वैयक्तिक, चिरस्थायी सम्बन्ध रखते हैं।(जैसे–परिवार, बचपन के मित्र)। इसके विपरीत द्वितीयक समूह (secondary group) वे समूह हैं जिनके सदस्यों के बीच अन्तः क्रियाएँ अधिक अवैयक्तिक होती हैं और वे साझे पर आधारित होते हैं।

4.4 पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषा

1. पाठ्यक्रम की सबसे लोकप्रिय परिभाषा कनिंघम (Cunnigham) द्वारा दी गई मानी जाती है। इसके अनुसार– ''पाठ्यक्रम अध्यापक रूपी कलाकार (Artist) के हाथ में वह साधन (Tool) है जिसके माध्यम से वह अपने पदार्थ रूपी छात्र (Material) को अपने कलागृह रूपी स्कूल (Studio) में अपने उद्देश्य के अनुसार विकसित अथवा रूप (Mould) प्रदान करता है।'' इसमें कोई सन्देह नहीं कि कलाकार को अपने पदार्थ को अपने आदर्शों के अनुरूप ढालने की बहुत स्वतंत्रता है, क्योंकि कलाकार का पदार्थ निर्जीव है। परन्तु स्कूल में अध्यापक का पदार्थ अर्थात छात्र सजीव है। पुराने समय में जबकि आवश्यकताएँ सीमित थी, साधन सीमित थे, अध्यापक को अपने पदार्थ यानि कि छात्र को नया रूप देने में पूरी स्वतंत्रता थी। परन्तु अब बदलती हुई परिस्थितियों में अध्यापक की यह महत्ता घट गई है। फिर भी निश्चय ही अध्यापक के हाथ में पाठ्यक्रम बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है।
2. कैसवेल (Casvel) के अनुसार ''बालकों एवं उनके माता–पिता तथा शिक्षकों के जीवन में आने वाली समस्त क्रियाओं को पाठ्यक्रम का निर्माण होता है। वस्तुतः पाठ्यक्रम को गतियुक्त (Dynamic) वातावरण कहा गया है।''
3. रडयार्ड तथा हेनरी (Rudyar and Henry) के अनुसार '' विस्तृत अर्थ में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत समस्त विद्यालय का वातावरण आता है जिसमें विद्यालय में प्राप्त सभी प्रकार के सम्पर्क, पठन, क्रियाएँ एवं विषय सम्मिलित है।''
4. बैंट तथा कोनबर्ग (Bent and Kroneberg) के विचार में ''पाठ्यक्रम के अन्तर्गत छात्रों के लिए प्रस्तुत की गई विद्यालयीय वातावरण की वह समस्त सामग्री आती है जिसमें सारी वस्तुएं, क्रियाएँ, समस्त अध्ययन एवं सम्पर्क आदि संलग्न है।''
5. के. जी. सैयदन (K.G. Saiyidain) के शब्दों में ''पाठ्यक्रम वह सहायक सामग्री है जिसके द्वारा बच्चा अपने आपकों उस वातावरण के अनुकूल ढालता है, जिसमें वह अपना दैनिक कार्य व्यवहार करता है तथा जिसमें उसके भविष्य की योजनाएं और क्रियाशीलता निहित है।''
6. ब्रवेकर (Brubacher) लिखते हैं, ''पाठ्यक्रम एक ऐसा क्रम है जो किसी व्यक्ति को गन्तव्य स्थान पर पहुँचाने के लिए तय करना पड़ता है।''

7. माध्यमिक शिक्षा आयोग (Secondary Education Commission 1952-53) के अनुसार '' पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन विषयों से नहीं, जो विद्यालय में परम्परागत रूप से पढ़ाये जाते हैं वरन् इसमें वे सारे अनुभव शामिल हैं, जिनकों छात्र विद्यालय , कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला वर्कशाप और खेल के मैदान तथा शिक्षकों और छात्रों के अगणित अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है, जो छात्रा के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है और उनके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।''

8. ड्यूवी (Dewey) के अनुसार '' पाठ्यक्रम केवल अध्ययन की योजना या विषय– सूची ही नहीं बल्कि कार्य और अनुभव की सम्पूर्ण श्रृंखला है। पाठ्यक्रम समाज में कलात्मक ढंग से परस्पर रहने के लिए बच्चों के प्रशिक्षण का शिक्षकों के पास एक साधन है।''

संक्षेप में पाठ्यक्रम सुनिश्चित जीवन का दर्पण है जो विद्यालय में प्रस्तुत किया जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. पाठ्यक्रम से आप क्या समझते हैं ?

....

....

4.5 पाठ्यक्रम निर्माण के आधारभूत सिद्धांत

पाठ्यक्रम निश्चित करते समय निम्नलिखित सिद्धांतों का ध्यान रखना चाहिए –

4.5.1 परम्पराओं को सुरक्षित रखने का सिद्धांत – यह कहा गया है कि राष्ट्रों का वर्तमान अतीत पर निर्भर होता है और वे भविष्य के लिए जीवित रहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि समाज के अतीत, वर्तमान तथा भविष्य पर विचार किया जाना आवश्यक है। अतीत वर्तमान के लिए महान पथ–पद्रर्शक है, क्योंकि इसके अध्ययन से यह पता चलता है कि हमारे पूर्वजों के लिए क्या उपयोगी तथा लाभदायक था और आज के युग के लिए क्या लाभदायक होगा, इसीलिए हर पीढ़ी अपनी आने वाली पीढ़ी को विभिन्न विषयों तथा कार्यों की जानकारी करवाती है। इस दृष्टिकोंण के अनुसार स्कूल का यह कर्तव्य है कि वह पराम्पराओं, उनके ज्ञान तथा उनके व्यावहारिक मानदण्ड का संरक्षण करें और उन्हे आने वाली पीढ़ी को सौंप दें, क्योंकि इन्ही पर हमारी सभ्यता टिकी है।

यह सिद्धांत तभी हमारी सहायता करेगा जबकि हम अतीत को उन बातों में से ध्यानपूर्वक चुनाव कर लें जो कि हमें वर्तमान समय में लाभ पहुचायेगी। हो सकता है कि भूत की सारी बातें हमें लाभान्वित न करें। अतः यह आवश्यक है कि हम उन्ही विषयों तथा कार्यक्रमों को चुने जो कि हमें वर्तमान में लाभ पहुँचाए।

इस सिद्धांत का कुछ शिक्षाशास्त्रियों ने इस आधार पर खण्डन किया हे कि यह सिद्धांत विषयों को महत्व तो देता है पर विद्यार्थियों को नहीं। विपक्षी यह भी कहते है कि शिक्षा, स्कूल तथा पाठ्यक्रम विद्यार्थियों पर केन्द्रित होना चाहिए। इन आलोचकों को यह उत्तर दिया जा सकता है कि अतीत के हर चीजक की उपेक्षा करना कोई अच्छी नीति नहीं है और विशेषकर ऐसे देश के अतीत, जो कि अत्यंत गौरवशाली रहा हो और जिसने कि अन्य देशों को ज्ञान का मार्ग दिखाया हो। दूसरा तर्क यह है कि खड़े होने के लिए कोई न कोई आधार तो होना ही चाहिए और यदि वह आधार पुष्ट तथा दृण है, तो उसे अवश्य अपना लेना चाहिए। तीसरे यह कहना भी ठीक नहीं है कि अतीत काल में बच्चे की पर्णतया उपेक्षा की जाती थी। फिर भी अतीत के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण करते हुए हमें 'चयन सम्बन्धी सिद्धांत (Principle of Selectivity) को अपनाना चाहिए।

4.5.2 प्रगतिशील अथवा अग्रदर्शी सिद्धांत – पहले सिद्धांत पर विचार करते हुए यह कहा गया है कि समाज की वर्तमान तथा भविष्य सम्बन्धी आवश्यकताओं का पूर्ण ध्यान रखा जाना चाहिए। आज के बच्चे कल के आदर्श

नागरिक है अतः उनका शिक्षण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वे प्रगतिशील विचारों के व्यक्ति बन सके। शिक्षा उन्हे इस प्रकार के विचार, ज्ञान तथा दृण, इच्छा शक्ति प्रदान करें, जिसके द्वारा वे अपने वातावरण को अपने अनुकूल बना लें तथा वातावरण से तालमेल स्थापित कर लें।

4.5.3 रचनात्मकता का सिद्धांत – पाठ्यक्रम में इस प्रकार के कार्यक्रमों को स्थान दिया जाना चाहिए जिससे बच्चे की रचनात्मक तथा सृजनात्मक शक्ति का विकास हो सके। शिक्षा का उद्देश्य है बच्चे की रूचियों तथा विशिष्ट योग्यताओं की खोज करके उनका विकास करना। Reymont ने कहा है कि '' यदि बच्चे को आरम्भ में ही सुविधाएँ न जुटाई जायेंगी, तो हो सकता है उसकी बौद्धिक रूचियाँ सदा के लिए विलुप्त हो जायें।'' बच्चे की जन्मजात योग्यताओं में से कोई भी ऐसी न हो जिसे हमारा संरक्षण न मिले, नहं तो वे विलोप हो जायेगी। ऐसा पाठ्यक्रम जो कि वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।, अवश्य ही निश्चित सृजनात्मक कार्यक्रमों की पूर्ति करता है, अवश्य ही निश्चित सृजनात्मक कार्यक्रमों पर आधारित होता है।

4.5.4 क्रियाशीलता का सिद्धांत – पाठ्यक्रम का चयन क्रियाओं तथा अनुभवों के आधार पर होना चाहिए। पाठ्यक्रम शारीरिक तथा मानसिक क्रियाशीलता के अवसर प्रदान करे। क्रियाशीलता पाठ्यक्रम का केन्द्र बिन्दु होनी चाहिए।

4.5.5 जीवन की तैयारी का सिद्धांत – पाठ्यक्रम के निर्माण में यह सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा का उद्देश्य है बच्चों को जीवन के लिए जुटाना। अतः पाठ्यक्रम में वे सभी कार्यक्रम समाविष्ट होने चाहिए, जो कि बच्चों को इस योग्य बना दें कि वह बड़ा होने पर सामाजिक कार्यों में प्रभावपूर्ण ढंग से भाग ले सके। हमें बालक को इस योग्य बनाना है कि भविष्य की जटिल तथा गंभीर समास्याओं का सफलतापूर्वक सामना कर सके।

4.5.6 बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम – यह सत्य है कि बच्चे को जीवन के लिए तैयार होना है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं हैं कि इसकी वर्तमान आवश्यकताओं का अनिश्चित भविष्य के लिए बलिदान कर दिया जाये। जैसा कि रायबर्न (Ryburn) ने कहा है कि वह किस उपक्रम में भी हो उसमें अधिक से अधिक परिपूर्ण तथा सम्पन्न जीवन निर्वाह करने के योग्य हो सके। बच्चा जिस उपक्रम में भी होता है, वह अगले उपक्रम में अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिए खुद–ब–खुद प्रयत्न करता है।''

4.5.7 परिपक्वता का सिद्धांत – पाठ्यक्रम बच्चों के मानसिक स्तर तथा उनके उपक्रम के अनसार होना चाहिए। प्रारम्भिक शैशव काल में विस्मय तथा कल्पना की प्रधानता होती है। अतः इस अवस्था में बच्चों को जो विषय पढ़ाये जाते जाये, उनमें भी विस्मय तथा कल्पना की मात्रा होनी चाहिए। इससे अगली अवस्था में वे रचनात्मक कार्य में अधिक रूचि रखते हैं। अतः उनका पाठ्यक्रम रचनात्मक समस्याओं से समन्वित होना चाहिए। माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक अवस्था, साहस, खोज तथा नवीन तथ्यों को जानने की अवस्था है, तदनुसार, पाठ्यक्रम में भी खोज सम्बन्धी विषय होने चाहिए तथा जो कुछ भी पढ़ाया जाये वह उनके बौद्धिक स्तर और ग्राह्य बुद्धि से परे की चीज न हो।

4.5.8 व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धांत – व्यक्ति में अनुभव रूचि, जन्मजात योग्यता तथा यौन सम्बन्धी कई विभिन्नताएं होती हैं। इसलिए पाठ्यक्रम भी व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार होना चाहिए।

4.5.9 पाठ्यक्रम का लम्बरूप तथा सामान्तर दृष्टि से समन्वय – एक और तो पाठ्यक्रम का आधार पिछले कुछ वर्ष का किया गया काम चाहिए तथा दूसरी ओर वह आने वाले वर्ष के कार्य के लिए आधार बन सकने के योग्य होना चाहिए। इसलिए यह नितान्त अनिवार्य है कि समस्त पाठ्यक्रम का समन्वय किया जायें।

4.5.10 जीवन से सम्बद्ध करने का सिद्धांत – पाठ्यक्र का निर्माण करते हुए समाज की आवश्यकताओं पर विचार कर लेना चाहिए।

4.5.11 विस्तृतता तथा संतुलन का सिद्धांत – पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार करना चाहिए कि जीवन का हर पहलू– आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, व्यावसायिक, इत्यादि–एक समान महत्व प्राप्त कर सकें।

4.5.12 निष्ठा का सिद्धांत – पाठ्यक्रम ऐसा हो कि बच्चे के हृदय में परिवार, स्कूल, नगर, प्रान्त, देश तथा संसार के प्रति सच्ची निष्ठा उत्पन्न हो। बच्चे को यह जानने में समर्थ बनाये कि संसार को असमानता में भी कही न कहीं समानता है।

4.5.13 नमनीयता– का सिद्धांत– पाठ्यक्रम बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं तथा उसके विभिन्न वातावरणों

को अवश्य महत्व प्रदान करे। लड़कों का पाठ्यक्रम लड़कियों का पाठ्यक्रम से आवश्यकतानुसार भिन्न हो सकता है। सामान्यता गाँवों तथा शहरों का पाठ्यक्रम तो एक ही समान होता है, परन्तु स्थानीय आवश्यकताओं की दृष्टि से उनमें विभिन्नताएँ भी हो सकती हैं।

4.5.14 कोर या सामान्य विषय का सिद्धांत – ज्ञान के कई निश्चित विकसित रूप हैं जिनका थोड़ा बहुत ज्ञान हर विद्यार्थी को होना ही चाहिए। उच्चतम माध्यमि शिक्षा में जहाँ कि विभिन्न पाठ्यक्रम जुटाए जाते हैं, तो इस शिक्षा को और भी अधिक आवश्यकता हो जाती है। यह विषय हर विद्यार्थी के लिए चाहे वह किसी वर्ग का हो, अनिवार्य होने चाहिए तथा इन्हे सामान्य विषयों के रूप में समझना चाहिए।

4.5.15 खाली समय के उचित प्रयोग का सिद्धांत – पाठ्यक्रम बच्चों को खाली समय के सदुपयोग की भी शिक्षा देने वाला हो। हरबर्ट स्पेन्सर ने साहित्य, संगीत तथा कला की शिक्षा पर बल दिया है।

4.5.16 सर्वांगीण विकास का सिद्धांत – विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार का ज्ञान जुटाने की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि वे अपना शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक , नैतिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक विकास कर सकें।

4.6 पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में विभिन्न दार्शनिक विचार

रस्क महोदय ने कहा है, ''पाठ्यक्रम का संगठन जितना दर्शन पर आधारित होता है, उतना शिक्षा का कोई अन्य पहलू नहीं है। शिक्षा सम्बन्धी मुख्य तीनों दर्शन– प्रकृतिवाद, आदर्शवाद तथा प्रयोजनवाद इस विचार पर सहमत हैं कि बच्चों को अपेक्षित अनुभवों के साधन जुटाये जाने चाहिए। परन्तु तीनों विचारधाराएं इस पर एकमत नहीं है कि बच्चों को किस प्रकार का अनुभव करवाया जाए तथा किस प्रकार से।"

1. प्रकृतिवाद तथा पाठ्यक्रम – शिक्षा क्षेत्र में इस प्रवृत्ति के मुख्य प्रर्वतक रूसो (Rousseau) हैं। प्रकृतिवाद के अनुसार पाठ्यक्रम एक प्राकृतिक दृश्य है जो बच्चों के सम्मुख प्राकृतिक क्रम से उपस्थित किया जाता है। पाठ्यक्रम का कार्य यह है कि वह प्राकृतिक आवश्यकताओं के अनुसार बच्चें को प्राकृतिक शक्तियों का विकास करें। अतः ऐसे कार्यक्रमों को महत्व दिया जाता है जो कि बच्चे की रूचियों तथा स्वभाव के अनुकूल हों। कार्यक्रम स्वाभाविक तथा बच्चे के जीवन से सम्बन्धित हो।

प्रकृतिवादी आत्मशिक्षा के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं। रूसो ने कहा है कि मुझे लम्बी–लम्बी व्याख्याओं से घृणा है। छोटे बच्चे न तो उनकी ओर आकर्षित ही होते हैं और न उनमें से कुछ ग्रहण ही करते हैं। बच्चे स्वयं शिक्षा प्राप्त करें। कहना न होगा कि हम शब्दाडम्बर में अधिक विश्वास करते हैं और (With our chattering education we make nothing but chatterers) अपनी बकवादी शिक्षा द्वारा हम बच्चों को बकवादियों के सिवा कुछ नहीं बना पाते। आगे लिखते हैं कि (I hate books,they are a curse to children they teach us to talk ony which we do not know) मुझे पुस्तकों से घृणा है क्योंकि ये बच्चों के लिए अभिशाप है। जो कोई भी उन्हे पढ़ाता है वह चिन्तन नहीं कर सकता। बच्चों को ऐस पाठ्यक्रम से छुटकारा दिलवाकर मैं समझता हूँ कि मैंने उन्हे एक बहुत बड़ी बला और विपदा से छुटकारा दिलवा दिया है।

2. आदर्शवाद तथा पाठ्यक्रम– आदर्शवाद के मुख्य प्रतिनिधि हैं, Socrates, Plato, Fitchc, Hegel, Hume, Kant, T.P. Nunn तथा Ross. आदर्शवादी पाठ्यक्रम की समस्या का समाधान आदर्शवादी विचारों के अनुसार ही करते हैं। नन (Nunn) ने स्कूल में ऐसे कार्यक्रमों को रखने का समर्थन किया है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा स्थायी हैं और संसार में मानव आत्माओं की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति हैं। अब प्रश्न यह है कि महानतम महत्व के कार्यक्रम कौन–कौन से हैं। इनका वर्गीकरण दो प्रकार से किया जा सकता है–

- ऐसे कार्यक्रम जो सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन के स्तर को बनाये रखने के लिए अनिवार्य हैं, जैसे कि स्वास्थ्य–रक्षा, शिष्टचार, धर्म, सामाजिक संगठन इत्यादि।
- ऐसे कार्यक्रम जो कि सभ्यता का प्रतिनिधित्व करें, जैसे कि साहित्य, विज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास तथा कला इत्यादि।

प्लेटो (Plato) का मत था कि उच्चतम अच्छाई अर्थात ईश्वर की प्राप्ति ही मानव जीवन का महान उद्देश्य हो सकता है और इसकी प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम का लक्ष्य सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्–इन तीन आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति होना चाहिए। ये तीन प्रकार के कार्यक्रमों के प्रतीक हैं। कविता तथा कला– कलात्मक क्रियाओं के

प्रतिनिधि स्वरूप हैं तथा धर्म, आचार–शास्त्र तथा अध्यात्म नैतिक क्रिया के विषय हैं।

रॉस (Ross) ने पाठ्यक्रम में दो प्रकार की क्रियाओं का उल्लेख किया है–

(1) शारीरिक और (2) आध्यात्मिक।

इन क्रियाओं के अनुसार पाठ्यक्रम का स्वरूप इस प्रकार होना चाहिए–

मानव की क्रियाएं व उनसे सम्बन्धित विषय

(Human Activities and Related Subjects)

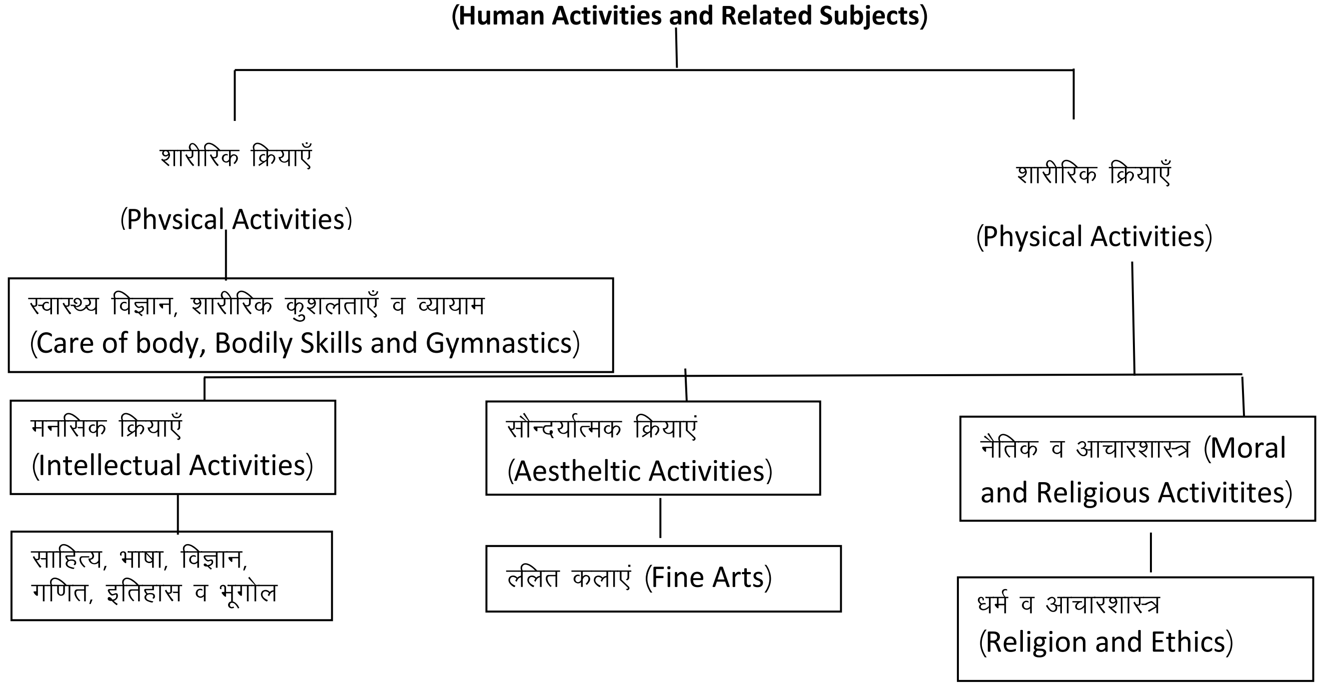

3. प्रयोजनवाद तथा पाठ्यक्रम– इस पद्धति के मुख्य समर्थक जॉन ड्यबी (Johan Dewey) हैं। इस विचारधारा के अनुसार वहीं सत्य है, जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध होता है तथा जो जीवन का निर्माण करता है। यह विचारधारा असीम प्लेटो (Absolute Values) अलौकिक, ईश्वरीय मूल्यों को स्वीकार नहीं करती।

योजना पद्धति शिक्षा के क्षेत्रों में निर्देशन पद्धति का बहिष्कार करती है। ड्यूवी ने बच्चे की रूचियों को चार भागों में विभाजित किया है–

1. आदान–प्रदान की रूचि
2. जिज्ञासा अर्थात खोज में रूचि
3. सृजनात्मक रूचि।
4. कला की अभिव्यक्ति में रूचि।

वास्तविक जीवन की विभिन्न क्रियाएँ पाठ्यक्रम के विषयों का निर्माण करती हैं। इस पद्धति के अनुसार निर्मित पाठ्यक्रम चार बातों पर आधारित है–

1. पाठ्यक्रम का निर्धारण करते हुए उपयोगिता पर पहले विचार किया जाता है। बच्चों को ऐसे कार्यक्रम जुटाये जाते हैं जो उपयोगी हों। पाठ्यक्रम ऐसे विषयों को स्थान देता है, जो बच्चों को इस प्रकार शिक्षित करें तथा उन्हें निपुण बनाये कि वे अपने वर्तमान तथा भावी जीवन में सफल हो सकें।
2. पाठ्यक्रम के विषय बच्चों की रूचियों तथा उनके उत्तरोत्तर विकास के अनुकूल हो।
3. बच्चों का अपना अनुभव, उनका कार्य तथा उनकी क्रियाशीलता ही पाठ्यक्रम का आधार बने।
4. पाठ्यक्रम समन्वय (Integration) के सिद्धांतों पर निर्मित किया जाए, यह स्वतन्त्र विषयों में विभाजित हो।

उपसंहार– एक अच्छा पाठ्यक्रम इन तीनों दर्शनों को ध्यान में रखकर बनाया जाना चाहिए। दर्शन के केवल एक पक्ष पर जोर देने से छात्र का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता।

बोध प्रश्न

टिप्पणी–:

क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

2. रस्क के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण से सम्बन्धित दार्शनिक परिभाषा लिखिए।

....

....

....

4.7 पाठ्यक्रम का विभिन्नीकरण

स्वतंत्रत–प्राप्ति के पश्चात् देश में शिक्षा की स्थिति को सुधारने के लिए यह अनुभव किया गया कि माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाया जाए, जिससे देश का सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक एवं चारित्रिक विकास हो सके और भावी नागरिक माध्यमिक स्तर की शिक्षा की समाप्ति पर देश की प्रगति में अपना योग प्रदान कर सके। ऐसा करने के लिए आवश्यक था कि छात्रों की अभिरूचियों और योग्यताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाए। इसके परिणाम स्वरूप ही पाठ्यक्रम की विभिन्नीकरण की विचारधारा प्रवाहित हुई। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार हमारी माध्यमिक शालाएँ एकमार्गीय नहीं होनी चाहिए बल्कि उनके अन्दर शैक्षिक कार्यों की भिन्नता होनी चाहिए। अतः एक ओर तो पाठ्यक्रम का विभिन्नीकरण इा कारण करना चाहिए कि प्रत्येक विद्यार्थी एक–दूसरे से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक विकासों के कारण भिन्न होता है और दूसरी ओर राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक चरण–कला, विज्ञान, उद्योग और वाणिज्य आदि के लिए नेता तथा अनुयायी चाहिए।

4.8. विषय केन्द्रित अथवा विषयागत पाठ्यक्रम तथा अनुभवगत अथवा क्रिया केन्द्रित पाठ्यक्रम

हरबर्ट रीड ने अपनी पुस्तक 'Education Throughout' में पाठ्यक्रम की परिभाषा इस प्रकार दी हैः ''पाठ्यक्रम विषयों का समूह रूप नहीं है। माध्यमिक तथा प्राथमिक स्तर पर यह सृजनात्मक कार्यक्रम का एक क्षेत्र है। इन सृजनात्मक कार्यक्रमों के लिए निर्देशन भी किया जाता है। शैशवावस्था में इन कार्यों का खेल होता है और प्राथमिक स्तर पर प्रोजेक्ट तथा माध्यमिक अवस्था में यह कार्यक्रम रचनात्मक क्रियाओं मे परिवर्तित हो जाते हैं।''

विषयगत पाठ्यक्रम और अनुभवगत पाठ्यक्रम में निम्नलिखित अन्तर है –

विषयगत अथवा विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम	अनुभव अथवा कार्य अथवा क्रिया– केन्द्रित पाठ्यक्रम
इसमें विषयों की प्रधानता होती है।	यह अनुभव–प्रधान पाठ्यक्रम है।
यह विषयों पर केन्द्रित हैं	यह विद्यार्थियों पर केन्द्रित है।
पढ़ाने से पहले पाठ्य–विषय निर्वाचित अैर संगठित होता है।	सारे विद्यार्थी अध्ययन के सम में सहयोगपूर्ण ढंग से विषय सामग्री क निर्वाचन और संगठन करते हैं।
यह तत्वों के अध्ययन और सम्भावित भविष्य के लिए सूचना देने पर बल देता है।	यह जीवन के व्यवहारिक रूप पर बल देता है।

यह जीवन से पृथक है।	यह जीवन के समन्वय पर बल देता है।
विषयों का इसमें कोई समन्वय नहीं है।	यह सम्बद्ध तथा व्यवहारिक ज्ञान पर बल देता है।
यह प्रायः अपरिवर्तनशील है। इसमें जड़ता आ जाती है।	यह परिवर्तनशील है और व्यक्तिगत जीवन की आवश्यकताओं की व्यवस्था में सक्षम है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

3. पाठ्यक्रम के विभिन्नीकरण से आप क्या समझते हैं ?

....

....

....

4.9 अनुभवगत पाठ्यक्रम की त्रुटियाँ

1. मानवीय अनुभवो से सम्बन्धित विषयों के विभिन्न पहलुओं को तार्किक रूप में विभाजित करना बहुत कठिन है।
2. विषयों की सम्बद्धता केवल आकस्मिक तथा अस्थायी है और इस प्रकार शिक्षण मानव अनुभव की पूर्णतः के लिए संतोषजनक नहीं हो सकता है।
3. यह भी संभव है कि समन्वय पर बहुत अधिक बल देने पर इसका वास्तविक मानवीय अनुभवों से कोई सम्बन्ध न रहे।
4. समन्वय का प्रयत्न अधिकतर शिक्षकों की ओर ही होता है।
5. इसकी एक सीमा है जिसके आगे समस्त अनुभवों को प्राप्त करना संभव नहीं है।

बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम (Child Centred Curriculum) बालक के स्वाभाविक विकास का अध्ययन करने के पश्चात उसकी आवश्यकताओं, योग्यताओं, अभिरूचियों तथा रूचियों के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्माण करना बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम है। इस प्रकार के पाठयक्रम से बालक की बुद्धि, संवेग (Emotions), शरीर और समाजिकता के इष्टतम विकास की सम्भवना रहती है। दर्शन के रूप में इस प्रकार के पाठ्यक्रम की संस्तुति रूसो (Rousseau) ने की। बाद में इस पर पेस्तालॉजी (Pestalozzi), फ्रोबेल (Froebel), ड्यूवी (Dewey) एवं मान्टेसरी ने भी बल दिया। भारत में गाँधी जी तथा टैगोर ने बाल–केन्द्रित पाठ्यक्रम को क्रियात्मक रूप देने का प्रयत्न किया।

बाल केनिद्रत पाठ्यक्रम बनाने के आधार (Beses for Preparing Child Centred Curriculum) गाँधीजी ने बाल–केन्द्रित पाठ्यक्रम निर्माण के लिए बालक के तीन प्रकार के वातावरण पर बल दिया है और आग्रह किया कि बालक की सारी शिक्षा निम्नलिखित वातावरण पर आधारित हो–

1. बालक के भौतिक वातावरण पर आधारित पाठ्यक्रम (Curriculum Based on Child's Physical Environment)
2. बालक के सामाजिक वातावरण पर आधारित पाठ्यक्रम (Curriculum Based on Child]s Social Environment)
3. क्राफ्ट पर आधारित पाठ्यक्रम (Craft Based Curriculum)

विदेशों में मुख्यतः तीन प्रकार के बाल–केन्द्रित पाठ्यक्रम अनेक स्कूलों में चलाये जा रहे हैं।

डाल्टन प्रणाली–इस प्राणाली के अनुसार स्कूल को घर जैसा रूप दे दिया जाता है। और कक्षाएँ प्रयोगशालाओं का रूप धारण कर लेती हैं। सीखने वालो को कुछ कार्य दे दिये जाते हैं। जो उन्हें एक निश्चित समय में पूरे करने होते हैं। उन्हे इस समय में पूरी छूट होती है। कि वे किसी भी विषय के अध्ययन में जितना समय चाहे, लगाये। इस प्रकार प्रत्येक बालक को अवसर मिल जाता है – अपनी स्वयं कीगति से सीखने का और अपनी योग्यतानुसार सीखने का।

विनेटका प्रणाली– कारलेटन वाशबर्न ने इस प्रणाली का अविष्कार किया। इस प्रणाली में जो प्रमुख सिद्धांत है, वह यह है कि सीखने वाले को स्वयं आपने सीखने की गति के अनुसार सीखने का अवसर प्रदान करना चाहिए। यह प्रणाली डाल्टन प्रणाली से इस बात में भिन्न है कि इसमें हर सीखने वाले को विभिन्न विषयों में विभिन्न गति पर रहना पड़ता है। पाठ्य सामग्री इकाई कार्य या उद्देश्य के रूप में संगठित की जाती है। और बालक स्वयं अपने सीखने का परीक्षण कर सकता है। इसके पश्चात ही वह अपने आपको शिक्षक द्वारा दिये जाने वाले परीक्षण के लिए प्रस्तुत करता है। इस प्रकार इस प्रणाली में असफल होने का प्रश्न नहीं उठता।

प्रोजेक्ट प्रणाली– इस प्रणाली में बालकों को प्रोजेक्ट दिये जाते हैं जो बहुधा चार प्रकार होते हैं– 1. उत्पादक प्रोजेक्ट, 2. उपभोक्ता प्रोजेक्ट, 3 समास्यात्मक प्रोजेक्ट और 4. अभ्यास प्रोजेक्ट। कई बालक मिलकर एक प्रोजेक्ट पर कार्य करते है और इस प्रकार सीखना व्यक्तिगत योग्यता तथा रूचि पर निर्भर करता है।

प्रोजेक्ट पद्धति में पाठ्यक्रम एक प्रकार से जीवन क्रियाएँ बन जाता है। छात्र समस्याओं का प्रयोगात्मक हल ढूँढ़ना सीखते हैं। सामूहिक परियोजनाओं को पूरी कक्षा करती है। पाठ्यक्रम कई परियोजना का समूह बन जाता है। ये परियोजनाएं छात्र स्वयं चुनते हैं। अध्यापक एक मार्गदर्शक तथा परामर्शदाता का रूप लेता है। परियोजनाओं में पाठ्य विषयों का सार्थक स्वाभाविक सह–सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम से प्रेरणा, प्रयत्नशीलता, रचनात्मक सक्रियता, उत्तरदायित्व, सहकारिता तथा सहिष्णुता आदि गुणों का विकास होता है।

परियोजनाओं के उदाहरण है– स्कूल में सहकारी भण्डार खोलना, स्कूल बैंक, ग्राम र्स्वेक्षण, जन्मदिवस मनाना, स्कूल की सफाई, स्कूल फर्नीचर की मरम्मत, गली–मुहल्ले की सफाई, स्कूल गार्डेन , शैक्षणिक भ्रमण आदि।

परियोजना पाठ्यक्रम बनाने के चरण इस प्रकार हैं– 1. स्थिति के अनुसार चुनाव 2. परियोजना बनाना 3. योजना को कार्य रूप में बदलना 4. मूल्यांकन 5. रिकार्ड रखना।

निष्कर्ष– बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में तथा इसके पहले अर्ध भाग में कई प्रकार के बाल–केन्द्रित पाठ्यक्रमों को प्रतिपादित किया गया। परन्तु सामन्य परिस्थितियों में और विशेषकर भारत जैस विकासशील देश, जिसमें स्कूलों में अनेक सुविधाओं का अभाव है, बाल–केन्द्रित पाठ्यक्रमों का आयोजन अत्यंत कठिन है। परन्तु प्रयास किया जाना चाहिए कि बाल केन्द्रित शिक्षा के सिद्धांतों को जहा तक संभव हो, व्याहारिक रूप दिया जाए।

एक और तो हम कक्षा से कक्षा दस तक एक जैस विषयों को पढ़ाने की बात करते है और दूसरी ओर बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम। इन दोनों बातों में बहुत कम तालमेल की सम्भावना है।

सामान्यतः स्कूलों में बच्चों की रूचियों के अनुसार सहपाठीय क्रियाओं का प्रावधान करना एक बहुत कठिन काम है। स्कूलों तथा कक्षाओं में इतनी भीड़ है कि व्यक्तिगत रूचियों के विकास के बहुत कम अवसर मिल पातें हैं।

4.10 पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन

पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में तो प्रत्येक अध्यापक का हाथ होता है। अध्यापक पाठ्यक्रम से दिशा–निर्देश प्राप्त करता है, परन्तु यह उस पर निर्भर है कि वह पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन में कितना उत्साह दिखाता है, पाठ्यक्रम में दिये गये कार्य को करने की कई विधियाँ हो सकती हैं। अध्यापक को अपनी सूझबूझ से यह निर्णय लेना होता है कि किस विधि से पाठ्यक्रम में दी गई विषय–वस्तु क्रियाओं का प्रभावपूर्ण ढंग से क्रियान्वयन किया जा सकता है। उसे यह सोच–विचार करना होता है कि किस प्रकार के प्रश्न छात्रों से पूछे जाये जिनसे वे नयी पाठ्य–वस्तु का दैनिक जीवन या पहले पढ़ी गई पाठ्य–वस्तु के साथ तारत्म्य स्थापित कर सकें। किस

प्रकार के उदाहरण हो सकते हैं। किस प्रकार की दृश्य सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है? इस प्रकार अध्यापक को पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में पर्याप्त स्वतंत्रता होती है।

4.11 परम्परागत तथा प्रगतिशील पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम का सीधा सम्बन्ध शिक्षा के उद्देश्यों से होता है। पहले शिक्षा का उद्देश्य केवल 3Rs अर्थात Writing and Artihmetic आदि का ज्ञान देना ही था। अतः पाठ्यक्रम बहुत संकुचित था। यह केवल कुछ ही विषयों तक सीमित था। परन्तु जैसे–जैसे सामज में परिवर्तन आते गये, शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन आया और परिणाम स्वरूप पाठ्यक्रम भी बदलता गया। एक समय था जबकि पाठ्यक्रम में केवल शास्त्रीय विषयों (Classical Subjects) की प्रधानता था। ये विषय थे संस्कृत, अरबी, रोमन, ग्रीक, भाषाएं आदि। समय में परिवर्तन के अनुसार इन विषयों की महत्ता कुछ कम हुई।

भारत वर्ष में अंग्रेजी काल में शिक्षा का उद्देश्य बहुत सीमित था। शासन चलाने के लिए विभिन्न वर्गों की आवश्यकता थी। अतः कार्यालयों का काम सँभालने वाली शिक्षा का महत्व था और इसी के अनुसार पाठ्यक्रम भी था। यही पाठ्यक्रम स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी चलता रहा यद्यपि इमें कुछ सुधार भी लाये गये।

बदलती परिस्थिति में एक नये पाठ्यक्रम की आवश्यकता अनुभव की गई। नये पाठ्यक्रम को संगठित करने की वर्तमान प्रवृत्ति भिन्न है। यह इसे समास्याओं, सृजनात्मक क्रियाओं, निश्चित उद्देश्यों, उपयोगी अनुभवों द्वारा संगठित करती है। पाठ्यक्रम के संतुलन का अर्थ यह है कि बच्चे का विकास उसकी रूचियों तथा परिवर्तनशील वातावरण के अनुकूल हो। विषयों का विभाजन सर्वथा भिन्न न हो और वे इस ढंग से पढ़ायें जाएँ जिससे कि बच्चे तथा उसके वातावरण में व्यावहारिक समानता आय जाय। प्रोजेक्ट पद्धति तथा बुनयादी शिक्षा

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

4. पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन किस प्रकार किया जाता है ?

....

....

पद्धति पाठ्यक्रम को इसी रूप में प्रस्तुत करते हैं।

नये पाठ्यक्रम में उन विषयों तथा गतिविधियों पर बल दिया जा रहा है जो श्रम की महत्ता प्रदर्शित करें, उत्पादन में सहायक हों, व्यवसायों के लिए छात्रों को तैयार करें।

पुराना पाठ्यक्रम विषय प्रधान था तथा नया क्रिया एवं बाल–केन्द्रित। पाठ्यक्रम के बारे में निम्नलिखित बातों का जानना बहुत आवश्यक है–

1. एक नवीन पाठ्यक्रम जो स्वयं चाहे कितनी भी अच्छाई या सावधानी से क्यों न निर्मित हो, वह सम्पूर्ण शिक्षण –क्रम को परिवर्तित नहीं कर सकता है। बहुत –सी बातें पाठ्यक्रम के विस्तार और इसके अपनाने के ढंग पर निर्भर करती हैं।
2. एक पाठ्यक्रम हमेशा के लिए निश्चित नहीं समझाा जा सकता है।
3. हमारे देश में पाठ्यक्रम के अनुसंधान की अत्यधिक आवश्यकता है।
4. प्रत्येक विषय में बहु–सी सामग्री भर देने के लिए अधिक प्रश्न नहीं होने चाहिए।

परम्परागत पाठ्यक्रम में दोष –

1. पाठ्यक्रम पुस्तकीय ज्ञान पर बल देता है।

2. पाठ्यक्रम विषय केन्द्रित है।

3. पाठ्यक्रम छात्र–केन्द्रित नहीं है।

4. पाठ्यक्रम राष्ट्रीय सरोकारों के अनुरूप नहीं है।

5. पाठ्यक्रम बहुत बोझदार है।

6. पाठ्यक्रम छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं की अवहेलना करता है।

7. पाठ्यक्रम में पुराने ढंग की विषय सामग्री है।

8. पाठ्यक्रम नये प्रकरण जैसे भूमण्डलीकरण, नई तकनीकों आदि की अवहेलना करता है।

9. पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा पर बहुत कम सामग्री है।

10. पाठ्यक्रम में नई खोजों का समावेश बहुत कम है।

11. पाठ्यक्रम अध्यापक की स्वतंत्रता तथा पहल–शक्ति पर बहुत अंकुश लगाता हे।

4.12 पाठ्यचर्या के स्तर को ऊँचा करने तथा पुनः निर्माण के लिए उपाय

पाठ्यचर्या शिक्षा का एक गतिशील साधन है। शीघ्रता से परिवर्तित संसार में यह आवश्यक हो जाता है कि शैक्षिक संस्थाएं भी पाठ्य–वस्तु को नवीन आवश्यकताओं तथा तकनीकों के सन्दर्भ में बदले। इस दिशा में निम्नलिखित सुझाव दिये जा रहे हैं–

1. **पाठ्यचर्या में अनुसंधान**– व्यवस्थित रूप से पाठ्चर्या के सम्बन्ध में अनुसंधान किया जाए, विशेषज्ञों की खोजों के सुधार पर समन्वित सुधार कार्यक्रम के रूप में संशोधन किया जाए। ऐसे अनुसंधान की सुविधाएँ विश्वविद्यालयों, माध्यमिक शिक्षण कॉलेजों, राज्य की शिक्षा संस्थाओं और राज्य के स्कूल शिक्षा बोर्डों में उपलब्ध होनी चाहिए। यदि राज्य के स्कूल शिक्षा बोर्ड में पाठ्यचर्या के विशेषज्ञ हो, जो राज्य मूल्यांकन संगठन और राज्य शिक्षा संस्थानों के निकट सहयोग में काम कर सके, तो और भी अच्छा हो।

2. **पाठ्य–पुस्तके और शिक्षण साधन तैयार करना**– पाठ्यचर्या में सुधार के किसी भी प्रयत्न की सफलता का आधार उचित पाठ्य–पुस्तके, पाठ्य–गाइडे, और पढ़ाने और सीखने की अन्य सामग्रियाँ है। ये चीजें स्कूल के हित को ध्यान में रखकर नये कार्यक्रमों की विषय–वस्तु और उनके उद्देश्य निर्धारित करती हैं और छात्र के वास्तविक साधन होने के कारण प्रस्तावित परिवर्तनों को सारवान बनाती है।

3. **शिक्षकों की अन्तः सेवा शिक्षा**– इसके अतिरिक्त शिक्षक को नये पाठ्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ समझना भी आवश्यक हैं ताकि शिक्षक की क्षमता विकसित की जा सके, शिक्षण कौशल में उन्नति लायी जा सके और आज की परिवर्तित परिस्थिति से सम्बन्धित पढ़ाने और सीखने की प्रक्रिया को अधिक सूक्ष्मता से समझा जा सके। इसलिए शिक्षकों को संशोधित पाठ्यचर्या में अनुस्थापित (ओरियन्टेड) करने के लिए अन्तः सेवा शिक्षा का एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया जाए, जिनमें सेमिनार और पुनश्चर्या–पाठ्यक्रम का भी आयोजन हो।

4. **उपलब्ध सुविधाओं से पाठ्यक्रम का सम्बन्ध बैठाना तथा प्रायोगिक पाठ्यक्रम अपनाने के बारे में स्कूल को स्वतंत्रता**– पाठ्यक्रम का शिक्षकों की कोटि, स्कूल में उपलब्ध सुविधाओं और छात्रों की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुकूल उनकी आवश्यकताओं से सम्बन्ध बैठाना चाहिए। इन विषयों की दृष्टि से हर संस्था में बड़ा अन्तर होता है। परिणामतः औसत स्कूल की आवश्यकता की पूर्ति के लिए बनाया गया राज्य सरकार का एकमात्र पाठ्यक्रम राष्ट्र की विभिन्न संस्थाओं के लिए बेकार सिद्ध हो जाता है। एक ओर वह कमजोर संस्थाओं की पहुँच के बाहर सिद्ध होता है, तो दूसरी ओर अच्छी संस्थाओं के लिए उसका स्तर नीचा सिद्ध होता है। समास्या का समाधान इसमें हैं कि स्कूलों को अपनी ही आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम बनाकर प्रयोग में लाने और उन्हे उन्नत बनाने के लिए एक–दूसरे से होड़ करने दिया जाए।

5. **उच्च पाठ्यचर्याओं को क्रमिक रूप से लागू करना**– इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि राज्य स्कूल शिक्षा बोर्ड, उच्च पाठ्यक्रम बनाकर क्रमिक कार्यक्रम के रूप में अनेक वर्षों में उन्हे सभी स्कूल और विषयों में लागू करें। इस प्रयोजन के लिए बोर्ड को उच्च और साधारण दो पाठ्यक्रम बनाने चाहिए। सामान्य पाठ्यक्रम

ऐसा होना चाहिए, जिसे इस समय केवल अच्छे स्कूल ही अपना सकें। लेकिन वह कुछ समय बाद सम्भवतः साधारण पाठ्यक्रम बन जाए।

6. **उच्च पाठ्यक्रम चालू करने की शर्तें**– राज्य स्कूल शिक्षा बोर्डों को शिक्षकों की योग्यता और क्षमता तथा आवश्यक सुविधाओं का ध्यान में रखते हुए किसी विषय में उच्च पाठ्यक्रम लागू करने की शर्तें निर्धारित कर देनी चाहिए। जो स्कूल इन शर्तों को पूरा करें, उन्हे उच्च पाठ्यक्रम चालू करने की अनुमति दी जानी चाहिए। दूसरे स्कूल तो केवल साधारण ही पाठ्यक्रम चलाएँ। उच्च पाठ्यक्रम लागू करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने पड़ेगे–

i. यह जरूरी नहीं कि कि स्कूल सभी विषयों में उच्च पाठ्यक्रम अपनाएँ। शुरू–शुरू में एक या दो विषय लिये जा सकते हैं और फिर धीरे–धीरे सुविधा के अनुसार सुनियोजित कार्यक्रम के रूप में और अधिक विषय या सारा पाठ्यक्रम समेटा जा सकता है।

ii. जिस स्कूल में उच्च पाठ्यक्रम नहीं अपनाया गया हो, वहाँ अगर छात्र चाहें तो उन्हे निजी रूप से उच्च पाठ्यक्रम के लिए तैयार करने की छूट होनी चाहिए।

iii. स्कूल शिक्षा बोर्ड को बाहरी परीक्षाओं में उच्च और साधारण दोनों ही पाठ्यक्रमों में छात्रों की परीक्षा लेने की व्यवस्था करनी चाहिए।

iv. प्रारम्भ में जो स्कूल उच्च पाठ्यक्रम अपनाने को तैयार हों (या सहायता देने पर थोड़े ही समय में तैयार हों) उनमें विज्ञान, गणित, भाषा जैसे कम से कम, कुछ विषयों में उच्च पाठ्यक्रम लागू किये जा सकते हैं।

v. कालान्तर में योग्य शिक्षक उपलब्ध कराकर और आवश्यक सुविधाएँ देकर अधिकाधिक स्कूलों को उच्च पाठ्यक्रम अपनाने में सहायता दी जानी चाहिए। प्रतिवर्ष इस प्रकार के –आकांक्षी'स्कूल खोज निकालने चाहिए और उन्हे 'उच्च' पाठ्यचर्या के निर्माण के लिए आवश्यक सहायता दी जानी चाहिए। इस सहायता का एक आवश्यक अंग नये पाठ्यक्रमों के अनुसार शिक्षण देने में समर्थ शिक्षक तैयार करना चाहिए।

7. विषय–अध्यापक संगठन– राज्य सरकारें विभिन्न स्कूल–विषयों के लिए विषय अध्यापक संस्थाएं बनाने के कार्य को प्रोत्साहन दें। इससे पहल–शक्ति को और प्रयोग करने की पृवत्ति को बढ़ावा मिलेगा और अधिक अच्छी शिक्षण सामग्रियों और शिक्षण तथा मूल्याकंन की सुधरी तकनीकों के प्रयोग के द्वारा पाठ्यचर्या को संशोधित और उन्नत बनाने में सहायता मिलेगी। राज्य स्कूल शिक्षा बोर्डों के माध्यम से काम करने वाले राज्य शिक्षा विभागों की यह जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वे विषय–अध्यापक संस्था की सहायता करें ताकि विषय अध्यापक संस्थाएं नियतकालिक सेमिनार और सभाएँ चलाया करें और अपनी ही पत्रिकाएं निकालें, जिनमें से अधिकतर स्वभावतः प्रान्तीय भाषाओं में होगी। राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को चाहिए कि राज्य सतर की प्रत्येक संस्था के बीच समन्वय स्थापित करें अखिल भारतीय विषय अध्यापक संस्थाएं बनाने में और भारत में सब जगह अध्यापकों के उपयोग के लिए हिन्दी और अग्रेजी में राष्ट्रीय स्तर पर पत्रिकाएँ निकालने में सहायता दें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 तथा 1992 एवं पाठ्यक्रम (National Policy of Education, 1986 and 1992 and Curriculum)– शिक्षा को बदलती हुई परिस्थितियों के संन्दर्भ में सक्षम बनाने के लिए पाठ्यक्रम का विशेष स्थान है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने पाठ्यक्रम सम्बन्धी निम्नलिखित दिशा–निर्देशों का उल्लेख किया गया है–

1. पाठ्यक्रम संविधान में दर्शाये गये मूल्यों पर आधारित हैं
2. पाठ्यक्रम समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता तथा प्रजातन्त्र को बढ़ावा देने वाला हो।
3. पाठ्यक्रम देश की सांस्कृतिक परामपराओं तथा आधुनिक टेक्नालॉजी की खाई को पाटने वाला हो।
4. पाठ्यक्रम में मूल्यों की शिक्षा का प्रावधान हो।
5. 1986 की भाषा नीति को अपनाया जाए।

6. पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा की व्यवस्था हो।
7. पाठ्यक्रम में कार्य–अनुभव, गणित शिक्षण एवं विज्ञान शिक्षण को दृढ़ किया जाए।
8. पाठ्यक्रम में सकीर्ण विचारों की कोई भी बात नहीं होनी चाहिए।
9. खेल और शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाए।
10. पाठ्यक्रम में व्यावसायिक विषयों पर विशेष बल दिया जाए।
11. एक कोर पाठ्यक्रम (Core Curriculum) हो जो सभी छात्रों के लिए अनिवार्य हो।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

5. पाठ्यचर्या के स्तर को ऊँचा करने तथा पुनः निर्माण के लिए किये जाने वाले उपायों का वर्णन कीजिए।

....
....
....

4.13 राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित पाठ्यक्रम

➢ टैक्नोलॉजी तथा सांस्कृतिक खाई को पाटना (Bridging the Gulf between Technology and Cultural Traditions) औपचारिक शिक्षा पद्धति और देश की समद्ध तथा विविधतापूर्ण सांस्कृतिक पराम्पराओं के बीच विद्यमान खाई को पाटना होगा। आधुनिक टैक्नालॉजी के नशे में नई पीढ़ी की जड़े भारत के इतिहास और संस्कृति से कट नहीं जानी चाहिए। हर कीमत पर संस्कृति–वहीनता, मानव गुण–विहीनता और अलगाव से बचना होगा। शिक्षा को परिवर्तन उन्मुख प्रौद्योगिकियों और देश की सांस्कृतिक परम्पराओं के सातत्य (Continuity) के बीच संश्लेषण (Synthesis) का कार्य करना होगा और शिक्षा इसे बखूबी कर सकती है।

शिक्षा की पाठ्यचर्या तथा प्रक्रियाओं को विविध प्रकार से सांस्कृतिक विषय–वस्तु के जरिए समद्ध बनाया जायेगा। बच्चों में सौन्दर्य समन्वय और परिमार्जन की भावना विकसित की जायेगी। समाज के साधन सम्पन्न व्यक्तियों को, उनकी औपचारिक शैक्षिक योग्यता पर ध्यान दिये बिना, शिक्षा की सांस्कृतिक समृद्धि में योगदान देने के लिए आमंत्रित किया जायेगा। जिसमें अभिव्यक्ति की साहित्यिक और मौखिक पराम्पराएँ शामिल होंगी। सांस्कृतिक परम्पराओं को कायम रखने तथा उन्हे आगे ले जाने के लिए परम्परागत तरीकों से पढ़ाने वाले शिक्षकों की भूमिका को सुदृण किया जायेगा तथा इस कार्य को मान्यता दी जायेगी।

➢ मूल्य शिक्षा का विकास (Promotion of Values) सारभूत मूल्यों के गिरते हुए स्तर के प्रति बढ़ती हुई चिन्ता और समाज में बढ़ती हुई कटुता से यह जरूरी हो गया है कि पाठ्यचर्या में पुनर्ससमायोजन लाया जाए ताकि शिक्षा को सामाजिक, नीतिपरक और नैतिक मूल्य पैदा करने के लिए एक सशक्त साधन बनाया जा सके।

➢ सार्वभौमिक भावना का निर्माण (Inculcation of Eternal Values)– हमारे सांस्कृतिक और विराट समाज में शिक्षा के जरिये विकसित किये जाने वाले मूल्यों में सार्वभौमिक भावनाहोनी चाहिए और इनसे हमारे लोगों में एकता और एकीकरण की भावना विकसित होनी चाहिए। इस प्रकार की मूल्य शिक्षा रूढ़िवाद, धार्मिक कट्टरता, हिंसा, अन्धविश्वास और भाग्यवाद को समाप्त करेगी।

इस निर्णायक भूमिका के अतिरिक्त, मूल्य शिक्षा को एक गहन और ठोस विषय–वस्तु हमारी विरासत, राष्ट्रीय और

सार्वभौमिक उद्देश्य और विचारों पर आधारित हो। इसमें इस पहलू पर मुख्य रूप से जोर दिया जाना चाहिए।

- भाषाए (Languages)– 1968 की शिक्षा नीति में भाषाओं के विकास पर विस्तृत रूप से चिार किया गया था। इसके अनिवार्य उपलब्धों पर अब विचार करने की जरूरत नही है और ये आज भी पहले की तरह आवश्यक है, तथापि 1968 की नीति के इस भाग का कार्यान्वयन अनियमित रहा है। इस नीति को और अधिक तेजी और सार्थकता से कार्यान्वित किया जायेगा।

- मीडिया तथा शैक्षिक प्रोद्योगिकी का प्रयोग (Use of Media and Educational Technology)– शैक्षिक प्रौद्योगिकी को औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों ही क्षेत्रों में लाभदायक सूचना और शिक्षकों के प्रशिक्षण तथा पुनः प्रशिक्षण के प्रसार के लिए लाया जायेगा ताकि गुणवत्ता को सुधारा जा सके, कला और संस्कृति की जागरूकता को प्रखर किया जा सके और अपनाये जाने योग्य मूल्य पैदा किये जा सकें। उपलब्ध व्यवस्थापन का अधिक से अधिक लाभ उठाया जायेगा। जिन गाँवों में विद्युत नहीं पहुँची वहाँ बैटरी अथवा सौर ऊर्जा व्यवस्था से कार्यक्रम चलाये जायेगें।

सांस्कृतिक रूप से संगत शैक्षिक कार्यक्रमों का निर्माण शैक्षिक प्रौद्योगिकी का एक महत्वपूर्ण भाग होगा और देश में उपलब्ध सभी संसाधनों का इस कार्य के लिए उपयोग किया जायेगा।

माध्यम का बच्चों तथा प्रौढ़ों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है। कहीं–कहीं तो इसने हिंसा आदि को बढ़ावा दिया है और इस प्रकार इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। उत्कृष्ट शैक्षिक उद्देश्यों को निरूत्साहित करने वाले रेडियों और दूरदर्शन कार्यक्रमों को रोका जायेगा। फिल्मों और अन्य माध्यमों में भी इस प्रकार की प्रवृतियों को रोकने के लिए कदम उठाये जायेगें। बच्चों हेतु अच्छी फिल्मों के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए एक सक्रिय अभियान चलाया जायेगा।

- कार्य –अनुभव (Work Experience)– कार्य अनुभव जो सार्थक शारीरिक श्रम पर आधारित हो और अध्ययन प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग हो और समाज के लिए लाभदायक सामग्री अथवा सेवाओं का विकास करने वाला हो, शिक्षा के सभी पर एक अनिवार्य भाग समझा जाता है और यह सुंगठित तथा अच्छे कार्यक्रमों द्वारा उपलब्ध कराया जायेगा।

- शिक्षा और पर्यावरण (Educational and Enviroment)– पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की बहुत जरूरत है। इसमें बच्चे से लेकर सभी आयु वर्गों तथा समाज के सभी क्षेत्रों के लोग शामिल होने चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरणात्मक जागरूकता की शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे पूरी शैक्षिक प्रक्रिया में शामिल किया जायेगा।

- गणित शिक्षण (Teaching of Mathematics)– गणित को एक ऐसा साधन समझा जाना चाहिए जो बच्चों को सोचने–समझने के लिए विश्लेषण करने के लिए और तर्कसंगत विचार करने के लिए प्रशिक्षित कर सके। एक विशिष्ट विषय होने के अतिरिक्त यह किसी भी ऐसे विषय के प्रति सम्बद्ध होना चाहिए जिसमें विश्लेषण तथा तर्क बुद्धि की जरूरत हो।

- कम्प्यूटर शिक्षा (Computer Literacy)– स्कूलों में कम्प्यूटर आरम्भ करने के साथ–साथ शैक्षिक संगणना और कारण तथा प्रभाव के सम्बन्धों को समझ के जरिए अध्ययन का आविर्भाव और प्रवर्तनों के पारस्परिक प्रभाव से गणित शिक्षण को उपयुक्त रूप से पुनर्गठित किया जायेगा। इसे आधुनिक प्रौद्योगिकी की योजनाओं के साथ जोड़ने के लिए सही ढंग से पुनः तैयार किया जायेगा।

- विज्ञान शिक्षा (Science Education)– विज्ञान शिक्षा को सुदृढ़ किया जायेगा ताकि बच्चों में जिज्ञासा की भावना, सृजनात्मकता , उद्देश्यपरकता, प्रश्न पूछने का साहस और सौन्दर्य–भाव जैसी योग्यताएँ और मूल्य विकसित किये जा सकें।

विज्ञान शिक्षा कार्यक्रमों को इस तरह तैयार किया जायेगा ताकि छात्र समास्या का समाधान खोजने और निर्णय लने की कुशलता लेने की कुशलता प्राप्त कर सके और स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, तथा दैनिक जीवन की अन्य बातों के साथ विज्ञान का सम्बन्ध खोज सके। विज्ञान शिक्षा को औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र से बाहर

के लोगों तक पहुँचाने का भरसक प्रयत्न किया जायेगा।

- खेल और शारीरिक शिक्षा (Sports and Physical Education)– खेल ओर शारीरकि शिक्षा अध्ययन प्रक्रिया का एक अभिन्न भाग है और इसे कार्य के मूल्यांकन में शामिल किया जायेगा। शारीरिक शिक्षा खेलों के लिए एक राष्ट्रीय स्तरक की अवस्थापना (Infrastructure) शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में तैयार की जायेगी।
- पाठ्यक्र का व्यवसायीकरण (Vocationalisation of Curriculum) प्रस्तावित पाठ्यक्रम में सुनियोजित (Planned) और व्यापक रूप में व्यापारकि शिक्षाकी शुरूआत करना महत्वपूर्ण है।
- नई शिक्षा नीति द्वारा प्रस्तावित कोर अथवा मर्म पाठ्यक्रम (Core Curriculum as Recommended by National Policy on Education)– नई शिक्षा नीति, 1986 में अन्य विषयों के साथ–साथ एक मर्म पाठ्यक्रम की सिफारिश की गई है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित दस प्रकार के तथ्य होगें। ये तथ्य किसी भी विषय का हिस्सा हो सकते हैं और इनका जानना सभी छात्रों के लिए अनिवार्य है–
- भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास (History of India'sFreedom Movement)
- संवैधानिक दायित्व (Constitutional Obligations)
- राष्ट्रीय एकता विकास हेतु आवश्यक विषय वस्तु (Content Essential for National Integration)
- भारत की सांझी सांस्कृतिक विरासत (India's Common Cultural Heritage)
- समता, लोकतन्त्र एवं धर्मनिपेक्षता सम्बन्धी विषय–वस्तु (Subject Matter Relating toEgalitariansim,Democracy and Secularism)
- लैंगिक समता (Equality of Sexes)
- पर्यावरण रक्षा (Protection of Environment)
- सामाजिक बाधा उल्मूलन (Removal of Social Barriers)
- छोटा परिवार आदर्श अनुपालन (Observance of Small Family Norms)
- वैज्ञानिक दृष्टिकोंण का विकास (Inculcation of Scientific Temper)

21वीं शताब्दी के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्माण (Curriculum for the Twenty First Century)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् ने राष्ट्रव्यापी चर्चा के पश्चात् राष्ट्रीय सरोकारों (National Concerns) को ध्यान में रखते हुए स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम(2000–2001) के निम्नलिखित उद्देश्य तथा कार्य बताए हैं–

- सामाजिक जीवने तथा भावी अधिगम के लिए आवश्यक भाषा सम्बन्धी योग्यताएं (सुनना, बोलना, पढ़ना, व लिखना) निर्मित करना।
- दिन–प्रतिदिन के कार्यकलापों में प्रभावशाली प्रतिभागिता के लिए सम्प्रेषण कौशल का निर्माण करना (मौखिक तथा दृश्यात्मक)।
- तार्किक बुद्धि के विकास के लिए गणितीय योग्यताओं का विकास करना ताकि शिक्षार्थी साधारण गणितीय कार्यों और दैनिक जीवन में उनके अनुप्रयोगों से कुछ सीख सके।
- रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास तथा भाग्यवाद को समाप्त करने के लिए प्रश्न पूछने का साहस करने तथा जानने की इच्छा शक्ति के विकास के उद्देश्य से वैज्ञानिक दृष्टिकोंण और सोच विकसित करना।
- जाँच–पड़ताल की वैज्ञानिक प्रविधियों का ज्ञान तथा समास्याओं के समाधान में इसका अनुप्रयोग करना।
- पर्यावरण को उसकी सम्पूर्णता में जानना (प्राकृतिक और सामाजिक तथा उसकी अनुक्रियात्मक प्रक्रिया), पर्यावरण की समास्याएँ और पर्यावरण की रक्षा के उपाय जानना।

- विभिन्न विषयों और समास्याओं को स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर जाँचने –परखने की योग्यता तथा स्वतंत्र रूप से स्वयं मूल्यांकन करने की क्षमता का विकास करना।
- भारत के स्वधीनता संग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों और सामाजिक उत्थान के सामाजिक कार्यकर्ताओं के योगदान तथा उनके बलिदान का महत्व पहचानना तथा उनके आदर्शों पर तत्परता से अमल करना।
- ऐसे गुणों को बढ़ावा देना जिनसे मनुष्य में मानवता का विकास हो तथा वे सामाजिक दृष्टि से प्रभावी सिद्ध हो सकें और उन्हे जीवन की सार्थकता और दिशा मिले। ये मूल्य सामाजिक/आर्थिक और वैयक्ति/अध्यात्मिक मूल्यों से बँधे होने चाहिए।
- देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों तथा देश के विभिन्न भागों में व्याप्त विविधता को समझना तथा देश की सामाजिक सांस्कृतिक विरासत को समझना।
- परिवर्तन सापेक्ष प्रौद्योगिकी और देश की परम्परा तथा विरासत की निरन्तरता के बीच सन्तुलित संश्लेषण की आवश्यकता को महत्व देना।
- राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति सम्मान और राष्ट्र की एकता और पहचान के आदर्श को अक्षुण्ण रखने वाले आदर्शों और अकांक्षाओं का ज्ञान कराना।
- अपने देश के विशिष्ट सन्दर्भ में भूमंडलीयकरण, उदारीकरण तथा स्थानीयकरण की प्रक्रियाओं के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को समझना।
- सामान्य विकास के प्रतिमान के आधार पर शारीरिक मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक ज्ञान, मनोवृति, जीवनचर्या और आदतों का विकास करना।
- मानवीय मूल्यों और सामाजिक न्यायके प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ विश्वव्यापी भाईचारें के लिए आवश्यक समानता के प्रति तत्परता का बोध कराना।
- समाजवाद पंथनिरपेक्षता, स्वस्थ लोकतंत्र तथा अंहिसा के राष्ट्रीय उद्देश्यों को जीवन में अपनाने के महत्व और इसके प्रति तत्परता का बोध कराना।
- सुशिक्षित समाज के निर्माण के लिए स्व–अधिगम, स्वतः निर्देशित अधिगम तथा जीवनपर्यन्त अधिगम के लिए आवश्यक गुणवत्ता और चारित्रिक विशिष्टताएं उत्पन्न करना।
- उत्पादकता वृद्धि आजीविका वृत्ति सन्तुष्टि और अर्थोपाज्रनकारी कार्य प्रणालियों के लिए अपेक्षित शारीरिक कार्य की गरिमा और महत्व को समझना।
- जीवन की विभिन्न परिस्थियों में सौन्दर्य की खोज तथा उसके महत्व को जानने की योग्यता तथा इसे अपने व्यक्तित्व में उतारने की आवश्यकता को समझना।
- वास्तविक सूचना को ग्रहण करने के अतिरिक्त उसे समझने ,परिलक्षित करने तथा आत्मसात् करने और अपनी अन्तर्दृष्टि को विकसित करने को क्षमता क निर्माण करना।
- विभिन्न विषयों/विचारधाराओं की विविधता और अन्तरालों को स्वीकार करने और उनके महत्व को समझने की योग्यता और मूल्य व्यवस्थाओं के विकल्पों के चयन कीक्षमता बढ़ाना।
- बड़े परिवारों के विभिन्न प्रभावों और परिणामों को समझना तथा जनसंख्या अतिवृद्धि और जनसंख्या वृद्धि को रोकने की जरूरत को समझना।
- स्वस्थ लैंगिक सम्बन्धों के प्रति समुचित दृष्टिकोंण और मनोवृत्ति का विकास तथा विपरीत लिंग के सदस्यों के प्रति आदरपूर्ण व स्वस्थ दृष्टिकोंण का विकास करना।

4.14 पाठ्यक्रम के विभिन्न स्तरों के उद्देश्य

किसी विशिष्ट आयु वर्ग के शिक्षार्थियों के शारीरिक,मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक, और सामान्य विकास

की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किसी स्तर/कक्षा विशेष में संप्राप्ति योग्य शिक्षा के उद्देश्यों के सावधानीपूर्वक निर्धारण के लिए 'शिक्षार्थी–केन्द्रित अधिगम' पर बल देना आवश्यक है। किसी कक्षा स्तर विशेष के लिए प्रत्येक उद्देश्य से सम्बद्ध प्रत्याशित भावी अधिगम प्रतिफलों का पूर्वानुमान किया जाना चाहिए।

ऊपर दिये गये उद्देश्यों में से अधिकतर उद्देश्य विभिन्न कक्षाओं में निरन्तर जारी रखे जाने चाहिए। फिर भी, एक कक्षा से दूसरी कक्षा में किसी विशिष्ट उद्देश्य के सन्दर्भ में संप्राप्ति के स्तर में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहेगी। जहाँ तक किसी विशिष्ट उद्देश्य की संप्राप्ति के लक्ष्य का प्रश्न है, वहाँ एक प्रकार का अधिगम सांतत्यक होगा तथा यह किसी विशिष्ट कक्षा स्तर पर अन्तिम बिन्दु तक पहुँचेगा जो कि सम्बन्धित उददेश्य के स्वरूप पर निर्भर होगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणी –

क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

6. विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम के क्या उद्देश्य हैं ?

....

....

....

4.15 सारांश

सामाजिक समूह किसी भी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के ऐसे समूह को कहते है जो एक दूसरे से सम्पर्क व लेन–देन रखे, जिनमें एक दूसरे से कुछ समानताएं हो जो आपस में एकता की भावना रखे। उपर्युक्त पाठ के विवेचन के अन्तर्गत सामाजिक समूहों का दो प्रकार से वर्गीकरण किया गया है– प्राथमिक समूह एवं द्वितीयक समूह। कनिंघम ने पाठ्यक्रम की लोकप्रिय परिभाषा दी है जिसके अनुसार 'पाठ्यक्रम अध्यापक रूपी कलाकार (Artist) के हाथ में वह साधन (Tool) है। जिसके माध्यम से वह अपने पदार्थ (Material) रूपी छात्र को अपने कला गृह रूपी स्कूल (Studio) में अपने उद्देश्य के अनुसार विकसित अथवा रूप (Mould) प्रदान करता है।'' पाठ्यक्रम निर्माण के निम्नलिखित आधारभूत सिद्धांतों–परम्पराओं को सुरक्षित रखने का सिद्धांत, जीवन की तैयारी का सिद्धांत इत्यादि का वर्णन किया गया है। पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का वर्णन किया गया है। विभिन्न समूहों के अपवर्जन को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए तथा पाठ्यक्रम के विभिन्नीकरण को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए। मुख्य रूप से दो प्रकार के पाठ्यक्रम का प्रयोग किया जाता है– विषय– केन्द्रित पाठ्यक्रम तथा अनुभव केन्द्रित पाठ्यक्रम।

4.16 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यक्रम निर्माण के आधारभूत सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।
2. अनुभवगत पाठ्यक्रम के त्रुटियों की विवेचना कीजिए।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार प्रस्तावित पाठ्यक्रम की चर्चा कीजिए।
4. पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में विभिन्न दार्शनिकों के विचारों की व्याख्या कीजिए।
5. विषयगत पाठ्यक्रम एवं अनुभविगत पाठ्यक्रमों में विभेद कीजिए।

4.17 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत, दार्शनिक विचार, पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित पाठ्यक्रम आदि महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा कीजिए।

4.18 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ''पाठ्यक्रम अध्यापक रूपी कलाकार (Artist) के हाथ में वह साधन (Tool) है जिसके माध्यम से वह अपने पदार्थ रूपी छात्र (Material) को अपने कलागृह रूपी स्कूल (Studio) में अपने उद्देश्य के अनुसार विकसित अथवा रूप (Mould) प्रदान करता है।'' इसमें कोई सन्देह नहीं कि कलाकार को अपने पदार्थ को अपने आदर्शों के अनुरूप ढालने की बहुत स्वतंत्रता है, क्योंकि कलाकार का पदार्थ निर्जीव है। परन्तु स्कूल में अध्यापक का पदार्थ अर्थात छात्र सजीव है। पुराने समय में जबकि आवश्यकताएँ सीमित थी, साधन सीमित थे, अध्यापक को अपने पदार्थ यानि कि छात्र को नया रूप देने में पूरी स्वतंत्रता थी। परन्तु अब बदलती हुई परिस्थितियों में अध्यापक की यह महत्ता घट गई है। फिर भी निश्चय ही अध्यापक के हाथ में पाठ्यक्रम बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है।

2. रस्क (Rusk) महोदय ने कहा है, ''पाठ्यक्रम का संगठन जितना दर्शन पर आधारित होता है, उतना शिक्षा का कोई अन्य पहलू नहीं है। शिक्षा सम्बन्धी मुख्य तीनों दर्शन– प्रकृतिवाद, आदर्शवाद तथा प्रयोजनवाद इस विचार पर सहमत हैं कि बच्चों को अपेक्षित अनुभवों के साधन जुटाये जाने चाहिए। परन्तु तीनों विचारधाराएं इस पर एकमत नहीं है कि बच्चों को किस प्रकार का अनुभव करवाया जाए तथा किस प्रकार से।"

3. माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार माध्यमिक शालाएं एक मार्गीय नहीं होनी चाहिए बल्कि उनके अन्दर शैक्षिक कार्यों में भिन्नता होनी चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी एक–दूसरे से भिन्न होता है अतः इसको ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्धारण करना चाहिए।

4. पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन अध्यापक अपने सूझ–बूझ के आधार पर करता है। अध्यापक को यह सोच विचार करना होता है कि किस विधि से पाठ्यक्रम में दी गयी विषयवस्तु का क्रियान्वयन किया जाये।

5. पाठ्यचर्या के स्तर को ऊँचा करने के उपाय– अनुसंधान को बढ़ावा, पाठ्यपुस्तके एवं शिक्षण साधन तैयार करना, प्रयोगिक पाठ्यक्रम पर बल, उच्च पाठ्यचर्याओं को क्रमिक रूप से लागू करना।

6. किसी विशिष्ट आयु वर्ग के शिक्षार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक, और सामान्य विकास की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किसी स्तर/कक्षा विशेष में संप्राप्ति योग्य शिक्षा के उद्देश्यों के सावधानीपूर्वक निर्धारण के लिए 'शिक्षार्थी–केन्द्रित अधिगम' पर बल देना आवश्यक है। किसी कक्षा स्तर विशेष के लिए प्रत्येक उद्देश्य से सम्बद्ध प्रत्याशित भावी अधिगम प्रतिफलों का पूर्वानुमान किया जाना चाहिए।

4.19 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. गुप्ता रत्ना, मौर्या गीतान्जलि (प्रथम नवीनतम संस्करण), पाठ्यचर्या के सैद्धांतिक आधार, लखनऊ : शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन।
2. एन0सी0एफ0 (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिसर।
3. माथुर, एस0एस0 (2010–2011), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेषन।
4. गुप्त, लक्ष्मी नारायन (2008–2009), शिक्षा एवं दार्शनिक एवं समाजषास्त्रीय आधार, इलाहाबाद : न्यू कैलाष प्रकाषन।
5. पाण्डेय, के0पी0 (2005), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजिक आधार, वाराणसी : विष्वविद्यालय प्रकाषन।
6. शुक्ला रमा, सिंह मधुरिमा, (तृतीय नवीनतम संस्करण), शिक्षा के दार्शनिक आधार, लखनऊ : आलोक प्रकाषन।
7. मालवीय राजीव, विजिलिंग फैकेल्टी (2012), शिक्षा के मूल सिद्धांत, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
8. सारस्वत मालती, गौतम एस0एल0 (नवीनतम संस्करण), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।

खण्ड – 02 : पाठ्यचर्या नियोजन

खण्ड परिचय

प्रस्तुत खण्ड में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005, शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2009 तथा पाठ्यचर्या रूपरेखा 2009 तथा पाठ्यचर्या विकास हेतु अन्तर्राष्ट्रीय विचार का विवेचन किया जायेगा। प्रस्तुत खण्ड का विभाजन चार इकाईयों में किया गया है जिसका विवरण इस प्रकार है –

इकाई 05 : इस इकाई में आप पाठ्यचर्या नियोजन की संकल्पना, आवश्यकता एवं उद्देश्यों के विषय में समझ सकेंगे। इसके साथ ही पाठ्यचर्या नियोजन की अवधारणा को समझने का प्रयत्न कर सकेंगे तथा पाठ्यचर्या नियोजन की प्रक्रिया में उद्देश्यों और गतिविधि दोनों पर विचार किया जाएगा। इस इकाई में पाठ्यचर्या नियोजन की आवश्यकता को बिंदुवार समझने का प्रयास किया जाएगा जिससे पाठ्यचर्या नियोजन के उद्देश्य पूर्णरूपेण स्पष्ट हो सके और शिक्षक के रूप में पाठ्यचर्या नियोजनकर्ता की भूमिका को स्पष्ट किया गया है।

इकाई 06 : प्रस्तुत इकाई में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के प्रमुख सिद्धांत– रचनावाद, सन्दर्भीकरण, विषयों की समग्रता, विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र की चर्चा की गई। एन0सी0एफ0 2005 के प्रमुख भागों– परिप्रेक्ष्य, सीखना और ज्ञान, पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आकलन, विद्यालय तथा कक्षा का वातावरण तथा व्यवस्थागत सुधार की चर्चा की गई है। प्रस्तुत इकाई में एन0सी0एफ0 2005 के उद्देश्य, सिद्धांत, विशेषताएँ, लक्ष्य इत्यादि की विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

इकाई 07 : प्रस्तुत इकाई में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 का अध्ययन किया गया है। इस इकाई में NCFT 2009 की आवश्यकता एवं महत्व का अध्ययन निम्न बिन्दुओं– शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लिए, परिवर्तित समाज स्तर के लिए, शैक्षिक असमानता को कम करने के लिए, नवीन चुनौतियों के समाधान के लिए, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता के लिए, छात्रों के अन्तनिर्हित क्षमताओं के विकास के लिए जीवन की प्रभावशीलता के लिए, छात्रों के अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास के लिए, जीवन कौशलों के विकास के लिए इत्यादि की चर्चा की गई है। NCFTE 2009 का स्वरूप, विशेषताएँ, उद्देश्य, अध्यापक शिक्षा इत्यादि के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है।

इकाई 08 : प्रस्तुत इकाई में पाठ्यक्रम का शाब्दिक अर्थ, शिक्षा में पाठ्यक्रम की अवधारणा, पाठ्यक्रम के प्रमुख निर्धारक तत्व जैसे– समाज व संस्कृति, पाठ्यक्रम के विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विचार जैसे– डी0वी0, रूसो, प्लेटो, अरस्तू, रवीन्द्रनाथ टैगोर गिजूभाई, गाँधीजी, अन्तर्राष्ट्रीय आयोग इत्यादि के विचारों को विस्तारपूर्वक बताया गया है।

इकाई 5 : पाठ्यचर्या नियोजन : अवधारणा, आवश्यकता एवं उद्देश्य

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 इकाई के उद्देश्य

5.3 पाठ्यचर्या नियोजनः–अवधारणा

5.4 पाठ्यचर्या नियोजन की आवश्यकता

5.5 पाठ्यचर्या नियोजन के उद्देश्य

5.6 सारांश

5.7 अभ्यास के प्रश्न

5.8 चर्चा के बिन्दु

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

शिक्षा के औपचारिक स्वरूप के निर्माण के पश्चात् शिक्षाशात्रियों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय यह रहा कि बालकों को एक एंसी व्यवस्थित दिशा दी जाय जिस मार्ग पर चल कर विद्यार्थी एक सभ्य, सशक्त व सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोंण को धारित करने वाले राष्ट्र का निर्माण कर सके। ऐसी संकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए एक संगठित पाठ्यचर्या निर्माण की आवश्यकता होती है। पाठ्यचर्या छात्रों को शैक्षिक प्रक्रिया को एक दिशा प्रदान करती है। तथा पाठ्यचर्या के द्वारा ही निर्धारित शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति की जाती है। पाठ्यचर्या छात्रों को निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति करने में सहायता करने के साथ–साथ शिक्षकों को भी विभिन्न विषयों का शिक्षण करने में सहायता करती है।

पाठ्यचर्या नियोजन एक जटिल प्रक्रिया है इस प्रक्रिया में सभी सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों को दृष्टि गत रखा जाता है। पाठ्यचर्या नियोजन के समय स्तर विशेष की कक्षा में कब क्या और कितना पढ़ाना है, यह भी निर्धारति कर अग्रिम योजना बनाई जाती है। पाठ्यक्रम नियोजन के समय यह भी निर्धारित किया जाता है कि उक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के समय छात्रों में रूचि और एकाग्रता बनी रहे।

पाठ्यचर्या छात्रों के लिए अप्रत्यक्ष रूप से एक शिक्षक की भूमिका निभाती है जो शिक्षक के पश्चात् छात्रों को निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान करती है और अध्ययन को गति प्रदान करता है। प्राचीन समय से ही पाठ्यचर्या नियोजन के अन्तर्गत औपचारिक ज्ञान की सीमा को तय करना, छात्र को कक्षा के बाहर के अनौपचारिक ज्ञान शिल्प कार्य, खेल, अन्य अनुभवों को भी सम्मिलित करने की परम्परा रही है। आधुनिक समय में पाठ्यचर्या नियोजन में ाान की विस्तृत एवं व्यापक अवधारणा को सम्मिलित किया तथा अनौपचारिक ज्ञान परम्परा को भी मुख्य पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाता है।

बी0एड0 प्रशिक्षु होने के नाते आप शिक्षक के रूप में अपने व्यवसाय का चयन कर सकते है शिक्षक होने के नाते आपका दायित्व मात्र निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के शिक्षण तक सीमित नही रहता आप की मानसिक क्षमता किसी स्तर विशेष के अध्ययन हेतु परिणामी पाठ्यक्रम निर्मित करने की भी होनी चाहिए जिसमें सामाजिक मांग के अनुसार मानव संसाधन का निर्माण हो सके जिससे छात्रों के सैद्धान्तिक विकास के साथ–साथ भावात्मक विकास भी हो सके।

5.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप इस योग हो जाएंगे कि –

1. पाठ्यचर्या नियोजन अवधारणा को समझ सकेंगें।
2. पाठ्यचर्या नियोजन की आवश्यकता को समझ सकेंगें।
3. पाठ्यचर्या नियोजन क्यो किया जाता है, यह समझ सकेंगें।
4. पाठ्यचर्या नियोजन पर प्रमुख विद्वानों के विचार को समझ सकेंगें।
5. पाठ्यचर्या नियोजन के उद्देश्यों को आत्मसात कर सकेंगें।

5.3 पाठ्यचर्या नियोजन की अवधारणा

पाठ्यचर्या नियोजन एक जटिल प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत विभिन्न अध्ययन स्तरों के अनुरूप सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष को सम्मिलित करना होता है। पाठ्यचर्या नियोजनकर्ता के मनस में यह विचार सदैव चुनौती के रूप में उल्लेखित होता है कि निर्मित पाठ्यचर्या किस प्रकार छात्र की ज्ञान मीमांसा की पूर्ति कर पायेगा। पाठ्यक्रम नियोजन से पूर्व निर्धारित किये गये उद्देश्यों को दृष्टिगत रखा जाता है जिससे बालक के विकास के सभी पक्षों का निर्मित किया जा सके। पाठ्यचर्या नियोजन एक प्रारूप के अनुरूप की जाती है उस प्रारूप में बालक, शिक्षक, समाज व सामाजिक राष्ट्रीय भावना को महत्वपूर्ण ध्यान दिया जाता है।

पाठ्यचर्या नियोजन एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें विचारों की परस्पर क्रिया पाठ्यक्रम क्षेत्र और अन्य सम्बन्धित विषयों से सम्मिलित होती है। वस्तुतः पाठ्यक्रम नियोजन का उद्देश्य छात्रों के लिए उपलब्ध सीखने का अवसरों का वर्णन करता है।

अतः पाठ्यचर्या नियोजन का मुख्य सम्बन्ध छात्रों के अधिगम अनुभवों से होता है जो उन्हें कक्षागत् व विद्यालयी वातावरण के विभिन्न क्रियाकलापों में प्राप्त होता है।

पाठ्यचर्या नियोजन के अन्तर्गत किसी भी शिक्षण/सीखने की स्थिति में मुख्य प्रतिपाद्य विषय छात्रों को क्या सीखाया जाय के साथ, कैसे सीखाया जाय, भी रहता है। जिन पाठ्यचर्या नियोजन में कार्य अनुभव पर विचार किये बिना अवधारणाओं या विद्वानों के मतों को ही परिभाषित किया जाता है, अपूर्ण कही जाती है क्योंकि शिक्षण के विभिन्न स्तर–ज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक अर्थात प्रदान किये गये ज्ञान का व्यावहारिक अनुपयोग की संकल्पना भी पाठ्यचर्या नियोजन का मुख्य चिन्तन विषय है।

पाठ्यचर्या नियोजन की प्रक्रिया में उद्देश्यों और गतिविधि दोनो पर विचार किया जाता है अन्यथा यह प्रक्रिया लक्ष्यविहीन हो जाती है। अतः पाठ्यक्रम नियोजन की प्रक्रिया में तथ्य एवं व्यवहार दोनों के विषय में निर्णय लिया जाता है।

इनके अलावा पाठ्यचर्या नियोजन के क्षेत्र में कई विषय सम्मिलित होते है, पाठ्यचर्या दृष्टिकोंणों की पहचान करना, इन्हे क्रियान्वित करना, उनका मूल्याकन करना व नये कार्यक्रमों की आवश्यकता आदि के विषय में निर्णय लेना। अतः पाठ्यचर्या नियोजन ऐसी प्रक्रिया है जो इस विषय में निर्णय लेने से सम्बन्धित है कि क्या सीखाया जाये, क्यो और कैसे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को मौजूदा पाठ्यचर्या आवश्यकताओं और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए व्यवस्थित किया जाय।

पाठ्यचर्या नियोजन प्रभावी शिक्षण अनुभव का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जो छात्रों के शैक्षणिक भविष्य की आधारशिला निर्मित करना है। इसमें उद्देश्यों अध्ययन सामग्री और मूल्याकन विधियों सहित शिक्षकों के महत्वपूर्ण विचारों को शैक्षिक पाठ्यक्रम को अभिकल्पित करना और क्रियान्वित करना सम्मिलित होता है। यह निदेशात्मक व सीखने की पद्धतियों को नियंत्रित करने वाला शैक्षिक ढाँचा तैयार करता है।

एक सुनियोजित पाठ्यचर्या सार्थक व उपयोगी तथा रूचिकर अध्ययन का वातावरण स्थापित करता है। एक प्रभावी पाठ्यचर्या शिक्षकों विद्यार्थियों, प्रशासकों एवं सामुदायिक हितधारकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए एक मात्रात्मक रणनीति एवं ढाँचा प्रस्तुत करता है।

पाठ्यचर्या की योजना के अधिगम के परिणामों, मानकों व दक्षताओं को चिन्हित कर निर्दिष्ट करता है, जिन्हे छात्रों को अगले स्तर पर जाने से पूर्व प्राप्त करना होता है। साक्ष्य आधारित पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को आवश्यक ज्ञान व कौशल प्रदान करता है जो प्रशिक्षकों और छात्रों को शैक्षणिक सफलता को प्राप्त करने के लिए

निर्देशित करने वाले आधार रेखा के रूप में कार्य करता है।

वर्तमान पाठ्यचर्या योजना व्यापक पक्षो पर आधारित होती है, जिसमें संज्ञानात्मक विकास के साथ सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर जोर दिया जाता है। पाठ्यचर्या नियोजन के छात्रकेन्द्रित दृष्टिकोंण विभिन्न स्तरो पर विभिन्नीकरण, अनुकुलन शीलता व स्थिरता को प्रोत्साहित करता है।

अतः पाठ्यचर्या योजना के अन्तर्गत शिक्षा शास्त्रियों के द्वारा सामाजिक एवं राष्ट्रीय आवश्यकता एवं मांग के अनुरूप विषयों का चयन कर उनकी जटिलता के अनुसार विभिन्न शिक्षण स्तरों पर विभाजित कर सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान की रूप रेखा तय की जाती है।

5.4 पाठ्यचर्या नियोजन की आवश्यकता

पाठ्यचर्या योजना की अवधारना को समझने के पश्चात् निष्कर्ष निकलता है कि पाठ्यचर्या योजना जटिल एवं बौद्धिक प्रक्रिया के साथ समाज एवं राष्ट्र उपयोगी जन संसाधन निर्माण करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

यदि हमें वर्तमान बालक को उचित व उपयोगी शिक्षा देकर राष्ट्र व समाज के उन्नत, समर्थ एवं सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न बनाने वाला नागरिक बनाना है तो एक पूर्ण नियोजित एवं वर्तमान परिस्थितियों से संगत पाठ्यचर्या का निर्माण करना आवश्यक होगा।

पाठ्यचर्या नियोजन के समय शिक्षाविदों व शिक्षा समितियों द्वारा विभिन्न विद्यालयों का भ्रमण एवं समाज के हर वर्ग की आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष अनुभव करना होता है इस हेतु क्षेत्र भ्रमण, विद्वानों के विचार, गोष्ठिया कार्यशाला एवं सेमिनार का आयोजन किया जाता है। प्रस्तुत पाठ्यचर्या के आधार पर छात्रों के ज्ञान की आधारशिला का निर्माण किया जाता है, जिस पर उसका वास्तविक जीवन संरचित होता है। अतः पाठ्यचर्या नियोजन एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक प्रक्रिया है। पाठ्यचर्या नियोजन की आवश्यकता को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है।

1. पाठ्यचर्या नियोजन, शिक्षण अधिगम के सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। अनियोजित पाठ्यचर्या योजना, बालको के मान ज्ञानात्मक पक्ष का ही विकास कर पाती है जिससे बालक तथ्यों को रट लेता है परन्तु आनुभविक ज्ञान नही कर पाता।
2. पाठ्यचर्या योजना के अन्तर्गत विषय से सम्बन्धित नवीन खोज या अनुभव को पूर्व ज्ञान व अनुभव के साथ सम्मिलित किया जाता है जिसके द्वारा बालक प्रदान किये गये ाान एवं तथ्यों का वास्तविक परिस्थितियों उपयोग करने में सक्षम बन सके।
3. पाठ्यचर्या नियोजन के द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं राष्ट्रहित की भावना को ध्यान में रखकर शिक्षण हेतु विषय वस्तु का चयन किया जाता है।
4. पाठ्यचर्या नियोजन के समय पाठ्यचर्या के स्तर का भी ध्यान रखा जाता है यदि एक उच्चस्तरीय पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाना है तो राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य हेतु आवश्यक एवं उपयोगी विषयवस्तु का चयन कर प्रक्रिया का पारगमन किया जाता है।
5. पाठ्यचर्या योजना द्वारा किसी भी विषय के लिए व्यावहारिक कार्य योजना और सीखने के उद्देश्यों को सूचीबद्ध किया जाता है। पाठ्यचर्या शिक्षक का एक सहायक मानचित्र होता है जिसमें यह रेखांकित रहता है कि आधुनिक परिदृश्य के अनुसार विषयवस्तु को किस प्रकार व कितना पढ़ाना है।
6. पाठ्यचर्या योजना की सहायता से निर्धारित पाठ य वस्त्र को स्पष्ट रूचिकर, समाजउपयोगी बनाया जाता है। जिसे छात्र सक्रिय व रूचि लेकर सीखते हे।
7. पाठ्यचर्या नियोजन की सहायता से शिक्षाथियों के लिए प्रमुख दक्षताओं के रूप घोषित '4C; (creativity, criticism, communication, cooperate) (रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, संचार और सहयोग) के सिद्धान्त को अपनाया जाता है।
8. पाठ्यचर्या नियोजन के समय विद्यालय व समाज के मूल्यों, सन्र्दभों, शैक्षणिक दृष्टिकोंण एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है और निर्धारित सिद्धान्तों एवं उद्देश्यों के अनुरूप पाठ्यचर्या का निर्माण किया

जाता है।

9. पाठ्यचर्या नियोजन के अन्तर्गत, किसी स्कूल, शैक्षिक कार्यक्रम या प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम को डिजाइन करना विकसित करना एवं लागू किया जाता है।

10. पाठ्यचर्या नियोजन का लक्ष्य, यह सुनिशिचत करना है कि पाठ्यक्रम शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के अनुरूप है, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करता है, और शिक्षा एवं प्रशिक्षण में सर्वोत्तम प्रथाओं पर आधारित है।

11. छात्रों के सीखने के लिए क्या आवश्यक है और समाज की मांगे क्या है, इसे संरेखित करने के लिए पाठ्यचर्या योजना आवश्यक है।

12. स्किलबेक के पाठ्यक्रम मॉडल के अनुसार योजना 'स्थितिजन्य विश्लेषण' से शुरू होता है, जहां उन समस्त कारकों की पहचान की जाती है, जिन पर नियोजन क्रम से विचार करने की आवश्कयता होती है। अतः पाठ्यचर्या नियोजन की प्रक्रिया में अच्छी संरचना सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यचर्या मॉडल का चयन किया जा सकता है जिसके अन्तर्गत पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, पाठ्य सामग्री शामिल होता है।

13. पाठ्यचर्या योजना में विद्यालयी कार्यक्रम की एक निशिचित योजना प्रस्तुत की जाती है जिसमें बालकों के मानसिक स्तर के अनुकूल किन क्रियाओं को सीखाया जायेगा व किन विषयों को पढ़ाया जायेगा यह पाठ्यचर्या नियोजन द्वारा ही निश्चित हो पाता है।

14. पाठ्यचर्या नियोजन में एक सैद्धान्तिक विचार प्रस्तुत किया जाता है जिसके आधार पर विभिन्नि स्तरों के अनुकूल पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है, जो छात्रों की प्रगति के मूल्याकन में सहायता करता है व समाजोपयोगी उत्पादन कार्य व कार्यानुभव पर बल दिया जाता है।

15. पाठ्यचर्या नियोजन में सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित करने की योजना प्रस्तुत होती है, जो विद्यालयी जीवन के कार्यक्रम की सम्पूर्ण रूपरेखा का आधार बनता हे।

16. एक नियोजित पाठ्यचर्या उत्तम पुस्तकों के निर्माण के लिए भी मार्गदर्शक का कार्य करती है जिसमें विभिन्न स्तर अनुसार विषयवस्तु का चयन किया जाता है।

17. एक निश्चित स्तर के लिए पूरे प्रदेश व देश में शैक्षिक स्तर की एकरूपता एवं समानता के लिए पाठ्यचर्या नियोजन आवश्यक है जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र को सांस्कृतिक एवं शैक्षिक रूप में संजोया जा सके।

18. समाज की पारम्परिक मान्यताओं के स्थान पर परिवर्तित मान्यताओं का दिग्दर्शन पाठ्यचर्या नियोजन में विचारित किया जाता है। जिसकी सहायता से बालक विद्यालयी जीवन में पाठ्यचर्या में निहित नवीन मान्यताओं तथा तथ्यों को सीखने के बाद जब बालक सामाजिक जीवन में पदार्पण करता है तो वह समाज को कुछ नवीनतायुक्त मंतव्य देता है।

19. एक नियोजित पाठ्यचर्या, शिक्षार्थी हेतु अत्यन्त आवश्यक है। विद्यार्थी को इसकी सहायता से अपने सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक क्रियाकलाप पर आधारित कार्य अनुभव भी प्राप्त होता है, जो उसके सामाजिक उत्तरदायित्व के वहन में सहयोग करता है।

20. पाठ्यचर्या नियोजन के समय, छात्रों व समाज की वर्तमान आवश्यकता, रूचि किन क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं, के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय चिन्तन के आधार पर विषयवस्तु के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक आधार प्रदान किये जाते हैं।

फ्रांसिस जे0 ब्राउन ने अपनी पुस्तक शैक्षिक समाजशास्त्र में वर्णित किया है कि पाठ्यचर्या उन समग्र परिस्थितियों का समूह है, जिसकी सहायता से शिक्षक तथा विद्यालय शासक, उन सभी बालकों तथा नवयुवकों के व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं, जो विद्यालय से होकर गुजरते हैं।''

उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि एक उपयुक्त पाठ्यचर्या विद्यालयी क्रियाकलाप का मूलाधार है। अतः पाठ्यक्रम नियोजन शिक्षाविदों, प्रशासकों हेतु एक आवश्यक प्रक्रिया है।

5.5 पाठ्यचर्या नियोजन के उद्देश्य

पाठ्यचर्या योजना शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की चिन्तन प्रक्रिया है जिसका महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों के शैक्षिक व सहशैक्षिक अनुभवों को प्राप्त करने की रूपरेखा तय करना है।

पाठ्यचर्या नियोजन के उद्देश्यों को अग्रलिखित बिन्दुओं में उचित तरीके से समझा जा सकता है।

1. पाठ्यचर्या नियोजन का उद्देश्य शिक्षण और अधिगम की सुविधा के लिए मानचित्र बनाना है।
2. यह शिक्षण और अधिगम के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना है जो छात्र अधिगम के प्रदर्शन को बढ़ावा देने में मदद करता है।
3. यह विकास के क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है और छात्रों को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सहायता करता है।
4. पाठ्यचर्या नियोजन प्रत्येक पाठ के विशिष्ट अधिगम के उद्देश्यों की योजना बनाने के लिए किया जाता है जो पूर्व शिक्षा पर आधारित होता है।
5. एक नियोजित पाठ्यचर्या शिक्षा के द्वारा ही मानवीय गुणों एवं क्षमताओं का विकास कर जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करती है। इन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति शिक्षक एवं छात्रों द्वारा की जाती है।
6. पाठ्यचर्या नियोजन का उद्देश्य आवश्यक एवं उपयोगी ज्ञान प्रदान करना है जिसे प्राप्त कर छात्र स्वंय, समाज एवं राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिक बन सके।
7. पाठ्यचर्या नियोजन के माध्यम से क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित विषय वस्तु प्रदान की जाती है जिसमें स्तर विशेष के शिक्षण के सभी स्तर सम्मिलित हो जाते है। व्यवस्थित रूप में पाठ्यचया। नियोजन में पाठ्यवस्तु का चयन सरल से कठिन की और किया जाता है।
8. यह छात्रों के लिए निर्धारित शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को प्राप्त करने का नियोजन है जिसमें सतत् एवं व्यापक मूल्यांकल की अवधारणा स्वीकृत की जाती है।
9. एक व्यवस्थित पाठ्यचर्या नियोजन का उद्देश्य सामाजिक आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखकर विषय वस्तु की योजना बनाना है जिसमें बालक समाजोपयोगी नागरिक बन सके।
10. शिक्षा के अपने कोई उद्देश्य नही हेते, जो समाज के उद्देश्य होते है वही शिक्षा के उद्देश्य होते हे अतः पाठ्यचर्या नियोजन छात्रों की ज्ञानात्मक प्रगति के साथ सामाजिक आवश्यकताओ की पूर्ति का भी ध्यान रखता है।
11. व्यवस्थित पाठ्यचर्या नियोजन का उद्देश्य संस्कृति एवं सभ्यता को एक पीढी से परिचित कराकर अगली पीढ़ी में हस्तान्वरित कराना है। संस्कृति एवं सभ्यता को एक पीढी से दूसरी पीढ़ी तक पहुचाने का कार्य भी पाठ्याचर्या नियोजन का प्रमुख उद्देश्य है।
12. पर्यावरण जागरूकता वर्तमान में वैश्विक आवश्यकता है पाठ्यचर्या योजना के उद्देश्यों में पर्यावरण जागरूकता जैसे विषयो को सम्मिलित किया जाना प्रमुख है । जिसमें छात्र प्राप्त ज्ञान का उपयोग पर्यावरण संरक्षण हेतु कर सके।
13. पाठ्यचर्या नियोजन में व्यवस्थित विषयों के पर्याप्त अध्ययन अध्यापन की संकल्पना की जाती है जो छात्रों हेतु भविष्य में उपयोगी हो और व्यवसाय के लिए एक ठोस आधार का निर्माण करें।
14. पाठ्यचर्या नियोजन का मुख्य उद्देश्य अध्यापक को स्पष्टता प्रदान करना भी है। पाठ्यचर्या मे ऐसी पाठ्यवस्तु को सम्मिलित किया जाता है जो शिक्षक के लिए स्पष्ट हो एवं वह ज्ञान को छात्रों तक पहुचाती हो।
15. पाठ्यचर्या नियोजन में पाठ्यवस्तु के शिक्षण हेतु विभिन्न शिक्षण विधियों के चयन की सलाह दी जाती है जिसके द्वारा पाठ्यवस्तु का अधिकतम ज्ञान छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके।

16. पाठ्यचर्या नियोजन के उद्देश्यों में पाठ्यवस्तु एवं शैक्षणिक प्रक्रिया को रूचिकर बनाने के लिए बालकेन्द्रित पाठ्यचर्या बनाना प्रमुख है। इसके अन्तर्गत छात्रों की व्यक्तिगत एवं शैक्षिक रूचियों योग्यताओ व क्षमताओ को दृष्टिगत रखते हुए छात्रों को शिक्षा प्रदान करना है।
17. पाठ्यचर्या नियोजन का उद्देश्य सामाजिक एंव शैक्षिक समस्याओं का निवारण करना है जिसमे अधिगम के समस्त उद्देश्यो की प्राप्ति हो सकें।
18. पाठ्यचर्या नियोजन में संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप लोकतान्त्रिक शिक्षा व्यवस्था के निर्माण से है जिसके अन्तर्गत छात्रों को उनके कर्तव्यो एवं अधिकारों का बोध कराया जा सके।

उपरोक्त पक्तियों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पाठ्यचर्या नियोजन का उद्देश्य शैक्षिक एवं सामाजिक आवश्यकताओ के अनुरूप ऐसी पाठ्यवस्तु के चयन से है जिसका अध्ययन कर छात्र स्वंय समाज एवं राष्ट्र के उपयोगी नागरिक बन सके।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. पाठ्यचर्या नियोजन का मुख्य सम्बन्ध किसके अधिगम अनुभवों से होता है।

....

....

2. पाठ्य नियोजन की दो आवश्यकताओं को लिखिए।

....

....

3. पाठ्यचर्या नियोजन के दो उद्देश्यों को लिखिए।

....

....

5.6 सारांश

पाठ्यचर्या योजनाए, शैक्षिक उद्देश्यों को मूर्त रूप देने के उददेश्य से निर्मित की जाती है। पाठ्यचर्या शिक्षकों के पश्चात् छात्रों को निधारित लक्ष्यों की प्राप्ति में पथप्रदर्शक का कार्य करता है। पाठ्यचर्या नियोजन का मुख्य सम्बन्ध छात्रों के अधिगम अनुभवों से होता है जो उन्हें कक्षागत् व विद्यालयी वातावरण के विभिन्न क्रियाकलापों में प्राप्त होता है। पाठ्यचर्या नियोजन के अन्तर्गत किसी भी शिक्षण/सीखने की स्थिति में मुख्य प्रतिपाद्य विषय छात्रों को क्या सीखाया जाय के साथ, कैसे सीखाया जाय, भी रहता है। पाठ्यचर्या नियोजन की प्रक्रिया में उद्देश्यों और गतिविधि दोनो पर विचार किया जाता है अन्यथा यह प्रक्रिया लक्ष्यविहीन हो जाती है। पाठ्यचर्या योजना व्यापक पक्षो पर आधारित होती है, जिसमें संज्ञानात्मक विकास के साथ सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर जोर दिया जाता है।

वर्तमान पाठ्यचर्या योजना व्यापक पक्षो पर आधारित होती है, जिसमें संज्ञानात्मक विकास के साथ सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर जोर दिया जाता है। पाठ्यचर्या योजना की अवधारना को समझने के पश्चात् निष्कर्ष निकलता है कि पाठ्यचर्या योजना जटिल एवं बौद्धिक प्रक्रिया के साथ समाज एवं राष्ट्र उपयोगी जन संसाधन निर्माण करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। पाठ्यचर्या नियोजन के समय शिक्षाविदों व शिक्षा समितियों द्वारा विभिन्न विद्यालयों का भ्रमण एवं समाज के हर वर्ग की आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष अनुभव करना होता है इस हेतु क्षेत्र भ्रमण, विद्वानों के विचार, गोष्ठिया कार्यशाला एवं सेमिनार का आयोजन किया जाता है।

5.7 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या नियोजन की अवधारणा को विस्तृत रूप से स्पष्ट कीजिए।
2. एक शिक्षक के रूप में पाठ्यचर्या नियोजन कर्ता की भूमिका का उल्लेख कीजिए।
3. पाठ्यचर्या नियोजन के उद्देश्यों को वर्णित कीजिए।

5.8 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या नियोजन की अवधारणा, आवश्यकता एवं उद्देश्यों पर चर्चा कर सकेंगे।

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. छात्रों के अधिगम अनुभवों से
2. (i) पाठ्यचर्या योजना के अन्तर्गत विषय से सम्बन्धित नवीन खोज या अनुभव को पूर्व ज्ञान व अनुभव के साथ सम्मिलित किया जाता है जिसके द्वारा बालक प्रदान किये गये ाान एवं तथ्यों का वास्तविक परिस्थितियों उपयोग करने में सक्षम बन सके।

   (ii) पाठ्यचर्या नियोजन के द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं राष्ट्रहित की भावना को ध्यान में रखकर शिक्षण हेतु विषय वस्तु का चयन किया जाता है।
3. (i) पाठ्यचर्या नियोजन का उद्देश्य शिक्षण और अधिगम की सुविधा के लिए मानचित्र बनाना है।

   (ii) इसका उद्देश्य शिक्षण और अधिगम के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना है जो छात्र अधिगम के प्रदर्शन को बढ़ावा देने में मदद कर सके।

5.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. त्यागी, डॉ० अरूण कुमार, ज्ञान एवं पाठ्यचर्या, ग्लोबल एकेडमिक पब्लिशरस्, दिल्ली

2. श्रीवास्तव, एच०एस०, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण की विधियाँ, शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

3. Arulsamy, Dr. S., Curriculum Development, Neelkamal Publication, New Delhi

इकाई–6 : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005

इकाई संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 इकाई के उद्देश्य

6.3 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के प्रमुख सिद्धांत

- 6.3.1 रचनावाद
- 6.3.2 संदर्भीकरण
- 6.3.3 विषयों की समग्रता
- 6.3.4 विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र

6.4 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 के भाग

- 6.4.1 परिप्रेक्ष्य
- 6.4.2 सीखना और ज्ञान
- 6.4.3 पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आकलन
- 6.4.4 विद्यालय तथा कक्षा का वातावरण
- 6.4.5 व्यवस्थागत सुधार

6.5 राष्ट्रीय पाठ्य रूपरेखा 2005 के उद्देश्य

6.6 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के प्रमुख सिद्धांत

6.7 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 की प्रमुख विशेषताएँ

6.8 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य

6.9 सारांश

6.10 अभ्यास के प्रश्न

6.11 चर्चा के बिन्दु

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.13 उपयोगी पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF-2005) का उद्धरण रवीन्द्रनाथ टैगोर के निबंध ''सभ्यता और प्रगति से हुआ है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF-2005) चौथे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा द्वारा 2005 में प्रकाशित है इसके पूर्व 1975, 1988 व 2000 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का प्रकाशन हुआ था। (NCF-2005) भारत में स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण प्रथाओं के लिए एक दिशा–निर्देश के रूप में कार्य करता है। (NCF-2005) ने शिक्षा पर पिछली सरकार की रिपोर्टों, जैसे लर्निंग विदाउट बर्डन और नेशनल पॉलिसी ऑफ ऐजुकेशन 1986–1992, और फोकस ग्रुप डिस्कशन पर अपनी नीतियों को आधारित किया है। मान्यता है कि भारत के अधिकांश राज्यों में विद्यालयी व्यवस्था में एक प्रकार की कठोरता व्याप्त है जो किसी भी प्रकार के बदलाव में एक प्रकार से बाधा बनकर खड़ी हो जाती है बालकों को अधिगम कराना एक ऐसी गातिविधि है जो उन्हे सामाजिक जीवन से अलग–अलग कर देती है जो बालकों के अपने ज्ञान को जीवन्त तरीके से जोड़ने को प्रोत्साहित नहीं करती, विद्यालय इस प्रकार की विचार पद्धति को प्रचारित करते हैं जो रचनात्मक चिन्तन एवं

अन्तर्दष्टि को हतोत्साहित करते हैं इस प्रचलित शिक्षा पद्धति व सोच में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से निर्मित राष्ट्रीय–पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 ने एक ऐसे राष्ट्रीय दस्तावेज के रूप में स्थान बना लिया है जो पाठ्यचर्या, अधिगम–शिक्षण व मूल्यांकन–आकलन के सम्बन्ध में एक नई मौलिक सोच प्रदान करता है और ज्ञान के अंबार के स्थान पर बालकों मं समझत विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। इसका निर्माण मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पहल पर प्रोफेसर यशपाल की अध्यक्षता में किया गया था।

6.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगें कि –

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के सिद्धांतों के बारें में समझ विकसित कर सकेंगे।
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के प्रमुख उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
3. राष्ट्रीय पाठ्चर्या रूपरेखा के विशेषताओं के बारे में विवेचना कर सकेंगे।

6.3 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के प्रमुख सिद्धांत

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

6.3.1 रचनावाद – इसे ज्ञान सृजन के लिए अध्यापन भी कहा जा सकता है। इसके अनुसार ज्ञान रचने की प्रक्रिया ही सीखना है। बच्चें अपने पूर्व अनुभवों को उनके नये अनुभवों में आने वाली गतिविधियों और सामग्री से जोड़कर और विचार करके अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए यातायात के साधनों के चित्र या लेख पर चर्चा करने से बच्चें यातायात पर अपने विचार बना लेते है। प्रारम्भ में बनने वाले यह विचार (मानसिक छवियाँ/प्रतीक) बच्चों के अपने व्यक्तित्व अनुभव पर आधारित होते हैं। दूरदराज के गांवों में रहने वाले बच्चे यातायात के संबंध में अपने विचार बैलगाड़ी के इर्दगिर्द ही बनायेगें। बच्चे गतिविधियों में भाग लेकर बाहरी वास्तविकताओं की मानसिक छवियाँ बना लेते है। पुराने और नये विचारों का यह निरन्तर बदलना बच्चे के सीखने की प्रक्रिया के विकास का आवश्यक घटक है। जैसे कि सड़क यातायात के विचार का इन विचार श्रृंखलाओं के क्रम में बढ़कर समुद्री और हवाई यातायात व्यवस्था भी शामिल हो जाती है।

अतः यह आवश्यक है कि बच्चे के संज्ञान में अध्यापकों की भूमिका भी बढ़े। स्कूलों द्वारा ऐसे अवसर प्रदान किये जाने चाहिए ताकि बच्चे प्रश्न पूछ कर चर्चा एवं चिंतन कर अवधारणों को आत्मसात करें या नए विचार रचें।

6.3.2 संदर्भीकरण – हमारे स्कूल के भीतर और बाहर दोनों जगहों पर सीखने की प्रक्रिया चलती रहती है। इन दोनों जगहों में यदि संबंध रहे तो सीखने की प्रक्रिया की पुष्टि होती है। बच्चे उसी वातावरण में सीख सीखते हैं जहां उन्हें लगे कि उन्हे महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हमारे स्कूल आज भी बच्चों को ऐसा महसूस नहीं करवा पाते। सीखने का आनन्द व संतोष के साथ रिश्ता होने के बजाए भय, अनुशासन व तनाव से संबंध हो तो यह सीखने के लिए अहितकारी होता है। आज यह आवश्यक है कि हमारे सभी बच्चें यह महसूस करें कि वे सभी, उनका घर, उनका समुदाय, उनकी भाषा और संस्कृति महत्वपूर्ण है। इन्हे अनुभव के ऐसे संसाधन के रूप में देखा जाए जिन्हे विद्यालय में जाँचा तथा विश्लेषित किया जाना है, उनकी विविध क्षमताओं को मान्यता मिले, यह भी माना जाए कि सभी बच्चों में सीखने की क्षमता है और सभी की ज्ञान एवं कौशलों तक पहुँच हो और वयस्क समाज एन्हे सबसे अच्छा करने के योग्य माने।

6.3.3 विषयों की समग्रता – स्कूल में पहली बार प्रवेश करते समय बच्चें संसार के ज्ञान का सृजन शुरू कर चुके होते हैं। हरी चीज जो बच्चें बाद में सीखने वह उस ज्ञान से सम्बन्धित होता है जो वह स्कूल में लेकर आते हैं। स्कूल में आने से पहले बच्चें दुनियाँ को हिन्दी, गणित, पर्यावरण या अंग्रेजी जैसे विषयों में बांट कर नहीं देखते। उनके सीखने के इस तरीके को स्कूलों में भी अपनाएं जाने की जरूरत है। स्कूल अवसर देता है कि इसी ज्ञान को आधार मानकर, सचेत रहकर और जुड़ाव के साथ आगे बढ़ा जाए।

एन सी एफ 2005 के अनुसार सीखने के शुरूआती स्तर पर, स्कूल–पूर्व से प्राथमिक स्कूली वर्षों में पाठ्यचर्या की सभी गतिविधियों में भाषा और गणित को एक महत्वूपर्ण स्थान मिलना चाहिए। विषयों में विभाजन उतना महत्वूपर्ण नहीं है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को समेकित किया जा सकता है और बच्चों के सामने परिवेश के शैक्षिक अनुभवों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि स्कूलों को अपने प्रबंधन में विषयों के दायरों से निकलकर स्कूलों का समय, दैनिक सारणी, शिक्षकों के साथ बैठक के तरीके बदलने होगें। स्कूलों को बच्चों के स्कूलों को बच्चों के स्वरानुसार अपने लक्ष्य तय करने होगें।

6.3.4 आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र – आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र या क्रिटिकल पेडागॉजी का सीधा सा अर्थ है बच्चों को सोचने समझने वाला व्यक्ति मानते हुए विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर देना ताकि वे तार्किक आधार पर अपनी समझ के आधार पर निर्णय लेने का अभ्यास कर सके। यह खुले विमर्श और विविध दृष्टिकोंणों को प्रोत्साहित करने के माध्यम से सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया को सरल बनाता है बच्चों को सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने, संवाद करने के अवसर दिए जाने चाहिए ताकि वे अपने आस–पास के माहौल के प्रति संवेदनशील बने और जीवंत व्यक्ति के रूप में जुड़ाव महसूस करें। यदि बच्चों के सामाजिक अनुभव कक्षा में लाने हैं तो यह अपरिहार्य है कि समाज के ज्वलंत मुद्दों पर स्कूलों में बात की जाए। ये मुद्दे बच्चों के जीवन का हिस्सा है जिससे बचा नहीं जा सकता।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

1. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा के प्रमुख सिद्धांतो का वर्णन कीजिए।

....

....

6.4 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के भाग–राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के भाग–राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा को 5 भागों में बांटकर वर्णित किया गया है–

6.4.1 परिप्रेक्ष्य

6.4.2 सीखना और ज्ञान

6.4.3 पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आकलन

6.4.4 विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण

6.4.5 व्यवस्थागत सुधार

6.4.1 परिप्रेक्ष्य

1. शिक्षा बिना बोझ के' को आधार मानकर पाठ्यचर्या का बोझ कम करना।
2. पढ़ाई को रटंत प्रणाली से मुक्त रखते हुए स्कूली ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ा जाना।
3. ऐसे नागरिक का निर्माण करना, जो लैंगिक न्याय, मूल्यों लोकतांत्रिक वाले बच्चों के प्रति संवेदनशील हो।
4. ऐसे नागरिक वर्ग का निर्माण करना जिनमें राजनीतिक एवं आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता हो।

6.4.2 सीखना और ज्ञान

1. समाज में मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा विद्यार्थी में अपना ज्ञान सृजित करेने की स्वाभाविक क्षमता

को विकसित करती है।

2. बल केन्द्रित शिक्षा का अर्थ है बच्चों के अनुभवों और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना।
3. संज्ञान का अर्थ है कर्म और भाषा के माध्यम से से स्वयं और दुनिया को समझना।
4. विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र, विभिन्न मुद्दों पर उनके राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक पहलुओं के सन्दर्भ में आलोचनात्मक चिंतन का अवसर प्रदान करना।

6.4.3 पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आंकलन

बहुभाविकता एक ऐसा संसाधन है जिसकी तुलना सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर किसी अन्य राष्ट्रीय संसाधन से की जा सकती है।

1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अन्तर्गत एक ऐसी पाठ्यचर्या का होना आवश्यक है जो शिक्षार्थियों में समाज के प्रति आलोचनात्मक समझ का विकास कर सके।
2. आकलन का मुख्य प्रयोजन सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री में सुधार लाना तथा उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिए तैयार किये जाते है।
3. पूर्व प्राथमिक स्तर पर आकलन बच्चों की दैनिक गतिविधियों, स्वास्थ्य और शारीरिक विकास पर आधारित होना चाहिए।

6.4.4 विद्यालय तथा कक्षा का वातावरण

1. चेतन और अचेतन दोनों रूप से बच्चे हमेशा विद्यालय के भौतिक वातावरण से निरंतर अन्तःक्रिया करते रहते हैं।
2. कक्षा का आकार शिक्षण अधिगम क्रिया को प्रभावित करने वाला एक कारक है। किसी भी अवस्था में शिक्षक तथा शिक्षार्थियों का अनुपात1:30 से अधिक नहीं होना चाहिए।
3. अनुशासन ऐसा होना चाहिए जो कार्य सम्पन्न होने में मदद करे साथ ही बच्चों की सक्षमता को बढ़ाए।

6.4.5 व्यवस्थागत सुधार

1. बच्चों की शिक्षा व्यवस्था में विकासात्मक मानकों का प्रयोग किया जाना चाहिए, जो अभिप्रेरणा तथा क्षमता की समग्र वृद्धि की पूर्ण मान्यता पर आधारित हो।
2. पाठ्यचर्या को इस प्रकार निर्मित करना चाहिए जिसमें शिक्षक शिक्षार्थियों को खेलते तथा काम करते हुए प्रत्यक्ष रूप से अवलोकित कर सके।
3. काम केन्द्रित शिक्षा का अर्थ है बच्चों में उनके परिवेश, प्राकृतिक संसाधनों तथा जीविका से सम्बन्धित ज्ञान आधारों, सामाजिक अन्तदृष्टियों तथा कौशलों को विद्यालयी व्यवस्था में उनकी गरिमा और मजबूती के स्रोतों में बदलना।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

2. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा के प्रमुख भागों का वर्णन कीजिए।

....

....

6.5 एन. सी. एफ. 2005 के उद्देश्य

1. बच्चों का सर्वांगीड़ विकास करना एवं उन्हे स्कूली शिक्षा से बाहरी शिक्षा से जोड़ना।

2. NCF-2005 बालक के मूल्यांकन के लिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर बल देती है। ''नवीन सोच'' तर्क क्षमता, चिंतन आदि विकसित करना।

3. सीखने को एक आनंददायक अनुभव बनाने के रूप में प्रदान किया जाए, परीक्षा के तनाव से बच्चों को दूर रखा जाए,एन सी एफ ने पाठ्यक्रम के डिजाइन में बड़े बदलावों की सिफारिश की।

4. व्यक्ति को आत्मनिर्भरता और सम्मान की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाये, और समाज में अंहिसा और एकता की भावना विकसित की जाये।

5. बाल केन्द्रित दृष्टिकोंण को विससित करना और 14 साल तक के बच्चों के सार्वभौमिक नामाकंन और अवधारणा को बढ़ावा देना।

6. समाजिक संदर्भ के सम्बन्ध में NCF-2005 में सुनिश्चित किया गया है कि जाति, धर्म, पंथ और लिंग आदि को दरकिनार करते हुए निरपेक्षता पूर्वक सभी को एक मानक पाठ्यक्रम प्रदान किया जायेगा।

7. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बाल केन्द्रित हो तथा ऐसी विषय सामग्री का प्रयोग किया जाये जिससे प्रभावशाली व्यक्तित्व का निर्माण हो सके।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

3. NCF-2005 के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

....

....

6.6 एन. सी. एफ. 2005 के सिद्धांत

एन.सी.एफ. के पांच प्रमुख सिद्धांत दिये गये है जो इस प्रकार है–

1. ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ा जाए।
2. रटने की प्रणाली खत्म की जाए।
3. शिक्षा पाठ्य–पुस्तक पर केन्द्रित न हो।
4. कक्षा– कक्ष को गतिविधियों से जोड़ा जाए और इन्हे लचीला बनाया जाए।
5. राष्ट्रीय महत्व के बिन्दु को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।

6.7 एन. सी. एफ. 2005 की प्रमुख विशेषताएँ

1. NCF-2005 के अनुसार प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दी जानी चाहिए।
2. शिक्षा सूत्र जैसे ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर आदि का अधिकतम प्रयोग हो।
3. सूचना को ज्ञान मानने से बचा जाए।
4. विशाल पाठ्यक्रम व मोटी किताबें शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक हैं।
5. मूल्यों को उपदेश देकर नहीं वातावरण देकर स्थापित किया जाए।
6. अभिभावकों को सख्त संदेश दिया जाए कि बच्चों को छोटी सी उम्र में निपुण बनाने की आकांक्षा गलत है।

7. बच्चों को स्कूल में तनाव मुक्त वातावरण प्रदान किया जाए।
8. अच्छे विद्यार्थी की धारणा में बदलाव, अर्थात अच्छा विद्यार्थी वह है जो तर्क पूर्ण बहस के द्वारा अपने मौलिक विचार शिक्षक के समक्ष प्रस्तुत करता है।
9. खेल आनंद तथा सामूहिकता की भावना के लिए है, रिकार्ड बनाने तथा तोड़ने की भावना को बढ़ावा ना दें।
10. पुस्तकालय में बच्चों को स्वयं पुस्तक चुनने का अवसर दें।
11. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मनोरंजन के स्थान पर सौन्दर्य बोध को बढ़ावा दें।
12. शिक्षकों को अकादमिक संसाधन व नवाचार आदि समय पर पहुँचाया जाएं।
13. सजा व पुरस्कार की भावना को सीमित रखा जाए।
14. कल्पना व मौलिक लेखन के अधिकारिक अवसर प्रदान करें।
15. सह शैक्षणिक गतिविधियों में बच्चों के अभिभावकों कों भी जोड़ा जाए।
16. मानसिक स्तर एवं योग्यता के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धाण हो।
17. शांति शिक्षा को बढ़ावा– महिलाओं के प्रति आदर एवं जिम्मेदारी का दृष्टिकोंण विकसित करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन करना।
18. बलकों के चहुंमुखी विकास पर आधारित पाठ्यचर्या हो।
19. सभी विद्यार्थियों हेतु समावेशी वातावरण तैयार करना।

6.8 एन० सी० एफ० 2005 के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य

1. एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य किसी बच्चे के स्कूली जीवन को उसके घर, आस–पड़ोस के जीवन से जोड़ना है। इसके लिए बच्चों को स्कूल में अपने वाहय अनुभवों के बारे में बात करने का मौका देना चाहिए। उसे सुना जाना चाहिए। ताकि बच्चे को लगे कि शिक्षक उसकी बात को तवज्जो दे रहें हैं।
2. शिक्षा का दूसरा प्रमुख लक्ष्य है आत्म–ज्ञान। यानि शिक्षा का खुद को खोजने, खुद की सच्चाई को जानने की एक निरंतर प्रक्रिया बने। इसके लिए बच्चों को विभिन्न तरह के अनुभवों का अवसर देकर इस प्रक्रिया को सुगम बनाने की बात एनसीएफ में कही गयी है।
3. शिक्षा के तीसरे लक्ष्य के रूप में साहय और साधन दोनों के सही होने वाले मुद्दे पर चर्चा की गई है। इसमें कहा गया कि मूल्य शिक्षा अलग–अलग से न होकर शिक्षा पूरी प्रक्रिया में शामिल होनी चाहिए। तभी हम बच्चों के सामने सही उदाहरण पेश कर पायेगें।
4. शिक्षा का लक्ष्य सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करने और जीवन जीने के अन्य तरीकों के प्रति भी सम्मान का भाव विकसित करने वाला होना चाहिए।
5. शिक्षा का अगला लक्ष्य वैयक्तिक अंतर के महत्व को स्वीकार करने की बात करता है। हर बच्चे की अपनी क्षमताएं और कौशल होते हैं इसे स्कूल में व्यक्त करने का मौका देना चाहिए।
6. ज्ञान के वस्तुनिष्ठ तरीके से साथ–साथ साहित्यिक एवं कलात्मक रचनात्मकता को भी मनुष्य के ज्ञानात्मक उपक्रम का एक हिस्सा माना गया है यहां पर तर्क वैज्ञानिक अन्वेषण के साथ–साथ भावना (साहित्य) वाले पहलू को भी महत्व देने की बात कही गयी है।
7. शिक्षा के अगले लक्ष्य में कहा गया है, ''शिक्षा को मुक्त करने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए अन्यथा अब तक जो कुछ भी कहा गया है वह अर्थहीन हो जायेगा। शिक्षा की प्रक्रिया को सभी तरह के शोषण और अन्याय, गरीबी, लिंग–भेद जाति तथा सांप्रदायिक झुकाव से मुक्त होना पड़ेगा जो हमारे बच्चों को इस प्रक्रिया से वंचित करते हैं।''

8. आठवां बिन्दु स्कूल में पढ़ने–पढ़ाने के काम के लिए अच्छा माहौल बनाने की बात करता है। यानि शिक्षक खुद आगे न आकर बच्चों को नेतृत्व करने का मौका दें।

9. नौवां बिन्दु देश के ऊपर गर्व की भावना विकसित करने की बात करता है ताकि बच्चे देश से जुड़ाव महसूस कर सके। इसके साथ कहा गया है, ''बच्चों में अपने राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना सम्पूर्ण मानवता की महान उपलब्धियों के प्रति गौरव को पीछे न कर दें।''

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

4. NCF-2005 की प्रमुख विशेषताएं कौन–कौन सी हैं ?

....

....

6.9 सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार ''राष्ट्रीय पाठ्यक्रर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को विकसित करने का एक साधन है तथा शैक्षिक घटकों के साथ–साथ, यह भारत की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वातावरण की विविधता का उत्तरदायित्व निभाते हुए मूल्यों के सामान्य आधार निश्चित कर सके।'' एक रूपरेखा को विकसित किया गया था। लगभग 12 वर्षों के अन्तराल के बाद सन 2000 में तथा 2005 में स्कूलीय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा विकसित की गई। राष्ट्रीय पाठ्चर्या रूपरेखा, 2005 (NCF 2005) प्रारम्भ करने के लिए 21 फोकस समूह बनाए गए जिन्होने स्कूलीय शिक्षा का गहनता से अध्ययन किया और राष्ट्रीय स्तर पर इन पर चर्चा करने के पश्चात इन्हे NCRF द्वारा प्रकाशित किया गया। NCF 2005 में स्कूलीय शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर चर्चा की गई है। इसमें पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय शामिल है। इसके लिए 21 केन्द्र समूह (Creater Group) बनाए थे। NCF 2005 का मूल आधार भारतीय संविधान है। धर्म–निरपेक्ष समतावादी, बहुलतावादी समाज को सामाजिक न्याय एवं समानता के प्रमुख मूल्यों पर आधारित हैं।

6.10 अभ्यास के प्रश्न

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सम्प्रत्यय के उद्भव पर प्रकाश डालिये।
2. NCF 2005 में शिक्षक की भूमिका का विस्तृत वर्णन कीजिए।
3. NCF 2005 के अनुसार भाषाई अल्पसंख्यक वाले वर्गों के बच्चों के लिए शिक्षा का क्या प्रावधान होना चाहिए?
4. NCF 2005 की भाषा फारमूला पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ?

6.11 चर्चा के बिन्दु

1. NCF 2005 पर चर्चा कीजिए।

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. रचनावाद, सन्दर्भीकरण, विषयों की समग्रता, विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र।
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के प्रमुख भाग– परिप्रेक्ष्य, सीखना और ज्ञान, पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की

अवस्थाएं आंकलन, विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण, व्यवस्थागत सुधार।

3. एन0सी0एफ0 2005 के प्रमुख उद्देश्य– 1. नवीन सोच, 2. तर्क क्षमता चिन्तन आदि विकसित करना।, 3. सीखने को आनन्ददायक अनुभव बनाना।, 4. आत्मनिर्भरता एवं सम्मान की भावना विकसित करना।, 5. बाल केन्द्रित दृष्टिकोंण विकसित करना।

4. एन.सी.एफ. 2005 की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

   मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा, सूचना एवं ज्ञान में अन्तर, बच्चों को तनावमुक्त वातावरण देना। छात्रों के मौलिक विचारों को प्रोत्साहन, कल्पना व मौलिक लेखन पर बल।

6.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. गुप्ता रत्ना, मौर्या गीतान्जलि (प्रथम नवीनतम संस्करण), पाठ्यचर्या के सैद्धांतिक आधार, लखनऊ : शैक्षिक पुस्तक प्रकाषन।
2. एन.सी.एफ. (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिसर।
3. माथुर, एस.एस. (2010–2011), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।
4. गुप्त, लक्ष्मी नारायन (2008–2009), शिक्षा एवं दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद : न्यू कैलाश प्रकाशन।
5. पाण्डेय, के0पी0 (2005), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजिक आधार, वाराणसी : विष्वविद्यालय प्रकाशन।
6. शुक्ला रमा, सिंह मधुरिमा, (तृतीय नवीनतम संस्करण), शिक्षा के दार्शनिक आधार, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।
7. मालवीय राजीव, विजिलिंग फैकेल्टी (2012), शिक्षा के मूल सिद्धांत, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
8. सारस्वत मालती, गौतम एस0एल0 (नवीनतम संस्करण), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।

इकाई – 07 : शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा– 2009

इकाई संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 इकाई के उद्देश्य

7.3 एन०सी०एफ०टी०ई० 2009 की आवश्यकता एवं महत्व

7.3.1 शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए

7.3.2 निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लिए

7.3.3 परिवर्तित समाज के लिए

7.3.4 शैक्षिक असमानता को कम करने के लिए

7.3.5 नवीन चुनौतियों के समाधान के लिए

7.3.6 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता के लिए

7.3.7 छात्रों के अन्तनिर्हित क्षमताओं के विकास के लिए

7.3.8 जीवन कौशलों के विकास के लिए

7.3.9 समाज की आवश्यकता की पूर्ति के लिए

7.3.10 अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए

7.4 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा–2009 का स्वरूप

7.5 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा–2009 की विशेषताएँ

7.6 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 के उद्देश्य

7.6.1 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 के प्रत्यक्ष उद्देश्य

7.6.2 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 के अप्रत्यक्ष उद्देश्य

7.7 अध्यापक शिक्षा

7.8 एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 में अध्यापक शिक्षा का नवीनतम स्वरूप

7.9 सारांश

7.10 अभ्यास के प्रश्न

7.11 चर्चा के बिन्दु

7.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

भारत में शिक्षा नीति को समय के हिसाब से निरूपित किया गया है और शिक्षा समितियों/आयोंगों की विभिन्न में निहित सिफारिशों पर आधारित है, जिनमें से महत्वपूर्ण है, कोठारी आयोग (1966), चट्टोपाध्याय (1985), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986/1992), आचार्य राममूर्ति समिति (1990), यशपाल समिति (1993) एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा (एन.सी.एफ. 2005) निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार (आर.टी.आई.) अधिनियम, 2009 जो 1 अप्रैल 2010 से लागू हुआ, का देश में शिक्षक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ है।

देश के संघीय ढांचे में हालांकि शिक्षक शिक्षा पर विस्तृत नीतिगत और विधिक ढांचा केन्द्र सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है, फिर भी विभिन्न कार्यक्रमों और स्कीमों का कार्यान्वयन प्रमुखतः राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है। स्कूली बच्चों की शिक्षा उपलब्धियों के सुधार के विस्तृत उद्देश्य की दोहरी कार्यनीति है–

(क) स्कूली प्रणाली के लिए अध्यापकों को तैयार करना (सेवा पूर्व प्रशिक्षण)

(ख) मौजूदा स्कूल अध्यापकों की दक्षता में सुधार करना (सेवाकाल प्रशिक्षण)

जो केन्द्र सरकार का सांविधिक निकाय है, देश में शिक्षक शिक्षा के नियोजित और समन्वित विकास का जिम्मेदार है, एन.सी.टी.ई. विभिन्न शिक्षक शिक्षकों के लिए, न्यूनतम योग्यताएँ विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए, छात्र–अध्यापकों के प्रवेश के लिए, पाठ्यक्रम एवं घटक तथा अवधि एवं न्यूनतम योग्यता निर्धारित करती है। यह ऐसे पाठ्यक्रम शुरू करने की इच्छुक संस्थाओं (सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और स्व–वितपोषित) को मान्यता भी प्रदान करता है और उनके मापदण्ड और गुणवत्ता विनियमित करने और उन पर निगरानी के नामित व्यवस्था है।

7.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगे कि–

1. एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 की आवश्यकता एवं महत्व को समझ सकेगें।
2. एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 में शामिल शिक्षा सम्बंधी सुझाव के बारे में जान सकेगे।
3. एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 के प्रमुख उद्देश्यों के बारे में जान सकेगें।
4. एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 में शामिल विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों की व्यापक जानकारी प्राप्त कर सकेगें।

7.3 एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा में उपयोगी विचार प्रस्तुत किये गये थे जिससे शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुधार भी संभव हुए हैं फिर भी शिक्षक शिक्षा के लिए नवीन पाठ्यक्रम की आवश्यकता क्यों अनुभव की गयी? शिक्षक शिक्षा में सुधार किये बिना सर्वागीड़ विकास की अवधारणा पूर्ण नहीं हो सकती। शिक्षा के क्षेत्र में आयी क्रांति ने शिक्षकों के दायित्व में अभूतपूर्व वृद्धि की है जिसके परिणाम स्वरूप उनके लिए निर्धारित पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन आवश्यक है। इसी प्रकार अनेक प्रमुख कारण है जो इसकी आवश्यकता एवं महत्व में वृद्धि करते हैं–

7.3.1 शिक्षा के सर्वाभौमीकरण के लिए

शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 की आवश्यकता अनुभव की गयी क्योंकि शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस पाठ्यक्रम में शिक्षक के अन्दर उन सभी योग्यताओं को विकसित करने का प्रावधान है जो कि शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता देती है जैसे छात्रों के प्रति आत्मीय व्यवहार, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिपूर्ण बनाना तथा शिक्षा को खेल एवं गतिविधियों से जोड़ना आदि। इस प्रकार शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने क लिए यह पाठ्यक्रम आवश्यक एवं महत्वपूर्ग्र माना जाता है।?

7.3.2 निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लिए

वर्तमान समय में सरकार का उद्देश्य 6 से 14 वर्ष के बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना है। इसके लिए शिक्षकों के दायित्व में वृद्धि होना स्वाभाविक है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 में शिक्षकों को सामुदायिक सहयोग प्राप्त करने के लिए तथा छात्रों के साथ आत्मीय व्यवहार के लिए अनेक कोशल सिखाये जाते हैं जिससे शिक्षक अधिक से अधिक छात्रों का नामांकन कराने में सफल हो जाते है। इसके लिए सामुदायिक सहयोग को प्राप्त करने में भी सफल हो जाते हैं। इस प्रकार निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लिए इस पाठ्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व को अनुभव किया गया।

7.3.3 परिवर्तित समाज के लिए

वर्तमान समय के समाज की आवश्यकता एवं नवीन पाठ्यक्रम संरचना की ओर संकेत कर रही है क्योकि वर्तमान समाज में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रभाव चारों ओर देखा जाता है। इसलिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा में परिवर्तित समाज के लिए पर्यावरणीय, वैज्ञानिक, आर्थिक, दार्शनिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री का समावेष किया गया है जिससे परिवर्तित समाज में शिक्षक अपनी भूमिका प्रभावी एवं सार्थक रूप में निभा सकें। इस प्रकार इस पाठ्यक्रम को परिवर्तित समाज के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण माना गया है।

7.3.4 शैक्षिक असमानता को कम करने के लिए

समान्यतः अनेक बालिकाएं लिंग भेद के कारण विद्यालय तक नहीं पहुँच पाती है तथा कुछ बालक विद्यालयी उपेक्षाओं के कारण भी विद्यालय छोड़ देते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 में शिक्षक को सामुदायिक सहयोग प्राप्त करने के लिए विविध उपाय बताए गये है तथा छात्रों के प्रति सकारात्मक व्यवहार की प्रेरणा प्रदान की गयी है जिससे शिक्षक विद्यालय में निष्पक्षता एवं समानता का व्यवहार करे। इससे छात्रों की विद्यालयी व्यवस्था में रूचि बनी रहेगी तथा किसी प्रकार की असमानता की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी। शिक्षक एवं समुदाय के सहयोग से बालक–बालिका एवं दलित वर्ग को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध हो सकेंगे। इस प्रकार की स्थिति विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी।

7.3.5 नवीन चुनौतियों के समाधान के लिए

वर्तमान समय में शिक्षकों के लिए नवीनतम् चुनौतियों का भण्डार है। आज प्रत्येक समाज में अनेक प्रकार की रूढ़िया विद्यमान है जो कि समाज को आगे जाने से रोकती है। इस स्थिति में शिक्षकों का दायित्व अधिक हो जाता है। अतः आवश्यक है कि शिक्षक से प्रशिक्षण में उन सभी चुनौतियों का ज्ञान प्रदान किया जाय जिनका समाधान उसको अपने भावी जीवन में करना है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा में अनेक प्रकार की नवीन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत किया गया है जिससे छात्राध्यापक उनको सीखकर अपने भावी जीवन में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरणीय चुनौती का सामना कर सकें।

7.3.6 शिक्षण अधिगम प्रकिया की प्रभावशीलता के लिए

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक एवं शिक्षार्थी में आत्मीय व्यवहार उत्पन्न हो। समाज में आज भी अनेक ऐसी विसंगतियां है जिनके दबाव के कारण शिक्षक भेदभावपूर्ण व्यवहार करते है जो कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को कुप्रभावित करता है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 में उन सभी उपायों का वर्णन किया गया है जिससे छात्र एवं शिक्षक एक–दूसरे के समीप आ सकें तथा दोनों के मध्य आत्मीय व्यवहार हो। इस प्रकार दोनो पक्ष एक–दुसरे की भावना एवं मनोंदशा को समझ सकेंगे जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावशीलता के साथ सम्पन्न हो सकेगी।

7.3.7 छात्रों की अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास के लिए

छात्रों में अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास के लिए मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का ज्ञान शिक्षक को होना चाहिए जिससे वह छात्रों की क्षमताओं को पहचान सकें। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा में इस प्रकार के तथ्यों की पूर्ण व्यवस्था है जो कि छात्राध्यापाकों की निरीक्षण एवं मनोविज्ञानिक शक्ति का विकास करती है, जैसे– मनोविज्ञान के सिद्धान्त का ज्ञान, शिक्षण कोशलों का ज्ञान एवं व्यवहार के निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण का ज्ञान आदि।

7.3.8 जीवन कौशलों के विकास के लिए

छात्रों में जीवन कोशलों के विकास के लिए शिक्षक को अपने दायित्वों का निर्वहन करना परमावश्यक है। शिक्षा का अर्थ मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना नहीं है वरना छात्रों के प्राप्त ज्ञान का जीवन में उपयोग करना सिखाना है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 में छात्राध्यापकों में जीवन कोशल के विकास के लिए पूर्णतयः व्यावहारिक कायों का समावेष किया है जिससे छात्राध्यापक समुदाय के बीच जाकर अपने कार्यों को

सम्पन्न कर सकें, जैसे– स्काउटिंग गाइडिंग कैम्प, राष्ट्रीय समाज सेवा एवं श्रमदान आदि। इन सभी के माध्यम से छात्राध्यापक समाज से सहयोग प्राप्त करना एवं समाज को सहयोग देना सीखाते है। इससे जीवन कोशलों का विकास छात्राध्यापकों में सम्भव होता है जिससे वे अपने अपने भावी जीवन में छात्रों में भी कोशल विकास कर सकते है।

7.3.9 समाज की आवश्यकता–पूर्ती के लिए

वर्तमान समाज के शिक्षक, शिक्षालय एवं शिक्षा से समाज की अधिक अपेक्षाएं है। इसलिए एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता प्रारम्भ से ही अनुभव की जा रही थी जो कि छात्राध्यापकों में सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता उत्पन्न कर सकें। NCFTE 2009 में छात्रों को सामुदायिक सहयोग प्राप्त करने तथा सामाजिक समीपता दोनों के ही उपाय बताए गये है जिससे छात्राध्यापक समाज की आवश्यकताओं को समझ सकें तथा उनकी पूर्ति कर सकें। इस प्रकार स्थिति में छात्रों का विकास सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप होता है।

7.3.10 अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व का विकास एक समाज के रूप में हो रहा है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र एक–दूसरे के विकास में पूर्णतः सहयोग करता है। इस स्थिति में शिक्षा का स्वरूप भी राष्ट्रीय सद्भावना के अनुरूप होना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षा 2009 में छात्राध्यापकों के लिए विभिन्न प्रकरणों समावेष को समावेष किया गया है जो कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को विकसित करते है। इस प्रकार की स्थिति में छात्राध्यापक स्वयं में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना विकसित करते है तथा भावी जीवन में छात्रों को अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की आवश्यकता एवं महत्व को समझाने का प्रयास करते है। उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 वर्तमान समय की माँगों की पूर्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

1. एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

....

....

2. सन 2009 में शिक्षा संबंधी किन सुझावों पर बल दिया गया था ?

....

....

7.4 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 का स्वरूप

शिक्षक को सभी शिक्षाशात्रियों एवं बुद्धिजीवियों द्वारा राष्ट्र का भाग्य निर्माता माना गया है। इसलिए शिक्षक का सम्मान प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक कम नहीं हुआ है। शिक्षकों के कार्य व्यवहार एवं कर्तव्यनिष्ठा में बुद्धि के लिए समय–समय पर विभिन्न आयोगों द्वारा सुझाव प्रस्तुत किये गये है, जिन्हें शिक्षक शिक्षा सम्बन्धी सुझावों के नाम से जाना गया है। प्रत्येक आयोग का मानना है कि सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक वह प्रमुख भाग है जो कि विद्यालय के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। 2009 में शिक्षक शिक्षा सम्बन्धी निम्नलिखित सुझावों पर बल दिया गया है–

1– शिक्षक शिक्षा में सेवारत प्रशिक्षण प्रदान करना।

2– शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान को प्राथमिकता देना।

3– शिक्षक शिक्षा के नवीन विद्यालयों को मान्यता प्रदान करना।

4– शिक्षक शिक्षा में नवाचारों का प्रयोग एवं शिक्षक शिक्षा में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण की व्यवस्था।

इस प्रकार की स्थिति में शिक्षक शिक्षा के लिए एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता का अनुभव हुआ जो कि बदलते हुए परिवेश में शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक हो तथा शिक्षक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बना सके।

7.5 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 की विशेषताएँ

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. बलकों का अध्ययन
2. समकालीन समाज का अध्ययन
3. शिक्षा सम्बन्धी अध्ययन
4. पाठ्यक्रम सम्बन्धित विचार
5. शिक्षण शासत्रीय सिद्धान्त

7.6 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 के उद्देश्य

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है जो कि राष्ट्र की प्रगति के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकें तथा समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत कर सके। इसके लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा दो प्रकार के उद्देश्यों का निर्धारण करती है जो कि प्रत्यक्ष उद्देश्य एवं अप्रत्यक्ष उददेश्यों के अन्तर्गत आते है। इनका वर्णन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है–

7.6.1 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 के प्रत्यक्ष उद्देश्य

1. शिक्षक शिक्षा के लिए उचित पाठ्यक्रम का निर्माण
2. शिक्षक शिक्षा के लिए उचित समयावधि का निर्धारण
3. शिक्षकों के लिए व्यावसायिक वृद्धि की उपलब्धता
4. शिक्षकों की योग्यता एवं गुणों का विकास करना
5. शिक्षक शिक्षा का कमबद्ध प्रस्तुतीकरण
6. शिक्षा का विकास एक सुगमकर्ता के रूप में
7. शिक्षक का विकास एक मनोवैज्ञानिक के रूप में
8. शिक्षक का विकास एक विचारक के रूप में
9. शिक्षक का विकास एक ज्ञान स्त्रोत के रूप में
10. शिक्षक का विकास एक ज्ञान निर्देशनकर्ता एवं परामर्शदाता के रूप में
11. शिक्षक की व्यावसायिक उन्नति का उद्देश्य

7.6.2 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा के अप्रत्यक्ष उद्देश्य

1. छात्रों के सर्वांगीण विकास का उद्देश्य
2. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता का उद्देश्य
3. सामाजिक अपेक्षाओं की पूर्ति का उद्देश्य
4. बाल केन्द्रित शिक्षा का उद्देश्य
5. मूल्य केन्द्रित शिक्षा का उद्देश्य

6. पोशणीय विकास का उद्देश्य

7. उचित मूल्यांकन का उद्देश्य

8. गतिविधि आधारित शिक्षा का उद्देश्य

9. तर्क एवं चिंतन के विकास का उद्देश्य

10. प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का उद्देश्य

11.पर्यावरणीय मूल्यों के विकास का उद्देश्य

7.7 अध्यापक शिक्षा

अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो भावी शिक्षक एक कुशल योग्य एवं सफल शिक्षक बनने के लिए प्रदान की जाती है अध्यापक शिक्षा वह है जिसके माध्यम से शैक्षिक वातावरण तैयार करके मूल्यों पर आधारित शिक्षा के लिए अनुकूल परिवेश का निर्माण किया जाता है। इस सन्दर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा एक ऐसा आयोजन है, जिससे विभिन्न विषयों के शिक्षकों को विभिन्न विषय–वस्तुओं सहित समान्य व्यक्तियों से पृथक एक शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत विषय के योग्य बनाया जाता है। अध्यापक शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया और तकनीकी है जिससे शिक्षण कार्य के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाता है और शैक्षिक कोशलों का विकास किया जाता है।

7.8 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना शिक्षक शिक्षा 2009 में अध्यापक शिक्षा का नवीनतम स्वरूप

एन.सी.एफ.टी.आई. 2009 में अध्यापक शिक्षा एवं विद्यालय शिक्षा के पारस्परिक सम्बन्धों पर तथा उनसे सम्बन्धित विविध पहलूओं पर जोर ड़ालता है। इसके फ्रेमवर्क में विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्वरों को ध्यान में रखते हुए अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की नवीन प्रवृत्तियों एवं पहलुओं को शामिल किया गया है। शिक्षक शिक्षा में आज के परिपेक्ष्य के विषयों समावेषी शिक्षा, सत्त एवं उचित विकास, लिंग आधारित परिपेक्ष्य, शिक्षा में समुदायिक ज्ञान की भूमिका, सूचना, तकनीकी व ई–लर्निंग, सत्त एवं व्यापक मूल्यांकन, व्यावसायिक दक्षता का विकास आदि विषयों को फ्रेमवर्क में केन्दीय स्थान प्रदान किया गया है। फ्रेमवर्क में बाल केन्द्रीत शिक्षा पद्धति पर प्रकाश ड़ाला गया है। शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों की अवधि को बढ़ा कर द्विवर्षीय करने का सुझाव प्रस्तुत किया गया है। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम पर अधारित पाठ्यचर्या के अधारित भी प्रस्तुत किये गये है।

फ्रेमवर्क में शिक्षक शिक्षा के प्रस्ताविक पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया गया है। शिक्षा के आधार, पाठ्यक्रम एवं शिक्षाशास्त्र तथा विद्यालय इन्टर्नशिप प्रथम भाग शिक्षा के आधार के अन्तर्गत शिक्षार्थी अध्ययन, समकालीन अध्ययन एवं शैक्षिक अध्ययन इत्यादि विषयों को शामिल किया गया है। शिक्षार्थी अध्ययन के अर्न्तगत बचपन, बालक का सम्पूर्ण विकास एवं किशोर विकास का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। समकालीन अध्ययन के अन्तर्गत शिक्षक एवं शिक्षार्थी की वर्तमान समाज में भूमिका एवं लैंगिक विकास का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

शैक्षिक अध्ययन के अन्तर्गत शिक्षा के लक्ष्य ज्ञान एवं मुल्यों का अध्ययन एवं शिक्षा के रूप में स्वयं की महत्वकांक्षाओं के विकास का अध्ययन प्रस्तुत किया है। पाठ्यक्रम क्षेत्र के द्वितीय भाग पाठ्यक्रम एवं शिक्षाशास्त्र के अन्तर्गत पाठ्यक्रम अध्ययन एवं शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पाठ्यक्रम क्षेत्र के तृतीय भाग विद्यालय के इन्ड्टर्नशिप में एक समयवद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। इसके अन्तर्गत शिक्षण अध्ययन एवं विद्यालय की समस्त गतिविधियों का संचालन करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इन्टर्नशिप कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षण विद्यालय परिस्थितियों, कक्षा–कक्ष परिस्थितियों, बालकों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करता है। एन.सी.एफ.टी. ई. 2009 शिक्षक– प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार की भी बात करता है। शिक्षक–प्रशिक्षकों की योग्यता मापदण्ड़ बढ़ाने की भी सिफारीश करता है। शिक्षक–शिक्षकों हेतु समय–समय पर रिफ्रेशर कोर्सेज आयोजित किए जाने की बात भी कहता है। शिक्षक–शिक्षकों के पाठ्यक्रमों में भी सुधार की बात करता है। शिक्षक–प्रशिक्षकों के पाठ्यक्रमों की अवधि बढ़ाने का सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

7.9 सारांश

एन.सी.एफ.टी. 2009 शिक्षक–शिक्षा का वर्तमान स्वरूप अध्यापन शिक्षा संस्थान न केवल अनुसंधान हेतु बल्कि पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों में सुधार हेतु व्यावहारिक प्रयोगों के लिए सक्रिय केन्द्र बन जाए। इस बात पर भरोसा किया जा सकता है कि यदि अध्यापक शिक्षा संस्थान सहीं तर्ज पर संगठित हो पाए तथा प्रगतिशील मौक्षिक आन्दोलन के गतिशील केन्द्र बना तो शैक्षिक पुनःनिर्माण के सम्पूर्ण कार्य में मदद मिल पायेगी। NCERT ने सम्पूर्ण देश के लिए शिक्षक शिक्षा कैसी हो इसके बारे में एक दस्तावेज बनाया है। इस दस्तावेज में कुल 6 अध्याय है। दृष्टिकोंण, चुनौतियों और वर्तमान सन्दभ्र में जरूरत के बारे में स्पष्ट किया गया है। इसमें शिक्षक–शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा को एक दूसरे के साथ जोड़कर देखा गया है। जिस तरह NCF 2005 में विद्यालयी शिक्षा में भी कई अनुशंसाए की है। प्रत्येक आयोग का मानना है कि सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक वह करता है। 2009 में शिक्षक शिक्षा सम्बन्धी निम्नलिखित सुझावों पर बल दिया गया है जैसे– शिक्षक शिक्षा में सेवारत प्रशिक्षा प्रदान करना, शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान को प्राथमिकता देना, शिक्षक शिक्षा के नवीन विद्यालयों को मान्यता प्रदान करना तथा शिक्षक शिक्षा में नवाचारों का प्रयोग एवं शिक्षक शिक्षा के लिए एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता का अनुभव हुआ जो कि बदलते परिवेश में शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक हो तथा शिक्षक को गुणवत्तापूर्ण बना सके।

7.10 अभ्यास के प्रश्न

1. NCFTE 2009 के अन्तर्गत सेवारत प्रशिक्षण की व्यवस्था की विवेचना कीजिए?
2. NCFTE 2009 के तहत भावी शिक्षकों को आदर्श शिक्षक के रूप में तैयार करने के लिए पाठ्यक्रम को कितने भागों में बांटा गया है? सविस्तार वर्णन कीजिए।
3. किन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु NCF TE 2009 का निर्माण किया गया था ? बिन्दुवार वर्णन कीजिए।

7.11 चर्चा के बिन्दु

1. शिक्षार्थी NCFTE 2009 के महत्व एवं विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

7.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. शिक्षा के सार्वभौमिकरण, निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लिए, परिवर्तित समाज के लिए, शैक्षिक असमानता को कम करने के लिए, जीवन कौशलों के विकास के लिए इत्यादि।
2. शिक्षक शिक्षा में सेवारत प्रशिक्षण प्रदान करना, शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान को प्राथमिकता देना, शिक्षक शिक्षा के नवीन विद्यालयों को मान्यता प्रदान करना, शिक्षक शिक्षा में नवाचारों का प्रयोग एवं शिक्षक शिक्षा में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

7.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. गुप्ता रत्ना, मौर्या गीतान्जलि (प्रथम नवीनतम संस्करण), पाठ्यचर्या के सैद्धांतिक आधार, लखनऊ : शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन।
2. एन0सी0एफ0 (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिसर।
3. माथुर, एस0एस0 (2010–2011), षिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।
4. गुप्त, लक्ष्मी नारायन (2008–2009), शिक्षा एवं दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद : न्यू कैलाश प्रकाशन।
5. पाण्डेय, के0पी0 (2005), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजिक आधार, वाराणसी : विष्वविद्यालय प्रकाशन।

6. शुक्ला रमा, सिंह मधुरिमा, (तृतीय नवीनतम संस्करण), शिक्षा के दार्शनिक आधार, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।
7. मालवीय राजीव, विजिलिंग फैकेल्टी (2012), शिक्षा के मूल सिद्धांत, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
8. सारस्वत मालती, गौतम एस0एल0 (नवीनतम संस्करण), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।

इकाई – 08 : पाठ्यचर्या विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विचार

इकाई की संरचना

8.1 प्रस्तावना
8.2 इकाई के उद्देश्य
8.3 पाठ्यक्रम का शाब्दिक अर्थ
8.4 शिक्षा में पाठ्यक्रम की अवधारणा
8.5 पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ
8.6 पाठ्यक्रम के निर्धारक
8.7 पाठ्यक्रम के विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विचार
8.8 पाठ्यक्रम विकास के विकास हेतु डीवी के विचार
8.9 पाठ्यक्रम विकास के विकास हेतु रूसो के विचार
8.10 पाठ्यक्रम विकास के विकास हेतु प्लेटो के विचार
8.11 पाठ्यक्रम विकास के विकास हेतु अरस्तू के विचार
8.12 पाठ्यक्रम विकास के विकास हेतु रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार
8.13 गिजूभाई के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार
8.14 पाठ्यक्रम विकास के विकास हेतु गाँधी जी के विचार
8.15 पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय आयोग के विचार
8.16 सारांश
8.17 अभ्यास के प्रश्न
8.18 चर्चा के बिन्दु
8.19 बोध प्रश्नों के उत्तर
8.20 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

पाठ्यक्रम की आधुनिक अवधारणा विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण को पाठ्यक्रम में समाहित करती है। विद्यालय के बाहर, विद्यालय अधिकारियों के निर्देशन में विद्यार्थी जो भी क्रियाएं करते हैं, जो भी अनुभव प्राप्त करते है, कक्षा में या रोल के मैदान में, प्रार्थना सभा मे, प्रयोगशाला में, विद्यार्थी परिषद में, तरणताल में, चाहे शिक्षकों के साथ अनऔपचारिक वार्तालाप में सब यह सब पाठ्यक्रम का अंग है। शिक्षक विद्यार्थी के साथ सम्बन्ध कक्षा–कक्ष की स्वच्छता सब कुछ पाठ्यक्रम में समाहित है। पाठ्याचार्य हमें एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली की ओर मोड़ती है जो असमानताओं को घटाती है और उत्कृष्टओं को प्रोत्साहित करती है। पाठ्यचर्या प्रासंगिकता, समता और उत्कृष्टता पर आधारित होनी चाहिए। राष्ट्रीय पहचान का सुदृढीकरण और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण साथ ही स्वदेशी ज्ञान का समावेष आधुनिक पाठ्यचर्या के प्रमुख मुद्दे हैं –

8.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगे कि –

1. पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषा को समझ सकेंगे।

2. पाठ्यक्रम निर्धारण के प्रमुख आधारों का वर्णन कर सकेगें।

3. रूसों एवं प्लेटों के विचारों को समझ सकेंगे।

4. टैगौर के पाठ्यक्रम के सिद्धांतों का वर्णन कर सकेंगे।

5. अन्तर्राष्ट्रीय आयोग के पाठ्यचर्या सम्बन्धित सिद्धांतों की व्याख्या कर सकेंगे।

8.3 पाठ्यक्रम का शाब्दिक अर्थ

पाठ्यक्रम अंग्रेजी के 'Curriculum' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह शब्द लैटिन भाषा के 'Currere' से बना है जिसका अर्थ है 'दौड़ का मैदान'। इस प्रकार Curriculum का अर्थ है 'A Course to be Run' or A 'Race Course' अर्थात वह मैदान जिस पर दौड़ा जाए या दौड़ का मैदान या रास्ता।

8.4 शिक्षा में पाठ्यक्रम की अवधारणा

विद्यार्थी अपने विद्यालय में अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जिस मार्ग का अनुसरण करते है अथवा जिस मार्ग पर दौड़ते है वही उनका पाठ्यक्रम है। दौड़ने से तात्पर्य है – कुछ क्रिया–कलाप करते है जितने क्रिया–कलाप करते है उतना ही अपने लक्ष्य के नजदीक पहुँचते जाते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषा का वर्णन कीजिए।

....

....

8.5 पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ

पाठ्यक्रम की परिभाषाएं विभिन्न ढंग से दी है। कुछ परिभाषाएं निम्नलिखित है –

क्रो एवं क्रो के अनुसार " पाठ्यक्रम समस्त अनुभवों का योग है जो कि विद्यार्थी विद्यालय के अन्दर या बाहर प्राप्त करता है। ये वे अनुभव होते है जो कि विद्यार्थी के नैतिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक और मानसिक विकास में सहायता करने के लिए उसे प्रदान किये जाते है।"

ड़ी. एस. रावत के अनुसार, "पाठ्यक्रम उन समस्त साधनों का योग है, जो कि विद्यालय वाँछित अधिनियम परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग करता है।"

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार "पाठ्यक्रम का अर्थ विद्यालय में परम्परागत रूप से पढ़ाये जाने वाले शैक्षिक विषय मात्र नहीं है वरन् यह अनुभवों का वह योग है जो कि बालक विद्यालय में होने वाले अनेक प्रकार की गतिविधियों, प्रयोगशाला, वार्तालाप में अनुभवों के रूप में प्राप्त करता है। इस तरह विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन ही पाठ्यक्रम है।"

डी.एस. रावत के अनुसार "पाठ्यक्रम उन समस्त साधनों का योग है जो कि विद्यालय वांछित अधिगम परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग करता है।"

उपरोक्त आधार पर कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को प्रदान किये जाने वाले सम्पूर्ण पर्यावरण में उपस्थित विभिन्न प्रभावों का योग है। साथ ही विद्यार्थियों के वे अनुभव है जो कि विद्यार्थी

उस वातावरण में प्राप्त करते हैं।

8.6 पाठ्यक्रम के निर्धारक

(अ) पाठ्यक्रम के समाजशास्त्रीय निर्धारक

डॉ. राधाकृष्णन अपनी पुस्तक Indian Philosophy प्रथम वाक्य में ही लिखते है – चिन्तनशील मस्तिष्क के फलने–फूलने के लिए कला एवं विज्ञान में वृद्धि होने के लिए जो पहली दशा आवश्यक है, वह है एक संघर्षहीन समाज जो सुरक्षा एवं अवकाश प्रदान करने वाला हो। वे आगे लिखते है कि 'एक सम्पन्न संस्कृति का होना असम्भव है यदि समाज बाजारों की भॉति है जहॉ व्यक्ति जीवन के लिए संघर्ष करते हों और कष्टपूर्ण मृत्यु प्राप्त करते हों। इस तरह से यह स्पष्ट ही है कि शिक्षा प्रदान करना एवं ज्ञान में वृद्धि करना, बिना समाज की प्रकृति इसकी रचना, इसके सदस्यों के जीवन के आदर्श एवं मूल्यों को समझे सम्भव नहीं हैं।

अगर हम भारतीय इतिहास पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है कि समाज ने सदैव ही पाठ्यक्रम के लिए आधार प्रस्तुत किया है चाहे वह वैदिक काल हो, बौद्ध काल हो, मध्यकाल हो या फिर स्वतंत्र भारत हो।

(i) वैदिक काल एवं पाठ्यक्रम

वैदिक काल में समाज में धर्म का बोलबाला था अतः धार्मिक पाठ्यक्रम था। पाठ्यक्रम में मन्त्रोच्चार एवं धार्मिक कर्मकाण्ड़ सम्मिलित थे। उस समय समाज संस्कार प्रधान था। 16 संस्कारों का चलन था जैसे उपनयन संस्कार और समार्वतन संस्कार। अतः शिक्षा का पाठ्यक्रम भी संस्कार प्रधान था। जातिगत भेदभाव के कारण पाठ्यक्रम सभी जातियों के लिए अलग–अलग होता था।

(ii) बौद्धकाल और पाठ्यक्रम

बौद्धकाल में जाति बंधन ढीले पड़ गये थे। अतः शिक्षा के अवसर सभी को मिलने लगे थे। बौद्ध धर्म ने अहिंसा पर बहुत बल दिया अतः पाठ्यक्रम में सैन्य शिक्षा पर बल दिया गया था। बौद्ध धर्म के दया एवं करूणा पर अत्यधिक बल दिया गया अतः पाठ्यक्रम में भी इन सामाजिक गुणों के विकास पर अत्यधिक जोर दिया जाने लगा। इस काल में विभिन्न व्यवसाय अपने चरम पर थे। जीवक सुश्रुत चिकित्सा के क्षेत्र में, चन्द्रगुप्त प्रशासन के क्षेत्र में, चाणक्य राजनीति के क्षेत्र में धनवन्तरि आयुर्वेद के क्षेत्र में विश्व ख्याति प्राप्त थे।

(iii) मध्यकाल और पाठ्यक्रम

मध्यकाल में मुगलों का साम्राज्य रहा और इस्लाम धर्म और संस्कृति का बोलबाला था। मुगल शासक इस्लाम धर्म एवं संस्कृति का प्रचार–प्रसार करना चाहते थे, अतः उन्होने शिक्षा को आधार बनाया और पाठ्यक्रम भी तद्नुरूप रखा। उन्होने अरबी–फारसी भाषा , अरबी फरसी साहित्य , इस्लाम धर्म के सिद्धान्तो को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया । वे अपने साथ बहुत से कला कोशल भी लाये थे , अतः उन्होने पाठ्यक्रम में विविध कलाओं तथा चित्रकला, संगीतकला, स्थापत्य कला आदि को उचित स्थान दिया। परिणाम स्वरूप उस समय कलाओं के क्षेत्र में समाज ने विशेष प्रगति की।

(iv) ब्रिटिश काल और पाठ्यक्रम

ब्रिटिश काल में हमारे देश में अंग्रजों का शासन था। अंग्रेजी संस्कृति का बोलबाला था। अंग्रजो को शासन कार्य के लिए अंग्रजी जानने वाले भारतीयों की आवश्यकता थी। दूसरी ओर भारतीय समाज में बहुत सी बुराइयॉं थी– जैसे – सती प्रथा, पर्दा प्रथा , बाल विवाह , बेमेल विवाह इत्यादि। अंग्रेजों ने गतिशील पाठ्यक्रम की आवश्यकता को महसूस कर पाठ्यक्रम में देश – विदेश की विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान, विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों का ज्ञान, मानवाधिकार, प्रजातांत्रिक मूल्य एवं अंग्रजी भाषा को सम्मिलित किया जिसके परिणाम स्वरूप लोगों में जागरूकता आयी और समाज की बुराइयॉं कम हुयीं।

(v) स्वतंत्र भारत और पाठ्यक्रम

स्वतंत्र भारत में प्रजातंत्र की स्थापना हुयी। शिक्षा का उद्देश्य था प्रजातांत्रिक मूल्यों में आस्था उत्पन्न करना । अतः प्रजातांत्रिक पाठ्यक्रम का निर्माण हुआ जिसमें प्रजातांत्रिक विषय वस्तु , प्रजातांत्रिक पाठ्यक्रम , प्रजातांत्रिक

गतिविधियाँ , प्रजातांत्रिक वातावरण को सम्मिलित किया गया।

(ब) संस्कृति और पाठ्यक्रम

संस्कृति के अनुसार ही पाठ्यक्रम में शिक्षण विधियाँ निर्धारित होती है। यदि संस्कुति में भौतिक तत्व की प्रधानता है तो शिक्षण विधियाँ भी तकनीकी होती है। विविध शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री एवं उपकरणों की मदद से पढ़ाया जाता है। प्रयोगों को प्रधानता दी जाती है। इसके विपरीत यदि संस्कृति अभौतिक है तो परम्परागत शिक्षण विधियों जैसे वाद–विवाद, परिचर्चा, सम्भाषण, प्रश्नोत्तर विधि आदि की प्रधानता रहती है। किसी संस्कृति में शिक्षक अथवा छात्र का स्थान भी शिक्षण–विधियों के निर्धारण में मदद करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

2. पाठ्यक्रम निर्धारण के प्रमुख आधारों का वर्णन कीजिए।

....

....

8.7 पाठ्यक्रम के विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विचार

पाठ्यक्रम विकास को एक अध्ययन विषय के रूप में अनेक नामों से जाना जाता है जो निम्नलिखित है–

पाठ्यक्रम विकास, पाठ्यक्रम संगठन, पाठ्यक्रम सुधार, पाठ्यक्रम नियोजन, पाठ्यक्रम परिवर्तन, पाठ्यक्रम परिमार्जन, पाठ्यक्रम दोहराव इत्यादि।

यह एक नया अध्याय क्षेत्र है। 1920 से पहले अध्ययन के रूप में इसका अस्तित्व नहीं था। शुरूआत में स्कूल का सुपरिन्टेन्डेट कोर्स रूपरेखा बनाता था। और उसको लागू कर दिया जाता था। सबसे पहली पुस्तक पाठ्यक्रम पर फ्रेकलिन बॉबिट (1918) द्वारा लिखी गयी। पुस्तक का नाम था 'Curriculum' । 1929 में कोलंबिया विश्वविद्यालय में टीचर्स कॉलेज में एक ब्यूरो की स्थापना हुई।

किस प्रकार का पाठ्यक्रम किस प्रकार के लोगों के लिए होना चाहिए, प्लेटो ने भी इस बात पर विचार किया। 1860 में हरबर्ट स्पेन्सर ने एक निबन्ध लिखा था 'व्हाट नॉलेज इस ऑफ मोस्ट वर्थ'। इसे पाठ्यक्रम का पुराना दस्तावेज माना जाता है। 'पाठ्यक्रम विकास में वुग लिखते है कि पाठ्यक्रम विकास को सामूहिक क्रिया द्वारा शैक्षिक परिवर्तन के चयन एवं निर्देशन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम विकास के नियोजन में मुख्य रूप से पाँच सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक क्रियाओं को लिया जा सकता है–

- विद्यालय के कार्यो को पहचानना एवं परिभाषित करना।
- सम्पूर्ण विद्यालय कार्यक्रम का विकास करना।
- विद्यालय के पूर्ण कार्यक्रम एवं अनुदेशन की विभिन्न क्षेत्रों की रूपरेखा बनाना।
- कक्षा शिक्षक को विशिष्ट सहायता प्रदान करना।
- शिक्षण एवं अधिगम।

8.8 पाठ्यक्रम के विकास हेतु डीवी के विचार

डीवी के अनुसार,'' सबसे अच्छी शिक्षा पद्धति वह है, जिसमें बालक स्वंय कार्य करके विभिन्न विषयों को सीखे। शिक्षक को भाषण के द्वारा अपने विचार बालक के मन में नहीं भरने है, बल्कि उसे ऐसे काम करने को देने है जिनसे उनकी विभिन्न शक्तियों का स्वाभाविक विकास हो सके। काम करते समय ही उसे उससे सम्बन्धित बातों का ज्ञान कराया जाना चाहिए और व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के कलए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। समस्याओं को हल करने से बालक के अनुभव में वृद्धि करती है। डीवी के अनुसार शिक्षा पद्वति में बालक के जीवन, क्रियाओ और विषयों में एकता स्थापित की जानी चाहिए। बालक के जीवन की क्रियाओं के चारो ओर सब विषय इस तरह बाँध दिये जाने चाहिए कि क्रियाओं के द्वारा उनका ज्ञान प्राप्त हो सके। डीवी का यह सिद्धान्त गाँधी जी ने अपने बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम में अपनाया था। बालक की क्रियाएं भी पहले से निर्धारित नहीं होनी चाहिए।

डीवी ने शिक्षा में दो तत्वों को विशेष महत्वपूर्ण है– रूचि और प्रयास। अध्यापक को बालक की स्वाभाविक रूचियों को समझकर उसके लिए उपयोगी कार्यों की व्यवस्था करनी चाहिए। बालक को स्वयं कार्यक्रम बनाने का अवसर दिया जाना चाहिए। इससे वे अपनी रूचियों के अनुसार कार्यक्रम बना सकेंगे। इससे किसी प्रकार के दबाव या भय की आवश्यकता नहीं है क्योकि तभी कार्यक्रम रूचि के अनुसार हो सकेंगें और तभी स्कूल ककी क्रिया आत्म क्रिया बन सकेगी।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

3. पाठ्यक्रम के विकास हेतु डीवी के विचारों का वर्णन कीजिए।

....

....

8.9 पाठ्यक्रम के विकास हेतु रूसो के विचार

रूसो के अनुसार शब्दों द्वारा मिले ज्ञान की तुलना में स्वयं क्रिया के द्वारा सीखा हुआ ज्ञान कहीं अधिक स्थायी होता है। रूसो पाठ्यचर्या में रटने के विधि के विरूद्ध था। उसका कहना था कि बालक की विवेक शक्ति का विकास करो, स्मरण शक्ति का नहीं। रूसो ने प्रचलित शिक्षण विधियों की तीव्र आलोचना की। बालक को स्वयं निरिक्षण, अनुभव और अन्वेषण के द्वारा शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। अध्यापक को उसके मस्तिष्क में अपना ज्ञान भरने के स्थान पर उसमें ऐसी उत्सुकता, जिज्ञासा, कौतुहल और अन्वेषण की प्रवृत्ति से विज्ञान का शिक्षण किया जा सकता है। रूसे के इन्ही सिद्धान्तो के आधार पर आगे चलकर ह्यूरिस्टिक विधि (Heuristic Method) का जन्म हुआ। स्वयं नैतिक शिक्षा के लिए बालक के सक्रिय होने की आवश्यकता है। रूसो ने शाब्दिक शिक्षा का तीव्र विरोध किया है। लम्बे–लम्बे व्याख्यान बालक को डुबा देते है। वह उन्हें सुनना पसन्द नहीं करता है। ये बालक की शिक्षा में बाधा डालते है। अस्तु, लम्बे–लम्बे व्याख्यानों के द्वारा अपने ज्ञान को बालक में उड़ेलने के स्थान पर बालकों को स्वयं क्रिया करने का अवसर दिया जाना चाहिए। शिक्षा की प्रक्रिया में शब्द से अधिक वस्तु का महत्व है।

8.10 पाठ्यक्रम के विकास में प्लेटो के विचार

प्लेटो के अनुसार शिक्षा एक प्रकार का प्रयत्न है जो प्रौढ़ व्यक्ति बालकों की उन्नति के लिए कहते है। प्लेटो के विचार से शिक्षा सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की प्राप्ति का साधन है। प्लेटो के विचार से व्यक्ति तथा समाज की उन्नति शिक्षा द्वारा होती है। इसलिए शिक्षा सबके लिए आवश्यक है। समाज को चाहिए वह सभी बालकों की शिक्षा की उचित व्यवस्था करे। प्लेटो ने इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है, ''बालक शिक्षालय में केवल

माता–पिता की प्रसन्नता के लिए ही नहीं जाएगें बल्कि वे भी प्रसन्न हो तो भी उनकी अनिवार्य शिक्षा होगी। शिक्षार्थी राज्य के समझे जाएँगें न कि अपने माता पिता के।

प्लेटो ने शिक्षा का विस्तृत अर्थ स्वीकार किया है जिसके अनुसार शिक्षा आजीवन चलती है। प्लेटो ने पाठ्यक्रम के विकास में निम्नलिखित सिद्धान्तों को आधार माना –

1. समानता का सिद्धान्त।
2. योग्यता तथा अभिरूचि का सिद्धान्त।
3. आवश्यकता का सिद्धान्त।

प्लेटो व्यक्ति में नैसर्गिक तत्वों का विकास करना चाहता था अतः इसके लिए उसने कई विधियों का प्रयोग आवश्यक समझा –

1. तक्र या वाद–विवाद विधि।
2. प्रश्नोत्तर विधि।
3. वार्तालाप विधि।
4. प्रयोग विधि।
5. अनुकरण विधि।
6. स्वाध्याय विधि।
7. स्वयं खोल की प्रणाली।
8. आगमन–निगमन विधि।

बोध प्रश्न :

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

4. प्लेटो ने पाठ्यक्रम निर्माण हेतु किन सिंद्धांतों पर बल दिया ?

....

....

8.11 पाठ्यक्रम के विकास हेतु अरस्तू के विचार

अरस्तू के दर्शन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है क्योकि व्यक्ति शिक्षा की प्रक्रिया द्वारा ही तक्र करना सीखता है। जो उसे सदगुण, सुख तथा राजनैतिक सद्‌भाव की ओर ले जाती है। अरस्तू के अनुसार शिक्षा का उद्‌देश्य एक अच्छा मानव बनाना है। अरस्तू प्रत्येक व्यक्ति को भिन्न–भिन्न आयु में सब प्रकार की शिक्षा प्रदान करना चाहते है। अरस्तू के पाठ्यक्रम के अनुसार आयु के अनुसार विद्यार्थियों की शिक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार है –

- सात वर्ष की आयु तक शिक्षा– 7 वर्ष की आयु तक बालक की शिक्षा घर पर ही होनी चाहिए। माता द्वारा खाने पीने का प्रबन्ध किया जाना चाहिए। कहानी और खेल द्वारा अच्छे संस्कार की नींव डाली जानी चाहिए।
- सात से चौदह वर्ष की आयु तक शिक्षा– इस आयु में शारीरिक गठन की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। शारीरिक व्यायाम व खेल कूद द्वारा शरीर स्वस्थ तथा मजबूत बनाने पर जोर दिया जाना चाहिए।

➢ चौदह से इक्कीस वर्ष की आयु तक शिक्षा– इस काल में विद्यार्थियों को पढ़ाई–लिखाई, अंकगणित, रेखागणित, चित्रकला व संगीत आदि विषयों का अध्ययन करना चाहिए।

8.12 पाठ्यक्रम के विकास में रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार

गुरुदेव शिक्षा का उद्देश्य जीवन की पूर्णता मानते थे। जीवन की यह पुर्णता संकुचित न होकर व्यापक है। इसलिए उन्होने राष्ट्रीयता से ऊठकर अन्तर्राष्ट्रीयता की बात कही है। गुरूदेव में विश्व बन्धुत्व की भावना प्रबल थी। वे संकीर्ण राष्ट्रीयता के विरोधी थे। वे सम्पूर्ण मानव जातियों ककी एकता में, दृढ़ निश्चयी थे। इसलिए शिक्षा के माध्यम से 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना जागृत करना उनका लक्ष्य रहा। गुरूदेव का मत था कि पाठ्यक्रम का तात्पर्य न केवल कुछ विषयों के सीखने से है, वरन कुछ क्रियाओं से है। विश्वभारती में टैगोर ने जहाँ एक तरफ विभिन्न विषय यथा–साहित्य, विज्ञान, इतिहास, भूगोल को स्थान दिया, वहीं छात्रों के लिए नाटक, बागवानी, नृत्य, संगीत तथा सरस्वती यात्राओं का भी प्रावधान किया है।

टैगोर का मत था कि पाठ्यक्रम ऐसा हो, जो व्यक्ति का सर्वगीर्ण विकास कर सके, क्योकि प्रचलित पाठ्यक्रम केवल बालक के मस्तिष्क में ज्ञान को ठुंसने का काम करता है। उनका कथन है कि पाठ्यक्रम में विषयों के साथ–साथ नृत्य संगीत शिल्प तथा खेल आदि का भी समावेष हो। गुरूदेव पुस्तकों की अपेक्षा 'प्रकृति द्वारा शिक्षा' पर विशेष बल देते है। इस प्रकार उनकी शिक्षा प्रणाली में पुस्तकों की भुमिका नगण्य है। टैगोर ने किसी निश्चित पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में उनका सामान्य विचार यत्र–त़त्र है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

5. रवीन्द्रनाथ टैगोर ने पाठ्यक्रम निर्माण हेतु किन तत्वों को महत्वपूर्ण माना ?

....

....

8.13 गिजूभाई के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार

गिजूभाई सच्चे अर्थों में बाल मनोविज्ञान के बहुत बड़े मर्मज्ञ थे। उनको बालकों से असीम प्यार था। उस समय की शिक्षा व्यवस्था से वे बेहद असन्तुष्ट थे और यही कारण था ि कवह अपने वकालत जैसे पेशे को छोड़कर बच्चों की शिक्षा के सुधार रूपी महायज्ञ में कूद पड़े और अपना सारा जीवन इस कार्य में समर्पित कर दिया। इसी कारण उनकों बच्चों का गाँधी कहा जाता है। गिजूभाई की साधना स्थली दक्षिणामूर्ति बाल मन्दिर में बच्चे हँसते–खिल–खिलाते और दिनभर अपनी पसन्द की गतिविधियों में तल्लीन रहकर जीवन रक्षा के उपयोगी पाठ पढ़ाते थे। दक्षिणामूर्ति बाल मन्दिर में विविध विषयों के शिक्षण के साथ–साथ विभिन्न सह–शैक्षिक प्रवृत्तियों तथा चरित्र निर्माण पर अधिक जोर दिया जाता था। सत्य, अहिंसा, करूणा, स्नेह, आदर, दया, त्याग, परोपकार, भाईचारा, ईमानदारी, परिश्रम तथा सहयोग जैसे उच्च मानवीय गुण बच्चों के जीवन में स्वतः विकसित होते है। गिजूभाई ने बच्चों–बच्चों की स्वतंत्रता और शिक्षा के लिए संघर्ष किया।

गिजूभाई के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण बालक की वास्तविक आयु को ध्यान में न रखकर उसकी मानसिक आयु के अनुसार होना चाहिए। बुद्धि परीक्षाओं से बालक की मानसिक आयु प्राप्त कर ली जाती है। मन्द बुद्धि तथा मेधावी बालकों के लिए विशेष पाठ्यक्रम की व्याख्या की जाती है। आठवीं कक्षा के बाद पाठ्यक्रम को विभिन्न वर्गो में बांट दिया जाता है जैसे साहित्य वर्ग, कला वर्ग, विज्ञान वर्ग, कृषि वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग आदि। इस तरह के विभाजन से बालक को अपनी रूचि और योग्यता के अनुसार विषय वर्ग चुनने की स्वतंत्रता होती है।

8.14 पाठ्यक्रम के विकास हेतु गाँधी जी के विचार

गाँधी जी ने प्रचलित पाठ्यक्रम को अनुपयोगी और जीवन की वास्तविकताओं से दूर बताया तथा पुस्तकीय ज्ञान की घोर निदा की। उन्होने उस पाठ्यक्रम को हानिकारक बाताया जो परीक्षा की दृष्टि में रहकर तैयार किया गया है अतः बापू ने निम्न सिद्धान्तों पर पाठ्रूक्रम निर्माण की सिफारिश की–

1. पाठ्यक्रम की धार्मिक पृष्ठभूमि।
2. पाठ्यवस्तु वास्तविक हो तथा जीवन से सम्बन्धित हो।
3. शिक्षा मातृभाषा में दी जाए।
4. शिक्षा का केन्द्र बिन्दु कोई हस्तशिल्प हो।
5. शिक्षक का स्थान अधिक महत्वपूर्ण हो।

गाँधी जी ने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया, जिसके पाठ्यक्रम का चयन इस प्रकार किया जाए, जिससे कि बालकों को भौतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकें। पाठ्यक्रम के चयन में गाँधी जी ने उनयोगिता के सिद्धान्त पर बल दिया, परन्तु साथ ह िवह दार्शनिक आधार को भी नहीं भूले। गाँधी जी पाठ्यक्रम के निर्माण में सहसम्बन्ध के सिद्धान्त पर बल देते है। उन्होने हस्तकोशल को शिक्षा का केन्द्र बनाने का सुझाव दिया और कहा कि अन्य विषयों को उससे सहसम्बन्धित किया जाना चाहिए। विभिन्नता और रूचि के सिद्धान्त पर भी गाँधी जी की दृष्टि गई। छात्रों को विषयों को चुनने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए जिससे कि वे अपने रूचि के अनुसार विषयों को चुन सकें और अपने ज्ञान की वृद्धि कर सके। गाँधी जी ने जिस बेसिक शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया, उसमें क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम को स्थान दिया। ऐसा इसलिए किया गया कि विद्यार्थी आत्म–निर्भर हो सकें और समाज के भौतिक उत्थान में योगदान दे सकें। साथ ही गाँधी जी ने आध्यात्मिक उन्नति से सम्बन्धित विषयों को भी इस पाठ्यक्रम में स्थान दिया। गाँधी जी ने पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को शामिल करने का सुझाव दिया–

1. हस्तकोशल (क्राफ्ट)
2. भाषा
3. गणित
4. समाजिक अध्ययन
5. सामान्य विज्ञान
6. कला
7. शरीर शिक्षा
8. आचरण की शिक्षा

8.15 पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अन्तराष्ट्रीय आयोग के विचार

विश्व इतिहास में पहली बार यूनेस्कों ने उस समय की वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन एवं उसके आधार पर शिक्षा से सम्बन्धित एक विश्वव्यापी धारणा को विकसित करने के लिए इस आयोग की नियुक्ति फ्रांस के शिक्षाशास्त्री Edger Fause की अध्यक्षता में की थी। जिसमें यू0एस0ए0, यू0एस0एस0आर0, कांगो, सीरिया और चिली इत्यादि के सदस्यों को भी सम्मिलित किया था। इनकी रिपोर्ट का नाम था लर्निंग टू (1972) (Learning to Be,1972) सभी मुख्य भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ। भारत में उर्दू, बंगाली, तमिल आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ।

इस आयोग के सुझाव निम्नलिखित थे –

1. पाठ्यक्रम में सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लक्ष्यों को समाहित किया जाना चाहिए।

2. पाठ्यक्रम का उद्देश्य सम्पूर्ण मनुष्य का विकास हो, शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा नैतिक पक्ष का एकीकरण होना चाहिए।
3. दुरस्थ शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए।
4. सभी प्रकार की संस्थाओं का शैक्षिक प्रयोजन से उपयोग हो।
5. जीवन पर्यन्त शिक्षा हो।
6. शिक्षा टुकड़ो में नहीं होनी चाहिए।
7. स्कूल पूर्ण शिक्षा होनी चाहिए।
8. प्रौढ़ शिक्षा होनी चाहिए।
9. शिक्षक प्रशिक्षक बने न कि विषय विशेषज्ञ।
10. पाठ्यक्रम बालक के अनुकूल बनाना है न कि बालक को पाठ्यक्रम के अनुकूल।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

6. पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय आयोग के प्रमुख विचार क्या हैं ?

....

....

8.16 सारांश

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम में वह सब सम्मिलित है जो कि विद्यार्थियों, उनके माता–पिता एवं उनके शिक्षकों के जीवन में घटित हो रहा है। पाठ्यक्रम के निर्माण हेतु विभिन्न दार्शनिकों के अपने–अपने विचार है। डीवी ने पाठ्यक्रम को क्रियाप्रधान बनाने का सुझाव दिया। रूसो ने रटने का विरोध किया, टैगोर ने क्रिया–सिद्धान्त की बात की। इस प्रकार सभी के दृष्टिकोणों का उचित समावेष करके उत्तम पाठ्यचर्या का निर्माण किया जा सकता हैं।

पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया एक विशेष प्रक्रिया है इसके अन्तर्गत अधिगम अनुभवों तथा पाठ्यचर्या के क्रिया कलापों के द्वारा लाए जाने वाले परिवर्तनों के मूल्यांकन की साफ समझ होनी आवश्यक है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है इसलिए सामाजिक भिन्नता को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या का स्वरूप विकसित किया जाता है। पाठ्यक्रम की आधुनिक अवधारणा विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण को पाठ्यक्रम में समाहित करती है। विद्यालय के बाहर, विद्यालय अधिकारियों के निर्देशन में विद्यार्थी जो भी क्रियाएं करते हैं जो भी अनुभव प्राप्त करते है, कक्षा में या खेल के मैदान में, प्रार्थना सभा में प्रयोगशाला में, विद्यार्थी परिषद् में तरणताल में चाहे शिक्षकों के साथ अनौपचारिक वार्तालाप में यह सब पाठ्यक्रम का अंग है। जैसी सामाजिक व्यवस्था होती है पाठ्यचर्या भी वैसे ही विकसित होती है। वैदिक काल में समाज में धर्म का बोलबाला था अतः पाठ्चर्या भी धार्मिक थी। बौद्धकाल में अंहिसा पर बल दिया गया। मध्यकाल में शिक्षा को ईस्लाम धर्म के प्रचार–प्रसार का साधन माना गया। ब्रिटिश काल में अंग्रेजी भाषा पर ज्यादा बल दिया गया। महान शिक्षाशास्त्री जान डीवी यह मानते थे कि पाठ्यचर्या में क्रियाशीलता की प्रमुखता हो। रूसो स्वयं करके सीखने पर बल देते हैं। भारतीय विचारकों की बात करें तो महात्मा गाँधी ने हस्तकला केन्द्रित पाठ्यक्रम पर बल दिया। गिजूभाई मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो पर बल देते थें।

8.17 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यक्रम के निर्धारकों का वर्णन कीजिए।
2. पाठ्यक्रम के विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विचार क्या हैं ? व्याख्या कीजिए।
3. महात्मा गांधी जी के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचारों को विन्दुवार वर्णन कीजिए।

8.18 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय विचारों पर चर्चा कीजिए।

8.19 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पाठ्यक्रम अंग्रेजी शब्द Curriculum का हिन्दी रूपान्तरण है जिसका अर्थ है– दौड़ का मैदान। डी0एस0 रावत के अनुसार, ''पाठ्यक्रम उन समस्त साधनों का योग है, जो कि विद्यालय वांछित अधिगम परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है।''
2. पाठ्यक्र निर्धारण के प्रमुख आधार– समाजशास्त्रीय निर्धारक, संस्कृति और पाठ्यक्रम इत्यादि। इनको ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है। प्रत्येक काल में उस वक्त की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक,धार्मिक व्यवस्था पाठ्यक्रम को प्रभावित करती है।
3. डीवी ने शिक्षा में दो तत्वों को महत्वपूर्ण बताया – रूचि और प्रयास। अध्यापक को बालक की स्वाभाविक रूचियों को समझकर उसके लिए उपयोगी कार्यों की व्यवस्था करनी चाहिए।
4. प्लेटो के सिद्धांत– समानता ,का सिद्धांत योग्यता एवं अभिरूचि का सिद्धांत, आवश्यकता का सिद्धांत।
5. रवीन्द्रनाथ टैगोर– पाठ्यक्रम ऐसा हो जो व्यक्ति का सर्वागीण विकास कर सके। क्योंकि प्रचलित पाठ्यक्रम बालक के मस्तिष्क में ज्ञान ठूसने का कार्य करता है।
6. अन्तर्राष्ट्रीय आयोग के विचार– 1. पाठ्यक्रम में सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लक्ष्यों को समाहित करना। 2. बालक का सर्वागीण विकास करना। 3. दूरस्थ शिक्षा पर बल। 4. जीवन पर्यन्त शिक्षा 5. प्रौढ़ शिक्षा पर बल।

8.20 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. गुप्ता रत्ना, मौर्या गीतान्जलि (प्रथम नवीनतम संस्करण), पाठ्यचर्या के सैद्धांतिक आधार, लखनऊ : शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन।
2. एन0सी0एफ0 (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिसर।
3. माथुर, एस0एस0 (2010–2011), शिक्षा के दार्षनिक एवं सामाजिक आधार, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।
4. गुप्त, लक्ष्मी नारायन (2008–2009), शिक्षा एवं दार्शनिक एवं समाजषास्त्रीय आधार, इलाहाबाद : न्यू कैलाष प्रकाशन।
5. पाण्डेय, के0पी0 (2005), शिक्षा के दार्षनिक एवं समाजिक आधार, वाराणसी : विष्वविद्यालय प्रकाषन।
6. शुक्ला रमा, सिंह मधुरिमा, (तृतीय नवीनतम संस्करण), शिक्षा के दार्षनिक आधार, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।
7. मालवीय राजीव, विजिलिंग फैकेल्टी (2012), शिक्षा के मूल सिद्धांत, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
8. सारस्वत मालती, गौतम एस0एल0 (नवीनतम संस्करण), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं, लखनऊ : आलोक प्रकाशन।

खण्ड – 03 : पाठ्यचर्या सहभागिता और पारगमन

खण्ड परिचय

शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम के अंतर्गत पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया से परिचित होना, प्रत्येक छात्राध्यापक के सैद्धांतिक प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण भाग है। खंड 3 के अंतर्गत पाठ्यचर्या सहभागिता और पारगमन से सम्बन्धित विभिन्न आयामों का अध्ययन किया जाएगा। इस खंड में कुल 4 इकाइयां है, जो निम्न प्रकार हैं –

इकाई – 09 : इस खंड की इकाई 9 का शीर्षक पाठ्यचर्या के दृष्टिकोंण हैं। इस इकाई के आरंभ में पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न दृष्टिकोण का उल्लेख किया गया है जिसके अंतर्गत विषय केंद्रित दृष्टिकोंण, शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोंण, सामाजिक समस्या केंद्रित दृष्टिकोंण तथा ब्रॉडफील्ड दृष्टिकोण का उल्लेख विस्तृत रूप से किया गया है। इस इकाई के अंतर्गत वर्णित दृष्टिकोण के विभिन्न प्रारूपण को वर्गीकृत करने के साथ उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं को समझने का प्रयत्न किया जाएगा।

इकाई – 10 : इस इकाई के अंतर्गत पाठ्यचर्या पारगमन के वास्तविक अर्थ को समझने का प्रयत्न किया जाएगा। इस इकाई के आरंभ में विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के अनुसार पाठ्यचर्या पारगमन की भूमिका को समझेंगे जिसमें वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण एवं रचनावदियों द्वारा प्रस्तुत किए गए दृष्टिकोण का अध्ययन कर सकेंगे। इस इकाई में कक्षा विशेष के संदर्भ में पाठ्यचर्या पारगमन के संसाधन के अंतर्गत शिक्षकों के छात्र अंतःक्रिया के दौरान किए जाने वाले विभिन्न क्रियाकलापों में मौखिक प्रदर्शन, कक्षा परिचर्चा, प्रश्नोत्तरी तथा शिक्षार्थी भागीदारी को समझने का प्रयत्न किया गया है।

इकाई – 11 : इकाई 11 के अंतर्गत पाठ्यचर्या सहभागिता के लिए विद्यालय दर्शन की भूमिका को समझ सकेंगे। इस इकाई के आरंभ में विद्यालय संदर्भ में पाठ्यचर्या उद्देश्यों को व्याख्यान्वित करने का प्रयास किया गया है। पाठ्यचर्या सहभागिता के लिए विद्यालय दर्शन एवं विचारधारा का तार्किक अर्थ समझाने का प्रयास किया गया है तथा इस खंड के द्वारा पाठ्यचर्या सहभागिता सीखने की प्रक्रिया को किस प्रकार निर्धारित दिशा प्रदान कर सकती है, को समझने का प्रयत्न किया गया है। इस इकाई में स्पष्ट करते हुए समझने का प्रयत्न किया गया है कि विद्यालय दर्शन ही क्रियान्वन का आधार बनता है तथा पाठ्यचर्या का क्षेत्र एवं प्रकृति एवं विद्यालय प्रथाएं पाठ्यचर्या में क्या भूमिका निभाती है के अर्थ को समझने का प्रयत्न किया गया है।

इकाई – 12 : इस खंड की इकाई–12 का शीर्षक– बुनियादी ढांचागत सहायता और पाठ्यचर्या सहभागिता है। इस इकाई के प्रारंभ में स्पष्ट किया गया है की पाठ्यचर्या नियोजन के सैद्धांतिक स्वरूप को मूर्त रूप देने के लिए विद्यालय ही वास्तविक स्थान है जहां के संसाधनों द्वारा ही पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इस इकाई में विद्यालय अवसंरचना का महत्व स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि विद्यालय का बुनियादी ढांचा, इसकी डिजाइन, प्रारूप, भवन, कक्षाओं का आकर, बैठने की व्यवस्था, किसी भी विद्यालय में अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। इस इकाई में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद् द्वारा विद्यालय अवसंरचना हेतु संस्तुति को भी समझने का प्रयत्न किया जाएगा।

इकाई – 09 : पाठ्यचर्या के दृष्टिकोंण

इकाई की संरचना

9.1 प्रस्तावना

9.2 इकाई के उद्देश्य

9.3 पाठ्यचर्या विकास के दृष्टिकोंण

9.3.1 विषय केन्द्रित दृष्टिकोंण

9.3.2 शिक्षार्थी–केन्द्रित दृष्टिकोंण

9.3.3 सामाजिक समस्या केन्द्रित दृष्टिकोंण

9.3.4 ब्रॉडफील्ड दृष्टिकोंण

9.4 सारांश

9.5 अभ्यास के प्रश्न

9.6 चर्चा के बिन्दु

9.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

पाठ्यचर्या किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया का आधार है। जॉन डीवी शिक्षा के तीन ध्रुवों में एक ध्रुव पाठयचर्या को बताया है जिस पर शिक्षक–छात्र अन्तःक्रिया की आधार शिला तैयार होती है। यह बालक में निर्धारित परिवर्तन लाने के लिए शैक्षिक संस्थान द्वारा प्रदान की गई सभी क्रियाओं का योग है। जैसा की अनुभव किया जाता है कि प्रत्येक समाज का उद्देश्य अपने बालक को अपने समाज के परिवेश के अनुरूप समायोजित करना होता है पाठ्यचर्या समाज के एक इस दुरूह कार्य को पूर्ण करने में सहायता करती है। इस इकाई में हम पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न दृष्टिकोंणों का अध्ययन करेंगे।

9.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप इस योग हो जाएंगे कि –

1. पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न दृष्टिकोंणों को स्पष्ट कर सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या निर्माण की विभिन्न नीतियों का वर्णन कर सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या विकास के विषय केन्द्रित, दृष्टिकोंण को समझ सकेंगे।
4. शिक्षार्थी–केन्द्रित दृष्टिकोंण से अवगत हो सकेंगे।

9.3 पाठ्यचर्या विकास के दृष्टिकोंण

पाठ्यचर्या विकास के दृष्टिकोंण पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक–सामाजिक पहलुओं को तय करने को एक योजनाबद्ध प्रारूप है जिसका पालन शिक्षक–शिक्षार्थियों को सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए करते है। पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न दृष्टिकोंण है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने 1997 में इन्हे चार श्रेणियों में बांटा है।

1. विषय केन्द्रित दृष्टिकोंण
2. शिक्षार्थी–केन्द्रित दृष्टिकोंण

3. सामाजिक समस्या केन्द्रित दृष्टिकोंण

4. ब्रॉडफील्ड दृष्टिकोंण

9.3.1 विषय केन्द्रित प्रारूप

पाठ्यचर्या का यह प्रारूप बालको को विभिन्न विषयों का ज्ञान प्रदान करने की योजना प्रस्तुत करता है। इस पाठ्यचर्या प्रारूप में बालकों की अपेक्षा विषयों को अधिक महत्व दिया जाता है। इस दृष्टिकोंण के अन्तर्गत अध्ययन के पारम्परिक क्षेत्रों के लिए पारम्परिक विषयों को अनतर्नुशासनिक विषयों के साथ सम्मिलित किया जाता है।

शैक्षिक अनुभवों को व्यवस्थित करने के लिए विषय–केन्द्रित दृष्टिकोंण सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली विधियों में से एक है। विषय केन्द्रित दृष्टिकोंण को पारम्परिक प्रारूप या पुस्तक–केन्द्रित पाठ्यक्रम भी कहा जाता है।

(i) विषय केन्द्रित प्रारूप की विशेषताएँ

विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या प्रारूप की विशेषताएँ निम्नलिखित है।

- विषय–केन्द्रित पाठ्यचर्या प्रारूप अपने संरचनात्मक स्वरूप के कारण इसका निर्माण काफी सरल होता है।
- इस पाठ्यचर्या प्रारूप में विषयों के ज्ञान को पृथक–पृथक रूप देने की व्यवस्था होती है।
- विषय–केन्द्रित प्रारूप का प्रमुख उद्देश्य बालकों को पारम्परिक विषयों के ज्ञान से परिचित कराना है।
- यह उच्च ध्वज दक्षता की मांग करके और ध्वजों को उच्च ग्रेड प्राप्त करने में मदद करने के लिए प्रभावी तरीके प्रदान करके सभी ध्वजों को और अधिक सीखने में मदद करता है।
- विषय–केन्द्रित पाठ्यचर्या प्रारूप सभी देशों की पारम्परिक शिक्षा प्रणालियों में एक प्रमुख दृष्टिकोंण रहा है।
- यह शैक्षिक सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए एक स्पष्ट और सुसंगत रूपरेखा प्रदान करता है और यह सुनिश्चित करता है कि ध्वज विशिष्ट विषयों में एक ठोस आधार प्राप्त करें।

(ii) विषय केन्द्रित प्रारूप की सीमाएँ

1. इसमें बालक से अधिक विषयों का ध्यान दिया जाता है।
2. विषय–केन्द्रित पाठ्यचर्या पाठ्य का मुख्य दोष है कि यह छात्र केन्द्रित नही है।
3. यह कौशल केन्द्रित होने के बजाय ज्ञान केन्द्रित है।

(iii) विषय–केन्द्रित प्रारूप के प्रकार

इसके पाँच प्रकार होते है।

(1) विषय प्रारूप

(2) अनुशासन प्रारूप

(3) सहसम्बंधात्मक प्रारूप

(4) प्रक्रिया प्रारूप

(5) विस्तृत क्षेत्र प्रारूप

(अ) विषय प्रारूप :– यह प्रारूप इस मान्यता पर आधारित है कि मनुष्य की श्रेष्ठता ज्ञान प्राप्ति में ही है

और ज्ञान की खोज एवं प्राप्ति बौद्धिकता की स्वाभाविक आवश्यकता है।

यह सबसे प्राचीन एवं प्रचलित पाठ्यचर्या प्रारूप है जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास एवं ललित कलाओं का अध्ययन सम्मिलित है।

(i) विशेषताएँ

1. यह बालकों के बौद्धिक विकास पर बल देता है।
2. यह छात्रों की ज्ञान मीमांसा को जागृत करता है।
3. यह पारम्परिक है व क्रियान्वयन में आसान है।
4. यह बालक को सम्भव के लिए उपयोगी ज्ञान से परिचित करता है।

(ii) सीमाएँ

1. यह विषय–वस्तु पर अधिक केन्द्रित है।
2. शिक्षार्थियों को विविध ज्ञान के अर्जन के लिए बाध्य करता है।
3. यह पूर्णतः मनोवैज्ञानिक नही है।
4. यह अधिगम को सीमित करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने 1997 में पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न दृष्टिकोंण को कितने श्रेणियों में विभक्त किया है ?

....

....

2. विषय केन्द्रित दृष्टिकोंण को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?

....

....

3. विषय–केन्द्रित प्रारूप के कितने प्रकार बताये गये हैं ?

....

....

(ब) अनुशासन प्रारूप

पाठ्यचर्या का यह प्रारूप सन् 1950 में प्रयोग में आना प्रारम्भ हुआ तथा दस वर्षों के भीतर ही लगभग 1960 तक इसका व्यापक प्रयोग प्रारम्भ हो गया । पाठ्यचर्या का अनुशासन प्रारूप ब्रुनर के सिद्धान्त पर आधारित है जिसके अनुसार किसी भी आयु के विद्यार्थियों को किसी भी विषय की मूलभुत बातों को सीखाया जा सकता है इसके लिए वयस्कावस्था या किशोर होने का इंतजार नही करना पड़ता ।

अतः पाठ्यचर्या को बालक की आयु के मानसिक विकास के अनुरूप निर्मित करना चाहिए। इस प्रारूप में पाठ्यवस्तु को जिस विधि से सीखना है वो विद्वानों द्वारा अपने क्षेत्र में अध्ययन हेतु प्रयोग में लायी जाती है।

(i) विशेषताएँ

1. विद्यार्थी पाठ्यवस्तु पर स्वामित्व प्राप्त करने में सक्षम होता है।
2. यह बालक को अधिगत के लिए स्वतंत्र परिवेश देता है।
3. विकास की अवस्था पर विद्यार्थी को कोई भी विषय पढ़ाया जा सकता है।

(ii) सीमाएँ

1. यह ज्ञान की एक बड़ी मात्रा को नजरअंदाज कर देता है।
2. विद्यार्थियों को पाठ्यचर्या के अनुसार अनूकुलित होना पड़ता है।

(स) सहसम्बन्धात्मक प्रारूप

यह पाठयचर्या प्रारूप एकीकृत एवं विभिन्न विषयों को कैसे एक–दूसरे से सम्बन्धित किया जाय वा कि उनके बीच सहसम्बन्ध स्थापित किया जा सके, और उन विषयों की पृथक पहचान की बनी रहे, पर आधारित रहता है। जैसे विभिन्न साहित्य विषयों के विकास क्रम को इतिहास विषय की काल अवधि के साथ जोड़कर पड़ा जा सका है।

(i) विशेषताएँ

1. यह विभिन्न विषयों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता है जिससे पाठ्यवस्तु रूचिकर बनती है।
2. यह प्रारूप विभिन्न विषयों को एकात्मक स्वरूप प्रदान करता है।

(ii) सीमाएँ

1. यह अधिक समय साध्य होता है।
2. छात्रों को विभिन्न विषयों का तुलनात्मक अध्ययन करना पड़ता है।

(द) प्रक्रिया प्रारूप

यह पाठ्यचर्या प्रारूप अध्ययन को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करता है तथा इसकी मान्यता है कि स्वीकार करता है तथा इसकी मान्यता है कि कुछ विशिष्ट कौशल एवं प्रक्रियाएं प्रत्येक विषय को सीखने के लिए समान रूप से आवश्यक होती है। यह पाठ्यचर्या प्रारूप इन्ही प्रक्रियाओं को सीखाने पर बल देता है।

(i) विशेषताएँ

1. यह प्रारूप बालको को सामान्य विधियों एवं सामान्य प्रक्रिया को सीखाने पर बल देता है जो किसी एक विषय के लिए नही अपित सभी विषयों के सीखने पर के लिए उपयोग में लाई जाती है।

(ii) सीमाएँ

1. यह प्रक्रिया पर अधिक तथा विषयवस्तु पर कम ध्यान देती है।

(य) विस्तृत क्षेत्र प्रारूप

यह पाठ्यचर्या प्रारूप अंतर्नुशासनिक प्रारूप भी कहलाता है। इसके अन्तर्गत उन विषयवस्तुओं को जो तर्कसंगत रूप से एक साथ जुड सकते है, को जोंडने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण के लिए विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के विषयों का वर्गीकरण करना।

(i) विशेषताएँ

1. यह पाठ्यवस्तु के विभिन्न पक्षों को समझने में सहायता करता हैं।

2. यह अधिगत स्थानान्तरण के सिद्वान्त पर आधारित है।

(ii) सीमाएँ

1. विषय वस्तु का विस्तार होने से गहनता कम हो जाती है।
2. बालक को अपने विषय का ज्ञाता बनने में बाधा आती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

4. पाठ्यचर्या का अनुशासन प्रारूप किस सन् में प्रकाश में आया ?

....

....

5. सहसम्बन्ध प्रारूप विभिन्न विषयों को कौन सा रूप प्रदान करता है ?

....

....

6. पाठ्यचर्या प्रारूप अध्ययन को किस रूप में स्वीकार करता है ?

....

....

7. विस्तृत क्षेत्र पाठ्यचर्या प्रारूप क्या कहलाता है ?

....

....

9.3.2 शिक्षार्थी केन्द्रित दृष्टिकोंण

पाठ्यचर्या विकास का यह दृष्टिकोंण पूर्णतः मनोवैज्ञानिक सिद्वान्तों पर आधारित होकर छात्रों की रूचि, अभिरूचित एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर निर्मित किया जाता है। इस प्रारूप में कुछ सामान्य कार्य–कलाप जैसे–खेल, चित्रकला, कहानी आदि को पाठ्यचार्य में शामिल किया जाता है। पाठ्यवस्तु को अलग–अलग भागों में विभाजित कर उन्हे क्रियाकलापों के साथ सम्बद्ध किया जाता है। पूर्व विद्यालयी स्तर पर यह पाठ्यचर्या प्रारूप उपयोगी रहता है।

(i) विशेषताएँ

1. यह प्रारूप मुख्यतः 3R (Reading, Writhg, Airthmatic) के सिद्वान्त पर आधारित है।
2. यह प्रारूप विषय वस्तु को विभिन्न कार्यकलापों से सम्बद्ध कर निर्मित किया जाता है।

(ii) सीमाएँ

1. यह बालको के मात्र बौद्धिक विकास को प्रभावित करता है।

(अ) शिक्षार्थी केन्द्रित प्रारूप के प्रकार

इसके प्रमुख चार प्रकार है।

i. बाल केन्द्रित प्रारूप

ii. अनुभव केन्द्रित प्रारूप

iii. रूमानी या रेडिकल प्रारूप

iv. मानवतावादी प्रारूप

1. बाल केन्द्रित प्रारूप

यह पाठ्यचर्या प्रारूप शिक्षण को वास्ताविक जीवन से सम्बद्ध कर अध्ययन–अध्यायन की बात करता है। इस पाठ्यचर्या प्रारूप के निर्माण में छात्र–शिक्षक दोनो सक्रिय होकर अपनी भूमिका निभाते है। दोनों पाठ्यचर्या की योजना, उद्देश्य व क्रिया कलायों तथा प्रयोग में लाये जाने वाले साधनों को निर्धारित करते है। इस पाठ्यचर्या प्रारूप के समर्थको में जॉन डीवी, रूसों, पेस्टालाजी व फ्रोबेल का नाम उल्लेखनीय है।

(i) विशेषताएँ

1. यह बालको के संरचनात्मक अधिगम को बदावा देता है।
2. बालको को करके सीखने पर बल देता है।

(ii) सीमाएँ

1. निश्चित पाठ्य वस्तु का न होना।
2. प्रत्येक पाठ्यवस्तु के शिक्षण के लिए उपयोगी नहीं।

2. अनुभव केन्द्रित प्रारूप

अनुभव केन्द्रित पाठ्यचर्या प्रारूप बाल केन्द्रित पाठ्यचर्या प्रारूप की भाति ही बालक की रूचि, अभिरूचि एवं आवश्यकताओं के अनुरूप निर्मित की जाती है परन्तु इस पाठ्यचर्या प्रारूप में बालकों को प्रत्येक विषय के स्वअनुभव आधारित अधिगत को प्राथमिकता दी जाती है। जिसमें विद्यालय को कार्यस्थल के रूप में अधिकल्पित कर आवश्यक संसाधनों का विकल्प दिया जाता है।

(i) विशेषताएँ

1. यह प्रारूप बालको स्वाभाविक अधिगत अनुभव पर आधारित है।
2. यह विद्यालयी वातावरण में वास्तविक आधिगत अनुभव पर आधारित है।

(ii) सीमाएँ

1. इस पाठ्यचर्या प्रारूप का क्रियान्वयन चुनौतीपूर्ण है।
2. इसके अन्तर्गत सार्वभौम पाठ्यचर्या का निर्माण सम्भव नहीं है।

3. रूमानी या रेडिकल प्रारूप

यह पाठ्यचर्या प्रारूप शिक्षा के परम उद्देश्य पर आधारित है जिसके अन्तर्गत 'स विद्या या विमुक्तये' के दर्शन पर विद्यार्थियों के भावात्मक एवं आध्यात्मिक पक्ष का विकास किया जाता है जिसमें बालक अपने जानेन्द्रियों को प्रशिक्षित कर अपनी जीवनचर्या को नियन्त्रि कर सकें। वर्तमान समाज में व्याप्त भ्रष्ट आचरण व भौतिक पिपासा को शिक्षा के आध्यात्मिक पक्ष को सृदृढ़ कर ही समाप्त किया जा सकता है।

(i) विशेषताएँ

1. यह पाठ्यचर्या प्रारूप शिक्षा के पर लख्य–मुक्ति पर आधारित है।
2. इस पाठ्यचर्या प्रारूप का आधार दार्शनिक चिन्तन है।

(ii) सीमाएँ

1. यह बालक की संकल्पना समाज से परे करता है।

2. यह निराशावादी दृष्टिकोंण को बढ़ावा देता है।

4. **मानवतावादी प्रारूप**

अब्राहम मैस्लों व कार्ल रोजर्स इस पाठ्यचर्या प्रारूप के समर्थकों में अग्रणी है। यह अब्राहम मैस्लों के आत्मसिद्धि के सिद्धान्त पर आधारित है। पाठ्यचर्या का यह प्रारूप विद्यार्थियों की क्षमताओं को विकसित करने व उनके स्वनिर्माण की प्रक्रिया को सम्मिलित करने व उनके स्वनिर्माण की प्रक्रिया को सम्मिलित करता है। पाठ्यचर्या का यह प्रारूप अभिकल्पित करता है कि 'स्वनिर्माण' ही अधिगत का परम उद्देश्य है।

(i) विशेषताएँ

1. यह बालक को आन्तरिक योग्यता के विकास का अवसर प्रदान करता है।

2. यह विद्यार्थियों को उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के अनुरूप विकसित करता है।

(ii) सीमाएँ

1. यह बालक के वैयक्तिक उद्देश्यों के विकास को सामजिक उद्देश्यों की तुलना में कम महत्व देती है।

2. विद्यार्थियों की रूचियों तथा वर्तमान परिदृश्य की आवश्यकताओं के मध्य सन्तुलन स्थापित करना एक दुष्कर कार्य है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

8. शिक्षार्थी केन्द्रित प्रारूप के प्रकारों के नाम लिखिए।

....

....

9. अनुभव केन्द्रित प्रारूप की दो विशेषताएं लिखिए।

....

....

10. मानवतावादी प्रारूप की दो विशेषताओं को लिखिए।

....

....

9.3.3 सामाजिक समस्या केन्द्रित दृष्टिकोंण

यह पाठ्यचर्या प्रारूप किसी वास्तविक या उपकल्पित समस्या को केन्द्र में रखकर संगठित की जाती है, इस कारण इसे समस्या केन्द्रित पाठ्यचर्या प्रारूप कहा जाता है। इस पाठ्यचर्या प्रारूप में विद्यार्थियों से उनके अधिगत में आने वाली कठिनाइयों का समाधान करने का प्रयास किया जाता है अतः इस प्रारूप में विद्यार्थियों से अधिक विचार लिये जाते है। इस पाठ्यचर्या प्रारूप में निम्नलिखित समस्याओं को ध्यान में रखा जाता है।

1. जीवन की वास्ताविक समस्याएँ

2. अधिगत परिस्थितियों की समस्याएँ

3. विद्यालयी परिवेश की समस्याएँ

4. स्थानीय परिवेश जनित समस्याएँ

5. दार्शनिक, नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

(i) विशेषताएँ

1. इस पाठ्यचर्या प्रारूप का प्रमुख आधार विद्यार्थियो के अधिगत में आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखा जाता है।

2. इस प्रारूप में छात्रों के विचारों की अधिक सहभागिता होती है।

(ii) सीमाएँ

1. पाठ्यचर्या प्रारूप धन, समय व आवश्यक संसाधनों की दृष्टि से कठिन कार्य है।

(अ) समस्या केन्द्रित पाठ्चर्या प्रारूप के प्रकार

इस पाठ्यचर्या प्रारूप के तीन प्रकार है।

1. जीवन परिस्थिति प्रारूप

2. आधारभूत प्रारूप

3. सामाजिक समस्था एवं संरचनात्मकवादी प्रारूप

1. जीवन परिस्थिति प्रारूप

पाठ्यचर्या का यह प्रारूप हरबर्ट स्पेन्सर के लेखों पर आधारित है। पाठ्यचर्या का जीवन परिस्थिति प्रारूप उन क्रिया कलापों पर आधारित है जो जीवन को उन्नत बनाने, व्यक्ति विशेष के सामाजिक व राजैनितक सम्बन्धों को बनाये रखने व अवकाश के समयों का सद्प्रयोग करते हुए कार्यक्षमता की दृष्टि करने पर बल देता है। यह पाठ्यचर्या प्रारूप मुख्यतः तीन मान्यताओं पर आधारित है।

1. जीवन की कठिन परिस्थितियां समाज को बेहतर व सफल कार्य प्रणाली बनाने के लिए महत्वपूर्ण है अतः इन्ही परिस्थितियों को केन्द्र में रखकर एक पाठ्यचर्या बनाना आवश्यक है।

2. विद्यालयी पाठ्यचर्या को सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर संगठित की जानी चाहिए जिससे विद्यार्थी समाज के विकास में प्रत्यक्ष सहायक बन सके।

3. बालक का सामजिक विकास में विगत एवं वर्तमान अनुभवों के द्वार को जीवन के आधारभूत क्षेत्रों में विश्लेषित कर, इससे सम्बन्धित कार्यकलापों को केन्द्र में रखकर निर्मित की जाती है। तो उसे जीवन प्रारूप कहते हैं।

(i) विशेषताएँ

1. यह पाठ्यचर्या प्रारूप जीवन की वास्ताविक परिस्थितियें से सम्बन्धित होने के कारण प्रासंगिक है।

2. यहाँ पाठ्यवस्तु का अध्ययन समग्र रूप से करते है।

3. समस्या समाधान विधि का प्रयोग किया जाता है।

(ii) सीमाएँ

1. जीवन के आवश्यक पक्षों व उनके क्रम को निश्चित करने में स्पष्ट नही है।

2. आधारभूत (कोर) प्रारूप

इस पाठ्यचर्या प्रारूप का आधार–औपचारिक शिक्षा है। अनुभूत की जा रही समस्याओं को शिक्षक व छात्र दोनो मिलकर स्पष्ट करते है। इस पाठ्यचर्या प्रारूप की मान्यता है कि पाठ्यचर्या छात्रों के समक्ष क्रियान्वित करने से पहले पूर्ण रूपेण नियोजित होनी चाहिए व यथासम्भव संशोधन की सम्भावना भी होनी चाहिए।

(i) विशेषताएँ

1. यह विषयवस्तु को एकरूपता प्रदान करती है।
2. कक्षागत समस्याओं के निराकरण पर आधारित है।
3. यह पाठ्यवस्तु की प्रासंगिकता पर बल देता है।

(ii) सीमाएँ

1. प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता।
2. विषयवस्तु पर गुढ़ अध्ययन।

3. सामाजिक समस्या एवं पुनर्निर्माणवादी प्रारूप

पाठ्यचर्या का यह प्रारूप गम्भीर मानवीय समस्याओं के विश्लेषण की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सम्मिलित करने से सम्बन्धित है। यह मुख्य रूप से उन क्रियाकलापों पर आधारित होता है जो विद्यार्थी को स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का आलोचनात्मक विश्लेषण करने में सहायता प्रदान करता है।

(i) विशेषताएँ

1. पाठ्यचर्या प्रारूप के उद्देश्यों का निर्माण पाठ्यचर्या निर्माणकर्ता के द्वारा स्वयं किया जाता है।
2. इस प्रारूप का उद्देश्य समाजिक पुनर्निमाण है।

(ii) सीमाएँ

1. यह बालक के वैयक्तिक उद्देश्यों की अवहेलना करता है।

9.3.4 ब्रॉड फील्ड दृष्टिकोंण

इस प्रारूप में पाठ्यक्रम को दो या दो से अधिक विषय क्षेत्रो को एक व्यापक क्षेत्र में जोड़कर व्यवस्थित किया जाता है। एक व्यापक क्षेत्र बनाने के लिए दो या दो से अधिक निकट से सम्बन्धित विषयों को एकीकृत किया जाता है।

(i) विशेषताएँ

1. यह बालक के ज्ञान के अधिकतम् सम्भाव्य क्षेत्र पर कार्य करता है।
2. यह बालक के चहुमुखी विकास से सम्बन्धित है।

(ii) सीमाएँ

1. यह एक बोछिल पाठ्यक्रम को प्रस्तुत करता है।
2. यह परम्परागत विषयों से सम्बन्धित है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

11. जीवन परिस्थिति प्रारूप की दो विशेषताओं को लिखिए।

....

....

12. आधारभूत (कोर) प्रारूप को समझाइये।

....

....

13. ब्राडफील्ड दृष्टिकोंण को लिखिए।

....

....

9.4 सारांश

पाठ्यचर्या विकास के दृष्टिकोंण पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक–सामाजिक पहलुओं को तय करने को एक योजनाबद्ध प्रारूप है जिसका पालन शिक्षक–शिक्षार्थियों को सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए करते है। पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न दृष्टिकोंण है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने 1997 में इन्हे चार श्रेणियों में बांटा है–विषय केन्द्रित दृष्टिकोंण, शिक्षार्थी–केन्द्रित दृष्टिकोंण, सामाजिक समस्या केन्द्रित दृष्टिकोंण, ब्रॉडफील्ड दृष्टिकोंण। पाठ्यचर्या का विषय केन्द्रित प्रारूप प्रारूप बालको को विभिन्न विषयों का ज्ञान प्रदान करने की योजना प्रस्तुत करता है। विषय केन्द्रित प्रारूप में बालकों की अपेक्षा विषयों को अधिक महत्व दिया जाता है। विषय प्रारूप, इस मान्यता पर आधारित है कि मनुष्य की श्रेष्ठता ज्ञान प्राप्ति में ही है और ज्ञान की खोज एवं प्राप्ति बौद्धिकता की स्वाभाविक आवश्यकता है। पाठ्यचर्या का अनुशासन प्रारूप ब्रुनर के सिद्धान्त पर आधारित है जिसके अनुसार किसी भी आयु के विद्यार्थियों को किसी भी विषय की मूलभुत बातों को सीखाया जा सकता है इसके लिए वयस्कावस्था या किशोर होने का इंतजार नही करना पड़ता।_सहसम्बन्धात्मक प्रारूप, एकीकृत एवं विभिन्न विषयों को कैसे एक–दूसरे से सम्बन्धित किया जाय वा कि उनके बीच सहसम्बन्ध स्थापित किया जा सके, और उन विषयों की पृथक पहचान की बनी रहे, पर आधारित रहता है। प्रक्रिया प्रारूप, अध्ययन को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करता है। विस्तृत सेवा पाठ्यचर्या प्रारूप को अंतर्नुशासनिक प्रारूप भी कहतें है। पाठ्यचर्या विकास का शिक्षार्थी केन्द्रित प्रारूप दृष्टिकोंण पूर्णतः मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होकर छात्रों की रूचि, अभिरूचि एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर निर्मित किया जाता है। पाठ्यचर्या का सामाजिक समस्या एवं पुनर्निर्माणवादी प्रारूप गम्भीर मानवीय समस्याओं के विश्लेषण की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सम्मिलित करने से सम्बन्धित है। ब्रॉड फील्ड प्रारूप में पाठ्यक्रम को दो या दो से अधिक विषय क्षेत्रो को एक व्यापक क्षेत्र में जोड़कर व्यवस्थित किया जाता है।

9.5 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या निर्माण के विविध दृष्टिकोणों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।
2. शिक्षार्थी केन्द्रित प्रारूप के विभिन्न स्वरूपों का उल्लेख कीजिए।
3. विषय केन्द्रित प्रारूप की क्या अवधारणा है? स्पष्ट कीजिए।
4. ब्रॉड फील्ड प्रारूप की विशेषताओं एवं सीमाओं को लिखिए।

9.6 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न दृष्टिकोणों पर चर्चा कीजिए।

9.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. चार श्रेणियों
2. पारम्परिक प्रारूप या पुस्तक–केन्द्रित पाठ्यक्रम
3. पाँच प्रकार
4. सन् 1950

5. एकात्मक स्वरूप
6. एक प्रक्रिया के रूप में
7. अंतर्नुशासनिक प्रारूप

9.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. त्यागी, ए. के., ज्ञान एवं पाठ्यचर्या, ग्लोबल एकेडमिक पब्लिशरस्, दिल्ली
2. Talla, Mrunalini, Curriculum Development-Perspective, Principles and Issue, Pearson Publication, Chennai
3. Arulsamy, Dr. S., Curriculum Development, Neelkamal Publication, New Delhi

इकाई 10 : पाठ्यचर्या पारगमन

इकाई की संरचना

10.1 प्रस्तावना

10.2 इकाई के उद्देश्य

10.3 विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के अनुसार पाठ्यक्रम

10.3.1 वस्तुनिष्ठवादियों के परिप्रेक्ष्य के अनुसार पाठ्यचर्या

10.3.2 रचनावादियों के दृष्टिकोंण के अनुसार पाठ्यचर्या

10.4 पाठ्यचर्या पारगमन

10.4.1 निर्देश हेतु योजना

10.4.2 योजना के विभिन्न स्तर

10.5 कक्षा विशेष के सन्दर्भ में पाठ्यचर्या पारगमन के साधन

10.5.1 मौखिक प्रदर्शन या शिक्षकवार्ता

10.5.2 कक्षा परिचर्चा

10.5.3 प्रश्नोत्तरी

10.5.4 शिक्षार्थी भागीदारी

10.6 सारांश

10.7 अभ्यास के प्रश्न

10.8 चर्चा के बिन्दु

10.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.1 प्रस्तावना

पूर्व के अध्ययन के आधार पर हमें ज्ञात है कि खीखने–सिखाने की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है। सीखने की इस प्रक्रिया में हम औपचारिक व अनौपचारिक दोनो तरीकों से सीखते है। समय के साथ–साथ हमारी जागृत होती ज्ञानेन्द्रियाँ हमारे आस–पास के वातावरण में उपस्थित विभिन्न उद्दीपक जिनसे हमें कोई सूचना प्राप्त होती है, यह सभी हमारे मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं। हमारा मस्तिष्क उस उत्तेजना सर्वाधिक ध्यान केन्द्रित करता है जो उद्दीपक हमारा सर्वाधिक ध्यान आकर्षित करता है। जितना अधिक हम किसी उद्दीपक पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं, उसके बारे में हमारी धारणा उतनी ही बेहतर होती है।

हमारे सीखने की यह अनौपचारिक प्रक्रिया एक धीमी गति से चलने वाली प्रक्रिया है, इस तरह से लोगों को शिक्षित करने में बहुत अधिक समय लग जाता है।

अतः छात्रों को आवश्यक शिक्षा नियोजित तरह से प्रदान करने व निर्धारित समय में छात्रों को विशिष्ट ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोंण व मूल्य प्रदान करने के उद्देश्य से स्कूल/कॉलेज नामक संगठन बनाये गये। जहाँ पर छात्रों उनकी उम्र व सीखने के प्रति उनकी तत्परता को ध्यान में रखकर सीखने के अनुभवों की एक श्रृंखला तैयार की जाती है जिसे निर्धारित समयावधि में प्रदान किया जाता है।

सीखने की यह श्रखला व अन्य अधिगम अनुभव जिसे बालकों को शिक्षित करने में प्रयुक्त किया जाता है, पाठ्यचर्या कहलाती है। इस यूनिट के अन्तर्गत हम समझें कि पाठ्यचर्या पारगमन के लिए किस प्रकार के अनुदेशात्मक नियोजनों का सहारा लिया जाता है और किस प्रकार कक्षा–कक्ष परिस्थितियों में पाठ्यचर्या पारगमन हेतु विभिन्न माध्यमों का सहयोग लेकर शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जाता है।

10.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग हो जाएंगे कि –

- पाठ्यचर्या को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के आधार पर व्याख्यान्वित कर सकेंगे।
- कक्षा–कक्ष में पाठ्यचर्या पारगमन को वर्णित कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या पारगमन हेतु आवश्यक अनुदेशात्मक नियोजन को समझ सकेंगे।
- अनुदेशात्मक नियोजन के चरण समझ सकेंगे।
- कक्षा–कक्ष परिस्थितियों में पाठ्यचर्या पारगमन हेतु आवश्यक संसाधनों को वर्णित कर सकेंगे।
- विभिन्न संसाधनों का प्रयोग कर शिक्षण की प्रभावशीलता में वृद्धि कर सकेंगे।

10.3 विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के अनुसार पाठ्यक्रम

पूर्व की चर्चा में हम यह समझ चुके हैं कि पाठ्यचर्या अध्ययन की वह संगठित विषयवस्तु है जिसे किसी शिक्षण संस्थान में विभिन्न आयु वर्गो के छात्रों को प्रदान किया जाता है। पाठ्यचर्या के अन्तर्गत पाठ्यक्रम की मूल विषयवस्तु के साथ पाठ्य सहभागी क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाता है, जिसके अनुसार छात्रों के सीखने की प्रक्रिया संचालित होती है।

विशिष्ट आयु वर्गो के छात्रों के निर्मित समग्र पाठ्यचर्या को व्यवस्थित ढंग से प्रदान करने के लिए विभिन्न विषय समूहों में विभक्त कर लिया जाता है। विभिन्न विषय समूहों के अन्तर्गत आने वाली पाठ्यवस्तु (Topics) तथा अधिगम अनुभवों को पाठ्यक्रम (Syllabus) कहा जाता है। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पाठ्यवस्तु तथा विभिन्न अधिगम अनुभवों के साथ शिक्षण के सामान्य व विशिष्ट उद्देश्यों, शिक्षण विधियों तथा अधिगम प्राप्ति के स्तर का भी उल्लेख किया जाता है।

10.3.1 वस्तुनिष्ठ वादियों के अनुसार पाठ्यचर्या का स्वरूप –

पाठ्यचर्या का निर्माण ज्ञान की प्रकृति तथा इसे प्राप्त करने के तरीके के विषय में निर्मित विभिन्न अवधारणों के समीप बनाया जाता है। वर्तमान में अधिकांश पाठ्यचर्या का निर्माण वस्तुनिष्ठ वादी परिप्रेक्ष्य में बनाए जा रहे हैं जो मनुष्य द्वारा स्वअनुभव तथा परीक्षण द्वारा खोजे गये ज्ञान को सत्य मानते हैं। शिक्षकों द्वारा स्वशिक्षा के दौरान किसी विशिष्ट विषय या विभिन्न विषयों का बुनियादी ज्ञान प्राप्त किया होता है जिसे उन्हें शिक्षार्थियों को प्रदान करना होता है।

वस्तुनिष्ठवादियों के अनुसार ज्ञान को ज्ञात और अपेक्षाकृत निश्चित विषयवस्तु के रूप में वर्णित किया जाता है। औपचारिक स्कूली शिक्षा के अन्तर्गत सभी छात्रों के सीखने के लिए औपचारिक व मानक पाठ्यक्रम उपलब्ध कराया जाता है। जो छात्र वस्तुनिष्ठ वादी परिप्रेक्ष्य पर आधारित पाठ्यचर्या प्रणाली के माध्यम से सीखते हैं उनका मूल्यांकन सामान्यतः मानकीकृत परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है।

10.3.2 रचनात्मकवादियों के अनुसार पाठ्यचर्या का स्वरूप –

पाठ्यचर्या निर्माण के वस्तुनिष्ठवादी दृष्टिकोंण के विकल्प के रूप में हाल ही में पाठ्यचर्या निर्मित करने की एक नई प्रणाली रचनावादी परिप्रेक्ष्य का प्रादुर्भाव हाल ही में शिक्षा के क्षेत्र में हुआ है। जो ज्ञान को स्थिर पूर्ण ज्ञात तथा हस्तान्तरण योग्य मात्र ही नहीं समझता अपितु रचनावादियों की मान्यता है कि ज्ञान व्यक्तिगत है और इसका आत्मसाती करण सीखने वाले के द्वारा स्व अनुभव के आधार पर किया जाता है। इस दृष्टिकोंण को मानने वाले शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया मानते हैं जिसमें शिक्षार्थी अपने पूर्व ज्ञान और सीखी जा रही नवीन जानकारी की परस्पर क्रिया के परिणामस्वरूप अपने अर्थ का निर्माण करते है।

रचनावादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार शिक्षण या निर्देश छात्रों को निश्चित ज्ञान को सत्य बताकर प्रसारित करना मात्र नहीं अपितु छात्रों को विषयवस्तु के सन्दर्भ में प्रासंगिक अनुभव वाद, संवाद, परिचर्चा के अवसर प्रदान करना है जिससे छात्रों में विषयवस्तु के सन्दर्भ में सजीव समझ विकसित हो सके। इस प्रकार इस व्यवस्था में ज्ञान के स्वअर्थ को विकसित व निर्मित करने की अनुमति प्रदान की जाती है। जिन शिक्षण संस्थानों में रचनावादी दृष्टिकोंण को मान्यता दी जाती है, वे पाठ्यक्रम को मात्र महत्वपूर्ण जानकारियों का दस्तावेज के रूप में न मानकर सीखने की गतिविधियों एवं स्व अनुभव के आधार के ज्ञान निर्माण की समग्र योजना के रूप

में स्वीकारते हैं जिसके माध्यम से छात्र और शिक्षक संयुक्त रूप से अध्ययन सामग्री को परिचर्चा संवाद और स्वअनुभव के आधार पर सीखते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. पाठ्यचर्या के अन्तर्गत पाठ्यक्रम की मूल विषयवस्तु के साथ किस क्रिया को सम्मिलित करने से छात्रों के सीखने की प्रक्रिया संचालित होती है।

....
....
......

2. वस्तुनिष्ठवादियों के अनुसार ज्ञान को किस रूप में वर्णित किया जाता है।

....
....
......

3. रचनावादियों के अनुसार ज्ञान कैसा है ?

....
....
......

4. रचनावादी दृष्टिकोंण को मानने वाले शिक्षा को कौन सी प्रक्रिया मानते हैं।

....
....

10.4 पाठ्यचर्या पारगमन

पाठ्यचर्या पारगमन के विषय में वस्तुनिष्ठवादी तथा रचनात्मकवादी दोनों लगभग एकमत हैं कि पाठ्यचर्या सीखी जाने वाली गतिविधियों का एक समग्र है जिसे कक्षा–कक्षपरिस्थितियों के सन्दर्भ में क्रियान्वित करना होता है। पाठ्यचर्या पारगमन के अन्तर्गत निर्धारित समग्र पाठ्यक्रम में दिए गए विषयों की सूचीबद्ध गतिविधियो के सेट को अभ्यास में लाया जाता है। अर्थात वास्तविक रूप में कक्षा–कक्ष परिस्थितियों में पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयों का नियोजित शिक्षण, पाठ्यचर्या पारगमन कहलाता है। पाठ्यचर्या का पारगमन एक नियोजित प्रक्रिया के रूप करना होता है जिसके अन्तर्गत शिक्षक व अन्य सदस्यों द्वारा अधिक मात्रा में चिंतन, पारगमन की आवश्यकता होती है। यदि हम पाठ्यचर्या पारगमन को अधिक प्रभावी एवं कुशल बनाना चाहते हैं तो हमें उपलब्ध सभी भौतिक वित्तीय और मानवीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग की आवश्यकता होती है।

जैसा कि हम सभी चर्चा कर चुके हैं कि पाठ्यचर्या पारगमन की सुविधा की दृष्टि से पाठ्यचर्या को विभिन्न विषयों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक विषय के अन्तर्गत आने वाले सभी तथ्यों एवं गतिविधियों की समग्रता को पाठ्यक्रम कहा जाता है। प्रत्येक पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को पाठ्य पुस्तक के रूप में वर्णित व विस्तृत किया जाता है। संस्था प्रमुख द्वारा इन पाठ्यपुस्तकों के शिक्षण उत्तरदायित्व शिक्षकों को उनकी विशेषज्ञता और योग्यता के क्षेत्रों को देखते हुए सौंपा जाता है। प्रत्येक शिक्षक अपने आवंटित विषय के शिक्षण का उत्तरदायित्व लेता है तथा सावधानीपूर्वक योजना बनाकर पाठ्यपुस्तक का उपयोग करता है। पाठ्यचर्या पारगमन के नियोजन की प्रक्रिया एक श्रम व समय साध्य प्रक्रिया है जिसमें परिष्कृत समझ व कौशल की आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से उद्देश्य पूर्ण संगठित गतिविधियों का पारगमन, नियन्त्रण किया जाता

है जिससे लक्षित परिणाम प्राप्त हो सके। पर्याप्त संसाधनो एवं विधियों का प्रयोग करके शिक्षक शिक्षार्थियो को एक नियन्त्रित प्रक्रिया के अन्तर्गत पाठ्यपुस्तक की अध्ययन सामग्री परिचालित करता है। जो छात्रों को प्रासंगिक ज्ञान प्राप्त करने तथा आवश्यक कौशल एवं अभिवृत्तियों को विकसित करने में सक्षम बनाती है। इस प्रक्रिया को पाठ्यचर्या पारगमन कहा जाता है। यदि शिक्षकों को पाठ्यक्रम को प्रभावी एवं कुशलता से संचालित करना है तो उन्हे पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों के पारगमन में आवश्यक दक्षता विकसित करनी होगी।

उपरोक्त परिचर्चा से स्पष्ट है कि पाठ्यचर्या पारगमन में व्यवास्थित योजना बनाना शामिल है। पाठ्यचर्या पारगमन की नियोजन प्रक्रिया में पाठ्यक्रम में परिवर्धित, विलोपित व व्याख्या द्वारा रूपान्तरित एवं अनुकूलित व विकसित करके शिक्षण के लिए चरण–दर–चरण प्रक्रिया विकसित की जाती है जिससे शिक्षार्थियों, संसाधनों तथा सुविधाओं के परिप्रेक्ष्य को ध्यान रखा जाता है जिससे पूर्व निर्धारित उद्देश्यो की प्राप्ति की ओर अग्रसर हुआ जा सके।

अनुदेशन/शिक्षण नियोजन – यह तथ्य सर्वविदित है कि उद्देश्य पूर्ण गतिविधि के पारगमन के लिए व्यवस्थित नियोजित प्रक्रिया लक्षित परिणाम प्रदान करती है तथा नियोजित पाठ्यचर्या पारगमन की प्रक्रिया छात्रों में स्पष्ट लक्ष्यों को प्रतिबिम्बित करती है जिस हेतु बालक, शिक्षक के सहयोग से तत्सम्बन्धित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समझ का निर्माण कर अपने शैक्षिक निष्पादन को बेहतर करते है। नियोजित पाठ्यचर्या पारगमन छात्रों व शिक्षकों दोनों अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा का बोध कराती है। इसी दिशा में चलकर छात्र अपने सीखने के कार्य को संचालित करते हैं। इस प्रकार सीखने के उद्देश्यों के अनुरूप छात्र अपने विषय पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। नियोजित पाठ्यचर्या पारगमन के सम्बन्ध एक और सकारात्मक पहलू यह है कि यह न्यूनतम अनुशासन समस्याओं एवं रूकावटों के साथ सुचारू रूप से चलने वाली कक्षा का निर्माण करता है। वर्तमान समय में हो रहे शैक्षिक अनुसंधान इस बात का प्रमाण देते हैं कि अधिकांश शैक्षिक प्रबन्धन सम्बन्धी समस्याओं का निदान व समाधान नियोजित शैक्षिक पारगमन प्रक्रिया के द्वारा किया जा सकता है।

पाठ्यवस्तु के पारगमन के लिए शिक्षक तथा शिक्षाविद् दोनों पारगमन योजना के तर्कसंगत रैखिक मॉडल का पालन करते हैं। पाठ्यक्रम पारगमन परियोजना बनाने की प्रक्रिया के पहले चरण में पाठ्यवस्तु विश्लेषण पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

पाठ्यवस्तु विश्लेषण के आधार पर अनुदेशात्मक उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है फिर इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उपलब्ध विभिन्न विकल्पों में से कार्यवाही के तरीके और विशिष्ट गतिविधियों का चयन किया जाता है। जब किसी अच्छी शैक्षिक परियोजना को निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के मार्ग के रूप में देखा जाता है। तो विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों को सामान्य व्यावहारिक शब्दों में लिखा जाता है तथा शैक्षिक प्रारूप तथा गतिविधियों को पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के दृष्टिकोंण से डिजाइन किया जाता है तथा छात्रों की उपलब्धि को सावधानीपूर्वक मापा जाता है।

पाठ्यचर्या पारगमन की नियोजन प्रक्रिया के विभिन्न चरण –

शिक्षक अपने पाठ्यक्रम पारगमन के प्रारम्भ में निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने की योजना बनाता है। शिक्षण पूर्व नियोजन प्रक्रिया में मुख्यतः तीन चरण बनाये गये हैं।

(i) विषयवस्तु नियोजन (Course Planning)

(ii) इकाई नियोजन (Unit planning)

(iii) पाठ नियोजन (Lesson Planning)

पाठ्यक्रम पारगमन की प्रक्रिया में उपरोक्त तीनों नियोजन के स्तर का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे विस्तृत रूप से व्याख्यन्वित किया जाना चाहिए–

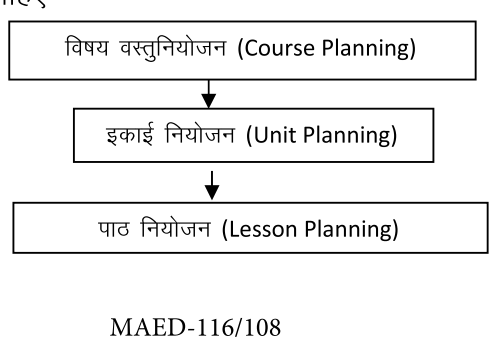

अनुदेशनात्मक नियोजन के तीन स्तर (Three level of instrictional planning)

विषय वस्तु योजना
(Course Plan)

इकाई–1 (Unit-1)	**इकाई–2** (Unit-2)	**इकाई–3** (Unit-3)	**इकाई–4** (Unit-4)	**इकाई–5** (Unit-5)	**इकाई–6** (Unit-6)

इकाई योजना
(Unit Plan)

उप इकाई–1 (Sub Unit-1)	**उप इकाई–2** (Sub Unit-2)	**उप इकाई–3** (Sub Unit-3)

पाठ योजना
(Lesson Plan)

पाठ योजना–1 (LP-1)	**पाठ योजना–2** (LP-2)	**पाठ योजना–3** (LP-3)

अधिगम अनुभव
Learning Experiences (LE)

अधिगम अनुभव (LE-1)	**अधिगम अनुभव** (LE-2)	**अधिगम अनुभव** (LE-3)	**अधिगम अनुभव** (LE-4)	**अधिगम अनुभव** (LE-5)	**अधिगम अनुभव** (LE-6)

(Schematic Presentation of Three Levels of Instructional Planning) Source: Dash, N.K. (2003) Power Point Slides for Teacher Education Workshop, Soe, IGNOU, New Delhi

विषयवस्तु नियोजन (Course Planning) :– शैक्षणिक सत्र के प्रारम्भ में ही, जिन विषयों का शिक्षण शिक्षक द्वारा किया जाना है, के बारे में अपेक्षा की जाती है कि वे सम्पूर्ण पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तक की समस्त अध्ययन सामग्री को पढ़ाने की योजना बनाए। जिसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम की सभी इकाइयों व अध्यायों के लिए योजना बनाना शामिल है। शिक्षक को सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री व उसे पढ़ाये जाने के क्रम की जानकारी होनी चाहिए। उन्हे वर्ष के लिए एक सुव्यवस्थित अनुक्रम तथा उस अनुक्रम के अनुरूप प्रस्तावित गतिविधियों की सूची बनायी जाती है तथा प्रत्येक के लिए पर्याप्त समय का आवंटन किया जाता है। पाठ्यपुस्तक के इस प्रारूप से शिक्षकों को न सिर्फ अध्ययन सामग्री का अवलोकन होता है बल्कि अधिगम के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का भी ज्ञान होता है। ऐसी नियोजन प्रक्रिया के फलस्वरूप शिक्षक अध्ययन सामग्री की प्रकृति एवं जटिलता को देखते हुए वार्षिक पाठ्यक्रम योजना के आधार पर अध्ययन सामग्री को वितरित किया जाता है।

इकाई योजना (Unit Planning) :– पाठ्यवस्तु या पाठ्यक्रम नियोजना पूर्ण हो जाने पर शैक्षिक नियोजन के दूसरे स्तर–इकाई योजना में प्रवेश किया जाता है। एक इकाई अनिवार्य रूप से अध्ययन सामग्री और सम्बन्धित कौशल का एक हिस्सा है जिसे तार्किक रूप से एक समग्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। एक इकाई योजना एक समयावधि में प्राप्त की जाने वाली निर्देशों की एक एकीकृत योजना है और इसमें लक्ष्यों और उद्देश्यों के एक सामान्य स्वरूप को प्राप्त करने के लिए विभिन्न पाठ शामिल होते हैं।

शिक्षण शुरू करने से पहले, शिक्षकों को प्रत्येक या अध्याय की अध्ययन सामग्री का गहन विश्लेषण करना चाहिए। प्रत्येक अध्याय में एक मुख्य विषय होता है, जो कई उप–इकाइयो या उपविषयों में विभाजित

होता है और वे सभी अध्ययन सामग्री आपस में अन्तर्सम्बन्धित को दर्शाती है। अध्ययन सामग्री का विश्लेषण करते समय, शिक्षकों को मुख्य विचारो और उपविचारों को चुनाना चाहिए जिससे लक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। शिक्षक को स्वयं द्वारा चुने विचारों एवं उपविचारों को वार्षिक रूप से व्यवस्थित किया जाता है। प्रत्येक इकाई में विभिन्न विचारों या अवधारणाओं को चुनने और उन्हें उचित क्रम में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को Content Analysis के रूप जाना जाता है।

इकाई नियोजन के अन्तर्गत शिक्षकों को एक और योग्यता की आवश्यकता होती है, वह है इकाई के निर्देशों के परिणाम स्वरूप पूरा किए जाने वाले कार्य या लक्ष्य का विश्लेषण करने की क्षमता। लक्ष्य, वह कथन है जिसके अनुसार इकाई के निर्देश के परिणामस्वरूप छात्रों में अपेक्षित परिवर्तन की उम्मीद की जाती है। लक्ष्य को इकाई के निर्देशों के अंत में प्राप्त किया जाता है तथा लक्ष्य को उनके सम्बन्धित भागों में विभाजित किया जा सकता है और प्रत्येक योग्यता को कौशल में विभाजित किया जा सकता है। जैसे–जैसे शिक्षक प्रतिदिन अपना शिक्षण कार्य करते हैं वे विशिष्ट उद्देश्यों पर ध्यान केन्द्रित करते रहते है और जब वे सम्बन्धित कौशल का एक पैटर्न सीख लेते हैं तो वे एक विशिष्ट योग्यता को हासिल कर लेते हैं। जब विद्यार्थी अपेक्षित सभी दक्षताएँ सीख लेते हैं तो यह माना जाता है कि वे उस लक्ष्य को प्राप्त कर चुके हैं जिस हेतु शिक्षण की इकाई योजना का निर्माण किया गया था।

इकाई योजना में न केवल अध्ययन सामग्री का विश्लेषण एवं कार्य का विश्लेषण करने की क्षमता शामिल होती है अपितु इसमें पाठ्यक्रम पारगमन के लिए उपलब्ध विभिन्न विकल्पों में से उपयुक्त तरीकों एवं तकनीकों के चयन की भी योजना बनाई जाती है। अध्ययन सामग्री की प्रकृति एवं निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के अनुरूप शिक्षण कौशल का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यचर्या पारगमन नियोजन प्रक्रिया के अन्तर्गत विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का कौशल, स्पष्टीकरण कौशल, उदाहरणों के साथ चित्रण करने का कौशल, प्रश्न पूछने का कौशल इत्यादि विभिन्न कौशलों को सम्मिलित किया जाता है। उचित कौशल का चयन करने की क्षमता शिक्षकों के लिए पाठ्यक्रम पारगमन की सबसे महत्वपूर्ण दक्षताओं में से एक है।

संक्षेप में इकाई नियोजन के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विषयवस्तु, शिक्षण विधियों, तकनीकों इत्यादि का चयन किया जाता है।

<table>
<tr><td colspan="4">Subject/Cource: Unit: Class:
• Previous Knowledge/Entry behaviour of students:
• Mayor objectives of the Unit:
• Overview of the theme of the unit:</td></tr>
<tr><td>1</td><td>2</td><td>3</td><td>4</td></tr>
<tr><td>Sub-Units</td><td>Major Teaching</td><td>Specific objectives</td><td>Methods/Media approach adopted</td></tr>
<tr><td>Teaching topics</td><td>Point Under each</td><td>of each teaching</td><td>Teaches's and pupil's activity</td></tr>
<tr><td>No. of Periods</td><td>Topic</td><td>Point</td><td>Learining Resources</td></tr>
<tr><td colspan="4">• Reference for pupils
• Reference for teacher
• Evaluation/Assignment</td></tr>
</table>

उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि यूनिट प्लान विषयवस्तु के वे भाग होते हैं, जो आपस में अन्तर्सम्बन्धित होते हैं और इन्हें समग्र रूप में लिखा जाता है और दैनदिक कक्षा शिक्षण में पढ़ाया जाता है तथा शैक्षणिक कार्यक्रम के अन्त में एकसाथ मूल्यांकित किया जाता है। इस प्रकार यूनिट प्लान पूर्ण पाठ्यचर्या पारगमन का एक लघुरूप होता है जो यह परिलक्षित करता है कि कौन सी विषयवस्तु को पढ़ा जाना है और इस विषयवस्तु को पढ़ने के लिए किन विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग किया जाना है।

पाठ योजना (Lesson Plan) :- इकाई योजना के समय प्रत्येक अध्याय की अध्ययन सामग्री को उप इकाइयों में विभाजित किया हैं। जब हम दैनिक पाठ योजना का निर्माण करते है तो हम पहली उप–इकाई या उसके एक हिस्से को लेकर शुरूआत करते है जिसे 35 से 40 मिनट की समयावधि में प्रभावी ढ़ग से पढ़ाया जा सके।

एक अच्छी पाठ योजना में सामान्यतः कम से कम चार खण्ड होते हैं। प्रारम्भिक खण्ड में विषयवस्तु के बारे में सूचना, कक्षा, टॉपिक, पूर्व व्यवहार / प्रस्तावना अध्याय के सामान्य उद्देश्य, शिक्षण विधि तथा सहायक सामग्री का उपयोग करके विभिन्न विधियों से नवीन ज्ञान को प्राप्त कराने की योजना शामिल होती है। प्रस्तावना खण्ड में पूर्व में पढ़ायी गयी विषयवस्तु का पुर्नस्मरण कराया जाता है। यह खण्ड बालको के वर्तमान ज्ञान को पूर्वज्ञान से जोड़ने का कार्य करता है। प्रस्तुति खण्ड में नवीन ज्ञान कों विभिन्न शिक्षण विधियों एवं सहायक सामग्रियों के द्वारा प्रस्तुत करना शामिल होता है। यह खण्ड विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्रियों–दृश्य, श्रव्य, दृश्य–श्रव्य के उपयोग को दर्शाता है। समापन अनुभाग में पृष्ठ पोषण / पुनर्परीक्षण / मूल्यांकन प्रश्न तथा गृह कार्य व ब्लैक बोर्ड कार्य को सम्मिलित किया जाता है।

हालॉकि दैनिक पाठ योजना बनाने का कोई दृढ़ स्वरूप नहीं बनाया जाता। व्यावहारिक तौर पर ऐसी पाठ योजना बनाई जाती है जिसमें यथासम्भव सभी स्थितियों का पालन किया जा सके तथा आवश्यकतानुसार संशोधन भी किया जा सके।

- डेविस ने लिखा कि पाठ को पूर्वनियोजित अवश्य किया जाना चाहिए, अन्यथा उसका शिक्षण प्रभावपूर्ण नहीं बन पायेगा।
- बिनिंग तथा बिनिंग के अनुसार, ''दैनिक पाठ योजना के निर्माण में उद्देश्यों को परिभाषित करना, पाठ्य–वस्तु का चयन करना और क्रमबद्ध करना तथा प्रस्तुतीकरण की विधियों का निर्णय करना प्रमुख है।

बॉसिंग ने लिखा, ''पाठ योजना से अभिप्राय उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए उन विशिष्ट साधनों का वर्णन है जिनके द्वारा वे उपलब्धियाँ एक निश्चित समय में की गयी क्रियाओं के परिणामस्वरूप प्राप्त की जाती हैं।

उपरोक्त के आधार पर कह सकते हैं कि वैज्ञानिक रूप से की गयी क्रमबद्ध तैयारी को ही पाठ योजना कहते हैं। बिना पाठ–योजना के योग्यतम् शिक्षक भी कक्षा में सफल नहीं हो सकता।

पाठ योजना के विविध स्वरूप एवं उपागमः– पाठ योजना के विभिन्न उपागम प्रचलित हैं–

1. **हरबार्ट उपागम**– यह उपागम जॉन फेडरिक हरबार्ट की 'पंच पदीय प्रणाली' भी कहलाता है। इस योजना के पांच औपचारिक सोपान दिये गये हैं–

    (i) उद्देश्य कथन (Statement of objective)

    (ii) प्रस्तुतीकरण (Presentation)

    (iii) स्पष्टीकरण (Explanation)

    (iv) सामान्यीकरण (Generalization)

    (v) प्रयोग (Application)

ये उपागम मनोविज्ञान के साहचर्य, रूचि तथा पूर्वानुवर्ती संचित सिद्धान्तों पर आधारित हैं। इस विधि के अनुसार, ''सीखने की परिस्थितियों में इकाइयों को ताक्रिक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है और इकाइयों की क्रियाओं को एक क्रम में सम्पादित करते हैं''। उस उपागम में पाठ्यवस्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है।

2. **ड्यूवी तथा किलपैट्रिक उपागम** :– इस उपागम में 'अनुभवों पर विशेष बल दिया जाता है। इस प्रकार की पाठ योजना में अधिगम का आधार योजना (Project) माना जाता है इसके द्वारा शिक्षण पूर्णतः स्वाभाविक सामाजिक वातावरण में किया जाता है। जिससे छात्रों को ज्ञान उनके अनुभवों से प्राप्त होता है। इस प्रकार की पाठ–योजना के निम्नलिखित सोपान होते हैं।

(i) परिस्थिति उत्पन्न करना (Creating the situation)

(ii) योजना का चयन (Selection of project)

(iii) योजना के उद्देश्य (Objective of Purpose)

(iv) योजना के कार्यक्रम की व्यवस्था (Planning)

(v) कार्यान्वयन (Execution)

(vi) मूल्यांकन (Evaluation)

(vii) रिपोर्ट बनाना (Reporting)

2. **मौरिसन उपागमः**— हेनरी सी0 मौरिसन ने 1926 में पाठ योजना के क्षेत्र में एक नवीन उपागम प्रस्तुत किया जिसे मौरिसन उपागम या इकाई प्रणाली (Unit Method) कहते हैं। यह गेस्टाल्ट मनोविज्ञान पर आधारित है जो ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में ज्ञान की एकता को महत्व देता है क्योंकि हमारा ध्यान पूर्ण की ओर शीघ्र आकर्षित होता है। यह 'छात्र' केन्द्रित' उपागम है जिसमें छात्र की रूचि, अभिरूचि तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है। इस पाठ—योजना में निम्नांकित पद प्रभुक्त किये जाते हैं।

(i) अन्वेषण (Exploration)

(ii) प्रस्तुतीकरण (Presentation)

(iii) आत्मीकरण (Assimilation)

(iv) व्यवस्थापन (Organization)

(v) अभिव्यक्तिकरण (Reciotation)

पाठ—योजना के लाभः—

- शिक्षक को संगठित एवं सुव्यवस्थित रूप से सोचने की दिशा देता है।
- शिक्षक पाठ के उद्देश्यों को भली—भांति समझ पाता है।
- शिक्षक पाठ के प्रति रूचि बढ़ाने में सहायक है।
- यह शिक्षक के लिए पाठ के साथ उचित सम्बन्ध स्थापित करता है।
- यह शिक्षक को उत्तम शिक्षण विधि चुनने में सहायता देती है।

पाठ योजना के अंगः— मुख्यतः पाठ योजना की प्रक्रिया में हरबार्ट की पंच पद प्रणाली का प्रयोग करते हैं।

1— प्रस्तावना 2— उपस्थिति 3— तुलना 4— सिद्धान्त निरूपण 5— प्रयोग विद्यालय विशेष की परिस्थितियों में इन पदों में आवश्यक परिवर्तन कर लिए जाते हैं।

1— पाठ के विभिन्न शीर्षक

- क्षेत्र, विद्यालय या शिक्षण का स्थान
- विषय
- इकाई
- उप—इकाई
- कार्य अथवा पाठ
- कक्षा

- घण्टा
- समय
- दिनांक

2– पाठ के उद्देश्य दो प्रमुख उद्देश्य होते हैं।

- सामान्य उद्देश्यं
- विशिष्ट उद्देश्य
- सहायक सामग्री
- पूर्व–ज्ञान
- प्रस्तावना
- पाठ का विकास
- श्यामपट्ट सारांश
- मूल्यांकन
- गृह कार्य
- सन्दर्भ
- आत्म परीक्षण

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

5. पाठ्यचर्या पारगमन के विषय में वस्तुनिष्ठवादी तथा रचनात्मकवादी दोनों किस बात पर लगभग एकमत हैं ?

....

....

6. पाठ्यवस्तु के पारगमन के लिए शिक्षक तथा शिक्षाविद् दोनों पारगमन योजना के तर्कसंगत किस मॉडल का पालन करते हैं ?

....

....

7. शिक्षण पूर्व नियोजन प्रक्रिया में मुख्यतः कितने चरण बनाये गये हैं ?

....

....

8. प्रत्येक इकाई में विभिन्न विचारों या अवधारणाओं को चुनने और उन्हें उचित क्रम में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को किस के रूप जाना जाता है ?

....

....

10.5 कक्षा विशेष के सन्दर्भ में पाठ्यचर्या पारगमन के साधन

1. **शिक्षक वार्ता या मौखिक वार्ता** :— मौखिकवार्ता या शिक्षक कथन अब तक कक्षा में पाठ्यचर्या पारगमन का सबसे प्रमुख साधन है। मौखिक वार्ता के द्वारा ही शिक्षक विषयवस्तु को सर्वप्रथम छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। यह वार्ता इतनी व्यापक है कि शिक्षक इसका प्रयोग निर्देश देने जानकारी प्राप्त करने, प्रश्न पूछने तथा पाठ्यपुस्तक को सन्दर्भित करने के लिए करते हैं। प्रत्येक भौतिक संसाधन याशिक्षण सहायक संसाधन के प्रस्तुतीकरण में भी भाषाको प्रयुक्त किया जाता है। सभी प्रकार की भाषा चाहे वह परिष्कृत हो या व्यावहारिक मुख्य रूप से पाठ्य पारगमन में सहायकता देती है। शिक्षक अपने निर्देश में सहायता के लिए नवीनतम दृश्य—श्रव्य उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं। परन्तु ये किसी भी तरह से मौखिक अभिव्यक्ति की अन्तर्निहित रणनीति को बदल नहीं सकते ।

पाठ्यक्रम पारगमन के एक पक्ष के रूप में शिक्षक वार्ता इतनी महत्वपूर्ण है कि इसने बड़ी संख्या में शिक्षाविदो के साथ—साथ शोधकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है। कक्षा संचार में शिक्षक के प्रभुत्व को फ्लैण्डर्स ने 1960 के दशक में शिक्षक—छात्र अन्तः क्रिया पर किये गये अपने अध्ययनों में प्रलेखित किया। उन्होने बताया कि अधिकांश कक्षाओं में दो तिहाई वार्ता शिक्षकों द्वारा की जाती है।

हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षक की वार्ता कक्षा में संचार का एकमात्र साधन है। अधिकांश कक्षाओं में किसी बिन्दु पर शिक्षक को कक्षा में प्रश्नोत्तरी एवं व्याख्यान विधि का सहारा लिया जाता है। तत्पश्चात् शिक्षक छात्रों से पूर्व अध्ययन के मूल्यांकन हेतु प्रश्न पूछते हैं।

2. **छात्र कथन या कक्षावार्ता** :— कक्षा में सकारात्मक वार्तालाप की प्रक्रिया सीखने—सिखाने की प्रक्रिया में सक्रिय योगदान देती है जिसके अन्तर्गत कक्षा में प्रदर्शित शाब्दिक व्यवहार, क्रियाएँ, अनुक्रियाएँ, छात्र—कथन आते हैं। समसामयिक दृष्टिकोंण में कक्षा की चर्चा को एक ऐसी रणनीति के रूप में पहचाना जाता है कि यह सकल प्रक्रिया नहीं है बल्कि इस शिक्षण के विभिन्न मॉडलों में प्रयोग किया जा सकता है। इसका उपयोग शिक्षक या छात्र अपने समय या परिस्थितियों के अनुसार करते हैं।

   शिक्षक अपने शिक्षण उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कक्षा वार्ता की एक बड़ी श्रृंखला को शामिल करता है। एक जटिल विचार प्रणाली को विकसित करने के लिए बहुत से अनुभवों तथा वार्ता की आवश्यकता होती है। प्राप्त अनुभवों एवं जटिल संज्ञानात्मक विषयों को अधिक स्थायी बनाने के लिए चर्चा—परिचर्या या वाद—विवाद का होना भी आवश्यक है जिससे विषयों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत होता है।

   चर्चा को विचारों के बहयीकरण के रूप में देखा जाता है जो अदृश्य विचारों को व्यक्त करता है। यह शिक्षकों को छात्रों की सोचने की प्रक्रिया, तर्क को सुधारने की एक आंशिक दृष्टि देता है।

3. **प्रश्नोत्तर प्रणाली** :— शिक्षकवार्ता एवं छात्र कथन के अलावा प्रश्न करना जवाब देना कक्षा संचार का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष माना जाता है। यह एक उपकरण है जिसका उपयोग शिक्षक आमतौर पर कक्षा में वार्ता को आकर देने और प्रारूप बनाने के लिए करते हैं और साथ ही यह छात्रों के वास्तविक ज्ञान और बौद्धिक कौशल के मूल्यांकन के लिए डेटा का एक प्राथमिक स्त्रोत भी है। छात्रों की शंका के समाधान के लिए शिक्षक विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों की सहायता लेता है जो अध्ययन सामग्री को गहराई तक समझने के लिए अच्छे उपकरण हो सकते हैं। इस प्रक्रिया के द्वारा शिक्षार्थियों को विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्याकंन और प्रशंसा जैसे अनुभूति के उच्च स्तर तक ले जाया जा सकता है।

   शिक्षार्थियों को अन्तर्दृष्टि व सूझ विकसित करने की ओर विकसित करने इसकी निर्विवाद क्षमता के कारण सुकरात जैसे महान शिक्षकों ने प्रश्नोत्तरी को शिक्षा के मुख्य उपकरण के रूप में स्वीकार किया है।

शिक्षकों को सक्रिय शैक्षिक वातावरण को निर्माण प्रक्रिया में शिक्षक कैसे व किस प्रकार के प्रश्न पूछता है यह हाल के दशकों में शिक्षा जगत में अधिक चर्चा का विषय रहा।

मार्क गैल (1970) ने छात्रों के सीखने और सोच पर तथ्यात्मक और उच्च क्रम के प्रश्नों का प्रभाव का पता लगाने के लिए प्रश्न पूछने पर शोध किया और पाया कि वंचित युवा छात्रों की उपलब्धि को बढ़ावा—देने के लिए तथ्यात्मक प्रश्नों पर जोर देना अधिक प्रभावी है जिसके प्रशिक्षण की आवश्यकता है। उच्च संज्ञानात्मक प्रश्न औसत व उच्च क्षमता वाले छात्रों के लिए अधिक प्रभावी है जहां अत्यधिक स्वतन्त्र सोच की आवश्यकता होती है।

रोवे (1974) ने भी कक्षा में पूछताछ पर अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि कक्षाओं में होने वाले प्रश्नों और प्रतिक्रियाओं के पैटर्न उल्लेखनीय रूप में एक जैसे हैं। उन्होंने यह भी पाया कि जब छात्र प्रतिक्रिया देते है तो शिक्षक प्रतिक्रिया देने या अगला प्रश्न पूछने में एक सेकेण्ड से कम समय की प्रतीक्षा करते हैं। रोवे ने पाया कि प्रतीक्षा समय का अनुचित उपयोग खराब कक्षा संचार के मुख्य कारणों में से एक है। उनका मत था कि यदि प्रतीक्षा समय के पैटर्न को बदला जा सके तो कक्षा संचार में काफी सुधार हो सकता है।

3. **छात्र भागीदारी (Learner Participation)** :– कक्षा पारगमन में, सामान्यतः शिक्षक प्रधान तथा शिक्षक केन्द्रीकृत प्रक्रिया होती है जिसमें शिक्षार्थियों को भागीदारी के अधिक अवसर प्राप्त नहीं होते। चुंकि अधिकांश वार्ता शिक्षक के द्वारा प्रारम्भ की जाती है अतः छात्रों की सीमित एवं निष्क्रिय भूमिका रह जाती है। उनकी भूमिका एक श्रोता एवं लेखक तक सीमित रह जाती है जिससे सक्रिय व्यवहार परिवर्तन की संकल्पना फलीभूत नहीं हो पाती है। यदि हम सीखने को सक्रिय बनाना चाहते हैं और शिक्षार्थियों के सीखने को अनुभूति के उच्च क्षेत्रों तक ले जाना चाहते हैं या हम शिक्षण और सीखने की प्रणाली में सहयोग व सक्रिय तालमेल लाना चाहते हैं तो हमें शिक्षण प्रक्रिया में बड़ी मात्रा में शिक्षार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करने की आवयश्यकता है।

शिक्षार्थी भागीदारी बढ़ाने का एक उत्तम तरीका कक्षा पारगमन हेतु बनाई गई योजना के अनुरूप पाठ योजना का पारगमन करना है। यह संरचना शिक्षक–छात्र अन्तः क्रिया में वक्ताओं और श्रोताओं की विशिष्ट व्यवस्था को सन्दर्भित करती है। इस संरचना में पाठ प्रस्तुतीकरण के समय छात्रों द्वारा बारी–बारी से प्रश्न पूछने और शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देने के तरीके शामिल होते हैं। यदि हम सामान्य पारम्परिक कक्षाओं का अवलोकन करें तो निम्न पैटर्न देखने को मिलते हैं।

- शिक्षक व्याव्यान करते हैं, छात्र ध्यान से सुनते हैं।
- शिक्षक किसी एक छात्र से प्रश्न की वार्ता करते हैं और सभी से वार्ता हो जाने की कल्पना करते हैं।
- कोई एक छात्र प्रश्न का उत्तर देता है बाकी सभी छात्र मूक दर्शक बने रहते हैं।
- शिक्षक कुछ छात्रों से वार्ता करते हैं जबकि अन्य से सुनने की अपेक्षा नहीं होती।
- एक शिक्षक का अध्यक्षीय व्याख्यान।
- शिक्षक की अनुपस्थिति में छात्र आपस में चर्चा करते हुए।

यदि उपरोक्त पैर्टन पर ध्यान दिया जाये तो इनमें से अधिकांश शिक्षक केन्द्रित व्यवस्था के द्योतक हैं। यदि शिक्षक छात्र भागीदारी को बढ़ाना चाहते हैं तो उन्हें उपरोक्त पैटर्न या शिक्षण व्यवहार के उपयोग की जॉच करनी होगी। उन्हें शिक्षक प्रधान शिक्षण वयवहार के स्थान पर उन शिक्षण व्यवहारों पर अधिक ध्यान होगा जो छात्र भागीदारी को बढ़ावा देते हैं।

- **सक्रिय सीखने की गतिविधियाँ** :– परम्परागत सीखने की व्यवस्था के स्थान पर छात्र केन्द्रित सक्रिय शिक्षण प्रक्रिया का उपयोग करना विद्यार्थियों की अधिक भागीदारी बढ़ाने का एक मुख्य तरीका है। व्याख्यान एवं प्रदर्शन (Demonstration) आदि हमारी कक्षा की सबसे प्रचालित विधियाँ हैं। ये विधियाँ विद्यार्थियों की भागादारी के लिए कम गुजांइश प्रदान करती है। इसके विपरित कक्षा शिक्षण में पूछताछ, चर्चा, रोल, प्ले, विचार–मंथन, सेमिनार, वाद–विवाद, व्यावहारिक कार्य, परियोजना इत्यादि सक्रिय सीखने की प्रक्रिया अधिक छात्र सहभागिता को सुनिश्चित करती है। इसी प्रकार यदि शिक्षक अधिक शिक्षार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करना चाहते हैं तो कक्षा को छोटे समूहों में विभाजित कर सकते हैं और वैश्विक चर्चा के प्रयास के बजाय उन्हें स्थानीय चर्चा के विषयों में शामिल कर सकते हैं। शिक्षक इस उद्देश्य के लिए शिक्षण के सहकारी शिक्षण, नैदानिक शिक्षण आदि का उपयोग कर सकते हैं।

छात्रों को चर्चा के विषय चुनने की स्वतन्त्रता तथा उन्हें प्रकट करने की स्वायत्तता छात्र–भागीदारी की एक और उत्तम विधि है। किसी व्यवस्था या चर्चा में भागीदारी करना मानवीय गरिमा का विषय है। शोध से निष्कर्ष निकाला गया है कि जब शिक्षार्थी अपने लक्ष्य निर्धारण में स्वयं शामिल होते हैं तो उनमें प्रतिबद्धता बढ़ जाती है। यदि शिक्षक उनके लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं तो उन्हें वे अपने लक्ष्य न मानकर शिक्षक के लक्ष्य

के रूप में देखते हैं। अतः शिक्षक को कक्षा पारगमन में छात्र सहभागिता को बढ़ाने वाली विधि गतिविधियों को शामिल करना चाहिए।

छात्रों की मनोस्थिति को ध्यान में रखकर यदि हम कक्षा पारगमन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं तो छात्र सहभागिता को अधिक सुनिश्चित किया जा सकता है। जैसा कि हम जानते हैं कि छात्र स्वाभविक रूप से नवीन जानकारी को रोमांचक तरीके सुनना पसंद करते हैं। यदि शिक्षक अपने व्याख्यान को दंतकथाओं, दृष्टान्तों, प्रसंगों और हास्याप्रद वस्तुओं के साथ जोड़ते हैं तो वे शिक्षार्थियों की अधिक भागीदारी को सुनिश्चित करते हैं।

शिक्षक अपने व्याख्यान में पहेलियाँ, आकर्षक गतिविधियों का उपयोग करके तथा तथ्यात्मक ज्ञान को जीवन से जोड़कर उन्हें जीवंत व नवीन बनाते हैं तो शिक्षण अधिक प्रभावी होकर छात्रों की सहभगिता को बढ़ाता है।

अन्त में शिक्षार्थियों को यर्थाथवादी और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। ऐसे पाठ जो छात्रों को यह स्पष्ट करते हैं कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है और उन्हें क्या हासिल करना चाहिए, अस्पष्ट लक्ष्यों व अपेक्षाओं वाले पाठों की तुलना में अधिक जुड़ाव पैदा करते हैं। शिक्षक को शिक्षण के सामान्य व विशिष्ट उद्‌देश्यों की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए तथा छात्रों को भी इसकी स्पष्ट जानकारी दी जानी चाहिए। इससे शिक्षार्थियों को पढ़ायी जा रही अध्ययन सामग्री की उपयोगिता स्पष्ट रहती है तथा उनमें समझ के स्तर का भी निर्धारण किया जा सकता है। यदि शिक्षण उद्‌देश्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर दिया जाता है तो उनके शिक्षण को अर्थ एवं दिशा दोनों मिल जाती है। शिक्षण उद्‌देश्य स्पष्टता लाते हैं, ध्यान आकर्षण करते हैं, दृढता बढ़ाते हैं तथा छात्रों की सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

9. कक्षा में पाठ्‌यचर्या पारगमन का सबसे प्रमुख साधन क्या है ?

....

....

10. कक्षा की सबसे प्रचलित विधियाँ कौन सी हैं ?

....

....

11. सुकरात जैसे महान शिक्षकों ने किस विधि को शिक्षा के मुख्य उपकरण के रूप में स्वीकार किया है।

....

....

10.6 सारांश

पाठ्‌यचर्या में सीखने के अनुभवों की समग्रता शामिल होती है, जिन्हें छात्रों के सीखने की प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाता है। पाठ्‌यचर्या को क्रियान्वित करने से पहले उसे योजनाबद्ध और व्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है।

पाठ्‌यचर्या पारगमन में पाठ्‌यचर्या के लिए एक नियोजित गतिविधियों के पैटर्न को व्यवहार में लाना होता है। एक बार जब विभिन्न गतिविधियाँ योजनाबद्ध और व्यवस्थित हो जाती हैं, तो उन्हें पाठ्‌यचर्या पारगमन की प्रक्रिया के माध्यम से कक्षा में लागू करने की आवश्यकता होती है।

कक्षा में पाठ्‌यचर्या पारगमन के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग होता है। शिक्षकवार्ता, कक्षा में चर्चा एवं प्रश्नोत्तर – प्रक्रिया तथा शिक्षार्थी सहभागिता आदि साधन शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए पाठ्य पारगमना पारगमन के प्रमुख साधन है।

10.7 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या पारगमन से आप क्या समझते हैं?
2. पाठ्यचर्या पारगमन योजना के विभिन्न स्तर कौन–2 से हैं?
3. रचनावादियों के अनुसार पाठ्यचर्या का स्वरूप कैसा होना चाहिए?
4. शिक्षक वार्ता की पाठ्यचर्या पारगमन में भूमिका का उल्लेख कीजिए।
5. विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के अनुसार पाठ्यचर्या के स्वरूप का उल्लेख कीजिए।
6. पाठ्यचर्या पारगमन की प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन कीजिए।
7. कक्षा विशेष के सन्दर्भ में पाठ्यचर्या पारगमन के विविध माध्यमों की विस्तृत चर्चा कीजिए।

10.8 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या पारगमन एवं उसके साधन पर चर्चा कीजिए।

10.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पाठ्य सहभागी क्रियाओं
2. ज्ञात और अपेक्षाकृत निश्चित विषयवस्तु
3. व्यक्तिगत
4. सामाजिक प्रक्रिया
5. पाठ्यचर्या सीखी जाने वाली गतिविधियों का एक समग्र है।
6. रैखिक मॉडल
7. तीन
8. Content Analysis
9. मौखिकवार्ता या शिक्षक कथन
10. व्याख्यान एवं प्रदर्शन
11. प्रश्नोत्तरी

10.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. श्रीवास्तव, कल्पना व अन्य, पाठ्यचर्या विकास एवं आकलन, ठाकुर पब्लिकेशन प्रा.लि. आगरा
2. शर्मा, मधुलिका, एजुकेशनल मैनेजमेण्ट करिकुलम डेवलपमेण्ट एण्ड टीचिंग टेकनिक्स, कनिष्क पब्लिकेशन दिल्ली।
3. पाठक, पी. डी., ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

इकाई – 11 : पाठ्यचर्या सहभागिता के लिए विद्यालय दर्शन की भूमिका

इकाई की संरचना

11.1 प्रस्तावना

11.2 इकाई के उद्देश्य

11.3 पाठ्यचर्या सहभागिता का अर्थ

11.4 विद्यालय दर्शन की भूमिका

11.5 सारांश

11.6 अभ्यास के प्रश्न

11.7 चर्चा के बिन्दु

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

प्रत्येक संस्कृति समाज व शासकों ने अपने मूल्यो एवं संस्कृति के हस्तान्तरण के लिए शिक्षा का सहारा लिया तथा विद्यालय को उसको मूर्तरूप देने की स्थली बनाया। सभी इस बात से सहमत है कि विद्यालय किसी भी पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए वास्तविक स्थल है। पूर्व की चर्चा में हम सभी पाठ्यचर्या नियोजन के अर्थ आवश्यकता तथा उद्देश्य को समझते हुए पाठ्य नियोजन के विभिन्न प्रारूपों का अध्ययन कर चुके है। इस इकाई में हम सभी स्कूलों में पाठ्यचर्या को कैसे लागू किया जाय के विषय में अध्ययन करेगें।

किसी विद्यालय की विचारधारा और दर्शन शिक्षण को प्रासंगिक बनाने और राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित लक्ष्यों का अनुवाद करने में सहायता करता है। एक विद्यालय की संस्कृति, उसका बुनियादी ढांचा, जलवायु और शिक्षा पाठ्यचर्या को उनके शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुसार प्रासंगिक बनाने में सहायता करते है।

इस इकाई में, हम पाठ्यचर्या के लक्ष्यों उनके शिक्षार्थियों के सन्दर्भ से जोड़ने में विद्यालय दर्शन की भूमिका को समझेगे यह भी अध्ययन किया जायेगा कि किस तरह से एक विद्यालय की संस्कृति वातावरण पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को अर्थ देते है जिससे शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के लिए विशिष्ट बन जाते है। विद्यालय और उसका दर्शन एक बालक के ज्ञान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पाठ्य नियोजन के समय बनाये गये उद्देश्य विद्यालय प्रणालियो के भीतर ही प्रासंगिक हो पाते है।

11.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग हो जाएंगे कि–

- पाठ्यचर्या पारगमन में विद्यालय की भूमिका को समझ सकेंगे।
- विद्यालयी सन्दर्भ में पाठ्यचर्या उद्देश्यों को व्याख्यान्वित कर सकेंगे।
- विद्यालय में उपस्थित संसाधनो का पाठ्यचर्या सहभागिता में महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
- विद्यालय के भीतर शिक्षक की पाठ्यचर्या पारगमन की भूमिका से अवगत हो सकेंगे।

11.3 पाठ्यचर्या सहभागिता का अर्थ

पाठ्यचर्या, जैसा कि हम सभी चर्चा कर चुके है, सामान्यतः अध्ययन का एक निर्धारित पैटर्न है जिसका पालन विद्यालय परिस्थितियों के अनुरूप किया जाता है। इसमें वह अध्ययन सामग्री सम्मिलित होती है जिसे एक निर्धारित पाठ्य अवधि के दौरान पढ़ा जाना है। एक पाठ्यक्रम उन शिक्षण विधियों की भी सिफारिश करता है, जो निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करते है। इस प्रकार हम कह सकते है कि पाठ्यक्रम कुछ सीमा तक यह परिभाषित तथा निर्देशित करता है कि विद्यालयों में क्या पढाया जाना चाहिए, कैसे पढ़ाया जाना

चाहिए और शिक्षार्थियों से क्या अपेक्षा की जानी चाहिए तथा यह भी सर्वमान्य है कि पाठ्यचर्या निर्माता पाठ्यचर्या दस्तावेजो में जिन उद्देश्यों का निर्धारण करता है तो विद्यालय ही वह स्थल है जो किसी भी पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन और परिणाम प्राप्त करने का वास्तविक स्थल है।

पाठ्यचर्या सहभागिता तब होती है जब सीखने की प्रक्रिया एक निर्धारित पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को फलीभूत करने में सहायता करती है। सहभगिता केवल व्यक्तिगत तौर पर सीखने से सम्बन्धित नहीं है बल्कि सीखना एक समुदाय और बड़े पैमाने पर समाज के साथ व्यक्ति के जुड़ाव का माध्यम है। विद्यालयों को अपने शिक्षार्थियों को सीखने में सार्थक रूप से संलग्न होने का अवसर प्रदान करना चाहिए। विद्यालयों को अपने शिक्षार्थियों में सहभागिता बढाने के लिए सीखने के मूल्यों को निर्धारित करना चाहिए तथा छात्र दृष्टिकोंण से चिन्तन कर अपनी क्षमता और सीखने के संसाधन की उपलब्धता को निर्धारित करना चाहिए।

इस प्रकार विद्यालय पाठ्यचर्या सम्बन्धी सहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इसलिए कई शिक्षाविदों और सुधारकों का मानना है कि विद्यालयी परिस्थितियो में पाठ्यचर्या के वास्तविक अर्थ को परिभाषित और आकार दिया जाता है।

11.4 विद्यालयी दर्शन की भूमिका

पूर्व के अध्ययन के आधार पर हम चर्चा कर चुके है कि किसी भी पाठ्यचर्या दस्तावेज का आधार इस दृष्टिकोंण पर केन्द्रित होता है कि छात्रों को किस प्रकार का ज्ञान देना उचित है। किसी भी पाठ्यचर्या का मूल उद्देश्य यह रूपरेखा तय करना है कि क्या पढाया जाना चाहिए और समाजिक परिस्थितियों के अनुकूल क्या सीखना सार्थक है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या छात्रो को दिये जाने वाले अधिगम अनुभव की समझ प्रदान करने का प्रयास करता है।

''दर्शन समाज को जो इंगित करता है, शिक्षा के माध्यम से उसे प्राप्त किया जाता है।'' –थामस ओगवारा

यदि हम किसी स्कूल की कार्यप्रणाली का तार्किक विश्लेषण करे तो हमें समझ आता है कि शिक्षार्थिओं की विभिन्न अपेक्षा विद्यालयी पृष्ठभूमि में परिलक्षित होती है। मान लीजिए, यदि हम शिक्षार्थियों से प्रश्न करें कि वे विद्यालय क्यो आते है और वे क्या सीखना चाहेंगे? तब यह दिखता है कि छात्र अलग–अलग अपेक्षाएं रखते है कुछ छात्रों का उद्देश्य अच्छी तरह से शिक्षित होना है, कुछ का उद्देश्य शिक्षा तार्किक निर्णय लेने का पर्याय है, जबकि कुछ छात्र इसे जीवन सशक्तिकरण से जोड़ते है। यही प्रमुख विचार है जिनके साथ विद्यार्थी विद्यालय आते है जो उनकी अपेक्षाएं निर्धारित करते है। शिक्षार्थियों की अपेक्षाओं का तार्किक विवेचन विद्यालयी शिक्षा के प्रत्येक घटक का उत्तरदायित्व निर्धारित करता है। एक अध्ययन कक्ष को सामान्यतः गम्भीर कार्य। औपचारिक कार्यक्रम स्थल के रूप में माना जाता है जबकि खेल के मैदान को आनन्द के स्थल के रूप में देखा जा सकता है। यद्यपि, खेल में करियर बनाने की इच्छा रखने वाला छात्र खेल के मैदान को सीखने और स्वसमृद्धि का स्थान मानता है। ये अनेक प्रकार की भावनाएं शिक्षार्थियों के जीवन में विद्यालय की भूमिका से सम्बन्धित स्वभाव बनाती है।

पाठ्यचर्या का क्षेत्र और प्रकृति इसके कार्यान्वयन के स्थल, जो मुख्यतः विद्यालय है, की प्रथाओं और विचारधाराओं के माध्यम से स्पष्ट होता है। विभिन्न विद्यालय अपने शिक्षार्थियो की आवश्यकताओं, उपलब्ध संसाधनों, प्रबन्धन समिति जिसके उद्देश्यों के अनुरूप इसे स्थापित किया गया है, परिवेश व शिक्षकों की क्षमता के विषय में एक दूसरे से भिन्न–भिन्न हो सकते है। विद्यालयों के सामाजिक व सांस्कृतिक पहलू पाठ्यचर्या की सीमाएँ और परिभाषाएं निर्धारित करते है।

प्रत्येक विद्यालय अपनी वास्तविक कार्ययोजना के अनुरूप पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन को पुनः परिभाषित करता है। उदाहरण स्वरूप किसी विद्यालय की समय सारिणी का अध्ययन करके हम शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्रो से सम्बन्धित विद्यालय की विचारधारा को समझ सकते है।

वह विद्यालय जो दिन के पहले भाग में गणित, भाषा, विज्ञान जैसे विषयों को रखता है, वह इन विषयों के अध्ययन के माध्यम से मानसिक क्षमताओं के निर्माण में पूर्व प्रचालित विचारधाराओं में दृढता से विश्वास करता है। एक अन्य विद्यालय जिसकी समय सारिणी विषयगत कार्य पर आधारित है, वह पाठ्यक्रम के एक मिश्रित दृष्टिकोंण की परिकल्पना करता है, जिसे शैक्षिक तथा सह शैक्षिक गतिविधियों को एक साथ मिला दिया जाता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि विद्यालय ऐसे दर्पण की भांति कार्य करता है जो निर्धारित पाठ्यचर्या के दृष्टिकोंण और उद्देश्य को दर्शाता है। इसलिए यह कहना उचित होगा कि प्रत्येक विद्यालय एक निर्धारित स्तर तक अपनी स्वयं की पाठ्यचर्या परिभाषित और विकसित करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. विद्यालयी दर्शन की भूमिका पर थामस ओगवारा द्वारा दी गयी परिभाषा लिखिए।

....

....

2. विद्यालय के सामाजिक व सांस्कृतिक पहलू किसका निर्धारण करते हैं।

....

....

11.5 पाठ्यचर्या स्थल के रूप में विद्यालय

किसी भी पाठ्यचर्या पारगमन प्रमुख स्थान विद्यालय ही है जो अपनी भौतिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण के स्वरूप में विशिष्ट होता है। भौतिक स्वरूप में विद्यालय के बुनियादी ढाँचे, भवन विद्यालय परिसर का स्वरूप और उपलब्ध संसाधनो को सम्मिलित किया जाता है। दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक स्वरूप में विद्यालय के शिक्षक–छात्र सम्बन्ध, छात्र–छात्र सम्बन्ध, शिक्षक–प्रशासक सम्बन्ध तथा शिक्षक–शिक्षक सम्बन्ध को देखा जाता है। किसी भी पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में, भौतिक और मनोवैज्ञानिक दोनो ही स्वरूपों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

किसी पाठ्यचर्या का प्रभाव उन पाठ्यचर्या स्थलों से परिलक्षित होता है जिनके माध्यम से इसे लागू किया जाता है। पाठ्यचर्या स्थल छात्रो के ज्ञान और कौशल को विकसित करने के साथ–साथ मूल्यों और दृष्टिकोंण को विकसित करती है ताकि वे व्यापक और सन्तुलित सीखने के अनुभव प्राप्त कर सकें। पाठ्यचर्या सम्बन्धी स्थल के सुनियोजित और उचित उपयोग से शिक्षार्थियों को पाठ्यचर्या दस्तावेज में निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में लाभ मिलता है।

पाठ्यचर्या पारगमन के प्रमुख केन्द्र के रूप में विद्यालय पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता पर अपना पृष्ठपोषण सम्बन्धित क्षेत्र को भेजता है जिससे भविष्य में अधिक उत्तम उद्देश्यों के विकास में सहायता मिलती है। प्रत्येक विद्यालय अपने स्वरूप में विशिष्ट होता है। प्रत्येक विद्यालय में शिक्षण, सीखने, छात्रों की विशेषताओं, शिक्षको की गतिशीलता, नेतृत्व शैली, सामुदायिक जुडाव, विद्यालय संस्कृति और सन्दभों के अनुभवों का अपना इतिहास होता है। एक विद्यालय अपनी आवश्यकताओं, संसाधनो एवं बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार अपने स्वरूप में परिवर्तन करता है। अपनी पाठ्यचर्या पारगमन के लक्ष्यों पर निर्णय लेता है।

पाठ्यचर्या को लागू करने और विकसित करने में एक विद्यालय को संसाधनों के एक स्तर को प्राप्त करने में अपने भौतिक और मनोवैज्ञानिक स्वरूप को लचीले ढंग से उपयोग करना चाहिए। विद्यालयी स्तर पर पाठ्यचर्या पारगमन की योजना के माध्यम से विद्यालय आधारित पाठ्यचर्या तैयार कर सकता है जिसमें प्रत्येक सदस्य अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में परस्पर सहयोग करते है।

पाठ्यचर्या पारगमन के प्रभावी परिणाम प्राप्त करने के लिए शिक्षकों एवं छात्रों को विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों तथा बुनियादी ढांचे के साथ सामन्जस्य बनाना होगा। विद्यालय का भवन, उसकी वस्तुकला, चोल का मैदान, पुस्तकालय प्रयोगशालाओं जैसे संसाधनों की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। इन संसाधनों की उपलब्धता तथा छात्रों की इन संसाधनों तक पहुंच अधिगम तथा उपलब्धि प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

विद्यालय दर्शन की प्रमुख भूमिकाओं में से एक सभी छात्रो को समावेशी शिक्षण वातावरण बनाना है।

विविधता, समानता और समावेशन को बढावा देकर एक स्कूल छात्रो और शिक्षकों के बीच स्वीकृति और सम्मान के लिए वातावरण निर्मित करता है। यह विभिन्न दृष्टिकोंणों पृष्ठभूमियों और संस्कृति के उत्सव को प्रोत्साहित करता है, जिससे विद्यालय समुदाय के भीतर सभी के लिए अपनेपन की भावना को बढ़ावा मिलता है।

- **शैक्षिक दृष्टिकोंण**– पारम्परिक बनाम प्रगतिशील विद्यालय अपने दर्शन के आधार पर अलग–अलग शैक्षिक दृष्टिकोंण अपनाते है। पारम्परिक स्कूल सामान्यतः संरचित शिक्षा, अनुशासन और शैक्षिणिक उपलब्धियों को प्राथमिकता देते है। दूसरी और प्रगतिशील विद्यालय सक्रिय शिक्षण, आलोचनात्मक सोच और छात्र–जुडाव पर ध्यान केन्द्रित करते है। विद्यालय के दृष्टिकोंण को समझने से छात्रो और अभिभावको को ऐसा वातावरण चुनने में सहायता मिलती है जो उनकी सीखने की प्रथमिकताओं के अनुरूप हो।

- **समग्र विकास को बढ़ावा देना**— विद्यालयी दर्शन छात्रो के मध्य समग्र विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यद्यपि शैक्षणिक उत्कृष्टता आवश्यक है फिर भी एक विद्यालय के दर्शन को छात्रो के भावनात्मक शारीरिक और सामाजिक कल्याण को भी प्राथमिकता देनी चाहिए। पाठ्येत्तर गतिविधियों खेल, सामुदायिक कार्यक्रम नेतृत्व क्षमता के विकास के अवसर प्रदान करके स्कूल दर्शन एक सर्वांगीण शिक्षा का समर्थन करता है। यह धारणा यह मानती है कि सफलता परीक्षण के अंको और प्रमाण पत्रों से कही आगे तक जाती है जिसमें व्यक्तित्व विकास और आत्म अन्वेषण शामिल है।

- **सीखने के प्रति आजीवन रूचि का पोषण करना**– विद्यालय दर्शन सीखने के प्रति छात्रों के दृष्टिकोंण को आकार देने की शक्ति रखता है। एक ऐसी सोच जो जिज्ञासा और सीखने के प्रति आत्म रूचि को प्रोत्साहित करता है, वह छात्रों को आजीवन सीखने का प्रेरणा का विकसित करता है। यह विकास की मानसिकता को बढ़ावा देता है, छात्रो को चुनौतियों को स्वीकार करने गम्भीर रूप से सोचने और कक्षा से परे ज्ञान प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाता है। एक सुपरिभाषित दर्शन वाला स्कूल एक ऐसे वातावरण का निर्माण करता है जहां सीखना एक आनन्ददायक और पुरस्कृत अनुभव बन जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

3. पाठ्यचर्या पारगमन का प्रमुख स्थान क्या है ?

....

....

4. एक सुपरिभाषित दर्शन वाला स्कूल कैसे वातावरण का सृजन करता है ?

....

....

11.6 सारांश

प्रत्येक विद्यालय पाठ्यचर्या पारगमन एवं अधिगम उपलब्धि की सोच/दर्शन से विशिष्ट होता है विद्यालयी दर्शन का भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वरूप पाठ्यचर्या उद्देश्यों की प्राप्ति में अपनी विशेष भूमिका निभाता है।

किसी विद्यालय की विचारधारा और दर्शन शिक्षण को प्रासंगिक एवं राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण कार्य करते है। प्रत्येक विद्यालय अपनी अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षण के उद्देश्य निर्धारित करता है और उन्हे प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है।

11.7 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या सहभागिता से आप क्या समझते है?
2. विद्यालयी दर्शन के विभिन्न शैक्षिक दृष्टिकोंण को स्पष्ट कीजिए।
3. पाठ्यचर्या सहभागिता में विद्यालयी दर्शन की भूमिका को स्पष्ट कीजिए ?

11.8 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या सहभागिता के लिए विद्यालयी दर्शन की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ''दर्शन समाज को जो इंगित करता है, शिक्षा के माध्यम से उसे प्राप्त किया जाता है।''
2. पाठ्यचर्या की सीमाएँ और परिभाषाएँ
3. विद्यालय
4. आनन्ददायक और पुरस्कृत अनुभव वाले वातावरण का

11.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें और वेबलिंक

- Oer-Pressbook-pub.Tranilategoog/curriculumessential/chapter/philosophical foundation of curriculum
- पाठक, पी0डी0 –ज्ञान एवं पाठ्यक्रम–श्री विनोद मन्दिर, प्रयागराज।
- IGNOU, New Delhi

इकाई – 12 : बुनियादी ढाँचागत सहायता और पाठ्यचर्या सहभागिता

इकाई की संरचना

12.1 प्रस्तावना

12.2 इकाई के उद्देश्य

12.3 विद्यालयी अवसंरचना

12.4 विद्यालयी अवसंरचना की पाठ्यचर्या सहभागिता में भूमिका

12.4.1 कक्षा–कक्ष

12.4.2 खेल का मैदान

12.4.3 प्रयोगशाला

12.4.4 पुस्तकालय

12.4.5 विद्यालयी संस्कृति व वातावरण

12.5 सारांश

12.6 अभ्यास के प्रश्न

12.7 चर्चा के बिन्दु

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

पाठ्यचर्या सहभागिता के विभिन्न घटकों की भूमिका के अध्ययन के पश्चात् इस इकाई में हम सभी पाठ्यचर्या सहभागिता में विद्यालयी अवसंरचना की भूमिका का अध्ययन करेगें। इस इकाई में यह समझने का प्रयास करेगें कि विद्यालय का बुनियादी ढाँचा, उसके संसाधन, संस्कृति और विचारधारा विद्यालय के भीतर पाठ्यचर्या की सहभागिता को किस प्रकार प्रभावित करते है। अव्यक्त पाठ्यचर्या जिसका अनुसरण एक विद्यालय करता है वह सामान्यतः स्पष्ट रूप से प्रकट नही होता, लेकिन विद्यालय के अन्दर होने वाले अनकहे, गैर विशिष्ट कृत्यों के माध्यम से परिलक्षित होता है। जिसे छिपे हुए पाठ्यक्रम के रूप में जाना जाता है। यह विद्यालय के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थलों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से संप्रेषित होता है।

12.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग हो जाएंगे कि–

1. विद्यालयी अवसंरचना को समझ सकेगें।
2. अव्यक्त पाठ्यचर्या को समझ सकेगें।
3. विद्यालयी अवसंरचना की पाठ्यचर्या सहभागिता में भूमिका को समझ सकेगें।

12.3 विद्यालयी अवसंरचना

एक अच्छा विद्यालयी बुनियादी ढाँचा छात्रों की उत्तम शैक्षिक अवधि में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप रखता है। यह छात्रों को सर्वोत्तम सम्भव शिक्षण वातावरण और उनकी क्षमता के अधिकतम् विकास के अवसर प्रदान करने का

एक अनिवार्य भाग है। आधुनिक तकनीक और संसाधनों से सुसज्जित कक्षाओं से लेकर खेल के मैदान, अच्छी गुणवत्ता वाले फर्नीचर अच्छे स्कूल के बुनियादी ढाँचे का परिचायक होता है।

छात्रों के लिए विद्यालय उनके दूसरे घर के समान होता है, जहाँ वे अधिकांश समय बिताते है। छात्रों के उत्तम व्यक्तित्व विकास के लिए शांत के साथ–साथ जीवंत शैक्षिक वातावरण स्थापित करना आवश्यक है। कोई भी अभिभावक अपने बच्चों को खराब बुनियादी ढाँचे या जर्जर सुविधाओं वाले शैक्षिणिक संस्थान में भेजना पसन्द नही करते।

यह तथ्य है कि छात्रों के लिए अपेक्षित शैक्षणिक परिणाम प्राप्त करने के लिए अच्छी शैक्षिक परिस्थितियाँ में स्कूल का होना निर्णायक है। विद्यालय का बुनियादी ढाँचा विश्वभर में पाठ्यक्रम नीति कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाठ्यचर्या कार्यान्वयन कई कारको द्वारा प्रभावित होता है, जिसमें विद्यालय भवन, खेल का मैदान, शौचालय, स्वच्छता इत्यादि शामिल होता है।

12.4 विद्यालयी अवसंरचना की पाठ्यचर्या सहभागिता में भूमिका

यह व्यापक रूप से समझा गया है कि विद्यालयों में बुनियादी ढाँचे के विकास को वांछित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाने में काफी प्रभावी माना गया है। बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता विद्यालय के शैक्षिक वातावरणीय परिस्थितियों के निर्माण में अच्छी भूमिका निभाते है यह नामांकन संख्या बढाने के साथ पाठ्यचर्या क्रियान्वयन हेतु न्यूनतम आवश्यकताओं को भी पूरा कराता है। यदि विद्यालय में प्रत्येक स्तर के अध्ययन से सम्बन्धित पाठ्यचर्या पारगमन के आवश्यक ससांधन नही होगें तो पाठ्यचर्या द्वारा छात्रो के अधिगम विकास हेतु निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति नही हो पायेगी पिछले दशकों में ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, सर्व शिक्षा अभियान, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, समग्र शिक्षा अभियान व नई शिक्षा नीति 2020 में भी विद्यालयी अवसंरचना की अनिवार्यता को पूर्ण करने का संकल्प लिया गया है।

पाठ्यचर्या सहभागिता में सभी स्तर के शिक्षण स्थानों में विद्यालयी अवसंरचना का विकास एक महत्वपूर्ण पहलू है। विद्यालयी अवसंरचना का बुनियादी ढाँचा शब्द एक व्यापक शब्द है जिसमें कई घटक शामिल है। इनमें खेल का मैदान, पुस्तकालय सुविधाएँ, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर केन्द्र, प्रौधोगिकी मशीनरी उपकरण इत्यादि शामिल है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है विद्यालय का बुनियादी ढाँचा इसकी डिजाइन, इसका प्रारूप, भवन, कक्षाओं का आकार, बैठने की व्यवस्था, किसी भी विद्यालय में अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। हम सभी इस बात से सहमत है कि शिक्षार्थी अनुकूल व स्वस्थ वातावरण में बेहतर प्रदर्शन करते है।

कई शोध अध्ययनों ने छात्रो के सीखने और विद्यालय के बुनियादी ढाँचे के बीच सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित किया है। विद्यालय में उपलब्ध बुनियादी ढाँचा व एक प्रेरक और आरामदायक सीखने का महौल छात्रों की एकाग्रता को बढ़ाता है। उपयुक्त डिजाइन और सुविधाएं सीखने की प्रक्रियाओं का समर्थन करती हैं और स्वतन्त्र व समूह में कार्य करने की प्रेरणा को बढ़ावा देता है। उचित वेंटिलेशन और बैठने की व्यवस्था के साथ विशाल कक्षाएं एक उत्पादक एवं सहयोगी शैक्षिक वातावरण छात्रों को विद्यालय आने व सीखने के प्रति उत्साह को बढ़ाता है।

भारतीय विद्यालयों की पूर्व की रिपोर्ट में बताया गया था कि विद्यालयों में अपव्यय एवं अवरोधन का एक प्रमुख कारण बुनियादी ढाँचे की कमी भी रहा है जिसमें बालिकाओं के स्कूल छोड़ने का एक प्रमुख उचित बुनियादी ढाँचे की कमी को बताया गया है। रिपोर्ट में वर्णित है कि उचित शौचालय सुविधाओं की कमी और घरों से स्कूलों की दूरी के कारण स्कूलों में लड़कियों की कम उपस्थिति होती है।

विद्यालय की अवसंरचना प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होनी चाहिए तथा सभी आवश्यक प्रबन्ध होने चाहिए। शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों को कई बार विद्यालय की सामान्य संरचना और कठोर वातावरण के कारण विद्यालय प्रणालियों में मुश्किल का सामना करना पड़ जाता है, यह सर्वविदित है कि जो शिक्षार्थी अपनी शारीरिक बाधाओं के कारण विद्यालय के सभी हिस्सों तक नहीं पहुँच

पाते, वे विद्यालय की गतिविधियों में प्रतिभाग नही कर पाते। ऐसे छात्र जिन्हे अपने अंगो में कठिनाई है उन्हे विद्यालय के सभी हिस्सों तक पहुचने के लिए उचित रैंप की आवश्यकता होती है। विद्यालय भवन और कक्षाओं तक पहुँच के लिए उचित रैंप की आवश्यकता होती है। स्कूल भवन और कक्षाओं तक पहुँच के लिए ढांचागत सहायता प्रदान करने में विफलता के कारण कई शिक्षार्थियों को पढ़ाई छोड़नी पड़ती है जो लगभग अपनी औपचारिक शिक्षा पूर्ति की दहलीज पर होती है।

विद्यालय में उपलब्ध भौतिक संसाधन नियोजित पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन में सहयता करते है। हालाँकि किसी पाठ्यचर्या और विद्यालय की भौतिक स्थितियों के बीच सीधा सम्बन्ध नही दिखता परन्तु ये अपेक्षित लक्ष्यों की पूर्ति में अपना व्यापक प्रभाव डालते है। कई अध्ययनों में स्पष्ट किया गया कि छात्रों की अधिगम उपलब्धि में पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं खेल के मैदान तथा सामुदायिक वातावरण जैसे विभिन्न कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। व्यावहारिक दृष्टि से भी यह सर्वमान्य है कि विद्यालयों में इन सुविधाओं की अनुपस्थिति या उपस्थिति शिक्षार्थियों के सीखने पर प्रभाव डालती है। विद्यालयी की बुनियादी संरचना में आवश्यक भौतिक संसाधनों की भूमिका की चर्चा निम्नलिखित बिन्दुओं से करनी चाहिए–

(i) कक्षा–कक्ष – राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964–66 ने अपने प्रतिवेदन में लिखा कि ''भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।''

इस कथन के अनुरूप विद्यालयों में संचालित विभिन्न स्तरों की कक्षाओं में प्रदान किया जा रहा अधिगम अनुभव छात्रों के भविष्य निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है इस हेतु प्रत्येक विद्यालय की कक्षाएं आवश्यक बुनियादी आवश्यकताओं से परिपूर्ण होनी चाहिए। सभी इस मत से सहमत है कि पर्याप्त और जर्जर स्थिति की कक्षा परिस्थितियाँ बालकों को कक्षा में प्रवेश लेने से हतोत्साहित करती है। शिक्षक के रूप में आप सभी भी एक अच्छे सुविधासम्पन्न व छात्रपयोगी वातावरण में शिक्षण करना अधिक पसन्द करेगें। छात्रों का एक अच्छा समय विद्यालय में व्यतीत होता है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि उनकी कक्षाओं को प्रतिदिन साफ किया जाय और उचित वेटिलेशन की कक्षाओं में शिक्षण कार्य कराया जाय। अपने शैक्षिक निष्पादन में छात्रों के शैक्षिक पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण कक्षाओं में अनुपात से अधिक भीड़ का होना। यह समस्या प्रारम्भिक कक्षाओं के छात्रों के लिए और अधिक गम्भीर हो जाती है वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा विद्यालय में भवन का निर्माण विद्यार्थियों की संख्या के अुनसार कराता है। अमेरिकन नेशनल काउन्सिल ने एक छोटे से विद्यालय भवन के क्षेत्र के बारे में कहा है कि किसी विद्यालय भवन के लिए जिसमें 1000 विद्यार्थी हो 2 एकड़ भूमि तथा 50 विद्यार्थियों के लिए एक एकड़ अतिरिक्त भूमि उपलब्ध होनी चाहिए।

केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद् CABE ने इस सन्दर्भ में निम्न संस्तुति की है–

छात्रों की संख्या	भवन का क्षेत्र	खेल आदि का क्षेत्र
160	2/3 एकड़	2–3 एकड़
200	1 एकड़	4–5 एकड़
480	2/3 एकड़	6–7 एकड़

प्रत्येक कक्षा में छात्रो की संख्या के अनुरूप फर्नीचर उपलब्ध होना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि एक सीट पर दो छात्र न बैठे। प्रत्येक छात्र के लिए अलग–2 मेज तथा कुर्सी होनी चाहिए। एक आदर्श कक्षा में निम्नलिखि फर्नीचर का होना आवश्यक है–

1. विद्यार्थियों के बैठने के लिए सीट
2. श्याम पट्ट

3. शिक्षक की मेज एवं कुर्सी

4. आलमारियाँ, बुलेटिन बोर्ड, स्टैण्ड, कुड़ेदान आदि।

शैक्षिक उपकरण–

शैक्षिक अपनी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए शैक्षिक सामग्रियों का प्रयोग करता है। जो शिक्षक जितना उचित शैक्षिक सामग्री का प्रयोग करता है वह उतना ही प्रभावशाली माना जाता है। बालक के अधिगम के उपरोक्त फर्नीचर उपकरणों की भूमिका के अतिरिक्त अन्य शैक्षिक सामग्रियों का भी विशेष महत्व होता है, जो निम्न प्रकार है।

1. श्यामपट्ट
2. चार्ट
3. मॉडल
4. मानचित्र
5. रेखाचित्र
6. ग्राफ
7. विज्ञान शिक्षण सामग्री

(ii) पुस्तकालय– पुस्तकों के विषय में कहा गया है ''पुस्तके मात्र कागज और स्याही नही है वे व्यक्ति है। अधिकतर छात्रों के साथी है, जिन्होनें सदियों से ऋतुओं के प्रभाव को सहा है और अनन्त की ओर अग्रसर हो रही है।'' पुस्तकालय विद्यालय का हृदय है जहाँ शिक्षकों और छात्रों के ज्ञान की अन्तः क्रिया होती है। स्पन्दन सुनाई देता है। यह बौद्धिक प्रयोगशाला है जहाँ बौद्धिक क्रियाओं पर विभिन्न विद्वानों के ज्ञान का पाठन व मनन द्वारा परीक्षण होता है।

पाठ्यचर्या पारगमन का प्राण पुस्तकालय है जब तक पाठ्यचर्या में सम्मिलित विषयों की समृद्ध पुस्तके पुस्तकालय में नहीं होगी तब तक विद्यार्थी व शिक्षक निरन्तर ज्ञानार्जन व अधिगम नही कर पायेगें। वास्तविक अधिगम का प्रारम्भ पुस्तकालय से होता है। सभी शिक्षण विधियों तथा विषयों पर उत्तम पुस्तके पुस्तकालय में होती है यहाँ शिक्षक इनके आधार पर अपनी शिक्षण विधियों में सुधार लाता है पुस्तकालय पाठ्यर्चा पारगमन हेतु प्रमुख दायित्व निर्वाहन करता है–

- पुस्तकें शिक्षकों के अनुदेशन कार्य में सहायता देती है। यही विभिन्न विषयों पर पुस्तकें तथा सन्दर्भ पुस्तके ज्ञान में वृद्धि करती है।
- विद्यार्थियों के स्वाध्याय को बढावा देती है।
- पढ़ने की आदतों को पुस्तकालयों के माध्यम से विकसित किया जाता है।
- पुस्तके अच्छे साथी के रूप में पुस्तकों को पढ़ने को प्रोत्साहित करता है।
- यह पाठ्यक्रम के पारगमन का अभीष्ट कार्य करता है।
- बालकों में शब्दकोष, सन्दर्भ ग्रन्थों आदि के उचित प्रयोग की कुशलता विकसित करता है।

पाठ्यचर्या पारगमन हेतु पुस्तकालय के उपरोक्त दायित्वों को पूरा करने के लिए विद्यालय में पुस्तकालय की स्थिति उपयुक्त होनी चाहिए। हमारे देश में विद्यालयी पुस्तकालयों की स्थिति शोचनीय है। अधिकांश विद्यालयों में पुरानी पुस्तके है जो छात्रों की रूचियों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर खरीदी

गईहै। जो पुस्तके पुस्तकालयों में है वह भी अलमारियों में बन्द रहती है और कदाचित ही उन्हे बाहर निकाला जाता है। जिन व्यक्तियों के संरक्षण में ये पुस्तके है वे या तो क्लर्क है या शिक्षक जो अंशकालिक आधार पर कार्य करते है इनको न तो पुस्तकों से प्रेम है न ही कोई रूचि और नही पुस्तकालय विज्ञान का ज्ञान। अनेक विद्यालयों में पुस्तकालय भवन नही है, यदि भवन है भी तो फर्नीचर, वित्त पुस्तकालय अध्यक्ष पुस्तकों का चयन, मुक्त प्रवेश प्रणाली की समस्या है। इन परिस्थितियों में विद्यार्थी पुस्तकालयों का उचित उपयोग नही कर पाते। विद्यालय में पाठ्यचर्या सहभागिता में पुस्तकालयों की स्थिति में निम्नलिखित सुधार किये जाने चाहिए–

- पुस्कालय भवन की उचित एवं आकर्षक भवन की व्यवस्था हो।
- पुस्तकालयों में बैठने हेतु उचित फर्नीचर की व्यवस्था हो।
- पुस्तकालय में छात्रों के लिए नवीन उपयोगी पुस्तकों व पत्रिकाओं की व्यवस्था की जायें।
- पाठ्यचर्या से सम्बन्धित समस्त पुस्तके पुस्तकालय में होनी चाहिए तथा इन्हे विद्यार्थियों को नियमित रूप से पुस्तके देने की व्यवस्था होनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकों व अन्य पुस्तको के वितरण के लिए समय विभाजन किया जाय।
- पुस्तकालयों में कम्प्यूटर ; इंटरनेट, विडियों कैसेट आदि आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हो।

पुस्तकालय छात्रो में स्वाध्याय की आदत के विकास की पहली सीढ़ी है। अधिकांश पाठ्यचर्या में पुस्तकालय अध्ययन को अनिवार्यता जोड़ा जाता है।

अतः विद्यालय की समय सारणी का नियोजन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों में यदि नित्य सम्भव न हो तो कम से कम सप्ताह में तीन दिन पुस्तकालय में जाने व वहां पढ़ने का समय अवश्य प्राप्त हो। छात्रो के साथ–साथ अध्यापकों को भी पुस्तकालयों में कुछ समय अवश्य बिताना चाहिए जिससे वहां अध्ययनरत छात्र–छात्राएं अपनी समस्याओं का निवारण कर सकें। प्रत्येक अध्यापकों को अपनी कक्षा में छात्रो को ऐसा लेख, परियोजना या विषय देना चाहिए जिसे अध्ययन करने के लिए छात्रों को पुस्तकालय का प्रयोग करना चाहिए।

(iii) विद्यालय प्रयोगशाला– प्रत्येक स्तर पर छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान, प्रदान करने के लिए समस्त पाठ्यचर्या में छात्रो के लिए प्रायोगिक अध्ययन को सम्मिलित किया गया है। इस हेतु विद्यालय की प्रयोगशालाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वाहन कर सकती है। प्रयोगशाला वस्तुतः इस सिद्धान्त को क्रियात्मक स्वरूप प्रदान करने के लिए आवश्यक है जिसमें छात्र स्वयं करके सीखते है।

सामान्यतः जब हम प्रयोगशाला की बात करते है तब हमारा ध्यान केवल विज्ञान की प्रयोगशालाओं पर जाता है, परन्तु आधुनिक युग में अच्छे विद्यालयों में विज्ञान विषयों के अतिरिक्त भूगोल अथवा भाषाओं की भी प्रयोगशालाएं स्थापित की जाती है। मनोविज्ञानशाला, निर्देशन कक्ष भी तनावग्रस्त समाज के लिए आवश्यक प्रयोगशालाएं बन गई है। कम्प्यूटर के प्रयोग ने कम्प्यूटर की प्रयोगशाला की अनिवार्यता स्वतः सिद्ध करता है।

अतः पाठ्यचर्या में वर्णित विषयों का व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए विद्यालय में प्रयोगशाला का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। स्वयं करके सीखने हेतु विषय के अनुरूप उचित वातावरण प्रदान करने के लिए एक ही स्थान पर विषय की अधिगम सामग्री की उपलब्धता के लिए, विषय में अधिक रूचि लेने के लिए व प्रेरणा के लिए प्रयोगशालाओं की आवश्यकता है। सिद्धान्तों को परखने व पुष्ट करने के लिए, सिद्धान्त निर्माण हेतु आवश्यक प्रक्रिया जानने के लिए समालोचनात्मक दृष्टिकोंण विकसित करने के लिए प्रयोगशालाओं की आवश्यकता है। सामान्य विद्यालयों में भौतिक, रसायन, जीवविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा विज्ञान, भूगोल कक्ष की व्यवस्था होती है। विषय के आवश्यकतानुसार प्रयोगशाला का चुनाव किया जाए। उदाहरणार्थ रसायनिक विज्ञान की

प्रयोगशाला ऐसे स्थान पर हो जहाँ से गैसों के निकलने से समीपस्थ कक्षाओं के विद्यार्थियों पर प्रभाव न पड़े। भूगोल विषय की प्रयोगशाला ऐसे स्थान पर हो जहाँ से मौसम निरीक्षण की सुविधा हो और वायु तथा वर्षा के प्रभाव का स्थानीय परिवेश में निरीक्षण किया जा सके। जहाँ तक हो प्रत्येक विषय की अलग–अलग प्रयोगशालाएँ होनी चाहिए।

(iv) खेल तथा खेल का मैदानः– शिक्षा को सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया माना जाता है। ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों के विकास के साथ शारीरिक विकास भी होना आवश्यक है क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

पाठ्यचर्या में कक्षागत शैक्षिक अनुभव के साथ सह शैक्षिक गतिविधियों को भी सम्मिलित किया जाता है जिनका पारगमन कक्षा से बाहर खेल के मैदान या अन्य स्थान पर होता है। अतः विद्यालय में शिक्षण के साथ खेल कूद तथा शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्था की जाती है जिससे बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ बना रहे।

खेल को छात्रो की सहज क्रिया व तनाव को कम करने के लिए मनोरंजन कार्य माना जाता है। अध्ययन की थकान दूर करने के लिए खेल को मनारंजन कार्य माना जाता है, जिससे अध्ययन की थकान भी दूर हो जाती है। इस हेतु खेल विधि का प्रयोग किया जाता है।

विद्यालय परिसर में खेल के मैदान की व्यवस्था की जाती है, जिससे छात्र अध्ययन के साथ खेल भी सके। बिना खेल के मैदान के विद्यालय अधूरा होता है छात्रों के समुचित विकास के लिए खेल का मैदान का विशेष महत्व होता है। खेल से छात्रो में जिन गुणों का विकास किया जाता है वह कक्षा शिक्षण से नही किया जा सकता। खेल का मैदान शिक्षा एवं शिक्षण की सहायक प्रणाली है। बाहय खेलों के लिए जैसे फुटबाल, हाँकी, बॉलीबॉल, क्रिकेट, बास्केटबॉल एवं कबड्डी जैसे खेलों के आयोजन के लिए खेल के मैदान की आवश्यकता होती है। प्रत्येक खेल के लिए सुनिश्चित लम्बाई तथा चौड़ाई का क्षेत्र आवश्यक होता है, इसलिए ऐसे खेल के मैदान की आवश्यकता होती है, जिसमें अधिकतम खेलो का आयोजन किया जा सके।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. पुस्तकों के विषय में क्या कहा गया है ?

....

....

2. किसे विद्यालय की हृदय कहा गया है ?

....

....

3. विद्यालय में पाठ्यचर्या सहभागिता में पुस्तकालयों की स्थिति के लिए दो सुझावों को लिखिए।

....

....

4. स्वस्थ्य शरीर में किसका निवास होता है ?

....

....

5. छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए सभी पाठ्यक्रमों में किस प्रकार के अध्ययन को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है ?

....

....

6. पाँच शैक्षिक उपकरणों के नाम लिखिए।

....

....

12.5 सारांश

प्रत्येक पाठ्यचर्या सहभागिता में उन सभी संसाधनों का होना आवश्यक है जिनका वर्णन पाठ्यचर्या दस्तावेज में उस स्तर की पाठ्यचर्या हेतु निर्धारित किया गया है। पाठ्यचर्या में मात्र कक्षागत शैक्षिक गतिविधियों द्वारा ही ज्ञान प्रदान करने का प्रारूप नही होता अपितु पाठ्यचर्या का स्वरूप व्यापक है इसमें कक्षागत शैक्षिक गतिविधयों के साथ सहशैक्षिक गतिविधियों का उल्लेख होता है। पाठ्यचर्या में छात्रों के तीनों पक्षों ज्ञानात्मक, भावात्मक मनोगत्यात्मक तीनों स्तरों के विकास का लक्ष्य होता है जिस हेतु उचित कक्षा–कक्ष नियोजन के साथ–साथ समृद्ध पुस्तकालय संसाधन सम्पन्न प्रयोगाशाला तथा बृहद खेल का मैदान होना चहिए।

अतः पाठ्यचर्या सहभागिता में विद्यालयी अवसंरचना के बुनियादी ढाँचे का समृद्ध होना अतिआवश्यक है।

12.6 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या सहभागिता में पुस्तकालय की भूमिका का वर्णन कीजिए।
2. प्रयोगशाला की अनिवार्यता पाठ्यचर्या सहभागिता का अभिन्न अंग है वर्णन कीजिए।
3. पाठ्यचर्या सहभागिता में विद्यालयी अवसरंचना की भूमिका उल्लेख कीजिए।

12.7 चर्चा के बिन्दु

1. विद्यालयी बुनियादी ढ़ॉचागत सहायता एवं पाठ्यचर्या सहभागिता पर चर्चा कीजिए।

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ''पुस्तके मात्र कागज और स्याही नहीं हैं वे व्यक्ति है। अधिकतर छात्रों के साथी है, जिन्होनें सदियों से ऋतुओं के प्रभाव को सहा है और अनन्त की ओर अग्रसर हो रही है।''
2. पुस्कालय को
3. (i) पुस्कालय भवन की उचित एवं आकर्षक भवन की व्यवस्था हो।

   (ii) पुस्तकालयों में बैठने हेतु उचित फर्नीचर की व्यवस्था हो।
4. स्वस्थ मस्तिष्क
5. प्रायोगिक अध्ययन

6. श्यामपट्ट, चार्ट, मॉडल, मानचित्र एवं रेखाचित्र आदि।

12.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. त्यागी, ए. के., ज्ञान एवं पाठ्यचर्या, ग्लोबल एकेडमिक पब्लिशरस्, दिल्ली
2. Talla, Mrunalini, Curriculum Development-Perspective, Principles and Issue, Pearson Publication, Chennai
3. Arulsamy, Dr. S., Curriculum Development, Neelkamal Publication, New Delhi

खण्ड – 04 : पाठ्यचर्या मूल्यांकन और अनुसंधान

खण्ड परिचय

प्रस्तुत खण्ड में हम पाठ्यचर्या मूल्यांकन, पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दे एवं पाठ्यचर्या में शोध पर चर्चा करेंगे इस खण्ड के अंतर्गत हम विशेष तौर पर पाठ्यचर्या में नवीन बदलाव लाने से संबंधित उपागमों की चर्चा करेंगे पाठ्यचर्या शिक्षा का एक ऐसा तत्व है जो समय के साथ परिवर्तनशील होता रहता है दूसरी तरफ इसका सीधा संबंध समाज की मांग के साथ होता है। जिस प्रकार समाज की मांग बदलती है उसी के अनुरूप पाठ्यचर्या की दिशा तथा दशा बदलती है प्रस्तुत खण्ड में पाठ्यचर्या में बदलाव या नवीनता लाने के लिए उपयोगी तीन तत्वों पाठ्यचर्या का मूल्यांकन, पाठ्यचर्या समसामयिक मुद्दे तथा पाठ्यचर्या में शोध की चर्चा करेंगें। इनका विभाजन 4 इकाइयों में किया गया है जो इस प्रकार है –

इकाई – 13 : इस खंड की इकाई में पाठ्यचर्या के प्रतिमानों का उल्लेख किया गया है। इस इकाई के आरंभ में पाठ्यचर्या नियोजन के प्रतिमानों का वर्गीकरण करने से पूर्व पाठ्यचर्या प्रतिमान का अर्थ एवं अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है। पाठ्यचर्या प्रतिमान के वर्गीकरण के आधार को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि प्रत्येक पाठ्यचर्या निश्चित उद्देश्यों, आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुरूप निर्मित की जाती है और समाज में समय–समय पर उद्देश्यों, आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों में परिवर्तन होता है। अतः पाठ्यचर्या विकास का जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है उसमें देश–काल, परिस्थितियों अनुरूप परिवर्तन संभव है। प्रस्तुत इकाई में उपर्युक्त तीन आधारों पर पाठ्यचर्या प्रतिमान के उद्देश्य या मूल्यांकन आधारित प्रतिमान, प्रक्रिया प्रतिमान एवं परिस्थिति प्रतिमान के विषय में समझाने का प्रयत्न किया गया है।

इकाई – 14 : इस इकाई में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के बारे में बताया गया है। मूल्यांकन किसी भी प्रकिया का एक अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग होता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन का सार्थक बोध प्राप्त करने के लिए इसका अर्थ व इसकी आवश्यकता की विवेचना की गई है। प्रस्तुत ईकाई में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्य, पाठ्यचर्या निर्माण के चरण, पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार एवं आवश्यकता, पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व, पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीकों पर चर्चा की गई है ताकि आप अपने विद्यालय की प्रभावकारिता का आंकलन कर सकें।

इकाई – 15 : इस इकाई में पाठ्यचर्या के समसामयिक मुददों पर चर्चा की गई है। किसी भी पाठ्यचर्या के निर्माण के लिए उसका वर्तमान के साथ समायोजन होना अति आवश्यक है समसामयिक मुद्दों के साथ पाठ्यचर्या को जोडने का कार्य यदि हम करते हैं तो इसका सीधा प्रभाव पाठ्यचर्या की गुणात्मकता पर पड़ता है प्रस्तुत इकाई में हम पाठ्यचर्या मूल्यांकन में समसामयिक मुददों का महत्व, समसामयिक मुददों की आवश्यकता, सामसामयिक मुद्दों को चयन के तरीके तथा पाठ्यचर्या निर्माण में समसामयिक मुददों की सीमा आदि का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

इकाई – 16 : इस इकाई में हम पाठ्यचर्या सम्बन्धी शोध पर चर्चा करेंगे। आज हमारा समाज निरंतर परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में वर्तमान परिदृश्य में समाज के लिए किस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है, भविष्य मे शिक्षा की माँग क्या होगी आदि जैसे प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पाठ्यचर्या के क्षेत्र मे शोध होना आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई मे हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि पाठ्यचर्या सम्बन्धी शोध में हम किन–किन शोध को शामिल कर सकते हैं, पाठ्यचर्या सम्बन्धी शोध के क्षेत्र क्या होगें इसमें कौन–कौन से उपागम शामिल होंगे आदि का अध्ययन किया जायेगा।

इकाई 13 : पाठ्यचर्या के प्रतिमान

इकाई की संरचना

13.1 प्रस्तावना

13.2 इकाई के उद्देश्य

13.3 पाठ्यचर्या प्रतिमान का अर्थ एवं अवधारणा

13.4 पाठ्यचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण

13.4.1 पाठ्यचर्या का उद्देश्य या मूल्यांकन प्रतिमान

13.4.2 पाठ्यचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान

13.4.3 पाठ्यचर्या का परिस्थिति प्रतिमान

13.5 पाठ्यचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण–स्वरूप के आधार पर

13.5.1 पाठ्यचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान

13.5.2 पाठ्यचर्या विकास का विशिष्ट प्रतिमान

13.6 सारांश

13.7 अभ्यास के प्रश्न

13.8 चर्चा के बिन्दु

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

राष्ट्र उन्नति हेतु उपयोगी नागरिक के निर्माण में बालक को दी गई शिक्षा अग्रणी भूमिका निभाती है। शिक्षा को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्यवस्तु एक आधार प्रदान करती है। पाठ्यचर्या का निर्माण राष्ट्र की शैक्षिक आर्थिक व राजनैतिक स्थिति को विश्लेषित कर किया जाता है। चूँकि इन परिस्थितियों में परिवर्तन होता है। अतः पाठ्यचर्या में भी परिवर्तन होता रहता है।

अतः देश काल परिस्थिति के अनुरूप पाठ्यचर्या के कई स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं परन्तु इन्हें वैज्ञानिक आधार प्रदान करना सम्भव नहीं था पाठ्यचर्या निर्माण के क्षेत्र में विभिन्न शोधकार्यों के परिणामस्वरूप पाठ्यचर्या निर्माण के अनेक प्रतिमान विकसित हुए। प्रस्तुत इकाई पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न प्रतिमानों पर चर्चा की जायेगी।

13.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप इस योग हो जाएंगे कि –

2. पाठ्यचर्या निर्माण के प्रतिमान का अर्थ समझ सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न प्रतिमानों को समझ सकेंगे।
4. स्वरूप के आधार पर पाठ्यचर्या के प्रतिमानों का वर्गीकरण कर सकेंगे।

13.3 पाठ्यचर्या प्रतिमान का अर्थ एवं सम्प्रत्यय

पाठ्यचर्या नियोजन के तत्वों तथा इन तत्वों के आपसी सम्बन्ध को प्रदर्शित करने की संरचनात्मक व्यवस्था ही पाठ्यचर्या विकास का प्रतिमान कहलाती है। पाठ्यचर्या विकास का मॉडल पाठ्यक्रम विकास की प्रकृति तथा प्रक्रिया दोनों को ही प्रदर्शित करता है।

किसी भी प्रत्यय, अवधारणा, सम्बन्ध, संरचना, प्रणाली या घटना आदि का सरलीकृत संस्करण अथवा चित्रमय, प्रतीकात्मक भौतिक अथवा शाब्दिक प्रस्तुतीकरण करना ही मॉडल या प्रतिमान कहलाता है। प्रतिमान, जटिल प्रत्ययों से सम्बद्ध अनावश्यक घटकों को हटाकर, हमारी समझ को सुगम बना देता है।

मॉडल केवल उन्ही विशेषताओं एवं बिन्दुओं को केन्द्र में रखता है जो कि उस प्रतिमान के निर्माणकर्ता के लिए प्राथमिक रूप से महत्वपूर्ण थे। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र जैसे–प्रबन्धन, पर्यवेक्षण, अनुदेशन, मूल्यांकन आदि में विभिन्न प्रतिमान पाये जाते हैं। इसी प्रकार पाठ्यचर्या जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में भी प्रतिमान होते हैं। पाठ्यचर्या विकास के प्रतिमान में निम्नलिखित चार चरण सम्मिलित होते हैं –

- आवश्यकताओं की पहचान
- उद्देश्यों का प्रतिपादन व निरूपण
- विषय–वस्तु का चयन एवं व्यवस्थापन
- अधिगम अनुभवों का व्यवस्थापन मूल्यांकन

13.4 पाठ्यचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण

प्रत्येक पाठ्यचर्या निश्चित उद्देश्यों, आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुरूप निर्मित की जाती है। समाज में समय–समय पर उद्देश्यों, आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों में परिवर्तन होता रहता है। अतः इन्हीं प्रक्रियाओं में परिवर्तन होने के कारण पाठ्यचर्या विकास के प्रतिमान में भी परिवर्तन होते रहते हैं।

वर्तमान में प्रचलित पाठ्यचर्या प्रतिमानों को उपर्युक्त तीन तथ्यों के आधार तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। ये वर्ग निम्नलिखित हैं।

1– उद्देश्य या मूल्यांकन प्रतिमान।

2– प्रक्रिया प्रतिमान

3– परिस्थिति प्रतिमान

13.4.1 पाठ्यचर्या का उद्देश्य या मूल्यांकन प्रतिमान

पाठ्यचर्या विकास का यह प्रतिमान शैक्षिक उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का अत्यधिक महत्व प्रदान करता है। छात्रों के व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत वांछित परिवर्तन को देखकर निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की जानकारी होती है और इसी अनुरूप मूल्यांकन के आधार अधिगम प्रगति का ज्ञान होता है। इसी आधार पर इसे पाठ्यचर्या का उद्देश्य/मूल्यांकन प्रतिमान भी कहा जाता है। इस पाठ्यचर्या विकास का प्रतिमान में अग्रलिखित सोपान का अनुसरण किया जाता है। जिसे मूल्यांकन त्रिकोण भी कहा जाता है।

(1) शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण

(2) उद्देश्यों के अनुरूप अधिगम अनुभव

(3) वांछित व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन

13.4.2 पाठ्यचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान

इस पाठ्यचर्या प्रतिमान में शैक्षिक उद्देश्यों से अधिक शैक्षिक प्रक्रिया को महत्व दिया जाता है जिसमें शिक्षक की भूमिका को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसी प्रतिमान में पाठ्यवस्तु की सहायता से छात्रों में मानवीय गुणों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। अतः इसे मानवतावादी पाठ्यक्रम भी कहा जाता है। इस प्रतिमान मे शिक्षक को उत्तरदायित्व दिया जाता है कि शिक्षा की प्रक्रिया के दौरान छात्रों के विषयी ज्ञान से अवगत कराने के साथ ही उनमें मानवीय मूल्य को भी विकसित करता रहे। चूंकि इस प्रतिमान में मानवीय कल्याण को ध्यान में रखा जाता है इसलिए इसे 'मानव–व्यवस्था सिद्धान्त' पर आधारित प्रतिमान भी कहते हैं। जिसमें शिक्षक को अन्य दायित्वों के निर्वहन के साथ व्यवस्थापक की भी भूमिका निभानी होती है। दार्शनिकों ने शिक्षक को प्रबन्धक की संज्ञा भी दी है क्योंकि शिक्षक शिक्षा की प्रक्रिया में परिस्थितियों के अनुसार उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने के साथ शैक्षिक प्रक्रिया का पारगमन करता है। इस पाठ्यचर्या प्रतिमान के आधार पर पाठ्यचर्या को अनुभव केन्द्रित, कार्य केन्द्रित एवं एकीकृत पाठ्यचर्या के रूप में निर्मित किया जा सकता है।

13.4.3 पाठ्यचर्या का परिस्थिति प्रतिमान

इस प्रतिमान के अन्तर्गत शिक्षा तथा विद्यालय की परिस्थितियों को प्रभावित करने वाले कारकों को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाता है। इस प्रतिमान के अन्तर्गत सर्वप्रथम शैक्षिक परिस्थितियों के बाह्य एवं आन्तरिक घटकों की समीक्षा एवं मूल्यांकन कर उन घटकों की पहचान की जाती है। इस प्रतिमान में प्रणाली विश्लेषण उपागम का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार इस प्रतिमान में दो घटकों की पहचान की जाती है।

(1) आन्तरिक घटक

(2) बाह्य घटक

(1) आन्तरिक घटक :– आन्तरिक घटकों का सम्बन्ध कक्षा शिक्षण व विद्यालयी व्यवस्था से होता है, जो कक्षा शिक्षण एवं विद्यालयी व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। इन, आन्तरिक घटकों में छात्र की अधिगम के प्रति अभिवृत्तियों रूचियों, शिक्षण कौशल एवं अध्यापकों की विषयी प्रवीणता, नैतिकता एवं अभिवृत्तियाँ विद्यालय में उपलब्ध साधन (खेल–कूद, पुस्तकालय) तथा विद्यालयी वातावरण को सम्मिलित किया जाता है। इसके अतिरिक्त परीक्षा प्रणाली, पाठ्य–पुस्तकें तथा अन्य कारक भी व्यवस्था को प्रभावित करने के आन्तरिक कारक माने जाते है। इन उपलब्ध साधनों के नियोजन की दृष्टि से निर्मित पाठ्यचर्या प्रतिमान 'परिस्थिति प्रतिमान' कहलाता है।

(2) वाह्य घटक :– शैक्षिक वातावरण के बाह्य घटक की आन्तरिक घटकों के अनुपात में समान प्रभाव डालते है। इन घटकों में सामाजिक परिवर्तन अभिभावकों की अभिवृत्तियां एवं आकांक्षाओं में परिवर्तन समाज के लोगों की अपेक्षा में परिवर्तन तथा विषयों का आर्विभाव सम्मिलित होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. पाठ्यचर्या प्रतिमानों को जिन तथ्यों के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया उनके नाम लिखिए।

....

....

2. पाठ्यचर्या के परिस्थिति प्रतिमान के अन्तर्गत किन कारकों को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाता है।

....

....

13.5 पाठ्यचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण

स्वरूप के आधार पर पाठ्यचर्या प्रारूप को दो मुख्य भागों वर्गीकृत किया गया है।

4. पाठ्यचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान
5. पाठ्यचर्या विकास का विशिष्ट प्रतिमान

13.5.1. पाठ्यचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान

इस पाठ्यचर्या प्रतिमान का निर्माण शैक्षिक प्रक्रिया से सम्बन्धित शिक्षकों एवं अन्य सहभागी घटकों के सहयोग से सामान्यतः कर लिया जाता है। इस प्रतिमान के विकास में निम्न सोपानो का अनुसरण किया जाता है।

1. शिक्षक तथा शिक्षक प्रक्रिया के अन्य सजीव या मूर्त घटको के द्वारा पाठ्यचर्या के क्षेत्र का सर्वेक्षण तथा उपलब्ध साधनों का आकलन।
2. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण
3. शैक्षिक उद्देश्यों के अनुकूल पाठ्यवस्तु का चयन एवं निर्माण
4. विद्यालयों में पाठ्यवस्तु के पूर्व परीक्षण पुनः मूल्याकंन एवं संशोधन
5. पाठ्यवस्तु का पूर्व परीक्षण
6. पूर्व परीक्षण के आधार पर पाठ्य सामग्री का मूल्यांकन एवं आवश्यकतानुसार संशोधन
7. आवश्यकता पड़ने पर व्यापक स्तर पर पूर्व परीक्षण, पुनः मूल्यांकन तथा संशोधन
8. तैयार सामग्री का प्रकाशन एवं प्रसार एवं प्रशिक्षण
9. पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन
10. मूल्यांकन एवं आवश्यकतानुसर संशोधन।

13.5.2. पाठ्यचर्या विकास का विशिष्ट प्रतिमान

यह पाठ्यचर्या प्रतिमान पाठ्यचर्या विकास के विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों द्वारा तैयार किया जाता है, इस आधार पर ही इसे पाठ्यचर्या विकास का विशिष्ट प्रतिमान कहते है। विशेषज्ञों द्वारा विकसित कुछ प्रचलित पाठ्यचर्या प्रतिमान निम्नलिखित है।

1. पाठ्यचर्या विकास का व्यवस्था आधारित प्रतिमान
2. पाठ्यचर्या विकास का कार्यात्मक प्रतिमान
3. पाठ्यचर्या आयोजन का प्रक्रिया प्रतिमान
4. हिल्डा डाबा का व्यापक मूल्यांकन पाठ्यचर्या प्रतिमान
5. मुखोपाध्याय निर्मित पाठ्यचर्या प्रतिमान
6. सरन अदा प्रणाली पाठ्यचर्या प्रतिमान
7. टाइलर का पाठ्यचर्या प्रतिमान।
8. गुडलैंड का पाठ्यचर्चा विकास प्रतिमान
9. हनकिन्स का पाठ्यचर्चा विकास प्रतिमान

10.मिलर–सेलर का सामान्यीकृत मॉडल

1. पाठ्यचर्या विकास का व्यवस्था आधारित प्रतिमान

पाठ्यचर्या विकास का यह प्रतिमान पाठ्यक्रम या शिक्षा को एक निवेश के रूप में प्रदर्शित करता है। इस पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान का प्रतिपादन श्री एम0एस0 हक द्वारा किया गया है। यह प्रतिमान शिक्षा को निवेश के रूप में स्वीकार करता है तथा शिक्षित मानव शक्ति को उत्पाद के रूप में मानता है। इसके साथ यह प्रतिमान पाठ्यचर्या परिवर्तन के समय समाज द्वारा स्वीकृत मूल्यों को भी राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनिवार्य अंग (उत्पाद) के रूप में स्वीकार करता है।

2. पाठ्यचर्या का कार्यात्मक प्रतिमान

पाठ्यचर्या विकास के कार्यात्मक प्रतिमान का प्रतिपादन जॉन एफ0 केर ने प्रस्तुत किया। इस प्रतिमान में सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया से सम्बन्धित सभी घटकों का विश्लेषण किया जाता है। जिसे निम्नलिखित चित्र द्वारा समझा जा सकता है–

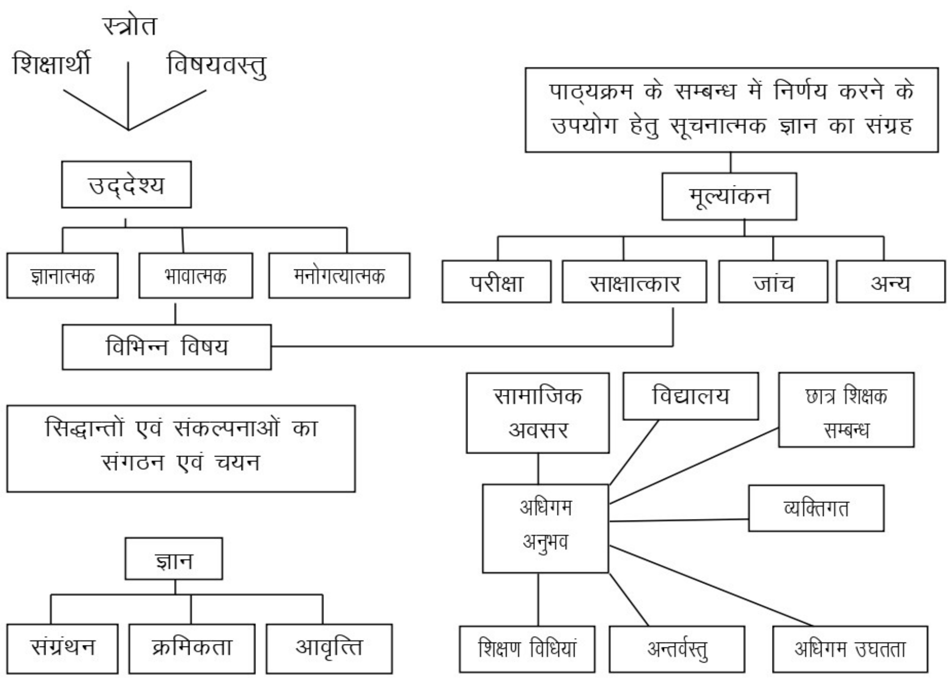

3. पाठ्यचर्या आयोजन का प्रक्रिया प्रतिमान

यह पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान सेलर तथा अलेग्जेडर द्वारा विकास किया गया। पाठ्यचर्या विकास का यह एक व्यवस्थित मॉडल प्रस्तुत करता है। इस प्रतिमान में पाठ्यचर्या नियोजन के निम्न सोपानों का अनुसरण किया जाता है।

(i) लक्ष्य उद्देश्य व क्षेत्र

(ii) पाठ्यचर्या अभिकलन

(iii) पाठ्यचर्या क्रियान्वयन

(iv) पाठ्यचर्या मूल्यांकन

(v) प्रतिपुष्टि तथा समायोजन

(i) **लक्ष्य उद्देश्य व क्षेत्र**

इस सोपान के अन्तर्गत पाठ्यचर्या का निर्माण किस स्तर के छात्रों के लिए किया जाना है यह सुनिश्चित किया जाता है तथा उस स्तर के छात्रों के किन व्यवहारों एवं ज्ञान का विकास करना है उस अनुरूप पाठ्यचर्या के उद्देश्य निर्धारित किये जाते है तथा क्षेत्र विशेष में आपेक्षित व्यवहार की संकल्पना की जाती है।

(ii) **पाठ्यचर्या अभिकलन**

निर्धारित किये गये लक्ष्य, उद्देश्य एवं क्षेत्रों के अनुरूप पाठ्यचर्या का प्रारूप तैयार किया जाता है जिसमें परिस्थितियों के अनुरूप अपेक्षित परिवर्तन सम्भव हो सके। यह निर्णय कक्षा स्तर विद्यालय स्तर या राष्ट्रीय स्तर पर लिये जाते है।

(iii) **पाठ्यचर्या क्रियान्वयन**

निर्मित प्रारूप के अनुरूप विद्यालय में पाठ्यचर्या शिक्षण की योजनाएं बनाई जाती है और छात्रों के सम्मुख उन्हें प्रस्तुत किया जाता है।

(iv) **पाठ्यचर्या मूल्यांकन**

छात्रों तथा अध्यापकों द्वारा पाठ्यचर्या के प्रभावी या अप्रभावी होने के सम्बन्ध में निर्णय लिया जाता है।

(v) **प्रतिपुष्टि एवं समायोजन**

प्रस्तुत पाठ्यचर्या योजना के सम्बन्ध में शिक्षकों एवं अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों के द्वारा पाठ्यचर्या निर्देशिकाओं के रूप में अपनी प्रतिपुष्टि लिपिबद्ध कर या अन्य रूप में प्रस्तुत की जाती है।

4. हिल्डा डाबा का व्यापक मूल्यांकन पाठ्यचर्या प्रतिमान

हिल्डा डाबा के अनुसार, ''पाठ्यचर्या का निर्माण उन्हीं लोगों के द्वारा किया जाना चाहिए जो लोग पाठ्यचर्या से सम्बन्धित है या जो पाठ्यचर्या का प्रयोग करने वाले हैं।'' इनके अनुसार अध्यापकों को अपने छात्रों के लिए शिक्षण–अधिगम सामग्री तैयार करनी चाहिए अर्थात परम्परागत निगमनात्मक उपागम के स्थान पर आगमनात्मक उपागम अपना कर उन्हें विशिष्ट से सामान्य का प्रयोग करके सामान्य पाठ्यचर्या का अभिकल्पन किया जाना चाहिए। हिल्डा डाबा ने अपनी पाठ्यचर्या योजना के आधारभूत मॉडल में सात सोपानों का वर्णन किया गया है जिसमें अध्यापकों को विशेष प्रयास करने होते हैं :–

1. आवश्यकताओं की पहचान, निदान या निर्धारण
2. उद्देश्यों का निर्माण
3. विषयवस्तु का चयन
4. विषयवस्तु का संगठन
5. अधिगम अनुभवों का चयन
6. शिक्षण अनुभवों का संगठन
7. मूल्यांकन

आलोचना

1. यह लोकतांत्रिक प्रतियोगिता को एक अत्यन्त तकनीकी और विशेषित प्रक्रिया में लागू करती है।

2. इस प्रतिमान की अवधारणा है कि अध्यापक पाठ्यचर्या कार्य में दक्ष होते हैं तथा इस काम के लिए उनके

पास पर्याप्त समय होता है।

नोट : इस पाठ्यचर्या प्रतिमान को आगमनात्मक पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान या ग्रास रूट उपागम भी कहते हैं।

5. मुखोपाध्याय निर्मित पाठ्यचर्या मूल्यांकन का प्रतिमान

मुखोपाध्याय द्वारा निर्मित यह पाठ्यचर्या प्रतिमान व्यापक मूल्यांकन पाठ्यचर्या प्रतिमान से काफी समानता रखता है। इस प्रतिमान में भी मूल्यांकन शब्द का प्रयोग ब्लूम के शिक्षण उद्देश्यों को क्रम में किया गया है। मुखोपाध्याय द्वारा इस प्रतिमान का विकास भारतीय परिस्थितियों के अनुसार किया गया। इस पाठ्यचर्या प्रतिमान में पाठ्यचर्या विकास को पाँच सोपानों में बाँटा गया है जिनके लिए दो अवस्थाएं निर्धारित की गई हैं।

प्रथम अवस्था

सोपान 1. आवश्यकताओं के अनुसार उद्देश्यों का निर्धारण।

सोपान 2. उद्देश्यों का विशिष्टीकृत करते हुए व्यावहारिक रूप में लिखना, पाठ्यवस्तु की व्यवस्था, अनुदेशन तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के स्वरूप को निश्चित करना जिससे छात्रों के व्यवहार में आपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।

सोपान 3. उपलब्ध साधनों का समुचित उपयोग।

द्वितीय अवस्था

सोपान 4– शिक्षकों एवं अन्य सम्बन्धित स्त्रोतों के आधार पर पाठ्यचर्या प्रारूप में सुधार।

सोपान 5– सुधार का मूल्यांकन करना।

6. सरन अदा प्रणाली पाठ्यचर्या प्रतिमान

अदा प्रणाली पाठ्यचर्या प्रतिमान का विकास भारतीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर श्री वाई0 सरन द्वारा 1976 में किया गया। भारतीय परिस्थितियों में निर्मित होने के कारण भारतीय परिवेश में यह प्रतिमान काफी प्रचलित हुआ। इस पाठ्यचर्या प्रतिमान में प्रणाली विश्लेषण के माध्यम से विशिष्ट उद्देश्यों को प्राथमिकता दी जाती है तथा पाठ्यचर्या को अदा–प्रक्रिया–प्रदा के आधार पर विश्लेषित किया जाता है व विश्लेषण के आधार पर पाठ्यचर्या का विकास एवं सुधार किया जाता है। इस प्रतिमान की प्रमुख मान्यताएँ निम्नलिखित है–

1. कोई भी पाठ्यचर्या पूर्ण नही होती उसमे सुधार एवं विकास की सम्भावना सदैव बनी रहती है।
2. एक नवनिर्मित पाठ्यचर्या में भी पूर्णता नही होती लेकिन उसकी कमियों एवं समस्याओं को दूर करके पाठ्यचर्या को उपयोगी व उन्नत बनाया जा सकता है।
3. प्रणाली विश्लेषण की सहायता से संशोधित की गई पाठ्यचर्या अधिक उपयोगी व उन्नत होती है।

अदा प्रणाली पाठ्यचर्या प्रतिमान में नौ सोपानों का अनुसरण किया जाता है, जो निम्नलिखित है–

1. **आवश्यकताओं के अनुमान हेतु सर्वेक्षण**– विभिन्न प्रदत्त संकलन तकनीकी का प्रयोग कर छात्रों, शिक्षकों एवं राष्ट्र तथा समाज की आवश्यकताओं का आकलन किया जाता है।
2. **भविष्य की आवश्यकताओं का आकलन**– इस स्तर पर समाज व राष्ट्र के भविष्य की आवश्यकताओं का अनुमान लगाया जाता है।
3. **उद्देश्यों की पहचान**– पूर्व के स्तरों पर अनुमानित की गई आवश्यकताओं के आधार शैक्षिक उद्देश्यों की पहचान की जाती है।
4. **उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखना**– इस स्तर पर रॉबर्ट मेगर विधि या क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मैसूर RCEM विधि का प्रयोग कर शैक्षिक उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखा जाता है।

5. पाठ्यवस्तु का चयन– शैक्षिक उद्देश्यों के अनुसार पाठ्यवस्तु का चयन किया जाता है।

6. मूल्यांकन प्रणाली का प्रारूप– पाठ्यचर्या के विकास एवं सुधार हेतु ठोस एवं परिभाषित मूल्यांकन प्रारूप का विकास किया जाता है।

7. संसाधनों का विकास– पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक संसाधनों का विकास किया जाता है।

8. जाँच करना–उद्देश्यों एवं समीक्षकों के सन्दर्भ में पाठ्यचर्या की सार्थकता की जाँच का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है।

9. समीक्षा– सम्पूर्ण प्रारूप की समीक्षा के पश्चात् पाठ्यचर्या को अन्तिम रूप दिया जाता है।

7. टाइलर का पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान

टाइलर ने अपनी पुस्तक Basic principle of curriculum and Instruction में पाठ्यचर्या विकास हेतु एक महत्वपूर्ण प्रतिमान प्रस्तुत किया। जिसके अनुसार पाठ्यचर्या विकास में दर्शन व मनोविज्ञान को मूल तत्व माना गया है। टाइलर के अनुसार पाठ्चर्या निर्माण से सम्बन्धित शिक्षाविदों को निम्नलिखित कारक को परिभाषित करने का प्रयास करना चाहिए।

1. विद्यालय के प्रयोजन उद्देश्य
2. प्रयोजनों से सम्बद्ध शैक्षिक अनुभव
3. अनुभवों का संगठन

प्रयोजनों व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मूल्यांकन पाठ्यचर्या विकास के टाइलर प्रतिमान को निम्नचित्र के द्वारा समझा जा सकता है–

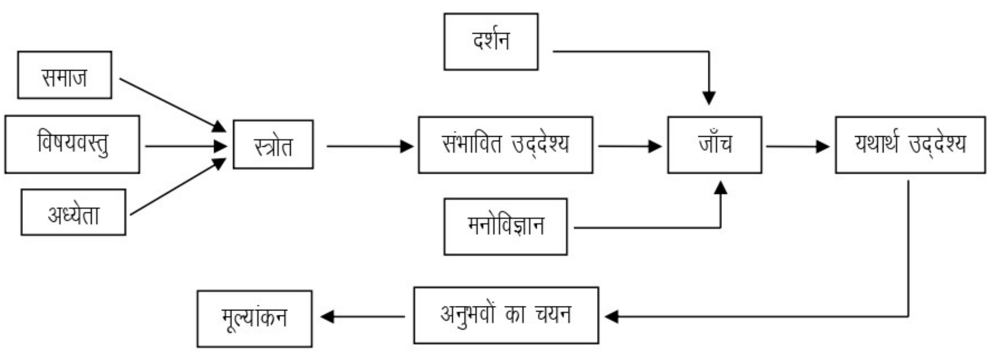

टाइलर प्रतिमान से स्पष्ट है उद्देश्यों का निर्धारण करने के लिए तीन स्त्रोतों से सूचना प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।

(1) समाज (2) विद्यार्थी (3) विषयवस्तु

उपरोक्त स्त्रोतों के आधार सामान्य उद्देश्यों का निर्धारण किया जायेगा। सामान्य उद्देश्यों के अनुसार विशिष्ट अनुदेशनात्मक उद्देश्य तय किये जायेंगे तत्पश्चात् सामान्य व विशिष्ट उद्देश्यों के आधार पर अधिगम अनुभव का पारगमन किया जाता है मुल्यांकन के अन्तिम उत्पाद के रूप में प्रतिपुष्ठि प्राप्त होती है जिससे निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई का निर्धारण किया जाता है।

8. गुडलैंड का पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान

यह पाठ्यचर्या प्रतिमान वर्तमान संस्कृति के मूल्यों का विश्लेषण करके शैक्षिक लक्ष्यों को निर्धारित करते है। और इन्ही शैक्षिक लक्ष्यों को व्यवहारिक अधिगम परिस्थितियों के अनुसार तय करके अधिगम अनुभव की

संकल्पना होती है।

9. हनकिन्स का पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान

यह पाठ्यचर्या प्रतिमान पाठ्यचर्या कार्यों में सम्मिलित नियोजक को परिस्थिति अनुसार अपने निर्णय को बदलने की सलाह देता है। यह मॉडल इस विषय पर आधारित है कि पाठ्यचर्या के दार्शनिक पक्ष–पाठ्यचर्या क्रियाकलापों का मार्गदर्शन करें। पाठ्यचर्या–अनुरक्षा के अन्तर्गत पाठ्यचर्या व्यवस्था के प्रबन्धन हेतु विभिन्न साधन सम्मिलित है जो किसी कार्यक्रम की निरन्तरता के लिए आवश्यक है।

10. मिलर–सेलर का सामान्यीकृत मॉडल

यह पाठ्यचर्या विकास का सामान्यीकृत मॉडल है। जो इस बात पर बल देता है कि पाठ्यचर्या विकास के सभी प्रतिमानों को पाठ्यचर्या नियोजन के समय निम्न तीन स्थितियों का पालन करें।

1. **प्रेषण अवस्था**– पाठ्यचर्या छात्रों को मूल्यों तथ्यों और कौशलों का प्रेषण करे।
2. **पारगमन अवस्था**– पाठ्चर्या का पारगमन अध्यापक व छात्रों में संवादात्मक प्रक्रिया द्वारा होना चाहिए।
3. **रूपान्तरण अवस्था**– पाठ्चर्या से व्यक्तिगत बदलाव तथा सामाजिक अभिवृत्तियों को प्रभावित किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

3. पाठ्यचर्या प्रारूप को कितने वर्गों में वर्गीकृत किया गया है, उनके नाम लिखिए।

....

....

4. गुडलैंड के पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान को लिखिए।

....

....

5. हनकिन्स का पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान को लिखिए।

....

....

13.6 सारांश

पाठ्यचर्या नियोजन के तत्वों तथा इन तत्वों के आपसी सम्बन्ध को प्रदर्शित करने की संरचनात्मक व्यवस्था ही पाठ्यचर्या विकास का प्रतिमान कहलाती है। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र जैसे– प्रबन्धन, पर्यवेक्षण, अनुदेशन, मूल्यांकन आदि में विभिन्न प्रतिमान पाये जाते हैं। इसी प्रकार पाठ्यचर्या जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में भी प्रतिमान होते हैं। पाठ्यचर्या विकास के प्रतिमान में निम्नलिखित चार चरण सम्मिलित होते हैं– आवश्यकताओं की पहचान, उद्देश्यों का प्रतिपादन व निरूपण, विषय–वस्तु का चयन एवं व्यवस्थापन, अधिगम अनुभवों का व्यवस्थापन मूल्यांकन। वर्तमान में प्रचलित पाठ्यचर्या प्रतिमानों को उपर्युक्त तीन तथ्यों के आधार तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। ये वर्ग निम्नलिखित हैं– उद्देश्य या मूल्यांकन प्रतिमान, प्रक्रिया प्रतिमान, परिस्थिति

प्रतिमान। स्वरूप के आधार पर पाठ्यचर्या प्रारूप को दो मुख्य भागों वर्गीकृत किया गया है– पाठ्यचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान, पाठ्यचर्या विकास का विशिष्ट प्रतिमान। पाठ्यचर्या नियोजन में उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न पाठ्यचर्या प्रतिमानों का उपयोग किया जाता है।

13.7 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या निर्माण के विविध प्रतिमानों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।
2. टाइलर के पाठ्यचर्या विकास प्रतिमान की व्याख्या कीजिए।
3. हिल्डा डाबा का व्यापक मूल्यांकन पाठ्यचर्या प्रतिमान का विस्तृत रूप प्रस्तुत कीजिए।
4. पाठ्चचर्या प्रतिमानों के नाम बताइये जो मानव व्यवस्था सिद्वान्त पर निर्भर करता है।

13.8 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या प्रतिमान की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ्यचर्या के वर्गीकरण पर चर्चा कीजिए।

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (i) उद्देश्य या मूल्यांकन प्रतिमान (ii) प्रक्रिया प्रतिमान (iii) परिस्थिति प्रतिमान
2. शिक्षा तथा विद्यालय की परिस्थितियों को प्रभावित करने वाले कारकों को ध्यान में रखकर
3. दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है– (ii) पाठ्यचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान (iii) पाठ्यचर्या विकास का विशिष्ट प्रतिमान
4. यह पाठ्यचर्या प्रतिमान वर्तमान संस्कृति के मूल्यों का विश्लेषण करके शैक्षिक लक्ष्यों को निर्धारित करते है। और इन्ही शैक्षिक लक्ष्यों को व्यवहारिक अधिगम परिस्थितियों के अनुसार तय करके अधिगम अनुभव की संकल्पना होती है।
5. यह पाठ्यचर्या प्रतिमान पाठ्यचर्या कार्यों में सम्मिलित नियोजक को परिस्थिति अनुसार अपने निर्णय को बदलने की सलाह देता है। यह मॉडल इस विषय पर आधारित है कि पाठ्यचर्या के दार्शनिक पक्ष–पाठ्यचर्या क्रियाकलापों का मार्गदर्शन करें। पाठ्यचर्या–अनुरक्षा के अन्तर्गत पाठ्यचर्या व्यवस्था के प्रबन्धन हेतु विभिन्न साधन सम्मिलित है जो किसी कार्यक्रम की निरन्तरता के लिए आवश्यक है।

13.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. त्यागी, ए. के., ज्ञान एवं पाठ्यचर्या, ग्लोबल एकेडमिक पब्लिशरस्, दिल्ली
2. Talla, Mrunalini, Curriculum Development-Perspective, Principles and Issue, Pearson Publication, Chennai
3. Arulsamy, Dr. S., Curriculum Development, Neelkamal Publication, New Delhi

इकाई – 14 : पाठ्यचर्या मूल्यांकन

इकाई की संरचना

14.1 प्रस्तावना

14.2 इकाई के उद्देश्य

14.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना

14.4 पाठ्यचर्या निर्माण के सोपान

14.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्य

14.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार

14.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

14.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व

14.9 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

14.10 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीक

14.11 सारांश

14.12 अभ्यास के प्रश्न

14.13 चर्चा के बिन्दु

14.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को जागृत कर उन्हें चरमोत्कर्ष पर ले जाना है। इसके द्वारा उसके व्यवहार में ऐसा परिवर्तन लाना है कि भविष्य की कठिनाइयों का सामना वह आसानी से कर जीवन को सरल तथा सहज बना सके शिक्षा मात्र जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि प्राप्त ज्ञान को कक्षा से इतर वास्तविक जीवन एवं वास्तविक परिस्थितियों में व्यवहार में लाना भी है। इस हेतु शिक्षा के कुछ लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं पाठ्यचर्या के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थी उन लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि पाठ्यचर्या के विभिन्न पथों एवं क्रियाकलापों में वे सन्निहित हों। पाठ्यचर्या बालक में उन शक्तियों, उन गुणों को जागृत करने में तथा भविष्य के लिए तैयार करने में सक्षम है यह जानने हेतु पाठ्यचर्या का मूंल्याकन करना आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई में प्राठयचर्या मूल्यांकन से सम्बंधित विभिन्न बिन्दूओं का अध्ययन किया जाएगा।

14.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग हो जाएंगे कि–

1. पाठ्यचर्या की संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे।
2. मूल्यांकन को परिभाषित कर सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना का विश्लेषण कर सकेंगे।

4. पाठ्यचर्या विकास के विभिन्न चरणों को बता सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
6. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों का अन्तर स्पष्ट करते हुए उनकी व्याख्या कर सकेंगे।
7. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को स्पष्ट कर सकेंगे।
8. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के महत्व को बता सकेंगे।
9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न चरणों की व्याख्या कर सकेंगे।
10. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली विभिन्न तकनीकों की व्याख्या कर पाएंगे।

14.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की अवधारणा

इस इकाई में मुख्य बिन्दूओं के साथ कुछ अन्य बिन्दूओं का अध्ययन किया जाएगा जो पाठ्यचर्या मूल्यांकन से सम्बन्धित है तथा पाठ्यचर्या मूल्यांकन को समझने हेतु उनका उल्लखे करना आवश्यक है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन में दो शब्द निहित है। पहला शब्द है पाठ्यचर्या और दूसरा मूल्यांकन सबसे पहले प्राठयक्रम क्या है? यहाँ हम अत्यन्त संक्षिप्त रूप में जानेंगे कि पाठ्यचर्या क्या है।

1. पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या को सभी अनुभवों योग या राशि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक शैक्षिक संस्थान में प्रदान किए जाते है **व्हीलर (1967)** के अनुसार पाठ्यचर्या का अर्थ विद्यालय के मार्गदर्शन में शिक्षार्थियों को नियोजित अनुभवो को देना है। **टैनर एवं टैनर (1975)** ने भी पाठ्यचर्या को नियोजित एवं निर्देशित शिक्षण अनुभवों के रूप में माना है जो विद्यार्थियों में विद्यालय के तत्वावधान में व्यवस्थित पुनर्निर्माण के माध्यम से ज्ञान एवं अनुभवो के द्वारा विद्यार्थी का अकादमिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षमता में सतत एवं वांछित विकास करती है।

इस प्रकार से देखा जा सकता है कि पाठ्यचर्या उन अनुभवों का संकलन है जो विद्यालय के परिवेश में शिक्षार्थी को दी जाती हैं परन्तु कुछ विद्वान इसे मात्र विद्यालय के वातावरण में दिए जा रहे अनुभवों से जोड़कर नहीं देखते बल्कि इसे उच्चतर जीवन के लिए की जा रही प्रत्येक क्रियायें जो प्रतिदिन और दिन के प्रति घंटे में की जाती है, से जोड़कर देखते है। पाठ्यचर्या की परिभाषाओं को देखा जाए तो ये मात्र विद्यालय और विद्यालयी अनुभवों एवं विद्यालय में दिया जा रहा ज्ञान ही नहीं है बल्कि इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है। फ्रोबेल के अनुसार ''पाठ्यक्रम सम्पूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए'' इस प्रकार विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या जीवन जीने के लिए आवश्यक कला को सीखने मे मदद करती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्यचर्या को परिभाषित करते हुए कहा है कि–पाठ्यचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धांतिक विषयों सें नही है जो विद्यालियों मे परंपरागत रूप से पढायें जाते हैं, बल्कि इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं विद्यार्थियों के अनेक अनौपचारिक संबंधों से प्राप्त करता है इस प्रकार से विद्यालय का संपूर्ण जीवन पाठ्यचर्या ही हो जाता है जो विद्यार्थियों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है और उनके संतुलित व्यक्तित्व के विकास मे सहायता देती है।

विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या का अर्थ मात्र विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रम से नहीं है बल्कि विद्यालय से बाहर के भी उन अनुभवों से है जो दिन के प्रत्येक घटें मे विद्यार्थी आजीवन प्राप्त करता रहता है। किन्तु समस्या यह है की विद्यालय से बाहर के अनुभवों को नियोजित नहीं किया जा सकता है या उन्हें मूल्यांकित कर उनमें संशोधन या परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत पाठ में पाठ्यचर्या के रूप में विद्यालय के अन्दर चलाए जा रहे शैक्षिक कार्यक्रम को ही सम्मिलित करेंगे।

2. मूल्यांकन

मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह दो शब्दों से मिलकर बना है मूल्य तथा अंकन अर्थात किसी भी चीज को मूल्य प्रदायित करना या मूल्य का निर्धारण करना **रेमर्स तथा गेज (1955)** ने मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''मूल्यांकन के अंतर्गत व्यक्ति या समाज या दोनों की दृष्टि से जो उत्तम एवं वांछनीय हो उसका ही प्रयोग किया जाता है।''

प्रो दांडेकर ने मूल्यांकन की परिभाषा इस प्रकार दिया है ''मूल्यांकन की परिभाषा एक व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप की जा सकती है जो इस बात को निश्चित करती है की किस सीमा तक विद्यार्थी शैक्षिक उद्देश्य प्राप्त करने में समर्थ रहा है।''

कोठारी कमीशन ने मूल्यांकन की व्याख्या इस प्रकार से की है ''अब यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है जो कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा उसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है।

NCERT के अनुसार ''यह एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जो देखती है कि– (1) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों (Specified Educational Objectives) की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है (2)कक्षा में दिये गए अधिगम अनुभव (Learning Experiences) कितने प्रभावशाली रहे हैं तथा शिक्षा के लक्ष्य (Goals of education) कितने अच्छे से पूर्ण हो रहे है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया में सम्बंधित है जो यह सुनिश्चित करता है की किन–किन उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है।

3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन

पाठ्यचर्या विकास का एक अभिन्न अंग पाठ्चक्रम मूल्यांकन है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह पाठ्यचर्या एवं मूल्यांकन दोनों को अपने अन्दर समेटे हुए है। अगर इसे और भी स्पष्ट रूप में कहा जाय तो यह कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत दो अति महत्वपूर्ण तथ्य समाहित हैं, प्रथम, यह कि जिन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित पाठ अथवा पाठ्यचर्या का अध्यापन किया गया है उनमें से किन–किन उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है और इसके साथ ही साथ कौन–कौन से उद्देश्य अप्राप्य रह गये हैं, द्वितीय; यह कि कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति छात्रों के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं। यही नहीं चूँकि पाठ्यचर्या स्वयं में एक अति विस्तृत अवधारणा है जो अपने अन्दर पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु तथा इसके साथ–साथ पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को भी लिए हुए है तो पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत इन सभी का मूल्यांकन भी सम्मिलित किया जाता है कि उपर्युक्त सभी के साथ विद्यार्थी के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं।

Mc Neil (1977) के अनुसार, ''पाठ्यचर्या मूल्यांकन में दो प्रश्नों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाता है; क्या नियोजित अधिगम अवसरों, कार्यक्रमों, पाठ्चर्या और गतिविधियों का विकास एवं आयोजन इस प्रकार किया गया कि वे वांछित परिणाम ला सकते हैं? सीखने के रूप में विकसित की गयी है और आयोजन वास्तव में वांछित परिणाम का उत्पादन करने की योजना बनाई गई है? आयोजित पाठ्यचर्या में सर्वोत्तम होने के लिए सुधार किस प्रकार हो सकता है?

Worthen & Sanders (1987) ''पाठ्यचर्या मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन ''किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है।''

Gay (1985) के अनुसार, ''पाठ्यचर्या मूल्यांकन का लक्ष्य पाठ्यचर्या से सम्बंधित दुर्बल एवं सबल पक्षों के साथ–साथ कार्यान्वयन में आई समस्याओं की पहचान करना, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार करना, पाठ्यचर्या एवं आवंटित वित्त की प्रभाव– कारिता का निर्धारित करना है।''

पाठ्यचर्या में उद्देश्यों एवं अनुभवों की प्राप्ति को दो स्तरों पर मूल्यांकित किया जा सकता है। इसमें एक मूल्यांकन को शिक्षक के द्वारा किये गये मूल्यांकन के रूप में देखा जा सकता है जो छोटे स्तर तथा अनुभवों का मापन एवं मूल्यांकन करता है और दूसरे स्तर पर पाठ्यचर्या का वृहद् और विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है जिसमें संपूर्ण पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है कि पाठ्यचर्या कितना प्रभावी रहा है अर्थात् संपूर्ण पाठ्यचर्या किस स्तर तक विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन करने में सक्षम हुआ है तथा साथ ही विद्यार्थी के अनुभव कैसे रहे हैं।

पाठ्यचर्या को संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए। इसके अभाव में पाठ्यचर्या को सही नहीं माना जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

1. ''पाठ्यक्रम संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।'' पाठ्यचर्या की यह व्यापक परिभाषा किस विद्वान ने दी है ?

   ....

   ....

2. मूल्यांकन की अधोलिखित परिभाषा किसके द्वारा दी गयी है ?

   ''मूल्यांकन एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जो देखती है कि –

   (अ) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है।

   (ब) कक्षा में दिये गये अधिगम अनुभव कितने प्रभावशाली रहें हैं तथा शिक्षा के लक्ष्य कितने अच्छे से पूर्ण हो रहें हैं।

   ....

   ....

3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत किन महत्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन किया जाता है ?

   ....

   ....

14.4 पाठ्यचर्या निर्माण के चरण

कोई भी पाठ्यचर्या कई स्तरों या चरणों से गुजरता हुआ सम्पूर्णता को प्राप्त करता है और यह सम्पूर्णता भी समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही होती है जिसमें समाज की नयी आवश्यकताओं को देखते हुए पुराना पाठ्यचर्या अव्यावहारिक हो जाता है। पाठ्यचर्या के निर्माण में कई चरण होते हैं इन सभी चरणों से गुजरते हुए ही पाठ्यचर्या अपने वास्तविक रूप में आता है। ये चरण इस प्रकार हैं –

1. पाठ्यचर्या आवश्यकता विश्लेषण चरण

2. पाठ्यचर्या अभिकल्प चरण
3. पाठ्यचर्या क्रियान्वयन चरण
4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन चरण

पाठ्यचर्या के निर्माण की प्रक्रिया को इस रेखाचित्र (13.1) के माध्यम से समझा जा सकता है –

रेखाचित्र : 13.1 पाठ्यचर्या विकास के चरण

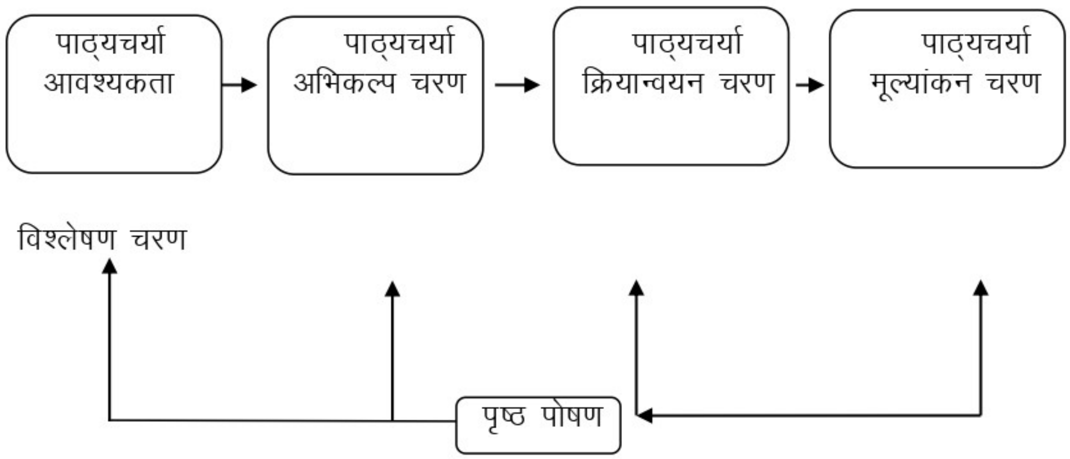

निर्माण के प्रथम चरण में सर्वप्रथम यह निर्धारित किया जाता है कि किन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाना है। तद्पश्चात उन आवश्यकताओं के आधार पर पाठ्यचर्या की डिजाइन या प्रारूप तैयार किया जाता है। प्रारूप के निर्माण के पश्चात् उस पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन किया जाता है और उसके उपरांत पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इन सभी स्तरों पर विशेषज्ञों द्वारा पृष्ठ–पोषण लिया जाता रहता है। तथा उसके आधार पर हर एक स्तर पर संशोधन भी किया जाता रहता है।

14.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य

पाठ्यचर्या मूल्यांकन कुछ उद्देश्यों को लेकर किये जाते हैं। मूल्यांकन से सम्बन्धित विभिन्न उद्देश्य इस प्रकार है –

1. पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु
2. पुराने पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु
3. व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु
4. प्रशासनिक नियमन हेतु

14.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार

जैसा की पहले ही बताया जा चुका है कि पाठ्यचर्या का मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण एवं विकास से सम्बन्धित एक अहम् बिन्दु है जिसके अभाव में पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु कई विधियों का प्रयोग किया जाता है जो पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार के रूप में इस खंड में वर्णित हैं। बिना मूल्यांकन के पाठ्यचर्या उन उद्देश्यों की पूर्ति करेगा अथवा नहीं, जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है, के विषय में भविष्यवाणी नहीं की जा

सकती है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के ये प्रकार मूल्यांकन की प्रक्रिया को अत्यन्त व्यापक बना देते हैं। मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं–

1. निर्माणात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन

निर्माणात्मक मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के दौरान किया जाता है। निर्माणात्मक मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए आंकड़ों का संकलन पाठ्यचर्या की योजना, विकास अथवा निर्माण के दौरान किया जाता है जिसके द्वारा निर्माण के दौरान निर्माण के दौरान ही पाठ्यचर्या का पुनरावलोकन करते हुए दोषों को दूर किया जा सके। इस पकार से निर्माणत्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या में संशोधन का अवसर देता हे। निर्माणात्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण के जिन प्रयोजनों में सहायक सिद्ध होते हैं वे हैं, (1) पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों का चयन एवं (2) पाठ्यचर्या में शामिल दूषित तत्वों का संशोधन। निर्माणात्मक मूल्यांकन सर्वप्रथम यह निश्चित करता है कि पाठ्यचर्या की आवश्यकता किसे है, उसे पाठ्यचर्या की आवश्यकता किस सीमा तक है और निर्धारित पाठ्यचर्या किस प्रकार उन आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। शिक्षा में निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य पाठ्यचर्या या कार्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए सूचनाएं इकट्ठा करना है। पाठ्यचर्या में संशोधन के लिए मूल्यांकन दो स्तरों पर किया जाता है पहला पाठ्यचर्या विकास के प्रक्रिया स्तर पर जहाँ प्रक्रिया का मूल्याकंन किया जाता है तथा दूसरा पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन स्तर पर जहाँ विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है।

योगात्मक मूल्यांकन के अंतगर्त आंकड़ों का संकलन पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के उपरांन्त किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन तब किया जाता है जब कोई नवीन पाठ्यचर्या को लागू किया गया हो। इसके लिए नये कार्यक्रम को लागू करने के सम्पूर्ण वर्ष के पश्चात् या कुछ महीनों के पश्चात् परीक्षा के माध्यम से पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन में मूल्यांकन से पूर्व यह निश्चित कर लेने की आवश्यकता होती है कि मूल्यांकन के द्वारा किन प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने का प्रयास किया जा रहा है तथा मूल्यांकन द्वारा प्राप्त परिणामों से क्या निर्णय लिये जायेंगे इसमें यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थियों ने पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त किया है अथवा नहीं इन परिणामों का निर्धारण औपचारिक मूल्यांकन जैसे परीक्षाओं में प्राप्त अंको के आधार पर किया जा सकता है। यह इसका भी मूल्यांकन करता है कि क्या नवाचार प्रभावी था, क्या पाठ्यचर्या को पूरा करने के लए पर्याप्त समय दिया गया, क्या प्राप्त परिणामों में कुछ ऐसे भी परिणामों थे जो अप्रत्याशित थे?

निर्माणात्मक और योगात्मक मूल्यांकन को रोबर्ट स्टेक्स के इस कथन से समझा जा सकता है कि श्When the cook tastes the soup, that's formative evaluation; When the guests taste the soup, that's summative evaluation" अर्थात् जब कुक यानि भोजन पकाने वाला सूप चखेंगे तो यह योगात्मक मूल्यांकन होगा, जब मेहमान सूप चखेंगे तो वह योगात्मक मूल्यांकन होगा।

2. निष्कर्ष संदर्भित तथा मानक संदर्भित मूल्यांकन

निकष संदर्भित परीक्षण के द्वारा भी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करते हैं। इस प्रकार के मूल्यांकन में सर्वप्रथम पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों की सूची तैयार की जाती है इस सूची में सभी उद्देश्य व्यवहारात्मक रूप में लिखे गये होते हैं। साथ ही साथ कसौटियों के परीक्षण के लिए परिस्थितियों का भी निर्धारण किया जाता है। इसके साथ ही मूल्यांकनकर्ता इसका निर्धारण भी करता है कि किस सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति पर पाठ्यक्रम को उपयुक्त माना जायेगा। इसके बाद विद्यार्थियों का परीक्षण किया जाता है और यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है। अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है। मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है किसी अन्य पाठ्यचर्या को मानक मानते हुए उसके सापेक्ष में नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार के पाठ्यचर्या मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के दो सेट होते हैं और जिसमें एक का मानकीकरण पहले किया जा चुका हो होता है। मानकीकृत पाठ्यचर्या के सापेक्ष में नवीन पाठ्यचर्या का मूल्यांकन उससे सहसम्बन्धित करते हुए किया जाता है।

3. पूर्व तथा पश्चिम परीक्षण

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए पूर्व तथा पश्च परीक्षण सामान्यतया सर्वाधिक प्रयोग में लाया जाता है। इस मूल्यांकन विधि में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या समाप्त होने के पश्चात सत्रोपरांत में विद्यर्थियों के व्यवहार परिवर्तन के आंकलन हेतु किया जाता। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इस परीक्षण में दो बार परीक्षा ली जाती है एक पहले और दूसरी बाद में। दो बार के व्यवहार के आकलन हेतु परीक्षणों के दो सेट पहले ही तैयार कर लिये जाते है। किसी पाठ्यचर्या को पढ़ाने से पूर्व ही एक सेट का प्रशासन विद्यार्थियों पर करके विशिष्ट क्षेत्र में उनके ज्ञान का मूल्यांकन कर लिया जाता है। तत्पश्चात विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यचर्या का पढ़ाया जाता है। उसके बाद विद्यार्थियों पर दूसरे सेट का प्रशासन कर व्यवहार एवं ज्ञान में आए परिवर्तन का आकलन किया जाता है। विद्यार्थियों के ज्ञान में आए सकारात्मक अंतर को पाठ्यचर्या का परिणाम माना जाता है साथ ही यह भी देखा जाता है की जिन उद्देश्यों की प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया था वे उद्देश्य प्राप्त हुए हैं की नही। यदि व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आया है और उद्देश्यों की प्राप्ति निश्चित सीमा तक हो गयी है तो पाठ्यचर्या को प्रभावशाली मान लिया जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

4. ''पाठ्यचर्या मूल्यांकन के कौन–कौन से उद्देश्य हैं ?

....

....

5. ''पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार बताइए ?

....

....

6. निर्माणात्मक मूल्यांकन के परिणाम पाठ्यचर्या निर्माण के किन–किन प्रायोजनों में सहायक सिद्ध होते हैं ?

....

....

14.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

समाज की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यचर्या में परिवर्तन होता है। यदि बहुत लम्बे समय तक किसी पाठ्यचर्या में परिवर्तन या संशोधन न किया जाए तो परिवर्तनशील युग के लिए पाठ्यचर्या पुराना हो जायेगा और नवीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ और प्रभावी सिद्ध नहीं होगा। समय के साथ नवीन ज्ञान अथवा तथ्यों का पाठ्यचर्या में समावेष किया जाना अनिवार्य है। अतएव समय–समय पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है ताकि इसे समय की मांग के हिसाब से प्रभावी बनाया जा सके। इस प्रकार पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण/विकास का एक अभिन्न अंग है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

1. नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु

किसी भी नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक है। वास्तव में समाज को

उपयुक्त दिशा पर ले जाने का बोझ शिक्षा के ऊपर ही है। किसी भी नवीन पाठ्यचर्या को बिना मूल्यांकित किए विद्यालयों में लागू नहीं किया जा सकता है। पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में यह देखा जाना आवश्यक है कि वह शिक्षा से जुड़े लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है अथवा नहीं। अतः नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण के साथ छात्रों पर उसके क्रियान्वयन से पहले पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक होता है।

2. पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु

जो ज्ञान आज नवीन है समय के साथ कल पुराना हो जाएगा और उसके पश्चात वह अप्रचलित हो जाएगा। ऐसी निष्क्रिय सामग्री को पाठ्यचर्या से हटाना अनिवार्य हो जाता है। पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के द्वारा इन सामग्रियों को पाठ्यचर्या से हटाया जा सकता है। अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाने हेतुः अप्रचलित और निष्क्रिय सामग्रियों को हटाने के साथ सामयिक तथ्यों को पाठ्यचर्या में जोड़ा जाना भी आवश्यक है ताकि पाठ्यचर्या व्यावहारिक एवं उपयुक्त बना रहे। इस नवीन ज्ञान, तथ्य, सामग्रियों को पाठ्यचर्या में शामिल किया जाता है। इन तथ्यों को सही रूप में पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने के लिए पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक होता है।

3. पाठ्यचर्या की व्यवहारिकता एवं प्रभावशीलता ज्ञात करने हेतु

इसी प्रकार कोई पाठ्यचर्या सैद्धान्तिक रूप से अच्छा हो सकता है परन्तु आवश्यक नही कि वह व्यावहारिक रूप से प्रयुक्त किया जा सकें। उसकी निष्पत्ति में कई समस्याएं हो सकती है। उदाहरण स्वरूप—वर्तमान युग के लिए कम्प्यूटर शिक्षा आवश्यक है और इसे पाठ्यचर्या में शामिल किया जाना चाहिए। परन्तु इसे हर जगह व्यावहारिक बनाना संभव नही है। भारत में कई गाँव ऐसे है जहाँ बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे स्थानों के विद्यालयों में कम्प्यूटर की शिक्षा देना संभव नही है यदि दी जाती है तो छात्रों के लिए उतनी व्यावहारिक नही है जितना कृषि या कोई अन्य विषय होगा। ऐसे में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा ऐसे विषयों में परिशोधन किया जा सकता है और पाठ्यचर्या तथा शिक्षा की प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकता है। शिक्षा के उत्पाद के सम्बन्ध में जानकारी हेतुः शिक्षा मात्र विषय की जानकारी देने से सम्बंधित न होकर मनुष्य को सही रूप में संसाधन बनाने से भी सम्बंधित है। पाठ्यचर्या के द्वारा व्यक्ति की कुशलता में वृद्धि हो रही है या नहीं और वह समाज और देश के लिए कितना उपयोगी सिद्ध होगा यह आँकलन करना भी आवश्यक है। इसके लिए निवेश और उसके पश्चात उत्पादन का विश्लेषण किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा इसे ज्ञात किया जा सकता है।

14.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व

पाठ्यक्रम का मूल्यांकन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या स्वयं है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन का सबसे बड़ा महत्व यह कि अधिगम के सुधार के साथ— साथ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु यह सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। बिना मूल्यांकन के पाठ्यचर्या को उपयुक्त नही माना जा सकता है। पाठ्यक्रम मूल्यांकन के महत्व निम्नलिखित है—

किसी भी स्तर पर नये पाठ्यचर्या के विकास हेतु पुराने पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है कि विद्यमान पाठ्यचर्या में कहाँ कमी है तथा किन संशोधनों के पश्चात पाठ्यचर्या नयी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के अनुरूप हो जायेगी। नयी पाठ्यचर्या के विकास पर निर्णय के लिए चल रहे पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है।

पाठ्यक्रम मूल्यांकन के द्वारा नीति निर्माताओं, प्रशासकों और समाज के अन्य सदस्यों को सूचना मिल जाती है कि निर्मित पाठ्यचर्या आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम है कि नहीं। इसके साथ ही इसकें द्वारा शिक्षकों, पाठ्यचर्या विशेषज्ञों, विद्यालय प्रशासकों और उन सभी को जो पाठ्यक्रम विकास में सम्मिलित होते हैं उन्हें भी पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में जानकारी मिल जाती है। यह पाठ्यचर्या के मजबूत और कमजोर पक्षों के सम्बन्ध में पृष्ठपोषण प्रदान करता है कि पाठ्यचर्या मानकों के अनुरूप है अथवा नही।

पाठ्यचर्या समय के साथ पुराना होने लगता है तथा समय के साथ उसमें वर्णित तथ्य तथा विचार अव्यवहारिक हो जाते हैं जिन्हें हटाकर नए तथ्यों को सम्मिलित करना आवश्यक हो जाता है जिससे पाठ्यचर्या व्यवहारिक और उपयोगी बना रहे। यदि पुराने तथ्य या ज्ञान व्यवहारिक और उपयोगी हो तब भी पाठ्यचर्या में समय के साथ आए परिवर्तनों से संबंधित ज्ञान को जोड़ा जाना जरूरी होता है ताकि पाठ्यचर्या वर्तमान की मांग को पूरी कर सके।

पाठ्यक्रम का निर्माण विभिन्न उद्देश्यों के आधार किया जाता है। उन उद्देश्यों की प्राप्ति पाठ्यचर्या का लक्ष्य होता है। अतः यह देखना अत्यन्त जरूरी है कि जिन उद्देश्य की प्राप्ति लिए पाठ्यचर्या का निर्माण किया गया है क्या वे उद्देश्य पूर्ण हो रहे हैं। पाठ्यचर्या एक विशेष समूह के लिए भी निर्मित किया जाता है तो मूल्यांकन के द्वारा यह निश्चित किया जाता है की उन विशेष समूहों की आवश्यकता को पाठ्यचर्या पूरी कर रहा है या नहीं। पाठ्यचर्या मात्र सूचना देने या जानकारी देने से संबंधित नहीं हैं। मूल्यांकन के द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है की पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को ज्ञान देने के साथ–साथ उनमे गहरी समझ का विकास करने में भी सक्षम है।

14.9 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसके विभिन्न चरणों से गुजरते हुए मूल्यांकन कार्य किया जाता है। इस प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को चार भाग में विभाजित किया जा सकता है, जो आरेख 13.2 के माध्यम से समझा जा सकता है –

आरेख : 13.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

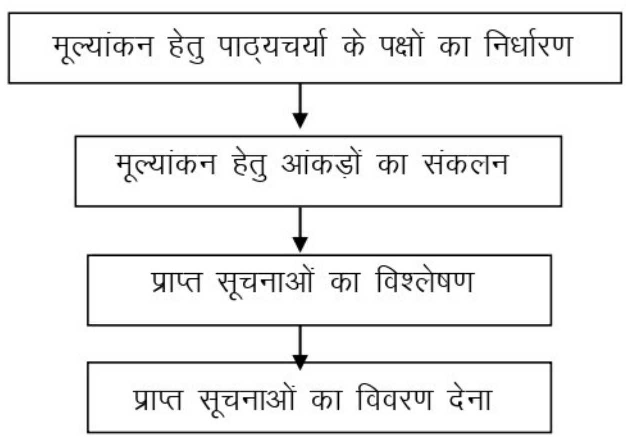

1. मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण

मूल्यांकनकर्ता सर्वप्रथम यह निर्धारित करता है कि पाठ्यचर्या के किन पक्षों का मूल्यांकन किया जाना है। इस हेतु वह सर्वप्रथम मूल्यांकन क्रिया के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

2. मूल्यांकन हेतु आंकड़ों का संकलन

मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों के निर्धारण के पश्चात मूल्यांकनकर्ता आंकड़ो का संग्रहण करता है। इस हेतु वह पहले उन सूचनाओं को चिन्हित करता है जिनका संग्रहण किया जाना है साथ ही सूचनाओं के संग्रहण हेतु जिन उपकरणों का प्रयास किया जाने वाला है उनका भी चयन किया जाता है। उपकरणों के रूप में साक्षात्कार, परीक्षण, प्रश्नावली, अनुसूचियों इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इस क्रम में उस जनसंख्या को चिन्हित तथा प्रतिदर्शों को सूचीबद्ध किया जाता है। जिनपर उपकरणों का प्रशासन कर सूचनाओं का संग्रहण

किया जाता है।

3. प्राप्त सूचनाओं का विश्लेशण

प्राप्त आंकड़ों का तद्पश्चात विश्लेषण किया जाता है और उन्हें तालिका एवं ग्राफ के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके हेतु उद्देश्यों, आंकड़ों एवं उपकरणों के आधार पर सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकी का प्रयोग अक्सर दो या अधिक पाठ्यचर्या के मध्य सार्थक अंतर या सहसंबंध जानने के लिए किया जाता है।

4. प्राप्त सूचनाओं का विवरण देना

आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त सूचनाओं का विवरण दिया जाता है। विवरणों का लेखन प्राप्त निष्कर्षों का लेखन इस चरण में किया जाता है। निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मापन किया जाता है। जिन उद्देश्यों की प्राप्ति नही हुयी होती है उनके लिए पाठ्यचर्या के कुछ पहलुओं पर पुनर्विचार करने हेतु संस्तुतियां की जाती है।

14.10 मूल्यांकन प्रक्रिया की तकनीक

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कई तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है। सभी तकनीकों का यहाँ पर वर्णन करना मुश्किल है अतः उनमें से कुछ मुख्य तकनीकों का वर्णन यहाँ पर किया जाएगा।

1. प्रश्नावली

प्रश्नावली का प्रयोग पाठ्यचर्या से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों से जुड़े Stakeholders पर किया जाता है जिसमें छात्र, अध्यापक, माता–पिता, प्रशासक एवं पाठ्यचर्या निर्माण से जुड़े अन्य व्यक्ति आ जाते हैं। इन्हें पाठ्यचर्या से जुड़े विभिन्न प्रश्न दिए जाते हैं जिनका उत्तर इन्हें देना होता है।

2. प्रेक्षण

यह पाठ्यचर्या के सम्पादन से संबंधित है। प्रेक्षण तकनीक मूल्यांकनकर्ता को मूल्यांकन प्रक्रिया के हेतु सर्वाधिक संबंधित पहलू पर विशेष ध्यान देने में मदद करता हैं। यह विधि उस स्थिति में अधिक वैध मानी जाती है जब इसमें व्यक्तिनिष्ठता एवं वस्तुनिष्ठता का उचित समावेष होता है। प्रेक्षण के साथ– साथ साक्षात्कार एवं पृष्ठ–पोषण तथा इसके साथ ही साथ अन्य लिखित साक्ष्य प्रेक्षण से प्राप्त परिणामों कि सार्थकता में वृद्धि करते हैं।

3. चेक लिस्ट

चेक लिस्ट को मात्र प्रयोग करके इसके द्वारा पूर्ण जानकारी प्राप्त करना कठिन कार्य है अतः चेक लिस्ट को प्रश्नावली या साक्षात्कार के साथ एक पूरक या भाग के रूप में प्रयोग करते है। यह उत्तरों की संपूर्ण सूची होती है उत्तरदाता जिसमें अपने हिसाब से सबसे उपयुक्त उत्तरों को चुनता है अर्थात सही उत्तरों की सूची में से कुछ उत्तरों को अपने विचार के आधार पर सही मानता है और उन्हें सही के निशान से चयनित कर लेता है। मूल्यांकनकर्ता को पाठ्यचर्या से सम्बंधित विभिन्न तथ्यों को सूचीबद्ध कर उन्हें उत्तरदाता को दे देना चाहिए एवं इसकें द्वारा पाठ्यचर्या में किन बिन्दुओं में समस्याएं है, किन पाठों की आवश्यकता नही है, कौन से पाठ अप्रांसगिक हैं, कहां संशोधन की आवश्यकता है और कौन से नए पक्ष जोड़े जाने चाहिए, की जानकारी ली जा सकती है।

4. साक्षात्कार

साक्षात्कार, सूचनाओं के संग्रहण एवं मूल्यांकन हेतु एक आधारभूत तकनीक के रूप में देखा जाता है। साक्षात्कार आवश्यकताओं और उद्देश्यों के आधार पर औपचारिक एवं अनौपचारिक अथवा संगठित तथा असंगठित कैसा भी हो सकता है। इसके लिए पाठ्यचर्या से संबंधित जिन सूचनाओं की प्राप्ति साक्षात्कार के माध्यम से करनी है वह उचित प्रकार से परिभाषित एवं लिखित होना चाहिए एवं प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण उचित प्रकार से

होना चाहिए। अर्थात साक्षात्कारकर्ता के द्वारा प्रश्न उचित प्रकार से पूछे जाने चाहिए और किसी भी प्रकार की जल्दबाजी और पक्षपात नहीं करना चाहिए। मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में किसी विशेषज्ञ से उचित प्रश्न पूछे जाएं और फिर उन उत्तरों के आधार पर पाठ्यचर्या को मूल्यांकित किया जाना चाहिए।

5. कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कार्यशालाओं और समूह परिचर्चाओं का प्रयोग किया जाता है। इस तकनीक में विशेषज्ञों को पाठ्यचर्या पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया जाता है और तद्पश्चात समूह परिचर्चा करायी जाती है और निर्धारित निष्कर्षों के आधार पर जो कि मूल्यांकनकर्ता के द्वारा निर्धारित की गयी होती हैं, पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या के विकास एवं उसके क्रियान्वयन के किए उपयोगी जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया एवं माध्यम है। यदि इसे और स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह इस भांति समझा जा सकता है कि किसी भी पाठ्यचर्या का निर्माण कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया जाता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि निर्धारित पाठ्यचर्या के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हो रही है अथवा नहीं और यदि हुयी है तो उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हुए हैं। मूल्यांकन के अभाव में पाठ्यचर्या दिशाहीन हो जायेगा और दिशाहीन पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को कहां ले जायेगा इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती हैं। जिस प्रकार से गंतव्य का ज्ञान होने के पश्चात भी यदि चुना गया मार्ग सही नहीं हो तो गंतव्य तक नहीं जाया जा सकता ठीक उसी प्रकार शिक्षण उद्देश्यों की जानकारी होने पर यदि पाठ्यचर्या सही नहीं हो तो निर्धारित उद्देश्यों तक कभी नहीं पहुंचा जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

7. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

....

....

8. पाठ्यचर्या से अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाया जाना क्यों आवश्यक है ?

....

....

9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न चरण कौन–कौन से है ?

....

....

10. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु किन–किन तकनीकों को प्रयोग लाया जाता है ?

....

....

14.11 सारांश

पाठ्यचर्या मूल्यांकनः पाठ्यचर्या मूल्यांकन किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है –

पाठ्यचर्या निर्माण के चरण

आवश्यकता विश्लेषण चरण　　अभिकल्प चरण　क्रियान्वयन चरण मूल्यांकन चरण

पाठ्यक्रम मूल्यांकन के प्रकार

निर्माणात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकनः पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता जानने के लिए किया जाने वाला मूल्यांकन निर्माणात्मक मूल्यांकन कहा जाता है। पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता को जानने के लिए किय जाने वाला मूल्यांकन योगात्मक मूल्यांकन कहा जाता हैं

निकश संदर्भित तथा मानक संदर्भित मूल्यांकनः निकर्ष संदर्भित मूल्यांकन में यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है। मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना पर करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्ता का मूल्यांकन कहा जाता

पूर्व तथा प्रश्न परीक्षणः इस प्रकारके मूल्यांकन में पाठ्यचर्या को पढ़ाने से पूर्व एक सेट का प्रशासन कर विद्यार्थियों का विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान का मूल्यांकन कर लिया जाता है तत्पपश्चात निर्धारित पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को पढ़ाने के पश्चात दूसरे सेट का प्रशासन कर व्यवहार एवं ज्ञान में आए परिवर्तन का आकलन किया जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

(1) पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु

(2) पुराने पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु

(3) व्यक्ति के सम्बंध में निर्णय लेने हेतु

(4) प्रशासनिक नियमन हेतु

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण

आंकड़ो का संकलन

सूचनाओं का विश्लेषण

सूचनाओं का विवरण

पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रक्रिया की तकनीकें

प्रश्नावली

प्रेक्षण

चेकलिस्ट साक्षात्कार

14.12 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्या है ? पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न चरणों का उल्लेख करें।
2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकें कौन–कौन सी हैं। विवेचना करें।
4. नवीन पाठ्यचर्या का मूल्यांकन होना क्यों आवश्यक है ?

14.13 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या में मूल्यांकन की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ्यचर्या में मूल्यांकन के महत्व पर चर्चा कीजिए।

14.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. फ्रोबेल
2. NCERT
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन अंतर्गत जिन दो महत्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन किया जाता है वे है–
   (1) जिन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित पाठ अथवा पाठ्यचर्या का अध्यापन किया गया है उनमें से किन–किन उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है तथा कौन से उद्देश्य अप्राप्य रह गय है,
   (2) कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति छात्रों के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं।
4. **पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्य निम्नलिखित**–
   - पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु
   - पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु
   - व्यक्तित्व के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु
   - प्रशासनिक नियमन हेतु
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं
   - निर्माणात्मक एवं विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं
   - निकष संदर्भित एवं मानक संदर्भित मूल्यांकन
   - पूर्व तथा प्रश्न मूल्यांकन
6. निर्माणात्मक मूल्यांकन के द्वारा पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों का चयन एवं पाठ्यचर्या में शामिल दूषित तत्वों का संशोधन किया जाता है।
7. पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक है।

8. पाठ्यचर्या को व्यावहारिक एवं उपयुक्त बनाए रखने के लिए पाठ्यचर्या से अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाया जाना आवश्यक है।

9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मुख्य चरण इस प्रकार हैं–

   i. मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण

   ii. मूल्यांकन हेतु आंकड़ों का संकलन

   iii. प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण

   iv. प्राप्त सूचनाओं का विवरण देना।

10. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु प्रश्नावली, प्रेक्षण, चेकलिस्ट, साक्षात्कार, कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा जैसी तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है।

14.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- **अग्रवाल, जे0सी0 (1990),** *भारत में पाठ्यचर्या सुधार, आगरा : अग्रवाल प्रकाशन।*
- **इग्नू (1997) पाठ्यचर्या तथा अनुदेश (खण्ड 1, 2)**, *नई दिल्लीः इग्नू।*
- **पाल, एस0के0 एवं अग्रवाल, के0एल0 (1985),** *शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, गोरखपुर : वसुन्धरा प्रकाशन।*
- **पाण्डेय, रामशकल (2004),** *भारतीय शिक्षा दर्शन, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।*
- **भट्ट, बी0डी0 एवं शर्मा, एस0आर0 (1992),** *पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिसिंग हाउस।*
- **माथुर, एस0एस0 (1981),** *शिक्षण कला, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।*
- **मिश्र, आत्मानन्द (1985),** *शिक्षण कला, नई दिल्लीः विश्वविद्यालय प्रकाशन।*
- **यादव, एस0 (2010),** *पाठ्यचर्या विकास, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।*

इकाई – 15 : पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दे

इकाई की संरचना

15.1. प्रस्तावना

15.2 इकाई के उद्देश्य

15.3 पाठ्यचर्या के नवीन मुद्दों की संकल्पना

15.4 पाठ्यचर्या में समसामयिक मुद्दों की आवश्यकता

15.5 पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दों का महत्व

15.6 पाठ्यचर्या संबंधी प्रवृत्तियां

15.7 पाठ्यचर्या की सम्भावी प्रवृत्तियां

15.8 पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दे

- 15.8.1 व्यावसायिक शिक्षा
- 15.8.2 अध्यापक शिक्षा
- 15.8.3 मूल्यपरक शिक्षा
- 15.8.4 विशिश्ट शिक्षा
- 15.8.5 स्वास्थ्य शिक्षा
- 15.8.6 जनसंख्या शिक्षा
- 15.8.7 यौन शिक्षा
- 15.8.8 पर्यावरण शिक्षा
- 15.8.9 शान्ति के लिये शिक्षा
- 15.8.10 वैश्विीकरण की शिक्षा
- 15.8.11 तकनीकी शिक्षा–कम्प्यूटर शिक्षा
- 15.8.12 समावेशी शिक्षा
- 15.8.13 कौशल विकास की शिक्षा
- 15.8.14 दूरस्थ शिक्षा
- 15.8.15 स्त्री शिक्षा
- 15.8.16 उपभोक्ता शिक्षा

15.9 सारांश

15.10 अभ्यास के प्रश्न

15.11 चर्चा के बिन्दु

15.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

इस खण्ड की पहली इकाई में आप पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विशय में पढ़ चुके हैं। प्रस्तुत दूसरी इकाई में आप पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दों के विषय में अध्ययन करेंगे। जॉन डीवी ने अपने शैक्षिक दर्शन में यह तर्क दिया था कि शिक्षा एक त्रिआयामी प्रक्रिया है। जिसमें छात्र, शिक्षक तथा पाठ्यचर्या इसके तीन आधार स्तम्भ हैं। डीवी ने अपने दर्शन में जोर देकर कहा था कि शिक्षा के पाठ्यचर्या समाज की आवश्यकता के अनुसार होने चाहिए। आज के समय को वास्तविकता भी यही है कि हमारे पाठ्यचर्या हमारे समाज के मांगों एवं आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों के अनुरूप बदलते रहें।

आज के समय में एक निश्चित समय अन्तराल में हमें पाठ्यचर्या का मूल्यांकन कर उसे नवीन बदलावों के साथ जोड़कर एक नया रूप प्रदान करना होगा। जिससे पढ़ने वाला विद्यार्थी नवीन परिस्थितियों के साथ अपने आप को समायोजित कर सकें। इस इकाई में हम विस्तार पूर्वक जान पाएंगे की पाठ्यचर्या के निर्माण में कौन–कौन से मुद्दे शामिल होने चाहिए ? इसकी क्या आवश्यकता है ? एवं यह क्यों महत्वपूर्ण है।

15.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि –

- पाठ्यचर्या के सम–सामयिक मुद्दों को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या के सम–सामयिकता की पहचान कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या के सम–सामयिक मुद्दों की अवश्यकता स्पष्ट कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या के सम–सामयिकता के जुड़े मुद्दे के महत्व को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या के सम–समायिक मुद्दों को विभिन्न चरणों को बता सकेंगे।
- पाठ्यचर्या में समानुकूल बदलाव को न्योचित ठहरा सकेंगे।
- पाठ्यचर्या की नवीन संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे।

15.3 पाठ्यचर्या के नवीन मुद्दों की संकल्पना

21वीं शताब्दी में सम्पूर्ण विश्व में अनेक परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों ने परोक्ष तथा प्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में मानव को प्रभावित किया है। आज का दौर जहां नवीन तकनीकोंका युग है तो दूसरी तरफ बढ़ती जनसंख्या तथा उसके भौतिकवादी आवश्यकताओं ने काफी हद तक पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया है। एक ओर जहां संसाधनों ने असमान वितरण एवं उसका आवश्यकता से अधिक दोहन ने हमारे लिए समस्या खड़ी की है तो दूसरी तरफ समाज में बढ़ते हुए अंतर ने भी हमारे मौलिक विकास को प्रभावित किया है।

आज के दौर में हमें यदि व्यवहारिक रूप से विकास करना है तो हमें अपने सम्पूर्ण शिक्षातंत्र के पाठ्यचर्या को नवीन मुद्दों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करना होगा। ताकि भावी पीढ़ी वास्तविक तौर पर व्यवहारिक शिक्षा से जुड़ पाये।

15.4 पाठ्यचर्या के सम–सामयिक मुद्दों की आवश्यकता

जैसा कि पहले ही वर्णन किया जा चुका है कि पाठ्यचर्या का सीधा संबंध समाज के साथ होता है। यह समाज के बदलते हुए आयाम के साथ बदलता रहता है। हर युग में समाज ने अपने आवश्यकता के अनुसार पाठ्यचर्या में बदलाव कर उसे अपने लिए उपयोगी बनाया है। वर्तमान समय में भी जो बदलाव हुए हैं एवं उन बदलावों से जो समाज के लिए जो समस्यायें उत्पन्न हुई हैं उसी के अनुरूप पाठ्यचर्या में बदलाव लाना आवश्यक

हो गया है।

सामान्य रूप से हम पाठ्यचर्या निर्माण में समसामयिक मुद्दों की आवश्यकताओं को अधोलिखित रूप से समझ सकते हैं—

1. छात्रों को नवीन समस्या के समाधान करने योग्य बनाने के लिए

आज के दौर में कई ऐसी समस्याएं सामने उत्पन्न हुई हैं जो कि केवल शिक्षा हीं नहीं अपितु समाज के हर एक अंग को प्रभावित किया है। ये समस्यायें पर्यावर्णिक कारकों, नवीन तकनीकों के दुरूपयोग, जनसंख्या विस्फोट, संसाधनों के असमान वितरण आदि से उत्पन्न हुई हैं। इन समस्याओं की तीक्षणता भी व्यापक है। आज के दौर में इसका सर्वाधिक प्रभाव मानवता के एक समान विकास पर पड़ रहा है। इस कारण से यह आवश्यकता आन पड़ी है कि हम अपने विद्यार्थियों को उन मुद्दों से सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक दोनों रूपों में परिचित करायें तथा उनमें यह क्षमता विकसित करें कि वह स्वयं से इन समस्याओं के समाधान के लिए तैयार रहें।

2. राष्ट्र की उन्नति के लिए

किसी भी देश की उन्नति वहां के युवा तथा भावी पीढ़ी पर निर्भर होती है। इस नवीन पीढ़ी के शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या भी नवीन तथा प्रासंगिक होने चाहिए। जहां तक नवीन तथा प्रासंगिक इन दो तंत्रों की चर्चा की जाय तो उसका सीधा संबंध वर्तमान में समसामयिक मुद्दों से है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति तभी सम्भव है, जब वह वर्तमान की समस्याओं से स्वयं को निजात दिला सके तथा भविष्य में आने वाली समस्याओं को आने से रोक सके। इन दोनों के लिए आवश्यकता इस बात की हो जाती है कि हमारा पाठ्यचर्या उन सम–सामयिक आधार स्तम्भ पर खड़ा हो जो कि भूत, वर्तमान तथा भविष्य के बीच संतुलन बना सके।

यदि हम राष्ट्र की उन्नति की बात करें तो यह तभी सम्भव है जब इसका हर एक आयाम एक समान रूप से उन्नति करें। राष्ट्र के एक समान उन्नति का एक मात्र कारक है शिक्षा। जहां तक शिक्षा के प्रभावी होने की बात की जाय तो वह तभी प्रभावी हो सकती है, जब वह वर्तमान आवश्यकता से पूर्ण हो तथा जिसमें भविष्य की सम्भावना हो।

3. समाज में एकता तथा समरसता स्थापित करने के लिए

संसाधनों का असमान वितरण, दकियानुसी धार्मिक विचार, सांस्कृतिक संक्रमण आदि कई ऐसे कारक हैं जिसके कारण देश की एकता अखण्डता प्रभावित हो रही है। इससे समाज की समरसता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। आज के दौर में अमीर–गरीब के बीच बढ़ती खाईं वैमनस्य का रूप ले रही है। वहीं दूसरी ओर धर्म तथा उसके व्याख्यानों के नाम पर सम्पूर्ण देश में अराजकता फैल रही है जिसका प्रभाव हम दंगों, धार्मिक उन्माद के रूप में देख रहें हैं। आज जिस तरह वैश्वीकरण के कारण हमारी संस्कृति के मूल तत्व टूटते चले जा रहे हैं उससे भी समाज की समरसता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न यह उठता है कि ऐसा हुआ क्यों? तो इसका सीधा सा जबाव दिया जा सकता है कि हम अपने पाठ्यचर्या को लगातार समयानुकूल नहीं बना पाये जिससे वर्तमान पीढ़ी का सामाजिककरण उस रूप में नहीं हो पाया जैसा कि सामाजिक समरसता के लिए आवश्यक था। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उन तत्वों की पहचान करें जो वर्तमान के सामाजिक समस्या के लिए उत्तरदायीं हैं। इन तत्वों की पहचान कर हम अपने पाठ्यचर्या में ऐसे उपागम जोड़े जो नवीन पीढ़ी को संसाधनों के समान वितरण के लिए प्रेरित कर सकें, जो नवीन एवं भावी पीढ़ी को धार्मिक दकियानूसी विचार से बचा सकें तथा उनमें सामाजिक समरसता का भाव जगा सकें तथा उनमें सामाजिक समरसता का भाव जगा सकें। आज अलगाववाद, सम्मान के लिए हत्या भीड़ द्वारा हत्या आदि की घटनाएं लगातार बढ़तीं चली जा रहीं हैं। इसका सीधा प्रभाव समाज के एक समान विकास पर पड़ता है। यदि हमें समाज में एक समान विकास के मार्ग को प्रसस्त करना है तो हमें अपने पाठ्यचर्या में ऐसे तत्व जोड़ने होंगे जिससे इन सबसे समाज के भावी पीढ़ी को बनाया जा सकें।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

1. आधुनिक समय में शिक्षा के पाठ्यचर्या निर्माण में कौन–कौन से कारक समस्यात्मक रूप में देखें जा रहे हैं ?

....

....

15.5 पाठ्यचर्या के निर्माण में समसामयिक मुद्दों का महत्व

पाठ्यचर्या निर्माण में समसामयिक मुद्दों का व्यापक महत्व है। यह न केवल पाठ्यचर्या को समाज की आवश्यकता के अनुकूल बनाता है अपितु यह समाज के वर्तमान तथा भावी पीढ़ी को दिशा देने का भी कार्य करता है। पाठ्यचर्या के चार आधार होते हैं –

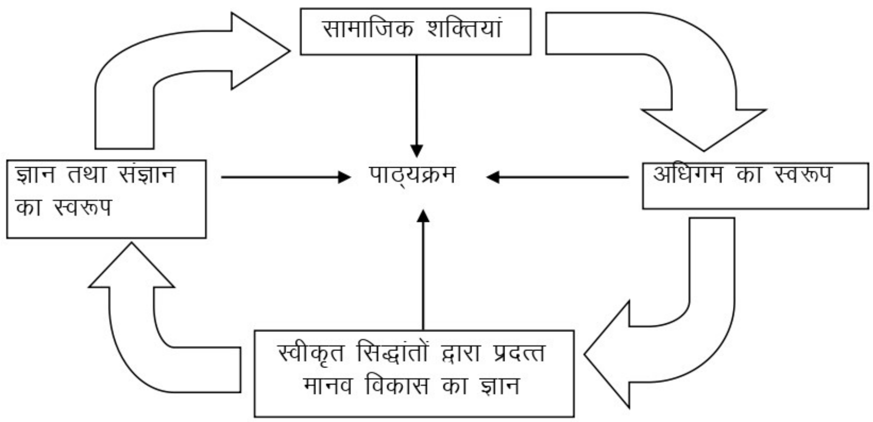

पाठ्यक्रम के इन्हीं आधार स्तम्भ को आधार मानकर यदि हम सम–सामयिक मुद्दों के महत्व की चर्चा करें तो वह महत्वपूर्ण होंगे –

1. सामाजिक शक्तियाँ

किसी भी पाठ्यचर्या के निर्धारण में सामाजिक शक्तियों की सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जहां तक सामाजिक शक्तियों का प्रश्न है तो वह भी समाज के वर्तमान के साथ पूर्ण रूप से जुड़ा होता है। कोई भी सामाजिक शक्तियां तब तक सफल एवं कारगर नहीं हो सकती जब तक कि उसका आधार वर्तमान न हो। दूसरे शब्दों में हम कहें तो किसी भी सामाजिक शक्तियों का विकास मूलरूप से उसके सम–सामयिक परिस्थिति से होता है।

आज हम चाहें दुनियां के किसी भी देश में चलते जाएं तथा वहां के पाठ्यचर्या को देखें तो हमें पता चलेगा कि वहां का पाठ्यचर्या वहां के सामाजिक सिद्धांतों तथा वहां की समसामयिक मुद्दों से मिलकर बना है। वर्तमान समय तेज बदलाव का समय है। ऐसी परिस्थितियों में यह और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि सामाजिक शक्तियां तथा समकालीन सामाजिक मुद्दे दोनों मिलकर पाठ्यचर्या को नया आधार प्रदान करें। आज

का दौर वैश्वीकरण का दौर है जिसमें एक समाज की विशेषताएं तथा विसंगतियां दूसरे समाज में अपने आप अपना ली जाती है या प्रवेश कर जाती हैं। ऐसी परिस्थिति में परिष्कृत वर्तमान प्रासंगिक मुद्दों का पाठ्यचर्या में प्रवेश होना अति आवश्यक है।

2. अधिगम का स्वरूप

अधिगम के स्वरूप का अर्थ है कि हमें किस उम्र के विद्यार्थियों को क्या ज्ञान देना है। दूसरे शब्दों में कहें तो समस्त शैक्षिक उद्देश्यों का क्रियान्वयन हमें किस रूप में करना है कि शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ण प्राप्ति हो सकें। आज के दौर में अधिगम के स्वरूप पर भी समसामयिक मुद्दों का प्रभाव पड़ता है। मूल रूप से पर्यावर्णिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक मुद्दों का भी प्रभाव व्यवहारिक रूप से अधिगम पर पड़ता है। ये वे मुद्दें हैं जो व्यवहारिक रूप से सीखने की प्रक्रिया पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं। अतः अधिगम के स्वरूप को बेहतर बनाने के लिए समसामयिक मुद्दों का परिष्कृत रूप छात्रों को पाठ्यचर्या के माध्यम से देना चाहिए। क्योंकि पाठ्यचर्या को जितना अधिक समकालीन तथा समसामयिक बनाया जाएगा अधिगम की सम्भावना उतनी अधिक बढ़ जाएगी। मनोविज्ञान ने भी यह सिद्ध किया है कि नवीन पीढ़ी, नवीन सिद्धांतों तथा तथ्यों को आसानी से ग्रहण कर लेती है।

3. स्वीकृत सिद्धांतों द्वारा प्रदत्त मानव विकास का ज्ञान एवं ज्ञान का स्वरूप

पाठ्यचर्या किसी विशिष्ट समाज के एक विशिष्ट आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए निर्मित होता है। पाठ्यचर्या सदैव पूर्ण नियोजित होता है। इसमें निहित क्रियाओं को एका–एक विकसित नहीं किया जा सकता है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो चरणबद्ध तरीके से विकसित होती है। इसमें हमें समाज द्वारा स्वीकृत सिद्धांतों की भी आवश्यकता पड़ती है। ये सिद्धांत समाज के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जहां तक समाज के सिद्धांतों का प्रश्न है तो प्रत्येक समाज का वही सिद्धांत अच्छा होता है जो समीचीन हो अर्थात उसमें पुराने तत्व तथा नवीन आवश्यकता का उचित समावेषन हो। इस आधार पर बना पाठ्यचर्या मानव विकास के ज्ञान का बोध कराता है। पाठ्यचर्या एक ऐसा माध्यम है जो समकालीन परिस्थिति में विकास का आधार बनता ही है। अपितु भविष्य के लिए भी विकास के मार्ग को प्रसस्त करता है। क्योंकि विद्यार्थियों का अध्ययन एक निश्चित पाठ्यचर्या से बंधा रहता है। उसे उसी पाठ्यचर्या से ज्ञान अर्जित करने का अवसर प्राप्त होता है। यदि पाठ्यचर्या समसामयिक मुद्दों से परिपूर्ण होगा तो उसके ज्ञान में नवीनता आयेगी।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

2. अधिगम के स्वरूप का क्या अर्थ है ?

....

....

15.6 पाठ्यचर्या सम्बंधी प्रवृत्तियाँ

जैसा कि आप जानते हैं पाठ्यचर्या कोई स्थित वस्तु या स्थिति नहीं है। प्रभावी पाठ्यचर्या के लिए इसे विद्यालय का एक गतिशील कारक होना चाहिए जो समाज में होने वाले परिवर्तनों के प्रत्युत्तर में निरंतर परिवर्तित होता रहे। 21वीं शताब्दी में विश्व के लगभग सभी समाजों में विविध सामाजिक–आर्थिक और प्रौद्योगिकीय परिवर्तन

हुए हैं। विद्यालय द्वारा अपने भावी छात्रों को उपलब्ध कराये जाने वाले कार्यकलापों और शिक्षण–अनुभवों में ये परिवर्तन भिन्न–भिन्न मात्राओं में प्रतिबिंबित होने चाहिए। अच्छा पाठ्यचर्या–नियोजक वह है जो न केवल समाज के मौजूदा परिवर्तनों और विकास से अवगत हो बल्कि आवश्यकताओं के प्रति भी सचेत हो। उसे आंतरिक और बाह्य कारकों के कारण समाज में संभावित घटनाओं के विकास का भी ज्ञान होना चाहिए। पाठ्यचर्या को तभी प्रभावी व प्रासंगिक कहा जायेगा जब उसमें समाज की वर्तमान और भावी प्रवृत्तियां को समय–समय पर प्रतिबिंबित होती रहती है। नीचे दिये गये उदाहरण जो यह दर्शाते है कि समाज में विभिन्न प्रवृतियां किस प्रकार 21वीं सदी की पाठ्यचर्या को प्रभावित करती है और भावी विकासक्रम स्कूली पाठ्यचर्या को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है।

1. 21वीं शताब्दी में पाठ्यचर्या

21वीं शताब्दी में विश्व भर में अनेक परिवर्तन हुए हैं इनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन का यहां वर्णन किया जा रहा है।

(i) उदारवादी शिक्षा

उदारवादी शिक्षा पूर्व प्राचीन सत्तावादी शिक्षा की उत्तराधिकारिणी प्राचीन शिक्षा में अध्यापक को किसी विषय के अध्यापन में एक मात्र सत्ता माना जाता था। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बिना छात्रों को पाठ सिखाने के लिए पुरस्कार और कठोर दंड को लागू करने का अधिकार अध्यापक को दिया गया था। शिक्षा केवल कुछ ही लोगों तक सीमित थी। इसके विपरीत शिक्षा का उदारवादी दृष्टिकोण मानता है कि शिक्षा बिना किसी भेदभाव के मुहैया कराई जानी चाहिए। सत्तावादी शिक्षा में शासत्रीय पाठ्यचर्या ध्यान का केन्द्र था। मूल पाठ को रट–रटा कर समझने के स्थान पर अब मूल पाठ को समझने और आत्मा व्यक्ति पर बल दिया जाता है। यह उदारवादी शिक्षा ही है जो स्कूली पाठ्चर्या को पंथ निरपेक्षता की ओर ले जाती है।

(ii) भूमंडलीय (ग्लोबल) शिक्षा

भूमंडलीय परस्पर–निर्भरता आज प्रत्येक समाज के लिए आवश्यक तथा अपरिहार्य बन गई है। राष्ट्रों के बीच संपर्कों, अंतक्रियाओं तथा संबंधों के तंत्र (नेटवर्क) ने मकड़ी के जाल की तरह पूरे विश्व को अपने घेरे में समेट लिया है और इस तंत्र के किसी भाग को छूने का अर्थ है विश्व के अनेक–और कई बार सभी भागों को कंपायमान करना। मानव–जीवन के सभी पक्ष सार्वभौमिक रूप से अंतः निर्भर है। चाहे वह स्वच्छ पेयजल, वस्त्र, परिवहन, करनीति, मुद्रास्फीति, रोजगार, समाचारपत्रों तथा पुस्तकों की विषय–वस्तु, ईधन की लागत और पूर्ति, आतंकवाद या शांति आदि ही क्यों न हो। इन सब की परस्पर भूमंडलीय अंतर्निभरता तथा परस्पर–प्रभाव होते हैं।

भूमंडलीय शिक्षा उभरती हुई भूमंडलीय प्रणालियों को समझने की समकालीन विश्व की आवश्यकता का उत्तर है। छात्र भूमंडलीय अंतर्निभरता को अपने दैनिक जीवन की सामान्य विशेषता के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। उन्हें उस विश्व की गहरी समझ होनी चाहिए जिसका वे अंग हैं इसके लिए ऐसी पाठ्यचर्या का विकास ऐसा होना चाहिए जो विश्व के बारे में छात्रों में जगरूकता पैदा कर सकें। छात्रों को विश्व में होने वाले परिवर्तनों की मात्रा और गति को समझने में समर्थ होना चाहिए। परिवर्तन हेतु तैयारी के लिए क्रिया–उन्मुख कोशल आवश्यक हैं–जैसे निर्णय लेना, समस्या– समाधान करना, सृजनशील सोच तथा भावी प्रयोजन के विकास और अभ्यास ये कोशल समूहगत प्रक्रियाओं में भागीदारी को सुगम बनाते हैं।

भूमंडलीय शिक्षा की पाठ्यचर्या के छात्रों को सार्वभौमिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करना चाहिए। भूमंडलीय शिक्षा के पाँच उद्देश्य हैं–प्रणालीगत चेतना का विकास, परिप्रेक्ष्य चेतना, भूमंडलीय स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, भागीदारी विषयक चेतना तथा प्रक्रिया बुद्धि। ये उद्देश्य छात्रों को भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करने तथा समकालीन यथार्थ के लिए तैयार करेंगे।

(iii) अंतर्विषर्यी विषयवस्तु

मौजूद कुछ पाठ्यचर्याओं में ज्ञान को स्वायत्त विषयों तथा क्षेत्रों के रूप में पारंपरिक अविच्छिन्न विभाजन

के अनुसार स्वीकार नहीं किया गया है। विभिन्न सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों से सामाजिक विज्ञान, परिवेश–अध्ययन, जैव–रसायन, वाणिज्य शासत्र, वाणिज्य गणित आदि जैसे विषयों ने जन्म लिया है। पाठ्यचर्या में अंतर्विषयी दृष्टिकोण छात्रों को विभिन्न विषयों/क्षेत्रों की विषय वस्तु को बेहतर तथा अधिक यथार्थवादी ढंग से समझने में सहायता करता है। इससे मानव समाज की अनेक समस्याओं को भी अधिक प्रभावी ढंग से हल करने में सहायता मिलती है। प्रायः यह तर्क दिया जाता है कि युवा एवं वयस्कों को विभिन्न क्षेत्रों में उभर कर आये सामान्य विचारों और महत्वपूर्ण संकल्पनाओं से अवगत होने की आवश्यकता है। बाद में जब वे मूल समस्याओं को हल करना शुरू करते हैं तो विषयों के बीच की बाधाएं कम प्रासंगिक प्रतीत होती हैं और कार्य या अध्ययन अनिवार्यतः अंतर्विषयी शैक्षिक हो जाता है।

(iv) पंथनिरपेक्षता और शिक्षा

आज लगभग सभी समाजों में अनेक धर्मों और संप्रदायों के लोग होते हैं। लोकतांत्रिक समाजों की पंथनिरपेक्षता के सिद्धान्त में दृढ़ आस्था है। जिसके द्वारा लोग अपने विश्वासें एवं मान्यताओं के अनुसार पूजा–पाठ करने के लिए पूर्णतया स्वंतत्र हैं। राज्य उनकी धर्मिक प्रथाओं और मान्यताओं में हस्ताक्षेप नहीं करता। इस बात की पुष्टि किसी भी विद्यालय में की जा सकती है जहाँ विभिन्न धर्मों और मान्यताओं के छात्र एक साथ पढ़ते हैं। विद्यालय की किसी विशिष्ट धार्मिक व्यवस्था के शिक्षण के अनुकूल बनाना खतरनाक है। धार्मिक शिक्षा देना असंतोष और आतंरिक समस्या का कारण हो सकता है इससे संस्थाओं की शिक्षण–शैली या शैक्षिक वातावरण विकृत हो सकता है। इन्हीं कारणों से राज्य अपने औपचारिक पाठ्यचर्या के माध्यम से छात्रों को धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण से प्रशिक्षण देता है। 20वी शताब्दी के आरम्भ में जब निःशुल्क सार्वभौमिक शिक्षा के पक्ष में तर्क रखे गये थे तब पंथनिरपेक्ष शिक्षा की प्रक्रिया की शुरूआत हुई थी जिसका चर्च और पुरोहित वर्ग ने भी पूर्णतया अनुमोदन किया। फिर भी उदारवादियों ने यह सही सोचा था कि पंथनिरपेक्ष पाठ्यचर्या से पाखंड को दूर किया जा सकता था तथा ब्राह्मांड की वैज्ञानिक समझ तथा समाज के राजनीतिक –आर्थिक पहलुओं की संबंधित जागरूकता विकसित की जा सकती थी।

(v) मनोविज्ञान तथा पाठ्चर्या

पाठ्यचर्या का नियोजन करते समय उन मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है तो किसी विषय विशेष के अधिगम को प्रभावित करती है। मानव विकास संकल्पन निर्माण, विभिन्न प्रकार के विषयों को सीखने, अधिगम के प्रेरणादायक कारक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा मूल्यांकन प्रक्रियाएं आदि क्षेत्रों को विषय विशेष की पाठ्यचर्या तेयार करते समय ध्यान में रखा जाता है। किसी क्षेत्र (विषय) की विषय–वस्तु के संघटन में तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टिकोण एवं अनुक्रम पाठ्यचर्या नियोजक द्वारा आवश्यक समझे जाते हैं छात्रों की वैयक्तिक विभन्नताओं से पैदा होने वाली विविध शैक्षिक आवश्यकताएं, छात्रों के लिए जुटाये गये अधिगम अनुभवों के चयन और अनुक्रम का आधार बनाती हैं अतः अधिगम मनोविज्ञान पाठ्यचर्या संबंधी निर्णयों को स्पष्ट रूप से प्रभावित करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

3. भूमण्डलीय शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य क्या हैं ?

....

....

4. विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा प्रदान करने से क्या प्रभाव पड़ेगा ?

....

....

15.7 पाठ्यचर्या की सम्भावी प्रवृत्तियाँ

पाठ्यचर्या का एक बुनियादी कार्य है भविष्य के लिए युवाओं को तैयार करना। इस कार्य को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या नियोजन को भविष्य के लिए पाठ्यचर्या विकास संबंधी संभावनाओं का मूल्यांकन करना होता है। ऐसा करते समय अनेक प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है जैसे–

- हमारे समाज में शिक्षा की क्या भूमिका है?
- क्या हमारे समाज का भविष्य/पाठ्यचर्या द्वारा प्रभावित हो सकता है?
- अपने समाज के भविष्य के लिए पाठ्यचर्या नियोजन करते समय हम कि प्रकार अन्य लोगों को इसमें प्रभावी तरीके से शामिल कर सकते हैं।

निम्नलिखित कारणों से भविष्य की पाठ्यचर्या अभिकल्पना (डिजाइन) आवश्यक हो गई है:–

- जनांकिकीय परिवर्तन–लिंग, आयु प्रमिान, मृत्यु दर आदि।
- प्रौद्योगिकीय नवाचार यथा मशीनों का प्रयोग व उत्पादकता में वृद्धि ।
- सामाजिक नवाचार नई शिक्षा प्रणाली।
- सांस्कृतिक प्रसार–विचारांतरण, यात्रा, व्यापार, रोजगार, संचार माध्यम आदि के कारण सांस्कृतिक–संक्रमण।

इन परिवर्तनों ने भारतीय समाज की सामाजिक संरचना को परिवर्तित किया है। सामाजिक–आर्थिक और राजनैतिक कारकों की चुनौतियों से विद्यालय घिर गये हैं। भविष्य में विद्यालय कैसे होना चाहिए? पाठ्यचर्या की एक भूमिका बदलते समाज में विद्यालय का प्रयोजन तय करना होता है। शिक्षा के कारण छात्रों में कतिपय बुनियादी दक्षताएं विकसित होनी चाहिए जैसे शैक्षिक दक्षताएं, दूसरों को समझना, अनवरत शिक्षा की शिक्षा की क्षमता, आर्थिक जगत में प्रबुद्ध भागीदारी, संचित ज्ञान का प्रयोग और परिवर्तन के प्रति अनुकूलता आदि।

1. सूचना विस्फोट और संचार प्रौद्योगिकी

सूचना विस्फोट हमारे देश में पहले से ही चल रहा है। इसके फलस्वरूप एक ओर पाठ्यचर्या को नई आने वाली जानकारी पर आधारित किया जाये और दूसरी ओर छात्र में सूचना–प्रवाह को निरन्तर काम में लाने के लिये आवश्यक कोशलों व रुचियों के विकास में योगदान देना चाहिए। इसी के साथ–साथ संचार प्रौद्योगिकी भी जो गति से बदल रही है। स्पष्ट है कि इनके परिणामस्वरूप अधिगम निवेश में परिवर्तन हो रहे हैं। इससे आगामी वर्षों में पाठ्यचर्या का संचालन अधिक वैज्ञानिक व व्यावहारिक बनेगा। इसे छात्र की जरूरतों और परिस्थितियों के अनुकूल बनने के लिए विविध प्रकार के अधिगम साफ्टवेयर पर आधारित होना पड़ेगा।

2. रोजगार

बाजार में विकसित नये रोजगारों के विकास के कारण प्रशिक्षित मानव शक्ति की जरूरत भावी पाठ्यचर्या में अनेक परिवर्तनों का कारण बनेगी। पाठ्चर्या को अधिक रोजगारोन्मुखी बनाना होगा। हांलाकि कैरियर या रोजगार शिक्षा का विचार बहुत पुराना नहीं है तथापि आजकल विविध नये रोजगारों के चलते इस पर पुनः विचार करने की जरूरत है। विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा के लिए एक अलग या समानान्तर पाठ्यचर्या तैयार करने की मांग बढ़ती जा रही है जो नये रोजगारों के लिए युवकों को प्रशिक्षित करने में सहायक हो सकती है। पिछले

दशक में देश में व्यापक व्यावसायिक पाठ्यचर्या तैयार करने के प्रयास निम्नलिखित कारणों से चल रहे हैं–

विद्यालयों को राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति के एक अनिवार्य घटक के रूप में मान्यता दी जाने लगी है क्योंकि विद्यालय देश की अर्थव्यवस्था के लिए पर्याप्त संख्या में मानवशक्ति को प्रशिक्षित करेंगे।

व्यावसायोन्मुखी या व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति की उत्पादकता व रोजगार सामर्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक होगी। अतः व्यवसायोन्मुखी पाठ्यचर्या गरीबी और पिछड़ेपन के उन्मूलन में सहायता कर सकता है और आर्थिक स्थिति तथा जीवन–स्तर को बेहतर बना सकता है।

उपयोगितावादी शिक्षा की संकल्पना ने रोजगार आधारित पाठ्यचर्या संबंधी जागरूकता और मांग को बढ़ा दिया है।

सामान्य धारणा यह है कि इस सामाजिक वास्तविकता पर कम ध्यान दिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अंततः एक लाभप्रद रेजगार मिले। यह भी महसूस किया गया है कि मौजूदा प्रौद्यागिकीय तथा राजनैतिक स्थितियां शिक्षा की मूलभूत परिभाषा में परिवर्तन की ओर संकेत करती है।

3. ऊर्ध्वगामी (बॉटम–अप) मॉडल

पाठ्यचर्या के ऊर्ध्वगामी (बॉटम–अप) मॉडल में छात्र ही प्रमुख होता है। कालान्तर में पाठ्यचर्या आयोजकों ने बोध, करुणा प्रोत्साहन और विश्वास पर अधिक बल देना शुरू किया है। ऊर्ध्वागामी मॉडल में पाठ्यचर्या इस प्रकार तैयार किया जाता है कि इससे छात्र को गतिशीलता, पाठ्यचर्या संबंधी कार्यकलापों के चयन में अधिक विकल्प और क्रिक द्वारा अधिगम आदि को अधिक प्रोत्साहन मिलता है। ऐसा पाठ्यचर्या में अनुदेश अधिक मानवीय, व्यक्तिपरक और वैयक्तिक बन जाता है। अध्यापक सत्ताधारी या ज्ञान प्रबंधक की अपेक्षा मार्ग दर्शक का कार्य करता है।

समस्या–समाधान संबंधी अनुदेश प्रक्रिया एक अन्य मानववादी अभिकल्पना पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं और वह है केंद्रिक (एकीकृत) पाठ्यचर्या जिसके अंतर्गत निम्नलिखित पर बल दिया जाता है–

- अध्यापक–छात्र संबंध में निरंतरता।
- छात्रों की अपेक्षाओं पर आधारित पाठ्यचर्या तैयार करना।
- स्कूली गतिविधियों को समुदाय से जोड़ना।
- विविध सूचना स्रोतों का उपयोग करना।
- विषयों के चयन तथा अधिगम संबंधी दायित्व पर बल देना।

उर्ध्वगामी पाठ्यचर्या के डिजाइन की विशेषताएं हैं अत्यधिक लचीले अनुदेशात्मक विषय, विद्यार्थियों द्वारा बड़े पैमाने पर सहभागिता तथा अधिगम प्रक्रिया पर बल।

4. दूरस्थ/मुक्त शिक्षा

सभी के लिए आजीवन और निरन्तर शिक्षा पर आधिकाधिक बल देने और उसकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए आमने–सामने की शिक्षा पद्धति के विकल्प तथा अनिवार्य अनुपूरक के रूप में दूरस्थ और मुक्त शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहन मिला है। दूरस्थ शिक्षा पाठ्यचर्या आवश्यकताओं पर आधारित, शिक्षार्थी की आवश्यकताओं व सुविधा के अनुरूप तथा लचीले होते हैं और उन्हें शिक्षार्थी के घर पर ही उपलब्ध किया जाता है। भलीभांति तैयार किये गये अधिगम पैकजों तथा कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षक को शिक्षार्थी के आचरण पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डालना होता है। प्रिन्ट और इलैक्ट्रोनिक मीडिया दोनों का शिक्षार्थी के साथ अन्तः क्रिया के मुख्य माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। दूरस्थ पद्धति की पाठ्यचर्या के अन्तर्गत शिक्षार्थी को स्वअध्ययन तथा स्व–क्रिया द्वारा अधिगम के लिए अत्यन्त प्रेरित होना चाहिए। इस प्रकार पाठ्यचर्या में स्वअधिगम तथा स्वक्रिया

के लिए विस्तृत मार्ग दर्शन उपलब्ध कराया जाता है जिससे कि दूरस्थ शिक्षार्थी अधिगम के लिए अधिक सक्षम बनता है।

15.8 पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दे

हाल ही में पाठ्यचर्या नियोजन को कई प्रवृत्तियों और घटनाओं ने प्रभावित किया है और निकट भविष्य में इनके बने रहने और प्रभावशील रहने की सम्भावना है। आधुनिक (उभरता हुआ) पाठ्यचर्या वह है जिसमें नवीनतम ज्ञान और अध्ययन क्षेत्र का समावेष हो। इस पाठ्यचर्या में वे सभी पहलु शामिल होते हैं जो वर्तमान समय में प्रासंगिक हैं। अध्ययन से नये क्षेत्र पारम्परिक विषयवस्तु से उभर कर आते हैं और समाज में होने वाले राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों को व्यक्त करते हैं। ऐसा पाठ्यचर्या छात्र केन्द्रित होने के साथ–साथ मूल्य केन्द्रित भी होता है।

आजकल पाठ्यचर्या की अनेक ऐसी प्रवृत्तियां/मुद्दे उभर रहे हैं जिन्हें विभिन्न स्तर के विद्यालयों के संतुलित पाठ्यचर्या निर्माण में प्रयुक्त किया जा सकता है। वर्तमान पाठ्यचर्या में जिन आधुनिक (उभरते हुये) क्षेत्रों को शामिल किया जा सकता है, वे निम्नांकित हैं :–

15.8.1 व्यवसायिक शिक्षा

व्यावसायिक शिक्षा की उत्पत्ति पूर्वकाल से चले रहे कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण से मानी जाती है। इस संप्रत्यय के अनुसार ऐसी कोई भी शिक्षा या प्रशिक्षण जो कार्यकर्ताओं को अपने कार्य में दक्ष बनायें वह व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत आता है। इसका आधार यह भी माना जाता है कि सभी मनुष्यों की क्षमतायें व रुचियाँ भिन्न–भिन्न होती है, उनको पारम्परिक पाठ्यचर्या पढ़ाने की अपेक्षा यदि उनकी क्षमता व रूचि के अनुसार किसी व्यवसाय का प्रशिक्षण दिया जाये तो वह उनके लिये अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

व्यावसायिक शिक्षा का अर्थ यह भी माना जाता है कि यह वह शिक्षा है जो शारीरिक कार्य के लिए दी जाती है। यह प्रत्यय उन कार्यों पर केन्द्रित है, जिनमें मानसिक दक्षता की अपेक्षा शारीरिक श्रम पर अधिक महत्व दिया जाता है। इस संप्रत्यय से ही वर्तमान समय की इस अवधारणा का जन्म माना जाता है, जिसके अन्तर्गत समाज के अपेक्षित वर्ग, शारीरिक रूप में अपंग, तथा वे बालक जो किन्ही कारणों से बीच में पढ़ाई छोड़ देते हैं उन्हें किसी न किसी प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण देने की बात कही जाती है।

तीसरे अर्थ के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा ऐसी विशिष्ट विषयों की शिक्षा है जो कि व्यावसायिक और तकनीकी प्रगति के हों। यह शिक्षा अधिकतर माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ जोड़कर ही दी जाती है। ऐसी व्यावसायिक शिक्षा सामान्य शिक्षा को विस्थापित नहीं करती है। अपितु उसकी कमियों को दूर करती है। इस प्रकार की मिली जुली शिक्षा में सांस्कृतिक सामाजिक तथा व्यावसायिक तीनों पक्षों का विकास हो जाता है।

व्यावसायिक शिक्षा के एक अन्य अर्थ के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा वह शिक्षा है जो हस्तशिल्प से संबंधित होती है, जिसमें वह अपना जीवन यापन कर सकें। इस प्रकार की शिक्षा आई0आई0टी0 तथा पालीटेनिक्नक में दी जाती है।

इसके अतिरिक्त एक अन्य पहलू के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा ऐसी शिक्षा है जो उत्पादक उद्देश्यों तथा समाजोपयोगी कार्यों के लिए दी जाये। जब कोई उत्पाद उपभोक्ता के प्रयोग के लिये बनाया जाता है, तो उस उत्पादन को उत्पादक कार्यों के लिए कहा जाता है। यह प्रत्यय आधुनिक प्रत्यय माना जाता है। जिसमें उसके कार्य की उत्पादन क्षमता बढ़ सके। यह संप्रत्यय वर्तमान समय के आधुनिक विचाराधारा से मेल खाता है। आधुनिक विचाराधारा के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा से तात्पर्य ''व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दी जाने वाले शिक्षा से है। इस प्रकार व्यावसायिक शिक्षा को यदि हम अपने पाठ्यचर्या में जोड़ते हैं तो इससे हमारी शिक्षा व्यवस्था समृद्ध होगी।

15.8.2 अध्यापक शिक्षा

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यवस्तु में शिक्षक का स्थान निर्विवाद महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण शिक्षा–प्रक्रिया की धुरी शिक्षक होता है। उसके निर्देशन में ही विद्यार्थी ज्ञानार्जन की सही दिशा का अनुसरण करते हैं। शिक्षक, देश–काल की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा–प्रक्रिया को दिशा प्रदान करते हैं। इस प्रकार उत्तम नागरिक के निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका बेजोड़ होती है। शिक्षा व्यवस्था को सही दिशा और गति प्रदान करने में शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि होती है।

आज जब भारतीय समाज विभिन्न झंझावातों के मध्य परिवर्तन और विकास के दौर से गुजर रहा है, ऐसी नाजुक परिस्थिति में शिक्षकों का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है। अध्यापक को भाग्यविधता की संज्ञा दी गई है, जो अपने सफल निर्देशन में भावी राष्ट्र निर्माताओं को तैयार करता है। सामाजिक परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया में शिक्षकों का योगदान सदैव से सराहनीय रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के प्रतिवेदन में कहा गया है कि "किसी भी समाज में अध्यापकों के दर्जे से उसकी संस्कृति एवं सामाजिक दृष्टि का पता लगता है। कहा गया है कि कोई राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता। सरकार और समाज को ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित करनी चाहिए जिनसे अध्यापकों को निर्माण और सर्जनात्मकता की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले। अध्यापकों को इस बात की आजादी होनी चाहिए कि वे नये प्रयोग कर सकें, संप्रेषण की उपयुक्त विधियों का चयन कर सकें तथा अपने समुदाय की समस्याओं और क्षमताओं के अनुरूप नये उपाय निकाल सकें।"

अध्यापन एक कला है और इस कला में दक्षता प्राप्त करने के लिये जन्मजात गुणों को विकसित करना होता है। जिस व्यक्ति में यह गुण जितनी मात्रा में होते हैं उतनी ही मात्रा में वह उस कला में निपुणता प्राप्त कर सकता है, परन्तु निष्ठा और सतत अभ्यास के द्वारा इन गुणों का विकास किया जा सकता है। इसी सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता अग्रांकित रूपों में बताई गई हैः–

1. बाल मनोविज्ञान को समझने के लिये।
2. अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिये।
3. बाल व्यवहार को समझने के लिये।
4. अनुशासन स्थापना के लिये।
5. शिक्षण–पद्धतियों को समझने एवं उनका प्रयोग करने के लिये।
6. शिक्षण में छात्रों को सहभागी बनाने के लिये।
7. मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझने के लिये।
8. मानवीय गुणों को विकसित करने के लिये।

वास्तव में, शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है, उसमें परिवर्तन होते रहते हैं, नया ज्ञान जुड़ता रहता है। अतएव शिक्षक नये–नये अनुभव प्राप्त करें, नये ज्ञान को सीखें, दूसरों के अनुभव का लाभ उठायें, अपने दृष्टिकोण का विकास करें, इन सभी दृष्टिकोणों से सेवाकालीन प्रशिक्षण आवश्यक माना गया है।

15.8.3 मूल्यपरक शिक्षा

वर्तमान भौतिकवादी युग में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य छिन्न–भिन्न हो गये हैं। धन, पूँजी और सम्पत्ति ही मनुष्य का देवता है, समाज में व्यक्ति और व्यक्ति के बीच सारे रागात्मक सम्बन्ध सूत्र छिन्न–भिन्न हो गये हैं। स्त्री–पुरुष के बीच, पति –पत्नी के बीच, भाई–भाई के बीच, पिता–पुत्र के बीच और शासक और शासित के बीच सम्बन्ध सूत्र टूट चुके हैं। भौतिकता के भ्रमजाल में पड़ा हुआ समाज कराह रहा है। सभ्यता और संस्कृति का मुखौटा चढ़ाकर आज का मनुष्य दुनिया को ही नहीं स्वयं को भी छलता है। इस युग को हम घोर मूल्य

हीनता का युग कह सकते हैं, मूल्यों के संकट का युग कह सकते हैं।

इस उपभोक्तावादी संस्कृति ने श्रेष्ठ माननीय मूल्यों को छिन्न–भिन्न कर दिया है। मूल्यों के छिन्न–भिन्न हो जाने के कारण आज का आदमी दिशाहीन होकर भटक रहा है। आज व्यक्ति और समाज तरह–तरह की कुण्ठाओं से ग्रस्त है। हर दिन हर क्षण नये–नये प्रश्न और नयी–नयी समस्याएँ उपस्थित हो रही है।

इस युग में तथाकथित वैयक्ति मूल्यों में अत्यन्त ह्रास हुआ है। आज मनुष्य में सत्य और प्रेम नहीं झूठ और घृणा है, धैर्य और सहनशीलता नहीं अधैर्य और असहनशीलता है, त्याग और अनासक्ति नहीं, भोग और आसक्ति है, ऋजुता और मृदुता नहीं कठोरता और कटुता नहीं, अभय और आत्मबल नहीं, भय और शक्तिहीनता है, आत्मविश्वास और प्रमाणिकता नहीं, घोर अनास्था और अप्रामाणिकता है। इस मूल्यहीनता को लेकर कैसे आज का व्यक्ति युग के भार वहन कर सकता है? कैसे परिवार और समाज, राष्ट्र और विश्व के दायित्व को वहन कर सकता है?

आज भारतीय लोकतंत्र का चेहरा निष्पक्ष चुनाव के बावजूद काले दाग से ग्रस्त हैं, क्योंकि आज नेतृत्व का आधर न लोकसेवा है और न लोकप्रियता। इस लोकतंत्र में राजनीति पेशा बन गई है। राजनीतिज्ञों में भौतिक निष्ठा का अभाव है। चारों ओर राजनीतिक अक्षमता और अपरिपक्वता है। आज भारतीय लोकतंत्र की यह सबसे बड़ी समस्या है कि राष्ट्रीय हितों को स्थानीय तथा संकीर्ण स्वार्थों से किस प्रकार सुरक्षित रखा जाय हमें जनता में जनतंत्रिक चेतना का प्रसार करना है। हमें चैतन्य नागरिकों को तैयार करना है, जो लोकतंत्र को सही दिशा दे सके। हमारे लोकतंत्र को सम्प्रदाय सापेक्षता से सम्प्रदाय निरपेक्षता की ओर क्षेत्रीयवाद से राष्ट्रीयता की ओर, जातिवाद से मानवतावादी मूल्यों की ओर प्रयाण करना है। हमें ऐसे मूल्य नयी पीढ़ी को प्रदान करना है, जहाँ राजनीति सम्प्रदायिकता से आक्रांत न हो। जहाँ सम्प्रदाय की कट्टरता के स्थान पर सम्प्रदाय निरपेक्षता हो, जहां जातिवाद और क्षेत्रीयवाद के स्थान पर राष्ट्रवाद और मानवतावाद हो। भारतीय लोकतंत्र का संकट मूल्यों का संकट है।

आज हमारे समाज में मूल्यों में ह्रास उत्पन्न हो गया है। आज व्यक्ति अधिकाधिक व्यक्तिवादी, व्यक्तिनिष्ठ, स्वार्थी और स्वकेन्द्रित हो गया हैं हमारे समाज के तीन महान् शत्रु हैं–भाग, अधिकार और धन। यह निर्विवाद सत्य है आज का युग मूल्यहीन का युग है। हमें वैयक्तिक और सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक, आर्थिक और राजनीतिक मानसिक और बौद्धिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से श्रेयस्कर मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करना है।

हमें वैयक्तिक मूल्यों में झूठ पर सत्य को, घृणा पर प्रेम को, हिंसा पर अंहिसा को, अधर्य पर धैर्य को, असहिष्णुता पर सहिष्णुता को, कटुता पर मृदुता को, क्रूरता पर करुणा को, भय पर अभय को, निरावलम्बन पर स्वावलम्बन को और अकर्मण्यता पर कर्तव्यनिष्ठा को स्थापित करना है, सामाजिक मूल्यों में हमें अन–अस्त्वि को और सामाजिक अन्याय पर सामाजिक न्याय को स्थापित करना है। आर्थिक मूल्यों में हमें जाना है अप्रामाणिक आर्थिक व्यवहार से प्रमाणिक आर्थिक व्यवहार की ओर, राजनीतिक मूल्यों में हमें लोकतांत्रिक चेतना के द्वारा व्यवस्था के माध्यम से समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और लौकिक नैतिकता की स्थापना करनी है। हमें धार्मिक मूल्यों में सम्प्रदाय सापेक्षता के स्थान पर सर्वधर्म समभाव समन्वित सम्प्रदायनिरपेक्षता की ओर प्रयाण करना है। आध्यात्मिक मूल्य हमें उपभोक्तावादी संस्कृति से उद्‌भूत अति भौतिकवादिता को नकारकर आसक्ति से अनाशक्ति और परानुशासन को आत्मानुशासन की ओर बढ़ना है। मानसिक मूल्यों में हमें मानसिक असन्तुलन के स्थान पर मानसिक सन्तुलन को प्राप्त करना है। बौद्धिक मूल्यों में एकांगी दृष्टिकोण को छोड़कर समन्वयात्मक दृष्टिकोण के द्वारा अध्यात्मक और विज्ञान का समन्वय कर अपने व्यक्त्वि को नये रूप रंग में ढालना है। हमें सांस्कृतिक मूल्यों में सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करते हुए कलागत मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्य बोध को अपनाना है, जिससे हम सत्य, शिव और सुन्दर की त्रिवेणी अपने व्यक्ति में उतारकर अपने जीवन को सांस्कृतिक, दृष्टि से

गरिमामय बना सकें। हमें अंधविश्वासों, रूढ़ियों और सड़ी–गली मान्यताओं को नकारकर वैज्ञानिक स्वभाव को अपने जीवन का अनिवार्य अंग बनाना है।

अब भी हम समाज में, धर्म में, राजनीति में अलख जगा रहे हैं। समाज के राजनीति के धर्म के और ये समस्त बुद्धिजीवी नयी व्यवस्था और नयी सामाजिकता से सड़े–गले मूल्यों को विध्वंस कर नये मूल्यों की स्थापना करना है, रूढ़िवादी समाज के स्थान पर विकासोन्मुखी समाज की रचना करनी है, सम्प्रदाय सापेक्ष समाज के स्थान पर सर्वधर्म समभाव समन्वित सम्प्रदाय निरपेक्ष समाज की रचना करनी है, विषमता से ग्रस्त समाज के स्थान पर समतामूलक समाज की रचना करनी है और समग्र रूप में श्रेयस्कर मूल्यों से समपृक्त समाज की रचना करनी है।

इन श्रेयस्कर मूल्यों की स्थापना का दायित्व परिवार, विद्यालय और समाज सभी का है। परिवार और समाज अनौपचारिक नैतिक शिक्षा का दायित्व निभाते हैं, किन्तु शिक्षक के कंधों पर औपचारिक और अनौपचारिक नैतिक शिक्षा का दायित्व है। अतः मूल्यपरक शिक्षा की पाठ्यचर्या में सम्मिलित कर इसे समसामयिक बनाया जा सकता है।

15.8.4 विशिष्ट शिक्षा

सामान्यतया विद्यालयाओं में सामान्य शिक्षा तथा विशिष्ट शिक्षा प्रदान की जाती है। सामान्य शिक्षा सभी ग्रहण करते हैं। जबकि विशिष्ट शिक्षा में सामान्य शिक्षा ग्रहण करने वाली छात्रों के बीच से निकलकर विशेष विषयों की शिक्षा ग्रहण कर विशेष क्षेत्रों में जाकर सेवा देते है। इसमें विज्ञान, इंजीनियरिंग, कानून, कृषि, चिकित्सा ग्रहण करने वाले छात्रों को मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से विशेष शिक्षा के अन्तर्गत सामान्य बालकों से हटकर सामाजिक, शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक रूप से पिछड़े बालक भी होते हैं, इनकी बुद्धिलब्धि 110–140 तक होती है या 90 से कम। अधिक बुद्धिलब्धि वाले कला संगीत, गणित, अभिनय आदि में विशेष योग्यता रखते है। 90 से कम बुद्धिलब्धि वाले बालक पिछड़े मनबुद्धि, समस्यात्मक बालक होते हैं।

साधारणतः विशिष्ट बालकों हेतु प्रदान की जाने वाली विशेष रूप से संगठित शिक्षा एक ऐसी अनुदेशन है जो बालकों की उन विशिष्ट विशेषताओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर संगठित की जाती है जिनकी पूर्ति सामान्य विद्यालयीय पाठ्यचर्या द्वारा नहीं हो सकती है।

अर्थात् विशेष शिक्षा का आयोजन वह पूरक उपाय है, जिसके द्वारा सामान्य शिक्षा के अतिरिक्त विशेष बालकों के समुचित विकास के लिए आयोजन या व्यवस्था की जाती है। संक्षेप में कह सकते हैं कि विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रम का सम्बन्ध सामान्य विद्यालय के पाठ्यचर्या के संशोधन से सम्बन्धित है। अर्थात् विशिष्ट बालकों की शिक्षा के लिए हमें अतिरिक्त या विशेषीकृत शिक्षण व्यवस्था, पाठ्यचर्या, शिक्षण–विधि, अध्यापक, शिक्षण सामग्रियों की आवश्यकता होती है। जिसके द्वारा विशिष्ट छात्रों को उनकी आवश्यकता, क्षमता एवं विकास की गति के अनुसार शिक्षण किया जाता है। विशिष्ट शिक्षा–व्यवस्था के अन्तर्गत कई प्रकार की पूरक सेवाओं एवं संसाधनों की भी आवश्यकता पड़ती है, जैसे मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्री, चिकित्सक, परामर्शदाता, व्यावसायिक निर्देशक, विशेष वातावरण, उपयोगी तकनीकी संसाधन आदि। इन सबके द्वारा सम्मिलित रूप से बालक के पूर्ण विकास की दिशा का निर्धारण करने का प्रयास किया जाता है।

विशिष्ट बालकों की शिक्षा का कार्यक्रम व्यक्तिगत स्तर पर अथवा सामूहिक स्तर पर अथवा दोनों ही रूपों में किया जा सकता है। यह पूर्णकालिक अथवा अंशकालिक हो सकता है, इसका निर्णय बालकों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया जाता है। उन्हें सामान्य बालकों की कक्षा में ही रखकर विशेष शिक्षकों की सहायता से पढ़ाया जा सकता है। केवल प्रतिदिन कुछ घण्टे अथवा विशेष कक्षा का भी आयोजन किया जा सकता है। अथवा अलग से विशिष्ट विद्यालय की स्थापना करके इसकी पूर्ति की जा सकती है। कुछ बालक ऐसे

भी होते हैं, जिनके लिए आवासीय विद्यालय की आवश्यकता पड़ सकती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

5. शिक्षा अधिगम निवेश में किसके कारण परिवर्तन हो रहे हैं ?

....

....

6. आधुनिक पाठ्यचर्या क्या है ?

....

....

7. विशिष्ट शिक्षा से क्या अभिप्राय है ?

....

....

15.8.5 स्वास्थ्य शिक्षा

स्वस्थ्य जीवन यापन के नियमों का छात्रों को ज्ञान करने का एक ढंग स्वास्थ्य शिक्षा है। विभिन्न विद्वानों ने इसको विभिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। **डॉ0 थामस डी0 बुड के अनुसार** ''स्वास्थ्य–शिक्षा उन अनुभवों का योग है जो व्यक्ति, समुदाय तथा प्रजाति के स्वास्थ्य से संबंधित आदतों वृत्तियों तथा ज्ञान को प्रभावित करते हैं।''

स्वास्थ्य शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसके अन्तर्गत बालकों के स्वास्थ्य का संरक्षण, उनके स्वास्थ्य में उत्पन्न विभिन्न दोषों एवं बीमारियों की खोज तथा उनका निराकरण एवं उन्हें स्वास्थ्य की वृद्धि के लिये उन्हें स्वास्थ्य संबंधी नियमों आदि से अवगत कराना निहित है। स्वास्थ्य संरक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण की स्थापना एवं संक्रामक रोगों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। उपयुक्त वातावरण की स्थापना के लिए विद्यालय भवन की स्थिति, शुद्ध वायु एवं प्रकाश की व्यवस्था एवं शारीरिक शिक्षा के उचित प्रबंध पर ध्यान देना आवश्यक है। इसके अतिरिकत बालकों की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताएं उचित डाक्टरी निरीक्षण, स्वास्थ्य संबंधी नियम, शारीरिक अंगों की बनावट एवं उनकी क्रियाप्रणाली आदि सम्मिलित हैं।

15.8.6 जनसंख्या शिक्षा

जनसंख्या शिक्षा का प्रत्यय नवीन है। शिक्षा मानव को अपने विचारों को व्यवहार में परिणित करने, समय एवं परिस्थितियाँ के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करने, स्वयं तथा अपने परिवेश को समझने की शक्ति प्रदान कर समायोजन करने की प्रेरणा देती है। मानव शिक्षा के माध्यम से स्वयं को तथा परिवेश को परिष्कृत कर सकता है। इन गुणों के अभाव में व्यक्ति साक्षर भले ही हो शिक्षित नहीं माना चाहिए। जनसंख्या शिक्षा इसी संदर्भ में ग्रहण की जाने योग्य एक दिशा है जो जन अथवा मानवीय शक्तियों के विकास से जुड़ी है।

जनसंख्या शिक्षा का सम्बन्ध जनसंख्या के आकार, वृद्धि अथवा ह्रास, संरचना, लैगिक अनुपात तथा

वैवाहिक आयु के ज्ञान से है। जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या की वृद्धि और ह्रास के कारणों, उनके सामाकि, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण पर पढ़ने वाले प्रभावों की जानकारी सन्निहित है। जनसंख्या को बढ़ाने हेतु कार्यक्रमों का नियोजन भी इसके अन्तर्गत आता है।

बुखारेस्ट में जनसंख्या–शिक्षा की विश्वसनीय संगोष्ठ 16–30 अगस्त सन् 1974 में हुई थी। इसमें लगभग 135 राष्ट्रों के 3, 500 सदस्यों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में यह तय किया गया कि जनसंख्या का सम्बन्ध सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक उत्थान से है।' जनसंख्या नीतियों और कार्यक्रम राष्ट्र के कार्यक्रमों से सम्बन्धित होने आवश्यक हैं। इस दृष्टि से जनसंख्या शिक्षा जीवन स्तर श्रेष्ठ बनाने तथा सुखी जीवन की सम्भावनाओं की वृद्धि करने वाली शिक्षा है।

जनसंख्या शिक्षा की परिभाषा करना कठिन कार्य है, इसका स्वरूप तथा विषय–क्षेत्र अधिक विस्तृत है–मानव जीन की सभी परिस्थितियों का समावेष किसी न किसी रूप में इसके अन्तर्गत कर लिया जाता है।

1. **यूनेस्को द्वारा प्रतिपादित परिभाषा के अनुसार**–''जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षणिक कार्यक्रम है, जो परिवार, समूह राष्ट्र विश्व की जनसंख्या स्थिति के संदर्भ में विद्यार्थियों में आदर्श तथा उत्तरदायित्व पूर्ण अभिवृत्ति तथा व्यवहार विकसित करती है।''
2. **साइमन ने जनसंख्या शिक्षा को**–''युवा पीढ़ी के विचारों, व्यवसायों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों में वांछित परिवर्तन लाने का एक माध्यम बताया है।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि जनसंख्या शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसमें निरन्तरता है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं के व्यक्ति, समाज एवं परिवेश तथा देश पर पड़ने वाले प्रभावों का ज्ञान आगामी दशकों के प्रजनकों को कराने का प्रत्यन्न किया जाता है।

15.8.7 यौन शिक्षा

मानव यौन शरीर रचना विज्ञान लैंगिक जनन, मानव यौन गतिविधि, प्रजनन स्वास्थ्य, प्रजनन अधिकार, यौन संयम, गर्भ निरोध सहित विभिन्न कामुकताओं से सम्बन्धित विषयों अनुदेशों को कहा जाता है। माता–पिता, संरक्षक इस शिक्षा के सरलतम मार्ग है। विद्यालयों में भी इसे सुगम बनाने की कवायद इग्लैण्ड के शिक्षाविद् वर्टेण्ड रसैल ने किया था। प्रगतिशील सामाज में इस प्रकार की शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। इसमें यौन अंगों, जनन, सम्भोग या रतिक्रिया, यौनिक स्वास्थ्य, यौन अचरण सम्बन्धी शिक्षा को सम्मिलित किया गया है। समसामयिक परिप्रेक्ष्य में इसे भी पाठ्यचर्या में शमिल किया जाना चाहिए।

15.8.8. पर्यावरण शिक्षा

व्यक्ति और उसके सामाजिक तथा प्राकृतिक पर्यावरण के बीच होने वाली क्रियाओं का अध्ययन पर्यावरणीय शिक्षा में किया जाता है।

यूनेस्को (1970) कार्य समिति के अनुसार 'पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत मनुष्य तथा उसके पर्यावरण (सांस्कृतिक तथा भौतिक–जैविक) के पारस्परिक सम्बन्ध तथा निर्भरता को समझने का प्रयास किया जाता है और उसको स्पष्ट करने हेतु कोशल, अभिवृत्ति एवं मूल्यों का विकास करते हैं।

कुक तथा हैरन (1971) ने पर्यावरण शिक्षा अधोलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है–

(1) पर्यावरण शिक्षा समस्या–केन्द्रित होती है।

(2) पर्यावरण शिक्षा अन्तः अनुशासन आयाम पर आधारित है।

(3) इसमें मूल्यों का अभिविन्यास किया जाता है।

(4) पर्यावरण शिक्षा से समुदाय का भी अभिविन्यास किया जाता है।

(5) पर्यावरण शिक्षा भविष्य की ओर उन्मुख होती है तथा

(6) छात्रों के कोशल तथा क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है।

पर्यावरणीय शिक्षा मानवीयता का बोध कराने वाली शिक्षा है। इससे व्यक्ति, प्रकृति एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों का बोध करते हुए पर्यावरण में सुधार के लिए प्रेरणा प्राप्त करता है। यह शिक्षा व्यक्ति की निर्णय प्रक्रिया को वैज्ञानिक बनाती है। यह शिक्षा व्यक्ति प्रक्रिया को वैज्ञानिक बनाती है तथा व्यवहार में विधायक परिवर्तन लाती है।

अध्यापक–प्रशिक्षण में पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व

पर्यावरणीय शिक्षा के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसके प्रमुख कारण है–

(1) इस विषय की बहु–विषयक प्रकृति

(2) माध्यमिक विद्यालयी तथा उच्च कक्षाओं में इस विषय का समाकलन करने की समस्या बहु–विषयक प्रकृति का होने के कारण विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता इसलिए भी और अधिक है क्योंकि हमारे पास जो प्रशिक्षित अध्यापक उपलब्ध है। एवं प्रशिक्षण के लिए जो अध्यापक आ रहे हैं उन्होंने अब तक पर्यावरणीय शिक्षा में न तो प्रशिक्षण प्राप्त किया है और न ही उन्होंने अपने विद्यालयी/महाविद्यालयी अध्ययन काल में पर्यावरण शिक्षा की विषयवस्तु का अध्ययन किया होता है। जिन विषयों में वे अधिस्नातक, स्नातक आदि होते हैं, जब वे अध्ययनरत रहे उस समय उनके विषयों में पर्यावरणीय विषयवस्तु बहुत कम मात्रा में अथवा शून्य मात्रा में सम्मिलित थी। जो सामग्री उपलब्ध भी थी वह केवल उस एकागी विषय की ही थी। उससे पर्यावरणीय शिक्षा का उद्‌देश्य पूरा होता सम्भव नहीं है। दूसरे माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं की विभिन्न विषयों की विषयवस्तु में पर्यावरण संरक्षण हेतु समाकलन करने की समस्या का समाधान ठीक ढंग से तब तक नहीं हो पायेगा जब तक उन्हें समाकलन करने के लिए विशेष प्रशिक्षण नहीं दिया जाता तथा विशेष प्रशिक्षित शिक्षक द्वारा विषयवस्तु का शिक्षण विभिन्न विषयों का समाकलन करके समाग्री उपलब्ध नहीं कराया जाता। उपर्युक्त कारणों से अध्यापकों के लिए पर्यावरणीय शिक्षा में विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता की अनुभूति होती है। उसके लिए प्रयास किये जाने चाहिए। इस दिशा में कुछ प्रान्तों में एस0सी0ई0आर0टी0 क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, आई0ए0एस0इ0, सी0टी0ई0 तथा जिला शिक्षा संस्थान आदि कार्य कर रहे हैं।

प्रत्येक अध्यापक को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्‌यचर्यां में पर्यावरणीय शिक्षा के विचारों को लागू करने में राजस्थान के शिक्षा–विभागीय परीक्षाओं में 'पर्यावरणीय शिक्षा के विशिष्ट प्रशिक्षण की व्यवस्था अपने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में की हुई है। इन्होंने दो प्रश्न–पत्र अपने दो वर्षीया शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रथमिक स्तर) में सम्मिलित किये हुए है। पहला है 'सामाजिक पर्यावरणीय ध्ययन विषयवस्तु एवं शिक्षण विधियाँ। इसके अतिरिक्त इनके पाठ्‌यचर्या में सम्मिलित करने के दायित्व की पूर्ति पाठ्‌यचर्या में की गई है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

8. जनसंख्या शिक्षा क्यों आवश्यक है ?

....

....

9. यौन शिक्षा क्यों आवश्यक है ?

....

....

15.8.9 शान्ति के लिए शिक्षा

शान्ति के लिए शिक्षा का तात्पर्य नैतिक विकास के साथ–साथ उन मूल्यों, दृष्टिकोणों और कोशलों के पोषण का विकास करना जो प्रकृति एवं मनुष्य के बीच में सामंजस्य स्थपित करने के लिए आवश्यक है। इसमें आन्तरिक गुणों के विकास के साथ–साथ मनुष्य के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास आता है। आन्तरिक संसाधनों में हर्ष, प्रेम, उम्मीद, साहस के साथ–साथ मानव अधिकार, न्याय,सहिष्णुता, सहकार, सामाजिक दायित्व, सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करना शामिल है। शान्ति शिक्षा का अर्थ शान्ति के बारे में तथा शान्ति के लिए सीखना है। शान्ति के बारे में सीखना तथा शान्ति के लिए सीखना, कोशल दृष्टिकोणों तथा मूल्यों को सीखना है। संयुक्त राष्ट्र के मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा के अनुच्छेद 26 में कहा गया है कि शान्ति शिक्षा मानव व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए मानव अधिकारों और बुनियादी स्वतंत्राताओं के प्रति सम्मान को मजबूत बनाने के लिए समझ, सहिष्णुता एवं सभी देशों के बीच दोस्ती, नस्ली और धार्मिक एकता को बढ़ावा देना है। शान्ति शिक्षा मानव विकास को सुविधा देने के साथ–साथ गरीबी, पूर्वाग्रह, भेदभाव, बलात्कार, हिंसा, युद्ध मूल रूप से परमाणु के युद्ध के माध्यम को दूर करना है।

विश्व के कई भागों में शान्ति शिक्षा को द्वन्द को दूर करने के लिए शिक्षा मानव अधिकार शिक्षा ग्लोबल शिक्षा, आलोचनात्मक शिक्षण, मुक्ति एवं सशक्तिकरण के लिए शिक्षा, सामााजिक न्याय शिक्षा।

शान्ति एवं हिंसा में महत्वपूर्ण सम्बन्ध होता है। हिंसा दो प्रकार की होती है–

1. प्रत्यक्ष हिंसा
2. अप्रत्यक्ष हिंसा

प्रत्यक्ष हिंसा में व्यक्गित तथा संस्थागत दोनों प्रकार की हिंसा सम्मिलित होती है। व्यक्तिगत हिंसा व्यक्तिगत रूप से किसी को नुकसान पहुँचाना है। जैसे बलात्कार, आतंकवाद हत्या, असल्ट, क्रूरता आदि आते हैं। संस्थागत हिंसा में युद्ध राज्य द्वारा प्रयोजित आतंक, वनस्पति तथा प्राणी की जिन्दगी में औद्योगिक इकाईयों का घातक प्रभाव आदि आते है। इस प्रकार की व्यक्तिगत एवं संस्थागत हिंसा की अनुपस्थिति शान्ति पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। अप्रत्यक्ष हिंसा के अन्तर्गत संरचनात्मक हिंसा आती है इस प्रकार की हिंसा में लिंगवाद, जातिवाद, विभेद करना, गरीबी, भूख, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव आदि आते हैं। शान्ति के सकारात्मक पक्ष अर्थात जो शिक्षा शान्ति के लिए आवश्यक है उसमें मानव अधिकार, पारिस्थितक जागरूकता, धैर्य, मानव का बड़प्पन तथा जीवन की इज्जत करना, अहिंसा, अर्न्तसांस्कृतिक समझ, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा ग्लोबल एजेन्सी स्त्री एवं पुरुष में समानता प्रमुख है। इन सब को प्राप्त करने के लिए यूनिसेफ तथा यूनेस्को ने शैक्षिक पहलू में शान्ति शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

15.8.10 वैश्वीकरण की शिक्षा

भूमंडलीय परस्पर–निर्भरता आज प्रत्येक समाज के लिए आवश्यक तथा अपरिहार्य बन गई है। राष्ट्रों के बीच संपर्कों, अंर्तक्रियाओं तथा संबंधों के तंत्र (नेटवर्क) ने मकड़ी के जाल की तरह पूरे विश्व को अपने घेरे में समेट लिया है और इस तंत्र के किसी भाग को छूने का अर्थ है विश्व के अनेक–और कई बार सभी भागों को कंपायमान करना। मानव–जीवन के सभी पक्ष सार्वभौमिक रूप से अंतः निर्भर है। चाहे वह स्वच्छ पेयजल, वस्त्र, परिवहन, करनीति, मुद्रास्फीति, रोजगार, समाचारपत्रों तथा पुस्तकों की विषय–वस्तु, ईधन की लागत और पूर्ति, आतंकवाद या शांति आदि ही क्यों न हो। इन सब की परस्पर भूमंडलीय अंतर्निभरता तथा परस्पर–प्रभाव होते हैं।

भूमंडलीय शिक्षा उभरती हुई भूमंडलीय प्रणालियों को समझने की समकालीन विश्व की आवश्यकता का उत्तर है। छात्र भूमंडलीय अंतर्निभरता को अपने दैनिक जीवन की सामान्य विशेषता के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। उन्हें उस विश्व की गहरी समझ होनी चाहिए जिसका वे अंग हैं इसके लिए ऐसी पाठ्यचर्या का विकास ऐसा

होना चाहिए जो विश्व के बारे में छात्रों में जगरूकता पैदा कर सके। छात्रों को विश्व में होने वाले परिवर्तनों की मात्रा और गति को समझने में समर्थ होना चाहिए। परिवर्तन हेतु तैयारी के लिए क्रिया–उन्मुख कोशल आवश्यक हैं–जैसे निर्णय लेना, समस्या– समाधान करना, सृजनशील सोच तथा भावी प्रयोजन के विकास और अभ्यास ये कोशल समूहगत प्रक्रियाओं में भागीदारी को सुगम बनाते हैं।

भूमंडलीय शिक्षा के पाठ्यचर्या को छात्रों को सार्वभौमिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करना चाहिए। भूमंडलीय शिक्षा के पाँच उद्देश्य हैं–प्रणालीगत चेतना का विकास, परिप्रेक्ष्य चेतना, भूमंडलीय स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, भागीदारी विषयक चेतना तथा प्रक्रिया बुद्धि। ये उद्देश्य छात्रों को भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करने तथा समकालीन यथार्थ के लिए तैयार करेंगे।

15.8.11 तकनीकि शिक्षा–कम्प्यूटर शिक्षा

तकनीकी का तात्पर्य है व्यावहारिक उद्देश्यों की प्राप्त के लिए वैज्ञानिक ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग करना शिक्षा का सम्बन्ध उस तकनीकि तथा व्यावहारिक विज्ञान से जो शिक्षण से अधिगम तक पहुँच रखता हो इसमें मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, भाषा तथा विविध सम्बन्धि क्षेत्र शामिल है शैक्षिक तकनीकि में सिर्फ मशीने ही सम्मिलित नहीं हैं, इसमें अधिगम क्षेत्र में आने वाली प्रणालियों तकनीकी तथा अन्य सामाग्रियों का प्रयोग एवं मूल्यांकन भी सम्मिलित होता है।

तकनीकी शिक्षा का आधारभूत विषय विज्ञान है। इसमें व्यावहारिक पक्ष को महात्व दिया जाता है, क्रमबद्ध उपागम को प्रधानता दी जाती है। शैक्षिक तकनीकी को मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। शैक्षिक तकनीकि के तीन रूप होते है–

1. कठोर शिल्प उपागम।
2. कोमल शिल्प उपागम।
3. प्रणाली विश्लेषण।

कम्प्यूटर शिक्षा

यह विद्युत से चलने वाला उपकरण है इसमें सूचनाओं का संग्रह व सम्प्रेषण किया जाता है। यह आंकिक, यौगिक व गणितीय कार्यों को बहुत ही शीघ्रता एवं शुद्धता से पूर्ण कर सकता है। इस में की–बोर्ड, माउस, स्क्रीन होता है। चार्ल्स वेवेज ने लघुगणिकीय अंकन करने वाली मशीन को तैयार किया। निरन्तर विकास से आज शिक्षा के क्षेत्र इलेक्ट्रानिक कम्प्यूटर विद्यमान है।

शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर शिक्षा एक नवाचार है। जिसके प्रयोग से शिक्षा क्षेत्र के कार्यों में तीव्रता आयी है। शिक्षा क्षेत्र की जटिलताओं का समाधान इसके माध्यम से सरलता से हो जाता है। कम्प्यूटर व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रकार के शिक्षण में उपयोगी है। इसके प्रयोग से कक्षा का वातावरण नीरस होने के बजाय सरस हो जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में इसके उपयोग को अधोलिखित रूप में समझा जा सकता है –

1. बड़ी–बड़ी गणनाओं को कुछ सेकेण्ड में करता है 2. बड़ी मात्रा में सूचनाओं का संग्रह करता है। 3. शिक्षण व अनुदेशन में अनुपयोगी है। 4. शैक्षिक संस्थाओं प्रवेश, परीक्षा, कराने एवं मूल्यांकन में भी उपयोगी है। 5. प्रयोगशाला व दूसरे क्रियात्मक कार्यों में सहायक है। 6. स्वशिक्षण में उपयोगी है। 7. उच्च शिक्षा, शोधकार्यों में उपयोगी है। 8. छात्रों को पुर्नवलन भी मिलता है। अतः यह भी समसामयिक पाठ्यचर्या के लिए उपयोगी है।

15.8.12 समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में एक नयी मांग एवं प्रयोग है। इसमें एक आयु वर्ग और एक शिक्षा स्तर के सभी प्रकार के सामान्य, मेधावी, पिछड़े, विकलांग एवं बाधाग्रस्त बच्चों को एक ही विद्यालय में, एक कक्षा में, एक साथ शिक्षण प्रदान किया जाता है। 20वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में इस क्षेत्र में एक नये चिन्तन ने जन्म

लिया जिसके अनुसार किसी भी बच्चे को किसी भी आधार पर सामान्य बच्चों से अलग करना और उनकी शिक्षा की व्यवस्था अलग से करना अमानवीय माना गया। राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर इस विषय पर गम्भीरता से सोचा विचारा जाने लगा। 1989 इसवीं सयुक्त राष्ट्र संघ में बच्चों के अधिकार विषय पर सम्मेलन हुआ है। इसमें यह निर्णय लिया गया कि किसी भी क्षेत्र में बच्चों के साथ किसी भी आधार पर भेद–भाव नहीं होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में भी 1995 में भारत ने भी इस पर अपनी मोहर लगा दिया।

"समावेशी शिक्षा वह शिक्षा है जिसमें एक शिक्षा स्तर की सभी बच्चों को बिना किसी आधार पर भेद–भाव के साथ–साथ पढ़ाया–सिखाया जाता है।"

लोकतंत्र में सभी व्यक्तियों को समानता, स्वत्रंता, न्याय, बन्धुत्व का अधिकार प्राप्त है तो समावेशी शिक्षा आवश्यक है। समावेशी शिक्षा को आधार मानवतावादी दर्शन है। जो सभी को समान अधिकार देता है। 2009 नवम्बर में शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया गया जिसमें 6–14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गयी। इसी समय समावेशी शिक्षा को भी स्थान प्राप्त हुआ, जो कि समसमायिक विषय है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

10. हिंसा कितने प्रकार की होती है ?

....

....

11. समावेषी शिक्षा क्या है? भारत में इसका प्रारम्भ कब हुआ ?

....

....

15.8.13 कौशल विकास की शिक्षा

भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है। सबको अपने श्रम –शक्ति का उचित लाभांश मिले, रोजगारयुक्त कौशलों का विकास एवं प्रशिक्षण पर बल दिया जाय। वर्तमान में बेरोजगार युवा (15–24) की दर 10.1 प्रतिशत है। इसको विकसित करने के लिये श्रम शक्ति को तैयार करना भारत की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। तीन चीजों की खास तौर से जरूरत है– उचित एवं आवश्यक कौशलों की शिक्षा प्राप्त करना, सुनिश्चित करने के लिये कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उद्योग जगत की सार्थक भागीदारी, स्पष्ट मानदंड और प्रमाणन प्रणाली तथा समुचित ढंग से तैयार और लागू की गयी दीर्घकालिक कौशल विकास संबंधी कार्यनीति। कौशल विकास के लिये पहले से ही अनेक कदम उठाये जा चुके हैं जिनमें औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, महिला व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान, प्रशिक्षण महानिदेशालय द्वारा संचालित उन्नति प्रशिक्षण संस्थान और निजी कम्पनियों या सरकार द्वारा संचालित बेसिक ट्रेनिंग सेन्टर और संबंधित अनुदेशन सेन्टर शामिल हैं। अन्य के अलावा केन्द्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना अनेक मंत्रालयों और विभागों जैसे कृषि, आवास एवं गरीबी उन्मूलन, महिला और बाल विकास, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रशिक्षणों का संचालन तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा व्यावसायिक शिक्षा में स्नातक और व्यावसायिक शिक्षा में डिप्लोमा का संचालन किया जा

रहा है।

इन बहुआयामी प्रयासों के बावजूद भारत लगभग 487 मिलियन की अपनी श्रम शक्ति (15–59 वर्ष की आयु वाले) में से औपचारिक रूप से महज 4.69 प्रतिशत को ही प्रशिक्षित कर सका है। व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यचर्या का प्रशिक्षण लेने वाले युवाओं में केवल 18 प्रतिशत को नौकरी मिली है। इसको सरकार द्वारा और गहन रूप से सर्वे कराकर प्रगति देना आवश्यक है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना भारत की नयी युवा पीढ़ी के लिये एक पहल है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा संचालित योजना का उद्देश्य युवाओं को प्रोत्साहित करने एवं आज के बेरोजगार लोगों के कौशल विकास को बढ़ाने के लिये है। अतः कौशल विकास की शिक्षा को पाठ्यचर्या में स्थान देना समीचीन होगा।

15.8.14 दूरस्थ शिक्षा

दूरस्थ शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है, दूर स्थित शिक्षा अर्थात् दूर रहते हुये शिक्षा प्राप्त करना। इसे मुख्य शिक्षा भी कहा जाता है। दूरस्थ शिक्षा अप्रत्यक्ष शिक्षण की व्यवस्था है। इसमें शिक्षक और शिक्षार्थी का प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं रहता है। यह संबंध आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपकरणों के माध्यम से स्थापित किया जाता है। इसके अलावा दूरस्थ शिक्षा उन बालकों युवाओं एवं प्रौढ़ों के लिये शिक्षा की एक व्यवस्था है। जो किसी कारणवश औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं और आगे भी समर्थ नहीं हो सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा उन लोगों के द्वार तक शिक्षा पहुंचाने की व्यवस्था है जो किसी आयु के एवं किसी भी स्थान पर रहने वाले हैं। अथवा स्वव्यवसाय एवं किसी सेवा में संलग्न हैं अथवा अपनी शिक्षा जारी रखना चाहते हैं। इसके संदर्भ में शिक्षा आयोग 1964–66 में लिखा है ''यह उन लाखों लोगों को शिक्षा देने की पद्धति होनी चाहिए जो अध्ययन के लिये अपने स्वयं के प्रयासों पर निर्भर हैं, जब कभी उन्हें ऐसा करने का समय प्राप्त होता है। हम सोचते हैं कि पत्राचार या गृह अध्ययन कोष इन्हीं परिस्थितियों का सही उत्तर देता है।

दूरस्थ शिक्षा बढ़ती हुई जनसंख्या को शिक्षित करने का एक माध्यम है। इसके माध्यम से सभी के लिये शिक्षा एवं सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों, पर्वतीय क्षेत्रों आदि में निवास करने वाले व्यक्तियों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। नौकरी अथवा निजी रोजगार में लगे व्यक्तियों को भी इससे शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। इसके माध्यम से सभी को समान अवसर सुलभ कराये जा सकते हैं। यह व्यक्ति विशेष की शैक्षिक योग्यता की अभिवृद्धि में सहायक हो सकती है।

15.8.15 स्त्री शिक्षा

मानव जीवन में स्त्री की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि स्त्री ही अपने दायित्व के गुरुतर भार को वहन करती हुई मनुष्य को इस संसार चक्र के संचालन के लिए सक्षम बनाती है। वह माता–पिता, भगिनी एवं पत्नी के रूप में पुरुष की सहायिका है। आधुनिक समाज में स्त्रियों का योगदान पारिवारिक दायित्व के निर्वहन की अपेक्षा बच्चों के पोषण एवं सम्बर्द्धन में अधिक है। इसके अलावा मानव संसाधन के पूर्ण विकास, घर की देख–रेख एवं प्रगति, बाल्यावस्था में बच्चों के चरित्र को ढालने एवं उनके व्यक्तित्व के विकास में स्त्रियों की शिक्षा पुरुषों की तुलना में अधिक महत्व रखती है। एक सुशिक्षित स्त्री ही पारिवारिक जीवन को अधिक सुखमय एवं खुशहाल बना सकती है। स्वातंत्रय संघर्ष में कुछ भारतीय महिलाएं मनुष्य के साथ–साथ लड़ी थीं। भूख, गरीबी, अज्ञानता एवं अस्वस्थता के विरुद्ध संघर्ष के उनकी यह सहभागिता आज भी जारी है और आगे भी अधिक सक्रियता से जारी रहेगी क्योंकि आज की नारी अतीत में अबला समझी जाने वाली नारी नहीं है। आज वह अपनी आजीविका स्वयं अंगीकृत करती है और समाज एवं उसके सभी पहलुओं के विकास के दायित्व को पुरूष के साथ समान रूप में निभाती है।

प्रजातांत्रिक भारत में स्त्रियों को पुरुषों के समान सभी अधिकार प्राप्त हैं परन्तु आज भारतीय समाज में उसकी स्थिति अच्छी नहीं है। इसका मुख्य कारण है, उनमें शिक्षा की कमी। स्त्रियों के लिए अभी तक पुरुषों के सदृश शिक्षा की व्यवस्था नहीं हो सकी है। इसीलिए वे शिक्षा के क्षेत्र में पुरुषों से बहुत पीछे हैं। परिणामस्वरूप उनमें वैयक्तिक स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता का अभाव मिलता है। अतः भविष्य में प्रजातंत्र की सफलता के लिए

स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है, जिससे राष्ट्र की अभीष्ट प्रगति हो सके।

15.8.16 उपभोक्ता शिक्षा

आधुनिक समय में समाज का प्रत्येक व्यक्ति उपभोक्ता है। उपभोक्ता को बाजार का स्वामी कहा जाता है और ऐसी मान्यता है कि उपभोक्ता प्रायः गलत नहीं होता। पूंजीवादी अर्थ–व्यवस्था में उपभोक्ता का स्थान सर्वोच्च होता है। पूंजीवादी व्यवस्था में समूचा उत्पादन तंत्र उपभोक्ता के आदेश और इच्छाओं द्वारा संचालित होता है। वहां उत्पादक, उपभोक्ता का एक प्रकार से सेवक होता है और वह वस्तुओं का उत्पादन उपभोक्ता की रूचि और मांग के अनुसार करता है। परन्तु वर्तमान आर्थिक दौड़ वाली संस्कृति में उपभोक्ता की स्थिति दयनीय हो गई है। आम उपभोक्ता परेशान हैं, उन्हें उचित मूल्य पर, सही नाप–तौल की वस्तुयें समय पर उपलब्ध नहीं होतीं। उन्हें गुमराह किया जाता है तथा अनेक रूपों में उनका शोषण किया जाता है जैसे अधिक मूल्य, मिलावट, नकली वस्तुयें, कम नाप–तौल, जमाखोरी, भ्रामक विज्ञापन, चोर बाजारी आदि। उपभोक्ताओं को इन्हीं आर्थिक कठिनाईयों से छुटकारा दिलाना उपभोक्ता आन्दोलन का लक्ष्य है। बढ़ती हुई जनसंख्या, उत्पादन की सीमित मात्रा, उपभोक्ता शिक्षा का अभाव, प्रशासनिक कमजोरी, मुद्रास्फीति, एकाधिकार की प्रवृत्ति, नैतिक मानवीय मूल्यों का ह्रास, तथा सजग उपभोक्ता संगठनों का अभाव आदि अनेक ऐसे कारण हैं जिससे उपभोक्ता की उपादेयता को नकारा गया है। आज के विक्रेता रातोंरात लखपति से करोड़पति बनने की इच्छा में घृणित हथकंडे अपना कर उपभोक्ता की जान से खेल से रहे हैं।

उपभोक्ता का हित संरक्षण करना, उन्हें शोषण से बचाना आधुनिक समाज के समक्ष एक चुनौती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ख) अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कीजिए।

12. दूरस्थ शिक्षा क्यों आवश्यक है ?

....

....

13. स्त्री शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण हैं ?

....

....

14. उपभोक्ता शिक्षा क्या आवश्यक है ?

....

....

15.9 सारांश

इस इकाई में पाठ्यचर्या के समसायिक मुद्दों की संकल्पना, आवश्यकता, महत्व एवं पाठ्यचर्या की प्रभावी प्रवृत्तियां तथा पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दे पर चर्चा की गयी है। पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दों पर

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन डीबी ने भी तर्कसंगत विश्लेषण कर कहा था कि शिक्षा एक त्रिआयामी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक शिक्षार्थी के बीच में पाठ्यचर्या होता है। पाठ्यचर्या वर्तमान की आवश्यकता को देखते हुये तैयार किया जाना चाहिए। वर्तमान में कौन–कौन से मुद्दे आवश्यक हैं, इसकी क्यों आवश्यकता है। पाठ्यचर्या में मद्दे क्यों महत्वपूर्ण हैं इनकी संकल्पना कैसे की जाती चाहिए, इस पर ध्यान रखकर ही पाठ्यचर्या तैयार किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन होने से मानव जीवन प्रभावित हुआ है। अतः शिक्षा में भी वांछनीय परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया जाय ताकि मानव प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो सके। पाठ्यचर्या का सीधा संबंध समाज से होता है। समाज के परिवर्तनशील रूप को देखते हुये पाठ्यचर्या में समसामयिक मुद्दों को जोड़कर आवश्यकताओं को निरुपित किया जाय। जैसे छात्रों को नवीन समस्या के समाधान करने योग्य वातावरण तैयार करना। तकनीकों का उपयोग करना, राष्ट्र की उन्नति के लिये पाठ्यचर्या को प्रासंगिक बनाना, समाज में एकता और समरसता स्थापित करने के लिये सकारात्मक पक्षों पर बल देना। समसामयिक मुद्दों के चयन में महत्वपूर्ण चार आधार सामाजिक शक्तियां, अधिगम का स्वरूप, स्वीकृत सिद्धान्तों द्वारा प्रदत्त मानव विकास का ज्ञान, ज्ञान तथा संज्ञान का स्वरूप आदि पर ध्यान दिया जाय तो पाठ्यचर्या तैयार करने में समसामयिकता को स्थान मिल सकेगा और छात्रों के ज्ञान में नवीनता आयेगी।

पाठ्यचर्या का एक बुनियादी कार्य है, भविष्य के लिये युवाओं को तैयार करना जिसके लिये पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक है, इसी के साथ–साथ सूचना विस्फोट एवं प्रौद्योगिकी को अपनाना आवश्यक है। पाठ्यचर्या को अधिकाधिक रोजगारन्मुखी बनाने हेतु उसे समसामयिक बनाना होगा जिसके संदर्भ में प्रस्तुत इकाई में विस्तार से चर्चा की गयी।

15.10 अभ्यास के प्रश्न

1. वर्तमान परिस्थिति के अनुसार पाठ्यचर्या कैसी होनी चाहिए ? विवेचना कीजिए।
2. पाठ्यचर्या द्वारा नवीन समस्याओं का समाधान कैसे किया जा सकता है ? वर्णन कीजिए।
3. पाठ्यचर्या समसामयिक मुद्दों की आवश्यकता क्यों है ? समझाइए।
4. अधिगम को प्रभावित करने वाले मुद्दों का वर्णन कीजिए।
5. पाठ्यचर्या निर्माण करते समय सम्भावित भावी प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।
6. भारत में अध्यापक शिक्षा के सन्दर्भ में लिखिए।

15.11 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या के नवीन मुद्दों पर आपस में चर्चा कीजिए।
2. पाठ्यचर्या के समसामयिक मुद्दों के महत्व पर चर्चा कीजिए।

15.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (क) बढ़ती जनसंख्या तथा भौतिकवादी आवश्यकताएं।

   (ख) संसाधनों का असमान वितरण तथा आवश्यकता से अधिक दोहन।

   (ग) सामाजिक अन्तर।
2. हमें किस उम्र के विद्यार्थियों को ज्ञान देना है।
3. (1) प्राणीगत चेतना का विकास एवं परिप्रेक्ष्य चेतना, (2) भूमण्डली स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, (3) भागीदारी विषयक चेतना तथा प्रक्रिया बुद्धि।
4. विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य करने से असंतोष एवं आन्तरिक समस्या का कारण हो सकता है,

जिससे शैक्षिक वातावरण विकृत होता है।

5. सूचना विस्फोट एवं संचार प्रौद्योगिकी के परिणाम स्वरूप अधिगम निवेश में परिवर्तन हो रहे हैं।
6. आधुनिक पाठ्यचर्या वह है जिसमें नवीनतम ज्ञान तथा अध्ययन क्षेत्र का समावेष हो। इस पाठ्यचर्या में वे सभी पहलु शामिल होते हैं जो वर्तमान समय में प्रासंगिक होते हैं।
7. विशेष विषय क्षेत्र में रूचि एवं योग्यता रखने वाले छात्रों की शिक्षा से।
8. जनसंख्या शिक्षा जीवन स्तर को श्रेष्ठ एवं सुखी जीवन की सम्भावनाओं की वृद्धि करने वाली शिक्षा है।
9. यौन अंगों, जनम, सम्भोग, यौनिक स्वास्थ्य, यौन आचरण संबंधी ज्ञान हेतु यौन शिक्षा आवश्यक है।
10. प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष हिंसा।
11. जिसमें एक शिक्षा स्तर के सभी बच्चों को बिना किसी आधार पर भेद–भाव किये, साथ–साथ पढ़ाया एवं सिखाया जाता, समावेषी शिक्षा कहलाती है। भारतवर्ष में इसकी शुरुआत 1995 में हुई।
12. जो लोग किन्हीं कारणों से औपचारिक शिक्षा से वंचित रह जाते हैं या व्यवसाय में रहते हुये औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाते हैं और वे शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिये दूरस्थ शिक्षा की व्यवस्था आवश्यक है।
13. प्रजातंत्र की सफलता के लिए स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है, जिससे राष्ट्र की अभीष्ट प्रगति हो सके।
14. उपभोक्ता का हित संरक्षण करना, उन्हें शोषण से बचाने के लिये उपभोक्ता शिक्षा आवश्यक है।

15.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. अग्रवाल, जे0सी0 (1990), भारत में पाठ्यचर्या सुधार, आगरा, अग्रवाल प्रकाशन।
2. गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता अल्का (2004): भारतीय शिक्षा का इतिहासः विकास एवं समस्याएं, इलाहाबाद, शारदा प्रकाशन ।
3. पाठक, पी0डी0 एवं त्यागी, गुरुसरनदास (2017), सम–सामयिक भारतीय शिक्षा, आगरा; अग्रवाल प्रकाशन।
4. मदान, पूनम (2014), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आगरा; अग्रवाल प्रकाशन।
5. लाल, रमन बिहारी एवं, पलोड, सुनीता (2017), समकालीन भारत और शिक्षा : विषय और मुद्दे, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो ।
6. शर्मा, आर0ए0 (2011), अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।
7. सिंह : रामपाल (2011), उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा, आगराः अग्रवाल प्रकाशन।
8. सारस्वत, मालती ए मोहन, मदन (2014) ; भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं।
9. योजना (मई, 2016) : प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय नई दिल्ली।

इकाई – 16 : पाठ्यचर्या में अनुसंधान

इकाई की संरचना

16.1 प्रस्तावना

16.2 इकाई के उद्देश्य

16.3 पाठ्यचर्या में अनुसंधान : परिचय

16.3.1 पाठ्यचर्या निर्माण की नीति से सम्बन्धित अनुसंधान

16.3.2 पाठ्यचर्या विश्लेषण

16.3.3 पाठ्यचर्या प्रारूप, अनुप्रयोग एवं क्रियात्मक अनुसंधान

16.3.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन

16.4 पाठ्यचर्या संबंधी अनुसंधान की प्रवृति

16.5 सारांश

16.6 अभ्यास के प्रश्न

16.7 चर्चा के बिन्दु

16.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

पाठ्यचर्या शिक्षण प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। पूरा शिक्षण तंत्र पाठ्यचर्या के चारों तरफ ही चक्कर काटता है। शिक्षण प्रक्रिया की शुरूआत से लेकर मूल्यांकन तक सबकुछ पाठ्यचर्या के द्वारा ही निर्धारित होता है। अर्थात क्या पढाना है? किसे पढ़ाना है? कैसे पढ़ाना है? और कौन पढ़ाएगा? आदि प्रश्नों के उत्तर हमें पाठ्यचर्या से ही प्राप्त होते है। ऐसे में पाठ्यचर्या के संबंध में शोधकार्य महत्वपूर्ण हो जाते है। चूँकि शिक्षा समाज का दर्पण है। अतः जैसा समाज होता है वैसी ही अपनी शिक्षा पद्धति होती है। पाठ्यचर्या शिक्षा पद्धति का केन्द्र बिन्दु है अतः पाठ्यचर्या भी समाज पर निर्भर करता है। उदाहरण के तौर पर उत्तर वैदिक काल में समाज में अध्यात्मिकता की प्रधानता थी तो हमारा पाठ्यचर्या भी अध्यात्म से परिपूर्ण था। गुरूकुलों में विद्यार्थियों को वेद, पुराण, स्मृति, आदि पढ़ाए जाते थे। कालांतर में समाज में अमूल–चूल परिवर्तन हुए और इसके परिणामस्वरूप पाठ्यचर्या में। पाठ्यचर्या शिक्षा की गुणवत्ता का निधारक तत्व है। शिक्षा की गुणवत्ता अन्तिम रूप से पाठ्यचर्या के व्यक्तिगत और सामाजिक प्रासंगिकता तथा शिक्षण संस्थानों में इसके प्रभावपूर्ण अनुप्रयोग की सीमा पर निर्भर करता है। शिक्षा प्रणाली में पाठ्यचर्या का प्रभावपूर्ण अनुप्रयोग तभी संभव है जब वह पाठ्यचर्या शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता के अनुकूल हो। तात्पर्य यह है कि हमारी शिक्षा प्रणाली परिवर्तनशील है और यह समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुकूल परिवर्तित होती रहती है। पाठ्यचर्या को भी उन परिवर्तनों के अनुकूल परिवर्तित करना पड़ता है।

आज हमारा समाज निरंतर हो रहे परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में वर्तमान परिदृश्य में समाज को किस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है? भविष्य में शिक्षा की क्या मांग होगी? आदि जैसे प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पाठ्यचर्या के क्षेत्र में शोध होना आवश्यक है। निरंतर शोधकार्य हो भी रहे हैं और अतीत में भी हुए हैं, प्रस्तुत इकाई में हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि पाठ्यचर्या संबंधी शोध में हम किन–किन शोध को शामिल कर सकते हैं अर्थात पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र क्या होंगे।

16.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग हो जाएंगे कि –

1. पाठ्यचर्या संबंधीशोध के क्षेत्र का अर्थ समझ सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र का वर्णन कर सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र की प्रवृति की व्याख्या सकेंगे।

16.3 पाठ्यचर्या में अनुसंधान : परिचय

शिक्षा किसी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए राजपथ का कार्य करती है। विकास के विभिन्न पक्षों, जैसे–सामाजिक, आर्थिक आदि में अनेक समानताएं होती हैं लेकिन इनकी अपनी कुछ विशेषताएं भी होती हैं। इनकी ये विशेषताएं इनके पाठ्यचर्या में झलकनी चाहिए और पाठ्यचर्या इन विशेषताओं की प्राप्ति के लिए उपयुक्त होना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी, विशेषतः शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थी को पाठ्यचर्या संबंधी शोध के संदर्भ में जानकारी होनी चाहिए।

'पाठ्यचर्या संबंधी शोध' एक व्यापक पद है जिसके अंतर्गत मुख्यतः पाठ्यचर्या के प्रस्ताव, क्रिया–कलाप या उसके परिणाम द्वारा जनित समस्याओं को समझने में शोध तकनीकों/प्रविधियों के अनुप्रयोग आदि समाहित होते हैं।

पाठ्यचर्या का व्यवहारिक अभ्यास कोई नई घटना नही हैं इसकी शुरूआत तब से मानी जा सकती है जब से मनुष्य ने शिक्षा प्रदान करने के पुनीत कार्य की शुरूआत की। लेकिन पाठ्यचर्या निर्माण संबंधी क्रिया–कलापों का अध्ययन अपेक्षाकृत एक नया प्रयास है। पाठ्यचर्या का एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में औपचारिक विकास 12वीं शताब्दी से संयुक्त राज्य अमेरिका में माना जाता है। हॉलाकि इससे पूर्व भी थोड़े बहुत प्रयास हो चुके थे। **फलरे द्वारा 1695 ई0 में ''द हिस्ट्री आफ च्वॉयस एण्ड मेथड्स आफ स्टडी''** नामक पुस्तक पाठ्यचर्या संबंधी प्रारंभिक पुस्तक मानी जाती है **(स्चुबेर्त (1980)**। कालांतर में शिक्षण–प्रक्रिया में विद्यालय का महत्व बढ़ने के कारण पाठ्यचर्या निर्माण के प्रति लोगो का रूझान बढ़ा और पाठ्यचर्या के स्वरूप, पाठ्यचर्याख संबंधी साहित्य, जो एक अध्ययन क्षेत्र को दूसरे अध्ययन क्षेत्र से अलग कर सके, से संबंधित एक स्थायी स्वरूप चिन्तन का विकास हुआ **(क्रेमिन, 1971)** औपचारिक रूप से इसका उदय संयुक्त राज्य अमेरिका में, 1927 में, शिक्षा के अध्ययन के लिए बनी राष्ट्रीय सोसाइटी के एक समिति द्वारा तैयार एक वार्षिक पुस्तिका जिसमें पाठयक्रम निर्माण के लिए विचारों को एक साथ रखकर प्रयास करने पर बल दिया गया था, के प्रकाशन के साथ हुई (रज, 1927) समय के साथ इसमें विकास होता गया और आज इसका क्षेत्र अति व्यापक हो गया है। पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र को आप अधोलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैः

1. पाठ्यचर्या निर्माण की नीति संबंधी शोध
2. पाठ्यचर्या विश्लेषण संबंधी शोध
3. पाठ्यचर्या प्रारूप, अनुप्रयोग एवं क्रियात्मक शोध
4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्न प्रश्नों में दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों के साथ कीजिए।

(ख) अपने उत्तर के मिलान इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. पाठ्यचर्या का एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में औपचारिक विकास......................... शताब्दी में माना जाता है।

2. ''द हिस्ट्री आफ च्वॉयस एण्ड मेथड्स आफ स्टडी'' नामक पुस्तक..................... ने लिखी।

3. ''द हिस्ट्री च्वॉयस एण्ड स्टडी'' नामक पुस्तक वर्ष......................में लिखी गयी।

4. औपचारिक रूप से पाठ्यचर्या संबंधी विकास का प्रारंभ.........नामक देश में हुआ।

16.3.1 पाठ्यचर्या निर्माण की नीति संबंधी अनुसंधान

पाठ्यचर्या संबंधी शोध के एक क्षेत्र के रूप में, पाठ्यचर्या संबंधी नीति विषयक शोध को माना जाता है। इसके तहत शिक्षा प्रणाली में अधिकारियों की वरीयता जो हर देश में अलग–अलग होती है, को शामिल किया जाता है। वे देश जिनका पाठ्यचर्या केन्द्रीय होता है अर्थात पूरे देश के लिए एक ही पाठ्यचर्या होता है, वो शिक्षक की योग्यता एवं उनकी विशेषता के संबंध में आँकड़े एकत्र करने में ज्यादा रूचि रखते हैं। वो ये भी जानना चाहते हैं कि शिक्षक वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विकास में अपने योगदान दे सकते हैं कि नहीं। निरंतर बदल रही आर्थिक परिस्थितियों के दबाव में आधुनिक, विकसित एवं औद्योगिक रूप से सशक्त देशों ने उत्तरदायित्वबोध और उसके अनुरूप विद्यालयों को मानव–शक्ति के एक उत्पादक तंत्र के रूप में देखने की प्रवृति विकसित की हैं इस प्रकार से शोध के एक और क्षेत्र का विकास हुआ है, जिसके अन्तर्गत परिवर्तन के संकेतकों की माप की जाती है। ये संकेतक वो चर होते हैं जो किसी नीति के उन तथ्यों का प्रतिनिधित्व करते है, जिससे उस नीति के विकास का प्रयोग सुचारु रूप से हो सकें।

शिक्षा प्रणाली में नीति, शिक्षा प्रणाली के विभिन्न संगठनों के मध्य घूमती रहती है। यह मूर्त एवं अमूर्त तथ्यों तथा केन्द्रीय एवं परिधीय तथ्यों के मध्य भी घुमती रहती है। ऐसी परिस्थिति में पाठ्यचर्या विषयक शोध, अपने प्रायोजकों एवं अभ्यासकर्ताओं के सैद्धांतिक मान्यताओं पर आधारित होता है। संभवतः इसने एक महत्वपूर्ण सरकारी सूचना के विवादास्पद मुद्दों के समाधान के रूप में इसका राजनीतिकरण हो गया है, के रूप में तटस्थ प्रवृत्ति प्राप्त की थी या संभवतः पाठ्यचर्या पर हो रही परिचर्चा के एक भाग के रूप में इसने एक रोचक स्थिति प्राप्त कर ली थी। लेकिन इस बात के भी कुछ प्रमाण मिले है कि शोधकर्ताओं का समूह इसकी भूमिका को कुछ ज्यादा बढ़ा रहे थे। अमेरिका में, फेडरल शैक्षिक नियमों को प्रभावित करने वाले कारकों की सूची में नीति संबंधी अध्ययन को सबसे नीचे का स्थान एक अनुसंधान के तहत प्रदान किया गया था। इसके पीछे सम्माननीय एवं विश्वसनीय मित्र राष्ट्रों के प्रबल विचार थे।

पाठ्यचर्या के संदर्भ में नीति संबंधी शोध उसके स्थानीय अनुकूलन को बढ़ावा देने के लिए भी किया जाता है। अपनी पुस्तक **'बियोण्ड द स्टेबल'** में **डोनाल्ड् स्कोन** ने सीखे जाने वाले अनुदेशनों की चर्चा की हैं लेकिन उनके मन में जिस अधिगम की बात चल रही थी वो स्थानीय नीति–निर्माता के अनुभवों, निर्णयों और युक्तियुक्त ज्ञान पर आधारित था। इसलिए विगत कुछ वर्षों से विद्यालय विशेष के केस स्टडी को पाठ्यचर्या संबंधी शोध में स्थान दिया जाने लगा है और इससे प्राप्त औपचारिक सामान्यीकरण को नीति–निर्माताओं को प्रमाणिक पाठ्यचर्या शोध के रूप में प्रदान किया गया। अन्य शब्दों में यदि कहा जाय तो विद्यालय विशेष के केस स्टडी को भी पाठ्यचर्या संबंधी शोध में स्थान दिया गया। ऐसे शोध नीति–निर्माताओं को शोधकर्ता का दर्जा नहीं देते है। और न ही ये साधारण रूप से कुछ प्रश्नों का उत्तर देते हैं। ये उस प्रायोगिक आधार को विस्तृत करने का प्रयास करते हैं जिस पर प्रचलित पाठ्यचर्या के संदर्भ में तार्किक रूप से किये जाने वाले पूर्वानुमान की जांच की जा सकें।

कुछ देश विशेषतः इंग्लैंड में पाठ्यचर्या के मामले में दिशा–निर्देश का अभाव था। वहां इस बात को लेकर भ्रम था कि वास्तव मे पाठ्यचर्या में कुल क्या–क्या चीजें है और विद्यालय विशेष के लिए पाठ्यचर्या में क्या शामिल है? परिणामस्वरूप वहां इस दिशा में कुछ आधारभूत शोध की आवश्यकताएं उत्पन्न हुई ताकि इस संबंध में आंकड़े एकत्र किये जा सकें कि विद्यालयों में क्या पढ़ाया और सिखाया जाना चाहिए। युनाइटेड किंगडम में पाठ्यचर्या इस विवाद का विषय हो गया था कि क्या उत्तरदायित्व, बोर्ड के विचारों में उत्पन्न विवादों में घिरा रहना चाहिए। इसे पेशवरों (जो कि शिक्षकों के निर्णयों पर बल दे रहे थे) और नौकरशाह (जो स्वयं के विचारों

पर बल दे रहे थे) के विवाद के रूप में भी पहचाना जा सकता है शिक्षा और विज्ञान विभाग तथा स्थानीय शिक्षण संस्थाएं दोनों अपने–अपने स्थानों पर शिक्षा संबंधी शोध कर रहे थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पाठ्यचर्या पर उत्तम नियंत्रण पाना था। जुलाई, 1977 के ग्रीन पेपर में किस पाठ्यचर्या का कौन–सा हिस्सा मुख्य होना चाहिए, विषय पर शोध करने की आवश्यकता पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की गयी थीं। दो वर्ष बाद शिक्षा एवं विज्ञान विभाग के सर्कुलर 14/77 में विद्यालय के पाठ्यचर्या को व्यवस्थित करने के लिये स्थानीय अधिकरणों की आवश्यकता की बात की गई थीं। इसके अलावा विद्यालय परिषदों ने कई शोध कार्यों, जो पाठ्यचर्या के विश्लेषण एवं व्यवस्था के विश्लेषण पर ज्यादा बल दे रहे थे का प्रकाशन किया।

पाठ्यचर्या सुधार की प्रक्रिया को संस्थागत करने के क्षेत्र में काम कर रहे देशों जिनके पास विश्वास एवं क्षमता की अलग–अलग मात्राएं थी, ने इस कार्य–कलाप के लिए 'शोध एवं विकास' नामक संस्था का गठन किया तथा तत्संबंधी साहित्य के प्रकाशन का कार्य किया।

इस प्रकार पाठ्यचर्या विषयक शोध में पाठ्यचर्या संबंधी नीति को लेकर, जिसमें पाठ्यचर्या क्या होना चाहिए, शिक्षक योग्य है कि नहीं, पाठ्यचर्या संबंधी शोध क्या होगी, कौन सी संस्था पाठ्यचर्या संबंधी शोध के लिए उत्तरदायी है आदि को लेकर अनेक शोध कार्य हुए हैं। वर्तमान में भी पाठ्यचर्या के संबंध में नीति–निर्धारण एक महत्वपूर्ण विषय है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) निम्नलिखित प्रश्नों में सही या गलत का चुनाव कीजिए।

(ख) अपने उत्तर के मिलान इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

5. जुलाई, 1977 के ग्रीन पेपर में किसी पाठ्यचर्या का कौन सा हिस्सा मुख्य होना चाहिए विषय पर शोध करने की आवश्यकता पर एक रिपोर्ट प्रकाशित किया गया था। (सही/गलत)

6. पुस्तक 'बियोण्ड द स्टेबल स्टेट' डोनाल्ड् बर्फील्ड ने लिखी है। (सही/गलत)

7 इंग्लैण्ड में पाठ्चर्या के मामले में दिशा–निर्देश का अभाव था। (सही/गलत)

8. पाठ्यचर्या के संदर्भ में नीति संबंधी शोध उसके स्थानीय अनुकूल को बढ़ावा देने के लिए भी किया जाता है। (सही/गलत)

9. शिक्षा प्रणाली में नीति का शिक्षा प्रणाली के विभिन्न संगठनों से कोई संबंध नहीं होता है। (सही/गलत)

16.3.2 पाठ्यचर्या विश्लेषण

पाठ्यचर्या सम्बन्धी शोध का एक और क्षेत्र वर्तमान पाठ्यचर्या प्रस्ताव का विश्लेषण करना है। इसके लिए प्रयुक्त प्रविधि सत्तारूढ़ दल के कारण परिवर्तित होती रहती है या विभिन्न देशों में अलग–अलग होती है। प्रत्येक पाठ्यचर्या तत्कालीन सत्तारूढ़ राजनीतिक दल के विचारों से प्रभावित होता है। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि जो पाठ्यचर्या प्रचलन में है उस पर सत्तारूढ़ दल का कितना प्रभाव है और वह तत्कालीन शिक्षा प्रणाली के लिए कहाँ तक उपयोगी है या शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में वह कैसे सहायक है? जैसे साम्यवादी देशों में पाठ्यचर्या को मार्क्सवादी एवं नवमार्क्सवादी, दोनों विचारधाराएँ प्रभावित करती हैं। परिणामस्वरूप पाठ्यचर्या इन दोनों विचारधाराओं के बीच में उलझा रहता है। अतः इन देशों में इन विचारधाराओं को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या विश्लेषण की आवश्कयता है।

विद्यालयों में जो पाठ्यचर्या प्रचलन में होता है उस पर गुप्त पाठ्यचर्या (हिडेन करिकुलम) का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। ये गुप्त पाठ्यचर्या सांकेतिक हिंसा फैलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षण कार्य सुचारू रूप से नहीं होता था इसको देखते हुए कई शोध कार्य विद्यालयों की कार्य प्रणाली के

विश्लेषण के क्षेत्र में भी किये गये। पाठ्यचर्या या कक्षाकक्ष शोध में व्यापक परिदृश्य की पृष्ठभूमि पर सूक्ष्म एथनोग्राफी (नृवंशविज्ञान) पाना कठिन है इसलिए इस क्षेत्र में जो कुछ अच्छे कार्य हैं उनका प्रयोग उदाहरण के तौर पर अधिक मात्रा में किया जाता है। इस क्षेत्र में हुए कार्यों की जो एक लम्बी श्रृंखला है, वो शोध की निर्भरता सामान्य तथ्यों पर प्रदर्शित करती है। इस परिस्थिति में यह विचार कि पूँजीवादी समाज में पाठ्यचर्या, जो पूँजीवादियों द्वारा चलाया गया एक धोखा है, पीढ़ी दर पीढ़ी शासक या कुलीन वर्ग की श्रेष्ठता के मिथक को प्रसारित करता है। यह युक्ति 'शक्ति की असमानता' को 'संस्कृति की असमनाता' में परिवर्तित करने की है।

पाठ्यचर्या विश्लेषण संबंधी शोध, पाठ्यचर्या या पाठ्यचर्या–प्रस्ताव के तार्किक या आनुभविक अध्ययन की बात करता है। **फ्रासेर (1972)** ने पाठ्यचर्या के उद्देश्य संबंधी मूलभूत समस्याओं की जांच करने के लिए अनेक तरीकों का सर्वेक्षण किया। उसने यह पाया कि इस बात को जानने के लिए कि कोई पाठ्यचर्या विशेषज्ञों की राय में वैध है कि नहीं, आनुभविक शोध का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार ऑस्ट्रेलियन साइंस प्रोजेक्ट के उद्देश्यों की जाँच एक सर्वे के माध्यम से की गई थी। पाठ्यचर्या संबंधी योजनाओं के अध्ययन के स्थायी प्रकृति के कारण इस बात की शंका है कि शोधकर्ता अपने विचारों एवं मूल्यों को प्रकाश में नहीं आने देना चाहते हैं एण्डरसन (1980) ने यद्यपि शोध प्रविधियों के विश्लेषण पर बहुत ज्यादा ध्यान नहीं दिया है लेकिन वो पाठ्यचर्या के लिखित प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए आधार प्रदान करना चाहते हैं।

16.3.3 पाठ्यचर्या प्रारूप, अनुप्रयोग एवं क्रियात्मक शोध

पाठ्यचर्या के अभ्यासकर्ता के दृष्टिकोण से पाठ्यचर्या प्रारूप का निर्माण या विकास एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। कभी–कभी इनमें विचारों जिनमें सुवर्णित युक्तियों का संचय होता है जो कि पाठ्यचर्या के अच्छे अभ्यास का परिणाम होती है। अक्सर, शोधकार्य पाठ्यचर्या के प्रारूप के निर्माण से सम्बद्ध होता है ताकि पाठ्यचर्या प्रारूप सिद्धान्त और व्यवहार दोनों के स्तर पर संतुलित हो सके। अर्थात सैद्धान्तिक रूप में बने पाठ्यचर्या के प्रारूप को व्यवहार में लाया जा सके। इस प्रकार के शोधकार्य के उदाहरण में, **टेलर (1970) का शोधकार्य ''हाउ टीचर्स प्लान दियर कोर्स'' एवं वॉकर (1975)** का **''एकाउंट ऑफ द पार्टिकुलर ऑफ इनकारनेशन ऑफ डेलिबरेटिव थ्योरी''** को शामिल किया जाता हैं।

यद्यपि वॉकर (1976) के इस कथन कि ''पाठ्यचर्या निर्माण और साधारण तरीके से शिक्षण कार्य करना' शोध के बहुत जटिल प्रकार नहीं है, से असहमत होने का कोई कारण नहीं है तथापि बृहद् स्तर के पाठ्यचर्या प्रस्ताव के लिए यह असाधारण बात नहीं है कि उनके आवश्यक तत्वों का आधार शोधकार्य के परिणाम हो। यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि निर्माण और विसरण मॉडल का शोध, स्वयं पाठ्यचर्या संबंधी शोध हो। अति साधारण शब्दों में पाठ्यचर्या सुधार आन्दोलन को अपने कार्य–कलापों के लिए इसे अर्द्धवैज्ञानिक शोध कहा जाता है।

पाठ्यचर्या प्रारूप के संदर्भ में यद्यपि नियोजित परिवर्तन का सिद्धांत काफी अस्पष्ट एवं अव्यवहारिक है तथापि पाठ्यचर्या में नियोजित परिवर्तन संबंधी शोध, दो उपलब्ध महत्वपूर्ण पैराडाइम्स, प्रणाली–निर्माण एवं यांत्रिक में से किसी एक में शामिल होने की प्रवृति रखता है। इसके अंतर्गत हम ऑस्ट्रेलियन करिकुलम में हुए नवाचार पर शिक्षण वातावरण के प्रभाव को सारणीबद्ध करने के लिए तिसर एवं पॉवर द्वारा 1978 में किये शोधकार्य, जिनमें उन लोगों ने प्रतीपगमन विश्लेषण (रीग्रेशन एनालसिस) का प्रयोग किया था को शामिल करते हैं।

पाठ्यचर्या के अनुप्रयोग संबंधी शोध की प्रवृति, नवाचार के समाजशास्त्र और समाज मनोविज्ञान के आधार पर समूह बनाने की है। अनुप्रयोग संबंधी अध्ययन किसी विशेष विद्यालय की केस स्टडी है, जिसमें एक नई प्रवृति मल्टिसाइट सेटिंग में एथनोग्राफिक (नृवंशविज्ञान) शोध जिसमें अन्तः दृष्टि सामान्यीकरण को भी ध्यान में रखा जाता है, देखने को मिल रही है (स्टेक और आइसेल, 1978)। इस स्थिति में ये शोध एथनोग्राफिक कम और क्षेत्रीय कार्य का नौकरशाहीकरण ज्यादा प्रतीत होते थे।

अभी क्रियात्मक अनुसंधन में भी शोधकर्ताओं की रुचि जागृत हुई है। सामान्य रूप से इस प्रकार के अध्ययन में सहभागी अवलोकन को शामिल किया जाता है जिसमें एक अवलोकनकर्ता स्वयं को अवलोकन में स्वाभाविक रूप से शामिल करता है ताकि अनुभवों के द्वारा सीख सके। स्पष्ट्तः यह किसी व्यक्ति विशेष के स्वयं

के निष्पादन के प्रति उसके उत्साही, खोजी एवं चिंतनशील मस्तिष्क की मांग करता है। जब किसी विश्वविद्यालय का एक शोधकर्ता किसी शिक्षक के साथ मिलकर शोध कार्य करता है तो वह आंतरिक एवं वाह्य परिप्रेक्ष्य को शामिल कर भी सकता है और नहीं भी लेकिन अब एक शिक्षक शोध कार्य करता है, तो वह सामान्यतः पाठ्यचर्या संबंधी उन विचारधाराओं, जो कि परखे जाते हैं के प्रति कुछ विचारणीय विश्लेषण के संदर्भ में दिये गये बौद्धिक वर्णन के परे जाकर अध्ययन करता है अर्थात वह उन सारे विश्लेषणों को अपने अध्ययन में शामिल करता है, उन पर चिंतन करता है तथा उनके संदर्भ में अपने विचार भी रखता है। इन विचारधाराओं को विधि संबंधी परिकल्पनाओं के रूप में भी जाना जाता है।'द फोर्ड टीचिंग प्रोजेक्ट' ने शोध के तरीकों को स्थापित करने में बहुत भूमिका निभाई है। यद्यपि उसके द्वारा प्रतिपादित विचारधारा की इसके, सहभागियों में आत्म प्रावर्तन का संवर्द्धन करने की योग्यता, कम है, इस सत्य को कहने के लिए बाहरवालों को कम महत्व देना चाहिए, के साथ कुछ असहमति भी है।

16.3.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन

पाठ्यचर्या मूल्यांकन संबंधी कार्यक्रम ने अतीत में शैक्षिक शोध की प्रविधियों के संदर्भ में चल रहे विवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ लेखकों ने मूल्यांकन को शोध से अलग करने का प्रयास किया था। उनका यह मानना था कि 'पाठ्यचर्या मूल्यांकन' कार्यक्रम, पाठ्यचर्या के प्रायोजकों, निर्माणकर्ताओं एवं उपयोग करने वाले समूहों के प्रति एक कार्यात्मक उत्तरदायित्व के कारण अपनी खुद की शोध समस्या उत्पन्न करने में अक्षम है लेकिन उनका ये कहना की पाठ्यर्चा का मूल्यांकन सिर्फ 'अभ्यासकर्ता को ज्ञान' प्रदान करता है एवं 'विस्तृत सिद्धान्त' को जन्म देता है, भी अच्छा नहीं है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन और शैक्षिक शोध के मध्य सम्बन्ध को व्यक्त करने वाला एक और तथ्य, सामान्य प्रवृत्ति, शोध पैराडाइम्स एवं विधि के अभ्यास के उदय पर बल देता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन तार्किक रूप से पाठ्चर्या निर्माण की आवश्यकता है। स्टेनाहाउस (1981) ने यह सुझाव दिया। हर पाठ्यचर्या सुधार आन्दोलन ने शैक्षिक प्रणाली में वित्तीय संसाधनों के पुनर्वितरण को प्रदर्शित किया है। अतः पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए शोध पैराडाइम के निर्माण के प्रारम्भिक प्रयास को कुछ वित्तीय संसाधनों को सुव्यवस्थित करने के शोध के प्रयास के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। इस प्रकार मूल्यांकन की प्रविधि को सबसे पहले आवश्यक रूप से सामान्य नियमों के खोज से सम्बन्धित शोध प्रविधि के समान समझना चाहिए। शिक्षा में पाठ्यचर्या निर्माण एक निश्चित उपचारात्मक कार्यक्रम हो गया था जिसकी जाँच ठीक उसी तरीके से की जाती है जिससे कृषि विज्ञान में फसल उत्पादन की। शोध प्रविधि की आवश्यकताओं से मिलने के लिए यह आवश्यक है कि ये प्रभाव मापनीय हो और मनोमीतिय उपागम का प्रयोग करें ताकि वांछित ज्ञान, कोशल और अभिवृत्ति उत्पन्न किया जा सके। लेकिन शीघ्र ही साहित्य की कमी स्पष्ट हो गई और मूल्यांकन की तकनीक, पाठ्यचर्या के प्रारूप के आगे–पीछे, ऊपर–नीचे घूमने लगी। इस प्रकार के मूल्यांकन संबंधी अध्ययनों को किसी विशेष शैक्षिक कार्यक्रम में क्या सीखा गया है और पाठ्यचर्या के एक क्षेत्र जिसकी विशेषता वर्णानात्मक कोशल है, की सूची के रूप में सूचीबद्ध किया जा सकता है।

क्रोनबैक (1975) ने सामान्य एवं पाठ्यचर्या मूल्यांकन संबंधी शैक्षिक शोधों की प्राथमिकताएं उल्टे क्रम में कर देने की बात की। लेबी (1973) ने इस बात की ओर इशारा किया कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन के वर्तमान अवस्था पर चर्चा करना ज्यादा तार्किक होगा जो सैद्धान्तिक मॉडलों तथा अनुप्रयुक्त शोध प्रविधियों में बहुत ज्यादा अन्तर से भरा पड़ा है। ये अन्तर मुख्य रूप से साइकोमेट्रिक और इल्युमिनेटिव तथा भाववाद एवं प्रकृतिवाद के मध्य है। फ्रासेर (1982) के पाठ्यचर्या मूल्यांकन साहित्य संबंधी एनोटेटेड बिबिलियोग्राफी पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि शोध विधि संबंधी यह भ्रम कितना व्यापक है। एक तरफ बेस्तैनी एवं साथी जैसे लेखकों ने अपने आप को मुख्य रूप से शोध की जटिल समस्याओं जैसे–वाह्य वैधता का भय और उपचारों के भ्रामक प्रभाव' को और परिस्थिति के प्रभाव को अलग करने की आशा से जुड़े मानते हैं तो दूसरी ओर गुबा (1978) और स्मिथ (1978) जैसे लेखक खुद को अनुसंधान के प्राकृतिक तरीके से जोड़कर देखते हैं तथा मानते हैं कि जो पाठ्यचर्या प्रचलन में है उसका मूल्यांकन, सहभागी अवलोकन के निर्णयों, साहित्य एवं अर्द्ध– ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर होना चाहिए। इस प्रकार, मूल्यांकन अध्ययन, जब 'साधारण अनुभवों' को प्रसारित करने के बजाय 'क्रमबद्ध अनुभवों एवं विचारों' के प्रकाशन पर बल देता है, तब शोध कार्य के समीप हो जाता है। स्वाध्याय और

स्वमूल्यांकन, पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए काफी प्रयोग में लाए जाते हैं। यह स्वमूल्यांकन या स्वाध्याय, पाठ्यचर्या संबंधी क्रियात्मक शोध से सम्बद्ध हो सकते हैं। इनका संबंध शोधकर्ता के पाठ्यचर्या मूल्यांकन संबंधी अपने विचारों को प्रकाशित करने से भी होता है।

16.4 पाठ्यचर्या संबंधी अनुसंधान की प्रवृत्ति

पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र में एक लम्बी श्रृंखला होने के बावजूद जो सामान्य प्रवृत्ति है, वो संख्यात्मक, एथनोग्राफिक और विवेचनात्मक अध्ययन की है। कुछ सीमा तक हरमेनेटिक और आइडियोग्राफिक अध्ययनों को भी स्थान दिया गया है जैसा की वॉकर (1976) ने इंगित किया है कि यह एक अंश है, क्योंकि पाठ्यचर्या की जटिलता सत्य और रोचक परिकल्पनाओं, जिनको की जाँचा जा सके, को बहुत ज्यादा मात्रा में जन्म नहीं देती हैं। पाठ्यचर्या की समस्याओं के अध्ययन के लिए जांच सह प्रमाण विधि भी अप्रत्यक्ष प्रयास के अन्तर्गत आते हैं।

पाठ्यचर्या को केस स्टडी द्वारा समझने के प्रयास में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और प्रक्रियात्मक अध्ययन को शामिल किया जाता है। इसके तहत विद्यालयों की केस स्टडी की जाती है। प्राकृतिक शोध भी बहुत प्रयोग में लाया गया है क्योंकि इसकी वैधता, वास्तविक कार्यस्थल पर किये गये अवलोकन की मात्रा पर निर्भर करती है।

इस प्रकार यह समझ सकते हैं कि पाठ्यचर्या संबंधी शोध विविधताओं से भरा हुआ है। इसलिए अनेक शोध प्रविधियों को स्थान दिया गया है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

(क) अधोलिखित सारणी क का सारिणी ख से मिलान कीजिए।

(ख) अपने उत्तर के मिलान इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

10. मिलान करें –

	समूह क		समूह ख
(अ)	स्टेनहाउस (1981)	(1)	सामान्य एवं पाठ्यचर्या संबंधी शैक्षिक शोधों की प्राथमिकताएं उल्टे क्रम में कर देने की बात की।
(ब)	क्रोनबैक (1975)	(2)	पाठ्यचर्या सुधार आन्दोलन ने शैक्षिक प्रणाली में वित्तीय संसाधनों के पुनर्विचारण को प्रदर्शित किया है।
(स)	बेस्तैंन	(3)	अनुसंधान के प्राकृतिक तरीके से संबंधित।
(द)	गुबा (1978)	(4)	शोध की जटिल समस्याओं जैसे–व्हय्‌ वैधता का भय से संबंधित।

11. पाठ्यचर्या संबंधी शोध की सामान्य प्रवृत्ति क्या है ?

....

....

16.5 सारांश

इस इकाई में पाठ्यचर्या संबंधी शोध कार्य के क्षेत्र अर्थात् स्कोप ऑफ करिकुलम रिसर्च का वर्णन किया गया है। इसके अन्तर्गत पाठ्यचर्या संबंधी शोध कार्य के क्षेत्र का वर्णन किया गया है तथा इस क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न पहलुओं की चर्चा की गई है। इस इकाई में पाठ्यचर्या संबंधी शोध कार्य की प्रवृत्ति का भी वर्णन किया गया है। क्योंकि पाठ्यचर्या निरन्तर परिवर्तनशील है तथा शिक्षा प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण भी है। अतः इस निरन्तर परिवर्तनशील तथ्य को समझकर तथा परिवर्तन की मांग को समझकर शिक्षा–प्रणाली को समायोजित करने के लिए इस इकाई का ज्ञान अति उपयोगी है।

इस इकाई में अतीत में यूरोपीय एवं कुछ अन्य परिश्रमी देशों में हुए पाठ्यचर्या संबंधी शोध कार्य को आधार बनाया गया है जिससे यह इकाई और भी उपयोगी हो जाती है।

16.6 अभ्यास के प्रश्न

1. पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र से आप क्या समझते हैं ? विवेचना कीजिए।
2. पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र रूप में पाठ्यचर्या मूल्यांकन का वर्णन कीजिए।
3. पाठ्यचर्या निर्माण नीति संबंधी शोध से आपका क्या तात्पर्य है। व्याख्या कीजिए।
4. पाठ्यचर्या संबंधी शोध की प्रवृत्ति का वर्णन करें।

16.7 चर्चा के बिन्दु

1. पाठ्यचर्या में शोध के विषय पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ्यचर्या में शोध की आवश्यकता एवं महत्व पर चर्चा कीजिए।

16.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. 12वीं
2. फ्लरे 1995 ई0
3. संयुक्त राज्य अमेरिका
4. पाठ्यचर्या शिक्षा की गुणवत्ता का निर्धारक तत्व है। हमारी शिक्षा प्रणाली परिवर्तनशील है और समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित होती रहती है, इसका प्रभावपूर्ण उपयोग तभी सम्भव है जब पाठ्यचर्या शिक्षा प्रणाली के अनुकूल हो। अतः इसमें निरन्तर शोध की आवश्यकता होती है।
5. सही
6. गलत
7. सही
8. सही
9. गलत
10. (अ) 2, (ब) 1, (स) 4, (द) 3
11. पाठ्यचर्या संबंधी शोध की सामान्य प्रवृत्ति है, संख्यात्मक, एथनोग्राफिक (नृवंश वैज्ञानिक),विवेचनात्मक के साथ–साथ हरमेनेटिक और आडियोग्राफिक अध्ययन।

16.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. **अग्रवाल, जे0सी0 (1990)** : भारत में पाठ्यचर्या सुधार आगरा, अग्रवाल प्रकाशन।
2. **अग्रवाल, जे0सी0 (1993)** : नवीन शिक्षा का विकास एवं योजनाएं नई दिल्लीः विकास पब्लिकेशन हाउस।
3. **चौबे, सरयू प्रसाद एवं अखिलेश (2002)** : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद शारदा प्रकाशन।
4. **त्यागी, गुरूसरन दास एवं अन्य (2005)** : शिक्षा के सिद्धान्त, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
5. **बुच, एम0बी0 (1988–1992)** : चतुर्थ सर्वे रिपोर्ट टवस.1, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी.,
6. **माथुर, एस0के0 (1981)** : शिक्षण कला, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
7. **यादव, सियाराम (2011)** : पाठ्यचर्या विकास, आगरा, अग्रवाल प्रकाशन।
8. **सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप (2002)** : शिक्षा के सिद्धान्त आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

Notes